जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

आगम-सुत्त ग्रन्थमाला

ग्रन्थ-१

दसवेआलियं

तह

उत्तरज्झयणाणि

वाचना प्रमुख

आचार्य तुलसी

सम्पादक

मुनि नथमल

(निकाय-सचिव)

प्रकाशक

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

(आगम-साहित्य प्रकाशन समिति)

३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट

कलकत्ता-१

प्रबन्ध-व्यवस्थापक :
श्रीचन्द रामपुरिया, बी०कॉम०, बी०एल०
संयोजक,
आगम-साहित्य प्रकाशन समिति

धारक
आदर्श साहित्य संघ
चूरू (राजस्थान)

अर्थ-सहायक
सरावगी चेरिटेबल फण्ड
७ लोअर राऊडन स्ट्रीट,
कलकत्ता

प्रकाशन तिथि
मर्यादा-महोत्सव
माघ सुदी सप्तमी, स० २०२३

प्रति संख्या
११००

पृष्ठ-संख्या
८३२

मूल्य
१७०० रु०

मुद्रक
न्यू रोशन प्रिन्टिंग वर्क्स
३।१।१ रवीन्द्र सरणी कलकत्ता

ग्रन्थानुक्रम

समर्पण

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि ।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाण पुव्वं ॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में ।
हेतुभूत श्रुत-सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से ॥

विनयावनत
आचार्य तुलसी

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है, उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन-आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगें। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूँ, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है :—

सम्पादक		: मुनि नथमल (निकाय-सचिव)
	सहयोगी	: मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन	,,	: मुनि सुदर्शन
	,,	: मुनि मधुकर
	,,	: मुनि हीरालाल
शब्दानुक्रम	,,	: मुनि श्रीचन्द्र
	,,	: मुनि हनुमानमल (सरदारशहर)
विषयानुक्रम	,,	: मुनि रूपचन्द्र

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिन ने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

—आचार्य तुलसी

प्रकाशकीय

परम श्रद्धास्पद पूज्य आचार्य श्री तुलसी की प्रकल्पित आगम-सम्पादन की रूपरेखा में छः ग्रन्थ-मालाओं की योजना है। योजना का रूप सम्पादकीय में दिया हुआ है। "आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला" इन ग्रन्थ-मालाओं में से एक है। इस ग्रन्थ-माला में आगमों के संशोधित मूलपाठ पाठान्तर सहित प्रस्तुत किये जायेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक उक्त ग्रन्थ-माला का प्रथम ग्रन्थ है। इसमें दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—इन दोनों मूल-सूत्रों के संशोधित पाठ-मात्र प्रकाशित हो रहे हैं। संशोधित पाठों के साथ-साथ नीचे पाद-टिप्पणों में पाठान्तर दिये गये हैं।

प्रथम परिशिष्ट में दशवैकालिक शब्द-सूची एवं दूसरे परिशिष्ट में उत्तराध्ययन शब्द-सूची विस्तृत रूप में दी गई है।

उत्तराध्ययन में प्रसंगवश उल्लिखित व्यक्ति, देश, नगर, पर्वत, समुद्र, नदी, उद्यान, सिक्का, आवास, शस्त्र, धातु, रत्न, वनस्पति, प्राणी आदि के नामों की सूची तीसरे परिशिष्ट के अन्तर्गत दी गई है।

अन्त में तीन शुद्धि और आपूरक पत्र हैं, जिनमें मूलपाठ, पाठान्तर और शब्द-सूची विषयक मुद्रण की भूलों का संशोधन उपस्थित करते हुए तद्विषयक जो नई सामग्री प्राप्त हुई, वह दे दी गई है।

दोनों आगमों की पद-विभक्त विस्तृत विषय-सूची ग्रन्थों के महत्त्वपूर्ण विषयों को निकालने में सहायक होगी।

भूमिका और सम्पादकीय संक्षेप में दोनों सूत्रों का सुन्दर परिचय दे देते हैं।

इस आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला का मूल उद्देश्य विद्वानों के सम्मुख मूल आगमों के संशोधित पाठ भावी शोध-खोज के लिए प्रस्तुत करना है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत ग्रन्थ-माला का यह प्रथम ग्रन्थ आपके हाथों में है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन का भार समिति की ओर से सरदारशहर-निवासी श्रीमान् मदनचन्दजी गोठी को सौंपा गया था। निरन्तर अस्वस्थ रहने पर भी बड़ी

श्रद्धा और प्रेम के साथ उन्होंने इस कार्य भार को ग्रहण किया, पर आकस्मिक निधन ने उस सम्पत्ति को हमसे छीन लिया। गोठीजी आगम-कार्य की योजना के एक महान् स्तम्भ रहे।

पाण्डुलिपि की प्रतिलिपि :

इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि आदर्श साहित्य संघ, चुरू (राजस्थान) से प्राप्त हुई है, जिसके लिए हम उनके हृदय से कृतज्ञ हैं।

अर्थ-व्यवस्था

इस आगम का मुद्रण-खर्च श्री रामकुमारजी सरावगी की प्रेरणा से श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता, जिसके सर्व श्री प्यारेलालजी सरावगी, गोविन्दलालजी सरावगी, सज्जनकुमारजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी ट्रस्टी हैं, ने वहन किया है।

श्री सरावगी चेरिटेबल फण्ड का यह आर्थिक अनुदान स्वर्गीय स्वनामधन्य श्रावक महादेवलालजी सरावगी एवं उनके सुयोग्य दिवंगत पुत्र पन्नालालजी सरावगी (सदस्य, भारतीय लोकसभा) की स्मृति में प्राप्त हुआ है। स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी तेरापंथ सम्प्रदाय के एक अग्रगण्य श्रावक थे और कलकत्ता के प्रसिद्ध अधिष्ठान महादेव रामकुमार से सम्बन्धित थे। स्व० पन्नालालजी सरावगी, महासभा एवं साहित्य प्रकाशन समिति के बड़े उत्साही एवं प्राणवान् सदस्य रहे। आगम प्रकाशन योजना में उनकी आरम्भ से अत्यन्त अभिरुचि रही।

उक्त योगदान के प्रति हम उक्त फण्ड के ट्रस्टीगण के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादन में जिन जिन विद्वान अथवा प्रकाशन-संस्थाओं के ग्रन्थ तथा प्रकाशनों का उपयोग हुआ है, उन सबके प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करते हैं।

आगम साहित्य प्रकाशन समिति के सदस्य सर्व श्री मोहनलालजी बाँठिया 'चंचल', गोविन्दलालजी सरावगी एवं खेमचन्दजी सेठिया को भी मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिनका सहयोग मुझे हर समय प्राप्त होता रहा है।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा के अन्तर्गत गठित समिति के द्वारा आगम-साहित्य प्रकाशन का कार्य ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, त्यों-त्यों मेरे हृदय में आनन्द का पारावार नहीं है। मैं तो अपने जीवन की एक साध ही पूरी होते हुए देख रहा हूँ।

आचार्य श्री एक युग-पुरुष हैं। जहाँ एक ओर जन-मानस की आध्यात्मिक और नैतिक चेतना की जागृति के व्यापक आन्दोलनों में उनके अमूल्य जीवन-क्षण लग रहे हैं, वहाँ दूसरी ओर भारतीय श्रमण-साहित्य और संस्कृति के मूल संदेश को जन-व्यापी बनाने का उनका उपक्रम भी अनन्य है। उनकी ओर से हो रही भारतीय साहित्य और संस्कृति की अमूल्य सेवाएँ हमारी कृतज्ञता को सहज स्फुरित करती है।

आगम-साहित्य प्रकाशन समिति
[जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा]
३, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कलकत्ता-१
दि० १ फरवरी, १९६७

श्रीचन्द रामपुरिया
संयोजक

सम्पादकीय

सम्पादन का कार्य सरल नहीं है—यह उन्हें सुविदित है, जिन्होंने इस दिशा में कोई प्रयत्न किया है। दो-ढाई हजार वर्ष पुराने ग्रन्थों के सम्पादन का कार्य और भी जटिल है, जिनकी भाषा और भाव-धारा आज की भाषा और भाव-धारा से वहुत व्यवधान पा चुकी है। इतिहास की यह अपवाद-शून्य गति है कि जो विचार या आचार जिस आकार में आरब्ध होता है, वह उसी आकार में स्थिर नहीं रहता। या तो वह वड़ा हो जाता है या छोटा। यह ह्रास और विकास की कहानी ही परिवर्तन की कहानी है। और कोई भी आकार ऐसा नहीं है, जो कृत है और परिवर्तनशील नहीं है। परिवर्तनशील घटनाओं, तथ्यों, विचारों और आचारों के प्रति अपरिवर्तनशीलता का आग्रह मनुष्य को असत्य की ओर ले जाता है। सत्य का केन्द्र-बिन्दु यह है कि जो कृत है, वह सव परिवर्तनशील है। कृत या शाश्वत भी ऐसा क्या है, जहाँ परिवर्तन का स्पर्श न हो। इस विश्व में जो है, वह वही है जिसकी सत्ता शाश्वत और परिवर्तन की धारा से सर्वथा विभक्त नहीं है।

शब्द की परिधि में बंधने वाला कोई भी सत्य क्या ऐसा हो सकता है, जो तीनों कालों में समान रूप से प्रकाशित रह सके? शब्द के अर्थ का उत्कर्ष या अपकर्ष होता है—भाषा-शास्त्र के इस नियम को जानने वाला यह आग्रह नहीं रख सकता कि दो हजार वर्ष पुराने शब्द का आज वही अर्थ सही है, जो आज प्रचलित है। 'पाषण्ड' शब्द का जो अर्थ आगम-ग्रन्थों और अशोक के शिला-लेखों में है, वह आज के श्रमण-साहित्य में नहीं है। आज उसका अपकर्ष हो चुका है। आगम-साहित्य के सैकड़ों शब्दों की यही कहानी है कि वे आज अपने मौलिक अर्थ का प्रकाश नहीं दे रहे हैं। इस स्थिति में हर चिन्तनशील

व्यक्ति अनुभव कर सकता है कि प्राचीन साहित्य के सम्पादन का काम कितना दुरूह है।

मनुष्य अपनी शक्ति मे विश्वास करता है और अपने पौरुष से खेलता है, अतः वह किसी भी कार्य को इसलिए नही छोड देता कि वह दुरूह है। यदि यह पलायन की प्रवृत्ति होती तो प्राप्य की सम्भावना नष्ट ही नही हो जाती किन्तु आज जो प्राप्त है वह अतीत के किसी भी क्षण मे विलुप्त हो जाता। आज से हजार वर्ष पहले नवांगी टीकाकार (अभयदेव सूरि) के सामने अनेक कठिनाइयाँ थी। उन्होने उनकी चर्चा करते हुए लिखा है :

१ सत् सम्प्रदाय (अर्थ-बोध की सम्यक् गुरु परम्परा) प्राप्त नही है।
२ सत् ऊह (अर्थ की आलोचनात्मक कृति या स्थिति) प्राप्त नही है।
३ अनेक वाचनाएँ (आगमिक अध्यापन की पद्धतियाँ) है।
४ पुस्तकें अशुद्ध है।
५ कृतियाँ सूत्रात्मक होने के कारण बहुत गभीर है।
६ अर्थ विषयक मतभेद भी है।[1]

इन सारी कठिनाइयो के उपरान्त भी उन्होने अपना प्रयत्न नही छोडा और वे कुछ कर गए।

कठिनाइयाँ आज भी कम नही है। किन्तु उनके होते हुए भी आचार्य श्री तुलसी ने आगम सम्पादन के कार्य को अपने हाथो मे ले लिया। उनके शक्तिशाली हाथो का स्पर्श पा कर निष्प्राण भी प्राणवान् बन जाता है तो भला आगम-साहित्य जो स्वय प्राणवान् है उसमे प्राण सचार करना क्या बडी बात

१—स्थानाग वृत्ति प्रशस्ति १ २

सत्सम्प्रदायहीनत्वात् सदूहस्य वियोगत:।
सर्वस्वपरशास्त्राणा मदृष्टेरस्मृतेश्च मे ॥ १ ॥
वाचनानामनेकत्वात् पुस्तकानामशुद्धित:।
सूत्राणामतिगाम्भीर्याद् मतभेदाच्च कुत्रचित् ॥ २ ॥

है ? बड़ी बात यह है कि आचार्य श्री ने उसमें प्राण-संचार मेरी और मेरे सहयोगी साधु-साध्वियों की असमर्थ अंगुलियों द्वारा कराने का प्रयत्न किया है। सम्पादन-कार्य में हमें आचार्य श्री का आशीर्वाद ही प्राप्त नहीं है किन्तु मार्ग-दर्शन और सक्रिय योग भी प्राप्त है। आचार्यवर ने इस कार्य को प्राथमिकता दी है और इसकी परिपूर्णता के लिए अपना पर्याप्त समय दिया है। उनके मार्ग-दर्शन, चिन्तन और प्रोत्साहन का संबल पा हम अनेक दुस्तर धाराओं का पार पाने में समर्थ हुए हैं।

आगम-सम्पादन की रूपरेखा

आगम साहित्य के अध्येता दोनों प्रकार के लोग हैं—विद्वद्-जन और साधारण-जन। दोनों को दृष्टि में रख कर हमने इस कार्य को छह ग्रन्थ-मालाओं में ग्रथित किया है। उसका आकार यह है :—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला में आगमों के मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि होंगे।

२. आगम ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ माला में आगमों के मूलपाठ, पाठान्तर, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम या सूत्रानुक्रम आदि होंगे।

३. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला में आगमों के टिप्पण होंगे।

४. आगम-अनुशीलन ग्रन्थ-माला—इस ग्रन्थ-माला में आगमों के समीक्षात्मक अध्ययन होंगे।

५. आगम-कथा ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला में आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन होगा।

६. वर्गीकृत आगम-ग्रन्थ-माला— इस ग्रन्थ-माला में आगमों के वर्गीकृत और संक्षिप्त संस्करण होंगे।

शब्दान्तर और रूपान्तर

व्याकरण और आर्ष-प्रयोग-सिद्ध शब्दान्तर एवं रूपान्तर भाषा शास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसलिए उन्हें पाठान्तर से पृथक् रखा है।

अध्ययन-१

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
१।१	उक्किट्ठ	उक्कट्ठं	क,ग,घ,अचू
२।२	आवियइ	आवियती	अचू,जिचू
३।१	मुत्ता	मुक्का	अचू
३।२	साहुणो	साहवो	अचू
४।३	अहागडेसु	अहागडेहिं	अचू
४।३	रीयंति	रीयंते	घ,जिचू
४।४	पुप्फेसु	पुप्फेहिं	अचू,जिचू
४।४	भमरा	भमरो	ख
५।१	महु °	मधु °	अचू,जिचू

अध्ययन-२

स्थल	मूलपाठ	शब्दान्तर और रूपान्तर	प्रति
२।२	इत्थीओ	इत्थिओ	ख
२।४	चाइ	चागि	अचू
४।१	पेहाए	पेहाइ	क,ख
४।२	निस्सरई	नीसरई	अचू,जिचू
४।४	विणएज्ज	विणइज्ज	क,ख,ग
५।१	आयावयाही	आयावयाहि	अचू,जिचू
५।१	सोउमल्लं	सोगमल्लं, सोगुमल्लं	क,ख,ग,जिचू,घ
५।२	कमाही	कमाहि	जिचू,अचू
६।३	वन्तय	वतग	अचू
६।३	भोत्तु	भुत्तु	ग
८।१	रायस्स	राइस्स	ग
९।२	दच्छसि	दिच्छसि, दिच्छिसि	क,ख,ग
१०।२	सजयाए	सजयाइ	ख,ग,घ

११।१	करेन्ति	करंति, करिंति	ख,ग,क,घ
११।३	भोगेनु	भोगेहिं	अचू

अध्ययन-३

१।१	सुट्ठिअप्पाणं	सुट्ठितप्पाणं	अचू
२।३	राइभत्ते	रायभत्ते	ग,जिचू
४।१	नालीय	नालीए, णालीया	ख,अचू
४।३	पाणहा	पाहणा	ख,अचू,जिचू
५।३	निसेज्जा	निसज्जा	ख
६।३	तत्तानिव्वुड-भोइत्तं	तत्तअनिव्वुड-भोतीत	ख,अचू
९।१	धूवणेत्ति	धूवणित्ति	ख
९।२	वत्थीकम्म	वत्थीकम्म, पत्थीकम्म	ख, अचू
९।४	गायाभंग	गायब्भंग	जिचू
१२।१	गिम्हेसु	गिम्हासु	अचू
१२।३	° संलीणा	° संल्लीणा	जिचू
१३।१	° रिऊ	° रिवू	अचू
१३।२	धुय °	धूअ °	ख,ग
१३।२	जिइंदिया	जियंदिया	ग
१४।२	दुस्सहाइं	दूसहाइं	जिचू
१४।३	इत्थ	एत्थ	क

अध्ययन-४

सू० ९	अभिक्कंतं	पडिक्कंतं अभिकंतं पडिकंतं	ख
,, १०	दंडं	डंडं	अचू,जिचू
,, १०	समारंभेज्जा	समारभेज्जा	अचू,जिचू
,, १०	करंतं	करेंतं	अचू
,, ११	गरिहामि	गरहामि	अचू
,, १६	राइं	रायं	क

सू० १८	किलिंचेण	कलिंचेण	ख,ग,घ,जिचू
,, १८	सलागाए व सलाग	सिलागाए व सिलाग	ख,ग
,, १९	ससिणिद्ध	ससणिद्ध ससिणद्ध	क, अचू,ख
,, २१	विहुयणेण	विहुवणेण	अचू, जिचू
,, २३	पिवीलिय	पिपीलिय	जिचू
,, २३	हत्थसि वा	हत्थेसि वा	अचू,पा
१०।४	नाहिइ	नाहीइ,नाही	ख,ग,घ
१२।१	याणाइ	याणेइ,याणइ	ग,अचू
१२।४	नाहिइ	नाहीइ, नाहीय	क,ख,घ,ग
१३।१	वियाणाइ	वियाणेइ,वियाणाइ	ग,अचू
१६।३	निव्विदए	निव्विदिय,निव्विदइ	क,ग,अचू
२५।४	हवइ	भवइ	क,घ
२६।३	पहोइस्स	पहोयस्स	ख
२६।२	° साइस्स	° सायस्स	ख
२६।४,२७।४	सुग्गइ	सुगइ, सोगइ	घ,अचू,जिचू
२७।३	जिण	जिणि	क,घ

अध्ययन ५(१)

३।३	वज्जतो	वज्जेंतो	क,ग,अचू, जिचू
४।१	ओवाय	उवायं	ग
४।२	विज्जल	विजल	हाटी, जिचू
८।२	पडनीए	पडनिए	अचू
१०।१	अगायणे	अगाययणे	अचू
१३।३	इंदियाणि	इंदियाइं, इंदियाय	क ग
१६।२	रस्सा	रहसा	क,ख,ग,हाटी
२३।४	अयंपिरो	अयपुरो	अचू
२५।३	वच्चस्स	वुच्चरग	

२६।१	दग-मट्टिय	दग-मट्टी	ग
२७।२	आहरे	आहारे	क,ग,घ
२८।१	आहरंती	आहरेंती	अचू
२८।३	देंतियं	दिंतियं, दंतियं	क,ग,घ,ग
३३।१	ससिणिद्धे	ससणिद्धे	क
३४।२	कुक्कुस	कुक्कस	ग
४०।४	पुणुट्ठए	पुणट्ठए	घ, अचू
४२।१	पिज्जेमाणी	पेज्जमाणी,पज्जेमाणी	जिचू,अचू
४५।१	दग-वारएण	दग-वारेण	क,हाटी
४६।१	उब्भिंदिया	उब्भिंदियं	क,ख,ग,घ
५७।३	उम्मीसं	उम्मिसं	क,अचू,जिचू
६७।३	मंचं	मंच	क,ख,ग,घ,अचू
७१।३	सक्कुलि	संकुलि	ख
७३।२	अणिमिसं	अणमिसं	ख,ग
७३।३	अत्थियं	अच्छियं	अचू, जिचू
७३।४	सिंबलिं	संवलिं, संबिलं	घ,ख
७४।२	धम्मिए	धम्मए	घ
७७।३	भवेज्जा	हविज्जा	ख
७७।४	रोयए	रोइए, रोवए	ग,ख
७८।४	तण्हं	तण्ह	ख
८१।२	अचित्तं	अच्चित्तं	क, अचू
८५।१	निक्खिवे	निखिवे	क,ख,ग
९०।२	अव्वक्खित्तेण	अवक्खित्तेण	अचू
९६।२	एक्कओ	एगओ, इक्कओ	घ,ख,ग
९७।३	एय	एयं	अचू
९८।३	उल्लं	अल्लं	घ
१००।४	सोग्गइं	सोगइं, सुग्गइं	अचू,ख,ग

अध्ययन-५(२)

१।३	दुगंध	दुग्गंध	अचू
२।३	अयावयट्ठा	आयावयट्ठा	क,ख,ग
३।३	° उत्तेण	° वुत्तेण	अचू
५।२	पडिलेहसि	पडिलेहिसि	ख
५।४	गरिहसि	गिरिहसि,गिरिहिसि,गरहसि	ग,ख,अचू
७।३	त-उज्जुय	त-ओजुय	ख,घ
१०।२	निविण	क्विण	ग
१३।२	नियत्तिए	नियत्तए	ख,ग
१३।४	व	वा	अचू
१४।३	सच्चित	सचित	घ,अचू,जिचू
२१।३	नीम	नियम	ख
२२।३	° पिन्नाग	° पन्नाग	ख
२४।३	विहेलग	विभेलग, बिहेलग	अचू,ख
२५।४	उसढ	उस्सढ	अचू
२६।१	इत्थिय	इत्थि	अचू
३२।१	अत्तट्ठ	अत्तट्ठा	क,ख,ग,घ
३७।१	पिया	पियए	हाटी,जिचू
४६।१	वय	वई	अचू
४७।२	मूयय	मूयग	ख,ग,घ
५०।३	° हिंदिए	° हिइदिए	क,घ,जिचू

अध्ययन-६

१३।३	मेत	मित्त	क,ख,ग,घ
१८।१	लोभस्सेमो,अणुफासो	लोभस्सेसणुफासे, लोभस्सेमणफासो, लोभस्सेसणुफासो	क,घ ग,ख

२०।२	नाय °	नाइ °	क,ग
२०।४	इइ	इय	क,ख,ग,घ
२४।३	दिया	दिवा	अचू
३७।३	विइउ °	वीउ °, वितु °	ग,अचू
५१।२	° धोयण	° धोवण	क,ख,अचू
५१।३	छन्नंति	छिन्नंति, छिप्पंति	क,ख,ग,हाटी
५२।१	पच्छा °	पच्छे °	अचू
५७।४	पडिकोहो	परिकोहो, पलिकोहो	अचू
६०।३	वोक्कंतो	वुक्कंतो, वक्कंतो	क,ग,ख
६१।२	भिलुगासु	भिलगासु	क,ख,घ
६१।४	° प्पिलावए	° पलावए, ° प्पलावए	ख,ग,घ,हाटी
६३।३	° व्वट्ट °	° वट्ट °	क,ग
६४।१	नगिणस्स	निगणस्स, नगणस्स, नगणिस्स, णिगिणस्स	क,घ,ग,अचू
६७।४	नवाइ पावाइं	नवाणि पावाणि	अचू
६८।३	उउप्पसन्ने	उडुपसण्णे	अचू

अध्ययन-७

२।३	ऽणाइन्ना	अणाइण्णा	अचू
५।४	पुण	पुणो,पुणं	अचू,ख
८।१	कालम्मी	कालम्मि	ख
१२।२	पंडगे त्ति	पंडग त्ति पंडगु त्ति	क,ग,घ
१२।३	रोगि त्ति	रोग त्ति	ग
१२।४	चोरे त्ति	चोरु त्ति	घ
१३।१	वट्ठेण	अट्ठेण	क,ख,ग,घ
१४।२	वसुले त्ति	वसुल त्ति	घ
१४।३	दम्मए दुहए	दुम्मए दूहए	ख

१५।२	माउस्सिय	माउसिउ, माउसिय	क,ख,ग,घ
१५।४	नत्तुणिए	नत्तुणिय, नत्तुणइ, नत्तुणिइ	घ,क,ग,ख
१६।१	अन्नेत्ति	अन्नत्ति	ग
१८।३	भाइणोज्जति	भायणिज्जति	ख
१८।४	नत्तुणिय	नत्तुणइ, नत्तुणिइ	ग,ख
१६।१	हले त्ति	हल त्ति, हरे त्ति	ग,घ,अचू
२१।१	मणुस्स	मणुस, मणस	क,ग,घ,ख
२२।२	सरीसिव	सरीसव	ख,ग
२३।१	परिवुड्ढे	परिवुड्ढ,परिवूढ	क,ग,ख,अचू,जिचू,हाटी
२४।३	° जोग त्ति	° जोगि त्ति	ख,ग,
२५।२	घेणु	घेणू	ख
२७।२	तोरणाण गिहाण	तोरणाणि गिहाणि	क,ग
३१।४	दरिसणि	दरिसण	ग,घ,ख
३२।१	फलाइ	फलाणि	अचू
३३।२	निवट्टिमा	निव्वडिमा,निव्वत्तिमा, निवट्टिमा	जिचू अचू,ख
३३।४	रूव त्ति	रूवि त्ति	क,ख,ग
३६।४	सुनित्थ	सुतित्थे,सुतितिथ	ग,घ,ख
३६।१	° वाहडा	° पाहडा	अचू
४१।२	मडे	मने	अचू
४२।१	पयत्त	पयत्ति	क,घ
४२।१	पक्के त्ति	पक्क त्ति	क,ग,घ
४५।१	मुक्कीय	सुक्किय	ख
४७।१	तहेवामजय	तहेवऽसजत	अचू
४८।२	साहूणो	सावज्जा	अचू
५१।१	वाओ °	वाउ °	ख
५१।१	° वुट्ठ	° वुट्ठि	क,ख,ग

५३।१	अंतलिक्खे	अंतलिक्खं, अतलिक्ख	घ,हाटी,जीचू,ख
५६।३	धुन्न	धुत्त	घ

अध्ययन-८

२।४	इय	इय	ख
५।१	निसिएं	निसीए	घ
६।२	विहुयणेण	विहुवणेण	जिचू
६।३	वीएज्ज	वीए	अचू
६।४	पोग्गलं	पुग्गलं	क,ख,ग,घ
१४।१	कयराइं	कतमाणि	अचू
१६।३	अप्पमत्तो	अप्पमत्ते	अचू
१८।३	पडिलेहित्ता	पडिलेहित्तु	अचू
१६।२	पाणट्ठा	पाणत्था	अचू
२०।४	मरिहइ	मरुहति	अचू
२३।२	अयंपिरो	अयपुरो	अचू
२५।१	संतुट्ठे	संतुट्ठो	अचू
२५।२	सुहरे	सुभरे	ख,घ
२६।१	अतिंतिणे	अतिंतणे	क,ग
३५।१	पीलेइ	पीडेइ	ख,ग,जिचू,हाटी
३६।१	अणिग्गहीया	अणिग्गिहिया	अचू
४०।१	राइणिए	रायणिए	ख,ग,हाटी
४०।१	पउंजे	पयुंजे	अचू
४०।३	कुम्मो	कुम्मु,कुम्मे	क,ख,ग,घ,अचू
४१।३	मिहो	मिधु	अचू
४२।४	अट्ठं	अत्थं	अचू
४६।३	पिट्ठि	पिट्ठी	अचू
४८।३	अयंपिर	अयंपुर	अचू

४६।३	वइ	वाय, वय	जिचू ख
५३।२	विग्गहिओ	विग्गहओ	ख
५५।१	पडिच्छिन्न	पलिच्छिन्न	घ,अचू जिचू
५८।१	मणुन्नेसु	मणुन्नेसु	क,ख ग,घ
५६।३	तण्हो	तिण्हो	क
५६।४	सीई	सीन	अचू
६२।३	जसि	जमे	अचू
६३।४	चदिमा	चदिमि	क,ख,जिचू

अध्ययन-९(१)

२।२	अप्पसुए	अप्पसुय	ख,ग
६।१	पावग	पावक	अचू
१२।१	जम्सतिए	जम्सतिय	अचू
१२।२	तम्सतिए	तस्सतिय	अचू
१४।३	बुद्धिए	बुद्धीए	ख
१५।१	जुत्तो	जुते	क,ग
१७।१	मेहावी	मेहावि	ख

अध्ययन-९(२)

२।३	सिग्घ	मग्घ	अचू
१५।३	सक्कारेति	सक्कारति	अचू
२०।२	इउहिं	हेऊहिं	ख,ग
२३।१	वत्ति	वित्ति	क,ख,घ
२३।३	ओह °	ओघ °	क,ख हाटी

अध्ययन-९(३)

३।१	राइ °	राय °	ख,ग
३।३	निय °	नीय °	घ,जिचू

८।२	दुम्मणियं	दुम्मणयं	ग
१०।२	अपिसुणे	अपिस्सुणे	क,ख,ग

अध्ययन-९(४)

२।४	° यट्ठिए	° यत्थीए	अचू
७	आरहंतेहि	आरुहंतिहिं	अचू

अध्ययन-१०

४।२	निस्सियाणं	निसियाणं	क,ख,ग
६।२	हवेज्ज	भवेज्ज	अचू
७।४	वय	वइ	क,अचू
८।३	होही	होहिइ	अचू
१२।१	मसाणे	सुसाणे	अचू
१२।२	भायए	भाए	अचू
१८।१	वएज्जासि	वएज्जाहि	ख
१८।२	जेणन्नो	जेणन्नु, जेणन्न	क,घ,ख,ग

चूलिका-१

सू०१स्थान२	इत्तरिया	इत्तिरिया	ख,अचू
,, ,, ६	पडियाइयणं	पडिआयणं, पडिआययणं	जिचू,ख,ग,घ
,, ,, ९	वहाय	वहाए	अचू
,, ,, १८	वेयइत्ता	वेइत्ता	क,ख,गघ
,, ,, १८	अवेइयत्ता	अवेइत्ता	क,ख,ग,घ
२।१	जया	जहा	क
५।४	सेट्ठि °	सिट्ठि °	क,ख,ग,घ, हाटी
६।३	गलं	गलिं	ख,घ
६।३	गिलित्ता	गलित्ता	ख,ग
१०।४	° निरय	° नरय	क,घ,हाटी
१०।४	सारिसो	सालिसो	क,ग

४६।३	वइ	वाय, वय	जिचू ख
५३।२	विग्गहिओ	विग्गहओ	ख
५५।१	पडिच्छिन्न	पलिच्छिन्न	घ अचू जिचू
५८।१	मणुन्नेमु	मणुन्नेसु	क,ख ग,घ
५६।३	तण्हो	निण्हो	क
५६।४	सीई	सीत	अचू
६२।३	जसि	जसे	अचू
६३।४	चंदिमा	नदिमि	क,ख जिचू

अध्ययन ९(१)

२।२	अप्पसुए	अप्पसुय	ख ग
६।१	पावग	पावक	अचू
१२।१	जस्सतिए	जस्सतिय	अचू
१२।२	तस्सतिए	तस्सतिय	अचू
१४।३	बुद्धिए	बुद्धीए	ख
१५।१	जुत्तो	जुत्ते	क ग
१७।१	मेहावी	मेहावि	ख

अध्ययन-९(२)

२।३	सिग्घ	सग्घ	अचू
१५।३	सक्कारेंति	सक्कारति	अचू
२०।२	हउहिं	हेऊहिं	ख ग
२३।१	वत्ति	वित्ति	क,ख घ
२३।३	ओह ०	ओघ ०	क,ख हाटी

अध्ययन-९(३)

३।१	राइ ०	राय ०	ख,ग
३।३	निय ०	नीय ०	घ,जिचू

२५।२	निरट्ठं	निरत्थं	क्वचित्
२६।३	एगित्थिए	एगत्थिए	उ
३६।१	सुकडे त्ति	सुक्कडि त्ति	ऋ
३६।३	मुलट्ठे त्ति	मुलट्ठि त्ति	उ
४०।४	तोत्त	तुत्त	चू,ऋ
४१।४	पुणोत्ति	पुणित्ति	उ
		पुणत्ति	ऋ
४२।४	गरहं	गरिहं	उ,ऋ
४४।३	सुकयं	सुकडं	अ
अध्ययन-२			
सू० ३	दिगिंछा	दिगंछा	अ,उ
८।१	उसिणपरियावेणं	उसिणप्परियावे०	उ,ऋ
२४।२	पडिसंजले	पडसंजले	उ,ऋ
अध्ययन-३			
३।४	आहाकम्मेहिं	अहाकम्मेहि	अ,स,सु
२०।४	सासए	सासवे	उ
अध्ययन-४			
३।२	किच्चइ	कच्चई	उ,क
५।२	परत्था	परत्थ	चू
६।२	वीससे	विस्ससे	चू
६।४	भारुण्ड	भारंड	उ,ऋ,वृ
१३।३	दुगुंछमाणो	दुगंछमाणो	ऋ
अध्ययन-५			
३।२	असइं	असयं	उ
८।४	भूयग्गामं	भूयगामं	उ,ऋ,वृ
६।४	धुत्ते व	धुत्ते वा	अ,उ,ऋ
२।४	कमई	कम्मई	

११।४	परियाय	परियाइ	ख
१४।४	मुलभा	सुलहा	क,ख,ग,घ
१५।२	दुहोवणी	दुहोविणी	क,ख,ग
१५।२	० वत्तिणो	० वित्तिणो	क,अचू
१७।३	पयलेति	पयलंति	क,ख,ग,घ

चूलिका-२

५।२	पइ ०	पय ०	ख,ग,घ
६।३	ओसन्न	उसन्न	अचू
१०।३	एको	एको, एगो	अचू,क,ख,ग,घ
११।२	बीयं	वितियं	अचू
१३।१	पासइ	पस्सइ	अचू
१३।३	पासमाणो	पस्समाणो	अचू
१४।१	पासे	पस्से	अचू
१४।४	आइन्नओ	आइण्णो	अचू

दशवैकालिक के शब्दान्तर और रूपान्तरो की तालिका ऊपर दे दी गई है। उत्तराध्ययन के शब्दान्तर और रूपान्तरो की तालिका इस प्रकार है :

अध्ययन-१

२।४	विणीए	विणीइ	उ,ऋ
५।२	सूयरे	सूयरो	ऋ
१३।३	पक्रेन्ति	पकरिन्ति	उ
		पकरन्ति	ऋ
१४।३	कुव्वेज्जा	कुविज्जा	उ
१५।४	परत्य	परत्त	क्वचित्
१७।३	रहस्से	रहसे	उ,ऋ
१८।४	पडिम्सुणे	पडिसुणे	उ

अध्ययन-१२

१०।३	जाणाहि	जाणाह	अ
१४।३	विहूणा	विहीणा	ऋ
१५।१	तुब्भे	तुम्हे	अ
२१।४	जेणम्हि	जेणाम्हि	अ,उ,ऋ
२९।४	पगरेह	पकरेह	अ,उ,ऋ
४४।३	कम्म	कम्मे	अ,ऋ
४७।४	पत्त	पत्ति	अ,उ,ऋ

अध्ययन-१३

८।२	तुमे	तुब्भे	अ
२६।३	पंचालराया	पंचालरायं	उ
३१।१	तूरंति	तरंति	उ,ऋ

अध्ययन-१४

३।३	तहोसुयारो	तहेसुयारो	अ
१५।२	किच्च इमं	किच्चमिमं	अ,ऋ
२०।३	ओरुज्झमाणा	उ(अव)रज्जमाणा	उ
२०।४	नेव	नेय	अ
२४।४	अफला	अहला	ऋ
२५।४	सफला	अहला	ऋ
२७।३	जाणे	जाणइ	उ,ऋ
२८।१	पडिवज्जयामो	पडिवज्जेयामो	उ
२९।२	भिक्खायरियाइ	भिक्खायरियाए	अ
		भिक्खायरियाय	ऋ
३०।१	विहूणो	विहीणो	ऋ
३२।२	पजहामि	पयहामि	अ
४३।४	रागद्दोस	रागदोस	अ,उ,ऋ,च

१८।४	तण्हाए	तिण्हाइ	उ
२०।२	सपाहेओ	सपाहेज्जो	अ
		सपाहिज्जो	स
२०।४	तण्हा	तिण्हा	उ
२२।४	अवउज्झइ	अवयज्झइ	अ
२३।४	तुब्भेहिं	तुहेहिं	अ
२६।३	परिच्चाओ	परित्ताओ	उ
३५।२	महाभरो	महब्भरो	ऋ
३५।३	गुरुओ	गरुओ	अ
३८।१	अही	अहे	अ
५२।२	सिम्बलि	सांवलि	अ
५४।३	फालिओ	फाडिओ	उ
७३।१	एगभूओ	एगब्भूओ	आ
८५।३	अम्म	अम्ब	उ

अध्ययन-२०

३५।१	ततो हं	तोहं	ऋ
३७।२	दुहाण	दुक्खाण	अ

अध्ययन-२१

४।२	पसवई	पसूयई	अ
१५।४	गरहं	गरिहं	उ

अध्ययन-२२

१३।२	उत्तिमाए	उत्तमाइ	ऋ
४४।२	दिच्छसि	दच्छसि	क्वचित्
४६।२	संजयाए	संजइए	अ

अध्ययन-१५			
५।२	कुओ	कओ	उ,ऋ
६।१	जेण पुण	जेणं पुणो	अ
१२।४	वय-काय	वइ-काय	उ
अध्ययन-१६			
सू० ३	वितिगिच्छा	विचिकिच्छा	ऋ
१।२	थी	इत्थी	अ
३।१	संयव थीहिं	सथवित्थीहिं	अ
१२।१	कुइय रुइय	कुवियं रुदित	अ
१७।१	निअए	निइए	अ,आ,इ
१७।४	तहापरे	तहावरे	ऋ
अध्ययन-१८			
३।१	छुभित्ता	छुब्भित्ता	उ
१३।३	राय	राय	स
१३।४	पेच्चत्थ	पिच्चत्थ	अ,उ,ऋ
२०।४	मणो	मण	स
२७।२	मिच्छादिट्ठी	मिच्छदिट्ठी	इ
३६।२	महिड्डिओ	महड्डिओ	स
४२।२	निमूरणो	निमूदणो	उ
		निमूअणो	ऋ
५३।४	हवइ	मयइ	अ
५३।४	नीरए	नीरइ	अ
अध्ययन-१९			
६।२	अगिमिसाए	अणिमिसाइ	ऋ
१८।२	अपाहेओ	अपाहेज्जो	अ
		अपाहिओ	ऋ
		अपाहिज्जो	स

१८।४	तण्हाए	तिण्हाइ	उ
२०।२	सपाहेओ	सपाहेज्जो	अ
		सपाहिज्जो	स
२०।४	तण्हा	तिण्हा	उ
२२।४	अवउज्झइ	अवयज्झइ	अ
२३।४	तुब्भेहिं	तुहेहिं	अ
२६।३	परिच्चाओ	परित्ताओ	उ
३५।२	महाभरो	महब्भरो	उ,ऋ
३५।३	गुरुओ	गरुओ	अ
३८।१	अही	अहे	अ
५२।२	सिम्बलि	सांवलि	अ
५४।३	फालिओ	फाडिओ	अ,उ
७३।१	एगभूओ	एगब्भूओ	आ
८५।३	अम्म	अम्ब	उ

अध्ययन-२०

३५।१	ततो हं	तोहं	ऋ
३७।२	दुहाण	दुक्खाण	अ

अध्ययन-२१

४।२	पसवई	पसूयई	अ
१५।४	गरहं	गरिहं	उ

अध्ययन-२२

१३।२	उत्तिमाए	उत्तमाइ	ऋ
४४।२	दिच्छसि	दच्छसि	क्वचित्
४६।२	संजयाए	संजइए	अ

अध्ययन-२३

२६।२	वक्जडा	वक्कजडा	उ,ऋ
४१।२	निहन्तूण	णिहणिऊण	अ
४१।२	उवायओ	ओवायओ	अ

अध्ययन-२४

११।३	आहारोवहि	आहार उवहि	अ
१२।२	बीए	बीइए	अ,उ,ऋ
१८।१	वितियण्णे	विच्छिन्ने	

अध्ययन २५

६।४	उत्तमट्ठ	उत्तिमट्ठ	
१७।२	पजलिउडा	पजलियडा	अ
२८।३	तायन्ति	ताइन्ति	अ
३२।२	सिणायओ	सिणाइओ	अ
४१।४	सुक्को उ गोलओ	सुक्के उ गोलए	उ,ऋ

अध्ययन-२६

२।२	निसीहिया	निस्सीहिया	अ
३।१	पचमा	पचमी	उ
१३।१	आसाढे मासे	आसाढमासे	अ
१५।३	वइसाहेसु	वयसाहेसु	अ
१६।३	बीयतियंमी	बिइयतइयमि	उ,ऋ
१८।२	बीय	बितिए	अ
		बिइय	उ,ऋ
२६।४	छट्ठा	छट्ठी	स
२९।१	पसिढिल	पसढिल	अ,ऋ
४१।१	पडिक्कमित्तु	पडिक्कमित्ता	अ,आ

अध्ययन-२७

३।२	विहम्माणो	विहिम्माणो	उ,ऋ
६।२	एगेऽत्थ	एगित्थ	उ
		एगत्थ	ऋ

अध्ययन-२८

१६।२	आणारुई	आणरुई	उ,ऋ
३४।४	एवमब्भंतरो	एमेवब्भंतरो	अ
		एवमब्भिंतरो	उ,ऋ

अध्ययन-२९

सू० १	रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता	रोइत्ता फासित्ता पालित्ता	ऋ,स
सू० १	तीरइत्ता	तीरित्ता	इ
सू० १	आराहइत्ता	आराहित्ता	ऋ
सू० १	गरहणया	गरिहणया	उ
सू० ३	सिद्धिमग्गे	सिद्धिमग्ग	अ,उ,ऋ
सू० ५	विणइत्ता	विणयइत्ता	इ
सू० ६	मिच्छादंसण	मिच्छादरिसण	अ
सू० ८	अपुरक्कारं	अपुरेक्कारं	अ
सू० १५	थवथुइ	थयथुइ	अ,उ,ऋ
सू० ३३	विणियट्टणयाए णं	विणिवट्टणयाए णं	अ,उ
सू० ७३	आणापाणु	आणापाण	ऋ
सू० ७३	वेयणिज्जं	वेयणियं	अ

अध्ययन-३०

१८।१	रच्छासु व	रत्थासु य	अ
२०।१	पोरुसीणं	पोरिसीणं	अ

अध्ययन-३१

५।२	तेरिच्छ	तेरिक्ख	अ

अध्ययन-३२

१३।१	विराला	बिडाला	बृ
१५।३	जोग्ग	जोग	अ
		जुग्ग	उ
२५।२	तसि क्खणे	तस्सि खणे	अ
		तंगि खणे	उ
२६।१	परिग्गहे	परिग्गहमि	उ,ऋ
२६।४	आययई	आइयई	अ
३१।४	समाययन्तो	समाइयन्तो	अ
३७।२	अकालिय	अत्तालिय	अ
३८।२	तसि क्खणे	तम्हि खणे	अ
३८।४	अवरज्झइ	अवरज्झई	स
३६।१	रुइरसि	रुइयसि	अ
५१।२	तसि क्खणे	तसी खणे	अ
६५।२	अतालिसे	आयालिसे	अ
७६।४	गाहग्गहीए	गाहग्गिहीए	अ,ऋ
१०३।४	हिरिमे	हरिमे	उ,ऋ
१०८।३	दसण	दरिसण	उ,ऋ

अध्ययन ३३

६।२	दसणे	दरिसणे	उ,ऋ
११।४	अतोमुहुत्त	अत मुहुत्त	स

अध्ययन-३४

७।१	हिंगुलुय	हिंगुलग	अ,ऋ
१६।२	सिरीसकुसुमाण	सरीसकुसमाण	ऊ,ऋ
३१।४	गुत्तिहिं	गुत्तिमु	उ,ऋ
३३।४	हुंति	हवति	उ,ऋ

प्रस्तुत पाठ

दसवैकालिक का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका मुख्य आधार 'ख' प्रति है। किन्तु पूर्णतः मुख्यता किसी की भी नही है। आदि से अन्त तक कोई भी प्रति शुद्ध नही मिलती। ५।२।१८ मे 'कुपुडुप्पन्न नालियं' यह पाठ अगस्त्यचूर्णि मे है। हमने वही स्वीकृत किया है। चूर्णि की भाषा मे 'त' और 'ध' की बहुलता है। जैसे—इत्थिनो (इत्थिओ २।२), सतणाणि (सयणाणि २।२), जति (जइ २।९)। 'त' का लोप प्रायः नही किया गया है।[1] ये प्रयोग प्राचीन अवश्य है पर हम लोग प्राकृत व्याकरण की सीमा मे घिरे हुए हैं, इसलिए वे हमारे लिए अपरिचित से हो गए है। 'ध' को 'ह' भी प्रायः नही किया गया है।[2] जैसे –मधुकार (महुकार १।५), साधीणे (साहीणे २।३)। सप्तमी विभक्ति के स्थान मे तृतीया का प्रयोग हुआ है। जैसे—अहागडेहिं (अहागडेसु १।४)।

उत्तराध्ययन का पाठ भी आदि से अन्त तक किसी एक प्रति के आधार पर स्वीकृत नही किया गया है। पाठ सशोधन मे प्रयुक्त सभी आदर्शों मे ३६।६५ का एक शब्द 'पुहत्तेण' है। अर्थ की दृष्टि से यहाँ 'पुहुत्तेण' होना चाहिए। बृहद्वृत्ति (पत्र ६८६) मे इसके तीन अर्थ किए गये है—महत्त्व, बहुत्व और सामर्थ्य। ये तीनो पृथु' शब्द के अर्थ हो सकते है, 'पृथक्' शब्द के नही। अभिधान चिन्तामणि कोष (६।६५) मे पृथु शब्द के पर्यायवाची नामो मे 'महत्' और 'बहु'—दोनों शब्द है। बृहद्वृत्ति (पत्र ६८६) मे 'पृथक्त्वेन' मुद्रित हुआ है, वह सभवतः लिपि-दोष के कारण हुआ है। उसका मुद्रित मूल पाठ 'पुहुत्तेण' है। उक्त अर्थ के पर्यालोचन और उपलब्ध मुद्रित पाठ के आधार पर हमने 'पुहुत्तेण' पाठ स्वीकृत किया है।

इस प्रकार और भी अनेक पाठ चूर्णि और बृहद्वृत्ति के अर्थालोचनपूर्वक स्वीकृत किए गए है।

१–हेमशब्दानुशासन, ८।१।१७७।

२–वही, ८।१।१८७।

चौंतीसवें अध्ययन में 'पद्मलेश्या' के लिए 'पम्हलेस्सा' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'पम्ह' शब्द संस्कृत 'पक्ष्म' का प्राकृत रूपान्तर है। 'पद्म' शब्द के दो प्राकृत रूप बनते हैं—'पउम' और 'पम्म'। किन्तु 'पम्ह' रूप नहीं बनता। गोम्मटसार के लेश्या मार्गणाधिकार में पद्मलेश्या के लिए 'पम्म' और 'पउम'—दोनों शब्द प्रयुक्त हुए हैं।[1] हमने 'पम्ह' शब्द ही रखा है। क्योंकि पाठ-संशोधन में प्रयुक्त या अन्य किसी भी आदर्श में 'पम्म' या 'पउम' शब्द नहीं मिला।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के उद्धृत पाठ

प्रारम्भ से ही दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों सूत्र बहुर्चचित रहे है। अनेक आचार्यों ने अपनी-अपनी रचनाओं में स्थान-स्थान पर इन्हें उद्धृत किया है। ये उद्धृत पाठ शब्द और भाषा की दृष्टि से कुछ परिवर्तित रूप में प्राप्त होते हैं। यह भिन्नता क्षेत्र, काल और परम्परा के भेद के कारण हुई, ऐसा प्रतीत होता है। इन भिन्नताओं के कुछेक उदाहरण ये हैं :—

मूल पाठ—

वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुण जो मुसं वए ? ॥ (दशवैकालिक ७।५)

बृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ २६० पर उद्धृत पाठ—

वितहं पि तहामुत्तिं, जो तहा भासए नरो।
सो वि ता पुट्ठो पावेणं, किं पुणं जो मुसं वए ? ॥

मूल पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥ (दशवैकालिक ६।५९)

बृहत्कल्प भाष्य, भाग २, पृष्ठ ३७८ पर उद्धृत पाठ—

तिण्हमन्नयरागस्स, निसिज्जा जस्स कप्पई।
जराए अभिभूयस्स, वाहियस्सा तवस्सिणो ॥

१—गोम्मटसार (जीवकाण्ड), गाथा ४९२, ५०२।

मूल पाठ—

नगिणस्स वा वि मुडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ? ॥ (दशवैकालिक ६।६४)

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ६११ मे उद्धृत पाठ—

णग्गणस्स य मुण्डस्स य, दीहलोमणखस्स य ।
मेहुणादो विरत्तस्स, किं विभूसा करिस्सदि ? ॥

मूल पाठ—

अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा ॥
एगकज्जपवन्नाण विसेसे किं नु कारण ? ।
लिंगे दुविहे मेहावि ! कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥ (उत्तराध्ययन २३।२६,३०)

मूलाराधना, आश्वास ४, श्लोक ३३३, विजयोदया टीका, पृष्ठ ६११ मे उद्धृत पाठ—

आचेलक्को य जो धम्मो, जो वाय पुण उत्तरो ।
देसिदो वड्ढमाणेण, पासेण य महप्पणा ॥
एग धम्मे पवत्ताण, दुविधा लिंग-कप्पणा ।
उभएसिं पदिट्ठाण, मह संसय मागदा ॥

पाठान्तर की लम्बी परम्परा

आज हमे जो पाठान्तर उपलब्ध हो रहे हैं उनके प्रधान कारण चार हैं—

(१) परम्परा भेद
(२) लिपि दोष
(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मिश्रण
(४) व्याख्या का पाठ रूप मे परिवर्तन

(१) परम्परा भेद

वीर निर्वाण की सहस्राब्दी मे देवर्द्धिगणी ने आगमों को पुस्तकारूढ किया ।

उस समय जो पाठान्तर प्रचलित थे, उन्हें संकलित कर लिया गया। वे आगमों की व्याख्याओं में अब भी सुरक्षित हैं।[१]

अगस्त्य चूर्णि के रचना-काल में भी परम्परागत पाठ-भेद प्रचलित थे। वहाँ अनेक स्थलों में मतान्तरों का उल्लेख हुआ है।[२] जिनदास चूर्णि की भी यही स्थिति है। टीका-सम्मत पाठ तो इनसे बहुत भिन्न पड़ जाते हैं। दीपिकाकार टीका से भी आगे बढ़ जाते हैं। जिन श्लोकों की व्याख्या टीका में नहीं है, उन्हें दीपिकाकार मूल सूत्र मान उनकी व्याख्या करते हैं।

चूर्णिकार और टीकाकार के बीच जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद है। किन्तु दीपिका में जो पाठ-भेद है, उसका कारण परम्परा-भेद नहीं जान पड़ता। वह लिपिकर्त्ता से सम्बन्धित है। आदर्शों के लेखक प्रायः मुनि रहे हैं। वे व्याख्यान भी देते थे। व्याख्यान-काल में जो प्रासंगिक श्लोक और गाथाएँ कही जातीं, वे उसी स्थान पर लिख ली जातीं और आगे चल कर वे ही लम्बे काल में मूल में घुस जातीं। दशवैकालिक और उत्तराध्ययन के आदर्शों में ऐसा हुआ है। दशवैकालिक निर्युक्ति का निम्न श्लोक मूल के साथ लिखा गया है—

वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं।
पलियंकनिसेज्जा य, सिणाणं सोहवज्जणं॥ (हाटी, पत्र १९६)

इसी प्रकार उत्तराध्ययन २४।१२ के पश्चात् एक गाथा मूल आदर्श में लिखी हुई प्राप्त होती है। जैसे—

संकप्पो संरंभो, परितावकरो भवे समारंभो।
आरंभो उद्धवओ, सुद्धनयाणं तु सव्वेसिं॥

ऐसे पाठान्तरों में स्मृतिभ्रंश का भी योग रहा है। जो मुनि कण्ठस्थ-पाठ के आधार पर सूत्र-पाठ लिखते, उनके आदर्शों में स्मृति-दोष के कारण अक्षरों व

१—जिनदास चूर्णि, पृष्ठ २०४ :
नागज्जुणिया तु एवं पढंति—'एवं तु अगुणप्पेही अगुणाणं विवज्जए'।
२—देखो—दशवैकालिक, भाग २ में ३।१३ ; ५।१।७; ६।५४ के टिप्पण।

म्हीं कहीं श्लोको का विपर्यय हो जाता। उसके उत्तरवर्ती लेखक भी उसी का अनुसरण करते और पाठ भेद स्थिर हो जाता।

(२) लिपि दोष

पाठ भेद का सबसे प्रमुख कारण लिपि दोष रहा है। कालक्रम से लिपि मे परिवर्तन होता रहा है। पूर्ववर्ती लिपि उत्तरवर्ती लोगो से ठीक-ठीक नही पढी जाती और प्रतिलिपि करने वाले सभी विद्वान् नही होते। फलस्वरूप अक्षरो का विपर्यय हो जाता है। ऐसा बहुधा हुआ है।

(३) मूल पाठ और व्याख्या का सम्मिश्रण

जब आगमों को कण्ठस्थ रखने की परम्परा थी, तब उनकी व्याख्याएँ भी कण्ठस्थ रहती थी। कुछ सूत्र-स्पर्शी व्याख्याएँ पाठ के साथ साथ चलती थी। वे कालक्रम से मूल के साथ जुड गई। यह निष्कर्ष अगस्त्य चूर्णि से सहजतया निकल आता है। उसके अनुसार दशवैकालिक चतुर्थ अध्ययन के त्रस प्रकरण (सूत्राक ६) मे 'जे य कीडपयगा जा य कुंथुपिवीलिया सव्वे देवा'—ऐसा पाठ है। चूर्णिकार ने लिखा है कि यहा 'कीड' द्वीन्द्रिय जाति का प्रतीक है, इसलिए उसके द्वारा द्वीन्द्रिय जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए। इसी प्रकार पतग और कुन्थु भी अपनी-अपनी जाति के प्रतिनिधि है। उनके द्वारा उनकी जाति का ग्रहण कर लेना चाहिए।[1] 'सव्वे बेइदिया सव्वे तेइदिया, सव्वे चउरिंदिया, सव्वे पंचिदिया'—ये व्याख्या के शब्द आगे चल कर मूल पाठ बन गए। इसलिये टीकाकार ने उन्हे मूल मानकर उनकी व्याख्या की है।[2]

१–अगस्त्य चूर्णि

कीडग्गहणेण तज्जातीय गहणमिति सव्वे बेइदिया घेप्पति। पयग गहणेण चउरिंदिया। कुथु पिवीलियाभिहाणेण तिंदिया।

२–हारिभद्रीय टीका, पत्र १४२

ये च कीटपतङ्गा इत्यत्र कीटा—कृमय, 'एकग्रहणे तज्जातीयग्रहण मिति द्वीन्द्रिया शङ्खादयोऽपि गृह्यन्ते पतङ्गा—शलभा, अत्रापि पूर्ववच्चतुरिन्द्रिया सर्व एव गृह्यन्ते अत एवाह—सर्वे द्वीन्द्रिया—कृम्यादय सर्वे त्रीन्द्रिया—कुन्थ्वादय, सर्वे चतुरिन्द्रिया—पतङ्गादय। सर्वे पञ्चेन्द्रिया सामान्यत।

इसी प्रकार महाव्रतों के सूत्र-पाठ में भी कुछ सम्मिश्रण होने का उल्लेख मिलता है।[1]

(४) व्याख्या का पाठ रूप में परिवर्तन

उत्तराध्ययन २२।२४ में 'पंचमुट्ठीहिं' ऐसा पाठ आया है। वास्तव में यह पाठ 'पंचट्ठा' था। 'अट्ठा' का अर्थ है 'मुट्ठि'। पंच अट्ठा अर्थात् पंचमुष्टि। पंचट्ठा शब्द अपरिचित था। बृहद्वृत्ति (पत्र ४६२) में पंचट्ठा का अर्थ पंचमुष्टि है। कालान्तर में यह व्याख्यागत अर्थ ही मूल पाठ बन गया।

अन्य आगमों में भी ऐसे अनेक उदाहरण हमें प्राप्त हुए हैं।

दशवैकालिक : प्रति परिचय

क : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'संघीय संग्रह' की है। इसके पृष्ठ १७ व पत्र ३४ हैं। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियां १२-१३ व प्रत्येक पंक्ति में ४६ से ५३ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों तरफ लिखी हुई है। प्रति-काली स्याही से व गाथाओं की संख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥१० दशवैकालिक समाप्तमिति ।।व।। संवत् १५०३ वर्षे आषाढ़ मासे कृष्ण पक्षे चतुर्थी दिने शनिवारे ।। दशवैलिखितं ।। सुन्दरसंवेगगणि योग्यं ।।

ख : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'संघीय संग्रह' की है। इसके पत्र १६ व पृष्ठ ३८ हैं। प्रत्येक पत्र लगभग १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की पंक्तियाँ १३ व प्रत्येक पंक्ति में ४४ से ४६ तक अक्षर हैं। अवचूरी पाठ के चारों

१–अगस्त्य चूर्णि :

केति सुत्तमियं पढन्ति, केति वृत्तिगतं विसेसिंत्ति, जहा से तं पाणातिवाते चउव्विहे तं जहा दव्वतो, खेत्ततो, कालतो, भावतो।

तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बडे तथा अवचूरी के अक्षर छोटे है। प्रति काली स्याही से व गाथाओं की सख्या लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

सवत् १४९६ वर्षे वैशाख मासे प्रतिपदाया तिथौ रविवासरे ॥ लिखित धर्मचन्द्रेण ॥

ग : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति भी हमारे 'सघीय सग्रह' की है। इसके पत्र १६ व पृष्ठ ३२ है। प्रत्येक पत्र १०। इच लम्बा व ४। इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पक्तियाँ १४ व प्रत्येक पक्ति मे ५२ से ५७ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारों तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बडे तथा अवचूरी के अक्षर छोटे हैं। प्रति काली स्याही से व गाथाओं की सख्या व पद लाल स्याही से लिखे गए हैं। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्न प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

दसवेयालिय सुयक्खधो समत्तो ॥ग्र॥ शिवमस्तुचिर विजीयात् ॥

सवत् १४०० वर्षे भाद्रपद सुदि ११ तिथौ शुक्रवासरे समस्त देशाधिदेशे श्री मालवकाख्ये तन्मध्यवर्त्तिन्या महापुर्यामिवत्या पातसाह श्री महसुदर राज्ये प० श्री विशालकीर्ति पूज्याना पादप्रसादाद्देपाकेन लिखितमिति।

घ : दशवैकालिक पाठ और अवचूरी (हस्त लिखित)

यह प्रति 'गधैया सग्रहालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ व पृष्ठ ६४ है। प्रत्येक पत्र १०। इच लम्बा व ४। इच चौडा है। प्रत्येक पृष्ठ मे पाठ की पक्तियाँ ८ से १३ व प्रत्येक पक्ति मे २९ से ३२ तक अक्षर है। अवचूरी पाठ के चारा तरफ लिखी हुई है। पाठ के अक्षर बडे तथा अवचूरी के अक्षर छोटे हैं। प्रति काली स्याही से व गाथाओ के सख्याक लाल स्याही से लिखे हुए हैं। अनुमानतः १४वी शताब्दी की लिखी हुई होनी चाहिए। प्रति के अन्त मे लेखक की निम्न प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

इति श्री दसवैकालिक सूत्र समाप्त। लिखित ॥ वा० श्री साधु विजयगणिभिः कल्याणमस्तु सर्व-जनोः ॥ लेखकपाठकयोः भद्र भूयात् ॥

अ, अचू० : अगत्स्यसिंह स्थविर कृत (जैसलमेर भंडारस्थ) ताड़पत्रीय दशवैकालिक चूर्णि

इसकी फोटो-प्रिन्ट प्रति 'सेठिया पुस्तकालय', सुजानगढ़ की है। इसकी पत्र-संख्या १६५ व पृष्ठ ३३० हैं। पत्र क्रमांक संख्या १७७ से ३४२ तक है। फोटो-प्रिन्ट पत्र-संख्या ३६ तथा एक पृष्ठ में करीब ६-१० पृष्ठों के फोटो हैं। किसी में ७-८ भी हैं। प्रत्येक पत्र १४ इंच लम्बा व ३ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में ४ या ५ पंक्तियां हैं। कहीं पंक्तियाँ अधूरी हैं। प्रत्येक पंक्ति में १४८ के करीब अक्षर हैं। यह फोटो-प्रिन्ट प्रति मुनि श्री पुण्यविजयजी से उपलब्ध हुई।

आ, अचू०पा० : अगस्त्यसिंह पाठान्तर

ज, जिचू० : जिनदास महत्तर कृत दशवैकालिक की चूर्णि (मुद्रित)

श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी पेढी—मुकाम रतलाम, जैनबन्धु प्रिन्टिग प्रेस इन्दौर, वि० सं० १९८९ में प्रकाशित। पृष्ठ ३८०।

जा, जिचू० पा० : जिनदास चूर्णि पाठान्तर

ह, हाटी० : हारिभद्रीय दशवैकालिक की टीका (मुद्रित)

शाह नगीन भाई घेला भाई जव्हेरी, ४२६ जव्हेरी बाजार द्वारा निर्णय-सागर मुद्रणालय कोल भाट गली बम्बई-२३ में मुद्रापित प्रकाशित। विक्रम संवत् १९७४। पत्र २८६।

हा, हाटी० पा० : हारिभद्रीय वृत्ति के पाठान्तर

उत्तराध्ययन : प्रति परिचय

अ : मूल पाठ सावचूरी (हस्त-लिखित)

यह प्रति हमारे 'संघीय-संग्रह' की है। इसके पत्र ९६ व पृष्ठ १९२ हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा व ४। इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की ६ पंक्तियों से लेकर १४ पंक्तियाँ तक हैं। प्रत्येक पंक्ति में लगभग ३१ से ३४ तक अक्षर हैं। पाठ के चारों ओर अवचूरी लिखी हुई है। अवचूरी से पाठ के अक्षर बड़े हैं। लिपि सुन्दर, शुद्ध एवं पढ़ने में स्पष्ट है। प्रति काली स्याही से व गाथाओं के संख्यांक व अध्ययनों की पूर्ति लाल स्याही से की गई है। यह विक्रम संवत् १५३८ में लिखी हुई है। प्रति के अंत में लेखक की निम्नलिखित

सो पालइ निज्जरा विउला ॥ ३ ॥ जस्साढत्ती एए कह विसमप्पंति विग्घर-
हियस्स । सोलक्खिज्जइ भव्वो ॥ पुव्वरिसी एव भासंति ॥४ ॥छ॥ शुभं
भवतु ॥श्रीः॥

उ : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है। अनुमानतः सं० १५०० में लिखी हुई है। इसके पत्र ५९ व पृष्ठ ११८ हैं। पत्र १० इंच लम्बे और ४॥ इंच चौड़े हैं। पत्र के दोनों तरफ। इंच का मार्जिन है। पाठ और अवचूरी काली स्याही से लिखे हुए हैं। श्लोकांक तथा मार्जिन की रेखाएँ लाल स्याही में हैं। दोनों तरफ के मार्जिन के मध्य भाग में पाठ और चारों तरफ अवचूरी है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ८ आर अधिकतम १५ पंक्तियाँ हैं। प्रति के अन्त में निम्नलिखित प्रशस्ति है :

इति श्री उत्तराध्ययनावचूरिः समाप्ता ॥ छ ॥ श्री रस्तु ॥ छ ॥ ए प्रति भ० श्री विद्यासागर सूरि पूसरीया शिष्य शुयवाय कर्मसागरे प्रति लिधी कलकवल रहित सह ।

श : उत्तराध्ययन पाठ व अवचूरी सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सरदारशहर की है। विक्रमाब्द १५३५ में लिखी गई है। इसके पत्र ७९ व पृष्ठ १५८ हैं। प्रत्येक पत्र १०। इंच लम्बा और ४॥ इंच चौड़ा है। यह प्रति काली स्याही से स्पष्ट लिखित है। इसके श्लोकांक तथा दोनों तरफ का मार्जिन लाल स्याही में है। प्रत्येक पृष्ठ में पाठ की न्यूनतम ६ और अधिकतम १३ पंक्तियाँ हैं। अवचूरी मार्जिन तथा पाठ के ऊपर और नीचे के भाग में लिखी हुई है। अवचूरी के अक्षर से पाठ के अक्षर लगभग ड्योढे बडे हैं। प्रति के अंत में निम्नलिखित प्रशस्ति है :

लिखिता श्री उत्तराध्ययनावचूरिः स्वपरोपकृत्यैः ॥ १ शुभं भवतु ॥१॥
सं० १५३५ वर्ष आसोज सुदि ५ भोमे अद्येह श्री ।

स : उत्तराध्ययन सर्वार्थसिद्धि टीका सहित (हस्त-लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलालजी दुधोड़िया के संग्रहालय की है।

प्रशस्ति (पुष्पिका) है :

॥ इति षट्त्रिंशदुत्तराध्ययना नामवचूरि समाप्ताः ॥ श्री रस्तु ॥

सं० १५३८ वर्षे विशाख सुदि १० रवि लिपित ॥ चिरं नंदतु ॥१॥१

आ : उत्तराध्ययन सूत्र पाठ (हस्त लिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुधोरिया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ८९ व पृष्ठ १७८ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में ११ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ३२ से ४० तक हैं। अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही से व लेखक की प्रशस्ति लाल स्याही से लिखी हुई है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है :

> ॥ संवत १७६१ वर्षे श्री पत्तनपुरवरे श्री जिनवल्लभ सूरि सन्ताने श्री खरतर गच्छेश नभोंगण दिनकर करणि सैद्धान्तिक सिरोमणि श्रीजिनभद्र सूरि श्री जिनचन्द्र सूरि तत्पट्ट प्रतिष्ठित श्री जिनभद्र सूरि पट्ट पूर्वाचार सत्यवरावतार भाग्य सौभाग्य भगी सुभग सारम्यार भट्टारक प्रभु श्री श्री श्री जिनहंस सूरि पट्टे श्री श्री श्री जिनमाणिक्य सूरिभि: सार्वभौमै: वा० आणंद नंदन गणाय प्रसादी कृतेय प्रति।

इ : उत्तराध्ययन मूल (हस्तलिखित)

यह प्रति छापर निवासी मोहनलाल दुधोरिया के संग्रहालय की है। इसके पत्र ३८ व पृष्ठ ७६ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा व ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ में १७ पंक्तियाँ व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर लगभग ५०-५१ हैं। अक्षर बड़े तथा पढ़ने में स्पष्ट हैं। प्रति काली स्याही में लिखी गई है। यह प्रति अनुमानतः १६ वीं शताब्दी में लिखी गई है। प्रति के अंत में लेखक की निम्नलिखित प्रशस्ति है :

> ॥ इति श्रीमदुत्तराध्ययन श्रुतस्कंध समाप्तः ॥ परमास प्रणीत ॥ छ ॥ निर्युक्तिकार एतन्माहात्म्यमाह ॥ जे किर भवसिद्धीया। परित्त समारिगया जे भव्वा। ते किर पढंति एए छत्तीस उत्तरज्झाए तम्हा जिण पन्नत्ते। अणतगम पज्जवेहिं संजुत्ते। अज्झाए जह जोग। गुरुप्पसाया अहिज्जिज्जा ॥२॥ जो ज्झागविहीद वहित्ता एए जो लिहइ सुत्त अच्छ व ॥ भासेइय भवियजणो

अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्य श्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्य श्री के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊँ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादन में मुनि दुलहराजजी का अविकल योग रहा है।

पाठ-संपादन के कार्य में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी ने श्रम और निष्ठापूर्वक योग दिया है।

शब्दानुक्रम आदि कार्य में मुनि श्रीचन्द्रजी 'कमल' अत्यन्त दत्तचित्तता से लगे रहे हैं। मुनि हनुमानमलजी (सरदारशहर) का भी उसमें उल्लेखनीय योग रहा है।

विषयानुक्रम मुनि रूपचन्द्रजी ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

इस कार्य में स्वर्गीय श्री मदनचन्दजी गोठी, आगम-सम्पादन-समिति के संयोजक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया, आदर्श साहित्य संघ के संचालक व व्यवस्थापक श्री हनूतमलजी सुराणा और जयचन्दलालजी दफ्तरी का भी अविरल योग रहा है। आदर्श साहित्य संघ की सहयुक्त सामग्री ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योग-दान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

बीदासर (राजस्थान) —मुनि नथमल

१५, अगस्त, १९६६

इसके पत्र ३२३ और पृष्ठ ६४६ हैं किन्तु प्रारम्भ के १६ पत्र प्राप्त नहीं हैं। प्रति बहुत प्राचीन है। अनुमानतः १६ शताब्दी मे लिखी हुई होनी चाहिए। पत्र इतने जीर्ण हैं कि कभी-कभी हाथ के स्पर्श से ही गिरने लगते हैं। प्रति प्रायः बहुत शुद्ध लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र १०॥ इच लम्बा व ४। इच चौड़ा है। प्रत्येक पृष्ठ मे १५ पक्तियाँ व प्रत्येक पक्ति मे लगभग ५३-५४ अक्षर हैं। टीका और पाठ समान अक्षर मे ही लिखा हुआ है।

सु मुखबोधा टीका, नेमिचन्द्राचार्य कृत (मुद्रित)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई।

बृ बृहद्वृत्ति 'शान्त्याचार्य कृत' (मुद्रित-निर्णयसागर प्रेस, बम्बई)

प्रकाशक :—देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारे ग्रन्थाक ३३।

चू चूर्णि (गोपालिक महत्तर शिष्य कृत)

श्रेष्ठि देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धारे, ग्रथाक ३३।

मोहमयीपत्तने वीर सम्वत् २४४२।

कृतज्ञता-ज्ञापन

जैन परम्परा मे वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएँ हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम वाचना नही हुई। उनके वाचना-काल मे जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि मे बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्य श्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नही हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थ दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्य श्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति मे अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का

भूमिका

भूमिका का विषयानुक्रम

*

भूमिका

१ : आगम-सूत्रों का वर्गीकरण

जैन आगमों का प्राचीनतम वर्गीकरण पूर्व और अंग के रूप में प्राप्त होता है। पूर्व संख्या में चौदह थे[1] और अंग बारह[2]।

दूसरा वर्गीकरण आगम-संकलन-कालीन है। उसमें आगमों को दो वर्गों में विभक्त किया गया है—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य।[3]

तीसरा वर्गीकरण इन दोनों का मध्यवर्ती है। उसमें आगम-साहित्य के चार वर्ग किए गए हैं—(१) चरण-करणानुयोग, (२) धर्मकथानुयोग, (३) गणितानुयोग और (४) द्रव्यानुयोग।

एक वर्गीकरण सबसे उत्तरवर्ती है। उसके अनुसार आगम चार वर्गों में विभक्त होते हैं—(१) अंग, (२) उपांग, (३) मूल और (४) छेद।

नंदी के वर्गीकरण में मूल और छेद का विभाग नहीं है। उपांग शब्द भी अर्वाचीन है। नंदी के वर्गीकरण में इस अर्थ का वाचक अनंग-प्रविष्ट या अंग-बाह्य शब्द है।

आगमों का एक वर्गीकरण अध्ययन-काल की दृष्टि से भी किया गया है। दिन और रात के प्रथम एवं अन्तिम प्रहर में पढ़े जाने वाले आगम 'कालिक' तथा दिन और रात के चारों प्रहरों में पढ़े जाने वाले आगम 'उत्कालिक' कहलाते हैं।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन—ये दोनों 'मूल-सूत्र' कहे जाते हैं।

१–समवायाङ्ग, समवाय १४ :

चउदस पुव्वा प० तं०—

उप्पायपुव्वमग्गेणियं च तइयं च वीरियं पुव्वं।
अत्थीनत्थिपवायं तत्तो नाणप्पवायं च॥
सच्चप्पवायपुव्वं तत्तो आयप्पवायपुव्वं च।
कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवे नवमं॥
विज्जाअणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसं पुव्वं।
तत्तो किरियविसालं पुव्वं तह बिंदुसारं च॥

२–वही, समवाय १३६ :

दुवालसंगे गणिपिडगे प० तं०—आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाओ उवासगदसाओ अंतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए।

३–नंदी, सूत्र ४३ :

अहवा तं समासओ दुविहं पण्णत्तं तंजहा—अङ्गपविट्ठं अङ्गबाहिरं च।

२ : मूल सूत्र

दसवैकालिक और उत्तराध्ययन गणधर कृत नहीं हैं इसलिए अंग बाह्य है। इन्हें मूल सूत्र माना गया इसका कोई प्राचीन उल्लेख उपलब्ध नहीं है। अनेक विद्वानों ने मूल शब्द की अनेक आनुमानिक व्याख्याएँ की हैं। दसवैकालिक एक समीक्षात्मक अध्ययन में इसका उल्लेख हम कर चुके हैं।

प्रो० विन्टरनित्ज ने मूल शब्द को मूल ग्रन्थ के अर्थ में स्वीकृत किया है। उनका अभिप्राय यह है—इन सूत्रों पर अनेक टीकाएँ हैं। इनसे मूल ग्रन्थ का भेद करने के लिए इन्हें मूल सूत्र कहा गया।[1] यह प्रामाणिक नहीं है। प्रो० विन्टरनित्ज ने पिण्डनियुक्ति को भी मूल वर्ग में सम्मिलित किया है। किन्तु उसकी अनेक टीकाएँ नहीं हैं। यदि अनेक टीकाएँ होने के कारण ही मूल सूत्र की संज्ञा दी गई तो पिण्डनियुक्ति इस वर्ग में नहीं आ सकती।

डॉ० सरपेन्टियर[2] डा० ग्यारीनो[3] और प्रो० पटवर्धन[4] ने मूल-सूत्र का अर्थ भगवान महावीर के मूल शब्दों का संग्रह किया है। किन्तु यह भी संगत नहीं है।

१—ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर भाग २ पृ० ४६६ पाद टिप्पणी १

Why these texts are called root Sutras is not quite clear Generally the word mula is used in the sense of fundamental text in contradistinction to the commentary Now as there are old and important commentaries in existence precisely in the case of these texts they were probably termed Mula texts

२—दी उत्तराध्ययन सूत्र भूमिका पृ० ३२

In the Buddhist work Mahavyutpatti 245 1265 mulagrantha seems to mean original text i e the words of Buddha himself Consequently there can be no doubt whatsoever that the Jains too may have used mula in the sense of original text and perhaps not so much in opposition to the later abridgments and commentaries as merely to denote the actual words of Mahavira himself

३—ल रिलीजीयन द जैन पृ० ७९

The word Mula Sutra is translated as tratés originaux

४—दी दशवैकालिक सूत्र ए स्टडी पृ० १६

We find however the word Mula often used in the sense of original text and it is but reasonble to hold that the

भगवान् महावीर के मूल शब्दों के कारण ही किसी आगम को 'मूल' संज्ञा दी जाय तो वह आचारांग के प्रथम श्रुतस्कंध को ही दी जा सकती है। वह सबसे प्राचीन और महावीर के मूल शब्दों का संकलन है।

दशवैकालिक और उत्तराध्ययन मुनि की जीवन-चर्या के प्रारम्भ में मूलभूत सहायक बनते हैं तथा आगमों का अध्ययन इन्हीं के पठन से प्रारम्भ होता है। इसीलिए इन्हें 'मूल-सूत्र' की मान्यता मिली, ऐसा प्रतीत होता है। डॉ० शुब्रिंग का अभिमत भी यही है।[1]

हमारा दूसरा अभिमत यह है कि इनमें मुनि के मूल गुणों—महाव्रत, समिति आदि का निरूपण है। इस दृष्टि से इन्हें 'मूल-सूत्र' की संज्ञा दी गई।

३ : मूलाचार और मूल-सूत्र

'मूलाचार' आचार्य वट्टकेर की रचना है।[2] उससे भी उक्त अभिमत की पुष्टि होती है। मूलाचार में मुनि के मूल आचार का निरूपण है। उसमें उत्तराध्ययन के अनेक श्लोक संगृहीत हैं।[3]

---

word Mūla appearing in the expression Mūlasūtra has got the same sense. Thus the term Mūlasūtra would mean "the original text", i.e., "the text containing the original words of Mahāvīra (as received directly from his mouth)". And as a matter of fact we find, that the style of Mūlasūtras Nos. 1 and 3 (उत्तराध्ययन and दशवैकालिक) as sufficiently ancient to justify the claim made in their favour by their original title, that they represent and preserve the original words of Mahāvīra.

१—दसवेयालिय सुत्त, भूमिका, पृ० ३ :

Together with the Uttarajjhāyā (commonly called Uttarajjjhayana Sutta) the Āvassaganijjuti and the Pindanijjutti it forms a small group of texts called Mūlasutta. This designation seems to mean that these four works are intended to serve the Jain monks and nuns in the beginning (मूल) of their career.

२—मुनि कल्याणविजयजी गणी ने 'श्रमण भगवान् महावीर' पृ० ३४३ पर 'मूलाचार' का रचना-काल विक्रम की सातवीं शताब्दी के आस-पास माना है।

३—मूलाचार, ४।६९	मिलाइए—उत्तराध्ययन,	३६।२५७
" ४।७०	" "	३६।२५८
" ४।७२	" "	३६।२६०
" ४।७३	" "	३६।२६१

दशवैकालिक उत्तराध्ययन आवश्यक तथा ओघनिर्युक्ति पिण्डनिर्युक्ति को मूल-सूत्र' वर्ग में स्थापित करने वाले आचार्य के मन में वही कल्पना रही है जो कल्पना आचार्य वट्टकेर के मन में मूलाचार' के अधिकार निर्माण में रही है। 'मूल-सूत्रों की विषय वस्तु से जो अधिकार तुलनीय है वे ये है—

(१) मूल गुणाधिकार	मिलाइए—दशवैकालिक उत्तराध्ययन
(४) समाचाराधिकार	मिलाइए—ओघनिर्युक्ति
(६) पिण्ड शुद्धि अधिकार	मिलाइए—पिण्डनिर्युक्ति
(७) षडावश्यकाधिकार	मिलाइए—आवश्यक

इस सादृश्य के आधार पर दशवैकालिक उत्तराध्ययन आदि को मूल-सूत्र' वर्ग में रखने का हेतु बुद्धिगम्य हो जाता है।

४ : मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना और श्रुत-पुरुष

मूल-सूत्र वर्ग की कल्पना का एक कारण श्रुत-पुरुष (आगम-पुरुष) भी हो सकता है। नंदी चूर्णि में श्रुत-पुरुष की कल्पना की गई है। पुरुष के शरीर में बारह अंग होते है—दो पैर दो जंघाएँ दो ऊरु दो गात्रार्ध (उदर और पीठ) दो भुजाएँ ग्रीवा और सिर। आगम-साहित्य में जो बारह अंग है वे ही श्रुत-पुरुष के बारह अंग हैं।[1] अंग-बाह्य श्रुत-पुरुष के उपांग स्थानीय है। यह परिकल्पना अंग प्रविष्ट और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक वर्गों के आधार पर हुई है। इसमें मूल और छेद की कोई चर्चा नहीं है। हरिभद्रसूरि (विक्रम की ८ वी शताब्दी) और आचार्य मलयगिरि (विक्रम की १३ वी शताब्दी) के समय तक भी श्रुत-पुरुष की कल्पना में अंग प्रविष्ट और अंग-बाह्य—ये दो ही परिपार्श्व रहे है। इन दोनों आचार्यो ने चूर्णि का अनुसरण किया है। उसमें कोई नई बात नहीं जोडी है।[2] आचार्य मलयगिरि ने तो अंग प्रविष्ट तथा आचारांग आदि को भी मूल भूत' कहा है।[3] श्रुत-पुरुष की प्राचीन रेखा-कृतियों में अंग प्रविष्ट श्रुत की स्थापना इस प्रकार है —

१—नंदी चूर्णि, पृ० ४७

इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगभागठितं तं अंगपविट्ठं भण्णइ।

२—नंदी हारिभद्रीय वृत्ति, पृ० ९०।

३—नंदी, मलयगिरीया वृत्ति, पत्र २०३

यद् गणधरदेवकृत तदंगप्रविष्ट मूलभूतमित्यर्थ, गणधरदेवा हि मूलभूतमाचारादिक श्रुतमुपरचयन्ति।

१—दायाँ पैर	=	आचारांग
२—बायाँ पैर	=	सूत्रकृतांग
३—दाईं जंघा	=	स्थानांग
४—बाईं जंघा	=	समवायांग
५—दायाँ ऊरु	=	भगवती
६—बायाँ ऊरु	=	ज्ञाताधर्मकथा
७—उदर	=	उपासकदशा
८—पीठ	=	अन्तकृद्दशा
९—दाईं भुजा	=	अनुत्तरोपपातिकदशा
१०—बाईं भुजा	=	प्रश्नव्याकरण
११—ग्रीवा	=	विपाक
१२—शिर	=	दृष्टिवाद

इस स्थापना के अनुसार भी मूल-स्थानीय (चरण-स्थानीय) आचारांग और सूत्रकृतांग हैं।[1]

श्रुत-पुरुष की अन्य रेखा-कृतियों में स्थापना भिन्न प्रकार से मिलती है। उनमें मूल-स्थानीय चार सूत्र हैं—आवश्यक, दशवैकालिक, पिण्डनिर्युक्ति और उत्तराध्ययन। नंदी और अनुयोगद्वार को व्याख्या-ग्रन्थों (या चूलिका-सूत्रों) के रूप में 'मूल' से भी नीचे प्रदर्शित किया है।[2]

पैंतालीस आगमों को प्रदर्शित करने वाली श्रुत-पुरुष की रेखाकृति बहुत अर्वाचीन है। यदि इनकी कोई प्राचीन रेखाकृति प्राप्त हो तो प्रस्तुत विषय की प्रामाणिक जानकारी हो सकती है। जिस समय पैंतालीस आगमों की मान्यता स्थिर हुई, उसके आस-पास या उसी समय, संभव है श्रुत-पुरुष की स्थापना में भी परिवर्तन हुआ। चूर्णि-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' (चरण-स्थान) में आचारांग और सूत्रकृतांग थे। उत्तर-कालीन श्रुत-पुरुष के 'मूल-स्थान' मे दशवैकालिक और उत्तराध्ययन आ गए। इन्हें 'मूल-सूत्र' मानने का यह सर्वाधिक संभावित हेतु है।

१–श्री आगम पुरुषनुं रहस्य, पृष्ठ ५० के सामने (श्री उदयपुर, मेवाड़ के हस्त-लिखित भण्डार से प्राप्त प्राचीन) श्री आगम पुरुष का चित्र।

२–वही, पृष्ठ १४ तथा ४९ के सामने वाला चित्र।

५ : अध्ययन-क्रम का परिवर्तन और मूल सूत्र

आगमिक अध्ययन के क्रम में जो परिवर्तन हुआ उससे भी इसकी पुष्टि होती है। दशवकालिक की रचना से पूर्व आचाराग के बाद उत्तराध्ययन पढा जाता था। दशवैकालिक की रचना होने के पश्चात दशवैकालिक के बाद उत्तराध्ययन पढा जाने लगा।[1]

प्राचीन काल में आचाराग के प्रथम अध्ययन शास्त्र परिज्ञा का अध्ययन करा कर शैक्ष की उपस्थापना की जाती थी और फिर वह दशवैकालिक के चतुर्थ अध्ययन षड्जीवनिका का अध्ययन करा कर की जाने लगी।[2]

प्राचीन काल में आचाराग के द्वितीय अध्ययन के पचम उद्देशक के आमगध सूत्र का अध्ययन करने के बाद मुनि पिण्डकल्पी होता था। फिर वह दशवैकालिक के पाचवें अध्ययन पिण्डैषणा के अध्ययन के पश्चात पिण्डकल्पी होने लगा।[3]

ये तीनो तथ्य इस बात के साक्षी है कि एक समय आचाराग का स्थान दशवैकालिक ने ले लिया। आचार की जानकारी के लिए आचाराग मूल भूत था वैसे ही दशवैकालिक भी आचार ज्ञान के लिए मूल भूत बन गया। सभव है आदि में पढे जाने के कारण तथा मुनि की अनेक मूल भूत प्रवृत्तियो के उदबोधक होने के कारण इन्हे मूल-सूत्र की सज्ञा दी गई।

६ : मूल-सूत्रों की सख्या

१—उपाध्याय समयसुन्दर ने सामाचारी शतक में (इसकी रचना विक्रम स० १६७२ में हुई थी) मूल सूत्र चार माने है—(१) दशवैकालिक (२) ओघनिर्युक्ति (३) पिण्डनिर्युक्ति और (४) उत्तराध्ययन।

१–व्यवहार भाष्य उद्देशक ३ गाथा १७६
आयारस्स उ उवरिं उत्तरज्झयणा उ आसि पुव्वं तु।
दसवेयालिय उवरिं इयाणिं किं ते न होंती उ॥

२–वही उद्देशक ३, गाथा १७४
पुव्वं सत्थपरिण्णा, अधीय पढियाइ होउ उवट्ठवणा।
इण्हिं छज्जीवणया किं सा उ न होउ उवट्ठवणा॥

३–वही उद्देशक ३ गाथा १७५
बितितमि बमचेरे पचमउद्देसे आमगधम्मि।
सुत्तमि पिंडकप्पी इइ पुण पिंडेसणाएओ॥

२—भावप्रभसूरि (१८ वीं शताब्दी) ने भी 'मूल-सूत्र' चार माने हैं—(१) उत्तराध्ययन, (२) आवश्यक, (३) पिण्डनिर्युक्ति-ओघनिर्युक्ति और (४) दशवैकालिक।[१] ये नाम उपाध्याय समयसुन्दर के नामों से भिन्न हैं। इसमें पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को एक मानकर 'आवश्यक' को भी 'मूल-सूत्र' माना गया है।

३—स्थानकवासी[२] और तेरापन्थ[३] सम्प्रदाय में उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, नंदी और अनुयोगद्वार—इन चार सूत्रों को 'मूल' माना गया है।

४—आधुनिक विद्वानों ने 'मूल-सूत्रों' की संख्या और क्रम-व्यवस्था निम्न प्रकार मानी है :

(क) प्रो० वेवर और प्रो० बूलर—उत्तराध्ययन, आवश्यक और दशवैकालिक को 'मूल-सूत्र' ठहराते हैं।

(ख) डॉ० सरपेन्टियर, डॉ० विन्टरनित्ज और डॉ० ग्यारिनो—उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक और पिण्डनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' मानते हैं।

(ग) डॉ० सुब्रिंग—उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, आवश्यक, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्रों' की संज्ञा देते हैं।[४]

(घ) प्रो० हीरालाल कापड़िया—आवश्यक, उत्तराध्ययन, दशवैकालिक, दशवैकालिक चूलिकाएँ, पिण्डनिर्युक्ति और ओघनिर्युक्ति को 'मूल-सूत्र' कहते हैं।[५]

उक्त सब अभिमतों को संकलित करने पर 'मूल-सूत्रों' की संख्या आठ हो जाती है—आवश्यक, दशवैकालिक, दशवैकालिक-चूलिकाएँ, उत्तराध्ययन, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, अनुयोगद्वार और नंदी।

आगमों के वर्गीकरण में आवश्यक का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। अनंग-प्रविष्ट आगमों के दो विभाग किए गए हैं। उनमें पहला आवश्यक और दूसरा आवश्यक-व्यतिरिक्त है। दशवैकालिक, उत्तराध्ययन आदि आगम दूसरे विभाग के अन्तर्गत हैं, जब कि आवश्यक का अपना स्वतंत्र स्थान है। इसलिए इसे 'मूल-सूत्रों' की संख्या में सम्मिलित करने का कोई हेतु प्रस्तुत नहीं है।

१—जैनधर्मवरस्तोत्र, श्लोक ३० की स्वोपज्ञ वृत्ति—अथ उत्तराध्ययन-आवश्यक-पिण्डनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्ति-दशवैकालिक—इति चत्वारि मूलसूत्राणि।

२—श्री रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ, आगम और व्याख्या साहित्य, पृष्ठ २७।

३—श्रीमज्जयाचार्य कृत प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध, आगमाधिकार, पृ० ७३-७४।

४—ए हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर ऑफ दी जैन्स, पृष्ठ ४४-४५।

५—वही, पृ० ४८।

ओघनिर्युक्ति और पिण्डनिर्युक्ति—ये दोनों आगम नहीं हैं किन्तु व्याख्या-ग्रन्थ हैं। पिण्डनिर्युक्ति दशवैकालिक के पाँचवें अध्ययन—पिण्डैषणा—की व्याख्या है। ओघनिर्युक्ति ओघ समाचारी की व्याख्या है। यह आवश्यक निर्युक्ति का एक अंग है। विस्तृत कलेवर होने के कारण इसे पृथक् ग्रन्थ का रूप दिया गया।[1] इसलिए इन्हें मूल सूत्रों की संख्या में सम्मिलित करने की अपेक्षा दशवैकालिक और आवश्यक के सहायक ग्रन्थों के रूप में स्वीकार करना अधिक संगत लगता है।

अनुयोगद्वार और नंदी—ये दोनों चूलिका सूत्र हैं। इन्हें मूल-सूत्र वर्ग में रखने का कोई हेतु उपलब्ध नहीं है। सम्भव है बत्तीस सूत्रों की मान्यता के साथ (वि० १६ वीं शताब्दी में) इन्हें 'मूल सूत्र' वर्ग में रखा गया। श्रीमज्जयाचार्य ने पूर्व प्रचलित परम्परा के अनुसार अनुयोगद्वार और नंदी को मूल सूत्र माना है। किन्तु इस पर उन्होंने अपनी ओर से कोई मीमांसा नहीं की है।

इस प्रकार मूल सूत्र की संख्या दो रह जाती है—दशवैकालिक और उत्तराध्ययन।

७ : मूल-सूत्रों का विभाजन-काल

दशवैकालिक की निर्युक्ति, चूर्णि और हारिभद्रीय वृत्ति में मूल सूत्रों की कोई चर्चा नहीं है।

इसी प्रकार उत्तराध्ययन की निर्युक्ति, चूर्णि और शान्त्याचार्य कृत बृहद् वृत्ति में भी उनकी कोई चर्चा नहीं है।

इससे यह स्पष्ट है कि विक्रम की ११ वीं शताब्दी तक मूल-सूत्र वर्ग की स्थापना नहीं हुई थी।

धनपाल का अस्तित्व काल ग्यारहवीं शताब्दी है। उन्होंने श्रावक विधि में पैंतालीस आगमों का उल्लेख किया है।[2] इससे यह अनुमान होता है कि धनपाल से पहले ही आगमों की संख्या पैंतालीस निर्धारित हो चुकी थी। प्रद्युम्नसूरि (वि० की १३ वीं शताब्दी) कृत विचारसार प्रकरण में भी आगमों की संख्या पैंतालीस है किन्तु इनमें मूल-सूत्र विभाग नहीं है। उसमें ग्यारह अंग और चौंतीस ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है।[3]

---

१ आवश्यक निर्युक्ति गाथा ६६५ वृत्ति पत्र ३४१
साम्प्रतमोघनिर्युक्तिर्वक्तव्या सा च महत्वात् पृथग्ग्रन्थान्तररूपा कृता।

२—समयसुन्दर गणी विरचित श्री गाथासहस्री में धनपाल कृत श्रावक विधि का उद्धरण है। उसमें पाठ आता है—पणयालीस आगम (श्लोक २९७ पृ० १८)।

३—विचारलेस गाथा ३४४-३५१।

प्रभावक-चरित में अंग, उपांग, मूल और छेद—आगमों के ये चार विभाग प्राप्त हैं।[1] यह विक्रम संवत् १३३४ की रचना है।

इससे यह फलित होता है कि 'मूल-सूत्र' वर्ग की स्थापना चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हो चुकी थी। फिर उपाध्याय समयसुन्दर के सामाचारी शतक में इसका उल्लेख प्राप्त होता है।[2]

८ : दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान

जैन-आगमों में दशवैकालिक और उत्तराध्ययन का स्थान बहुत महत्त्वपूर्ण है। श्वेताम्बर और दिगम्बर—दोनों परम्पराओं के आचार्यों ने इनका बार-बार उल्लेख किया है। दिगम्बर-साहित्य में अंग-बाह्य के चौदह प्रकार बतलाए गए हैं। उनमें सातवाँ दशवैकालिक और आठवाँ उत्तराध्ययन है।[3]

श्वेताम्बर-साहित्य में अंग-बाह्य श्रुत के दो मुख्य विभाग हैं—(१) कालिक और (२) उत्कालिक। कालिक सूत्रों की गणना में पहला स्थान उत्तराध्ययन का और उत्कालिक सूत्रों की गणना में पहला स्थान दशवैकालिक का है।[4]

९ : दशवैकालिक : आकार और विषय-वस्तु

दशवैकालिक के दस अध्ययन हैं और चूँकि वह विकाल में रचा गया, इसलिए इसका नाम दशवैकालिक रखा गया। इसके कर्त्ता श्रुतकेवली शय्यंभव हैं। अपने पुत्र—शिष्य मनक के लिए उन्होंने इसकी रचना की। वीर सम्वत् ७२ के आस-पास 'चम्पा' में इसकी रचना हुई।

१–प्रभावक चरितम्, दूसरा आर्यरक्षित प्रबन्ध :

ततश्चतुर्विधः कार्योऽनुयोगोऽतः परं मया।
ततोऽङ्गोपाङ्गमूलाख्यग्रन्थच्छेदकृतागमः॥२४१॥

२–सामाचारी शतक, पत्र ७६।

३–(क) कषायपाहुड (जयधवला सहित) भाग १, पृष्ठ १३।२५ :

दसवेयालियं उत्तरज्झयणं।

(ख) गोम्मटसार (जीव-काण्ड), गाथा ३६७ :

दसवेयालं च उत्तरज्झयणं।

४–नंदी, सूत्र ४३ :

से किं तं कालियं? कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—उत्तरज्झयणाइं······।
से किं तं उक्कालियं? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तंजहा—दसवेयालियं······।

इसकी दो चूलिकाएँ है। अध्ययनो के नाम श्लोक सख्या और विषय इस प्रकार है —

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१ द्रुमपुष्पिका[१]	५		धम प्रशसा और माधुकरी वृत्ति।
२ श्रामण्यपूवक	११		सयम में धृति और उसकी साधना।
३ क्षुल्लकाचार	१५		आचार और अनाचार का विवक।
४ धम प्रज्ञप्ति या षड्जीवनिका	२८	२३	जीव सयम तथा आत्म सयम का विचार।
५ पिण्डैषणा	१५०		गवेषणा ग्रहणैषणा और भोगैषणा की शुद्धि।
६ महाचार	६८		महाचार का निरूपण।
७ वाक्यशुद्धि	५७		भाषा विवेक।
८ आचार प्रणिधि	६३		आचार का प्रणिधान।
९ विनय समाधि	६२	७	विनय का निरूपण।
१० सभिक्षु	२१		भिक्षु के स्वरूप का वणन।
चूलिका			
१ रतिवाक्या	१८	१	सयम म अस्थिर होने पर पुन स्थिरी करण का उपदेश।
२ विविक्तचर्या	१६		विविक्तचर्या का उपदेश।

निर्युक्तिकार के अनुसार दशवैकालिक का समावेश चरण करणानुयोग में होता है। इसका फलित अर्थ यह है कि इसका प्रतिपाद्य आचार है। वह दो प्रकार का होता है— (१) चरण—व्रत आदि और (२) करण—पिण्ड विशुद्धि आदि।[२]

धवला के अनुसार दशवैकालिक आचार और गोचर की विधि का वणन करने वाला सूत्र है।[३] अगपण्णत्ति के अनुसार इसका विषय गोचर विधि और पिण्ड विशुद्धि

१—तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय मे इसका नाम 'वृक्षकुसुम' दिया है—देखिए पृ० ६७ पा० टि० २।

२—दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा ४
अपुहुत्तपुहुत्ताइ, निद्दिसिउ एत्य होइ अहिगारो।
चरणकरणाणुओगेण तस्स दारा इमे हुति॥

३—षट्खण्डागम', सत्प्ररूपणा (१।१।१), पृ० ९७
दसवेयालिय आयार गोयर विहिं वण्णइ।

है।[1] तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय में इसे वृक्ष-कुसुम आदि का भेद-कथक और यतियों के आचार का कथक कहा है।[2]

उक्त प्रतिपादन से दशवैकालिक का स्थूल रूप हमारे सामने प्रस्तुत हो जाता है, किन्तु आचार्य शय्यंभव ने आचार-गोचर की प्ररूपणा के साथ-साथ अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों का निरूपण किया है। जीव-विद्या, योग-विद्या आदि के अनेक सूक्ष्म-बीज इसमें विद्यमान हैं।

१० : दशवैकालिक : निर्यूहण कृति

रचना दो प्रकार की होती है—स्वतंत्र और निर्यूहण। दशवैकालिक निर्यूहण कृति है, स्वतन्त्र नहीं। आचार्य शय्यंभव श्रुतकेवली थे। उन्होंने विभिन्न पूर्वों से इसका निर्यूहण किया—यह एक मान्यता है।

दशवैकालिक की निर्युक्ति के अनुसार चौथा अध्ययन—आत्मप्रवाद पूर्व से, पाँचवाँ अध्ययन—कर्मप्रवाद पूर्व से, सातवाँ अध्ययन—सत्यप्रवाद पूर्व से और शेष सभी अध्ययन—प्रत्याख्यान पूर्व की तीसरी वस्तु से उद्धृत किए गए हैं।[3]

दूसरी मान्यता के अनुसार इसका निर्यूहण गणिपिटक द्वादशांगी से किया गया है।[4] किस अध्ययन का किस अंग से उद्धरण किया गया, इसका कोई उल्लेख प्राप्त नहीं है। किन्तु तीसरे अध्ययन का विषय सूत्रकृतांग १।९ से प्राप्त होता है। चतुर्थ अध्ययन का विषय भी सूत्रकृतांग १।११।७,८ तथा आचारांग १।१।१ का क्वचित् संक्षेप और क्वचित् विस्तार है। पाँचवें अध्ययन का विषय आचारांग के दूसरे अध्ययन लोक-विजय

१-अंगपण्णत्ति, ३।२४ :

जदि गोचरस्स विहिं, पिंडविसुद्धिं च जं परूवेहि।
दसवेआलिय सुत्तं, दह काला जत्थ संवुत्ता॥

२-तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय, पृष्ठ ६७ :

वृक्षकुसुमादीनां दशानां भेदकथकं यतीनामाचारकथकंच दशवैकालिकम्।

३-दशवैकालिक निर्युक्ति, गाथा, १६,१७ :

आयप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ धम्मपन्नत्ती।
कम्मप्पवायपुव्वा, पिंडस्स उ एसणा तिविहा॥
सच्चप्पवायपुव्वा, निज्जूढा होइ वक्कसुद्धी उ।
अवसेसा निज्जूढा, नवमस्स उ तइयवत्थूओ॥

४-वही, गाथा १८ :

बीओऽवि अ आएसो, गणिपिडगाओ दुवालसंगाओ।
एअं किर णिज्जूढं, मणगस्स अणुग्गहट्ठाए॥

के पाँचवें उद्देशक और आठवें विमोह अध्ययन के दूसरे उद्देशक में प्राप्त होता है। छठा अध्ययन समवायांग समवाय १८ के "वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं। पलियंक निसिज्जा य, सिणाणं सोभवज्जणं॥" श्लोक का विस्तार है। सातवें अध्ययन के बीज आचारांग १।१।६।५ में मिलते हैं। आठवें अध्ययन का आंशिक विषय स्थानांग ८।५९८,६०१,६१५ में मिलता है। आंशिक तुलना अन्यत्र भी प्राप्त होती है।[1]

आचारांग के दूसरे श्रुतस्कन्ध की प्रथम चूला के अध्ययन १ और ४ में क्रमशः दसवें पाँचवें और सातवें अध्ययन की तुलना होती है। किन्तु हमारे अभिमत में वह दसवैकालिक के बाद का निर्यूहण है। इसके दूसरे, नवें तथा दसवें अध्ययन का विषय उत्तराध्ययन के प्रथम और पन्द्रहवें अध्ययन से तुलित होता है। किन्तु वह अंग-बाह्य आगम है।

यह सूत्र श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मान्य रहा है। इसके कर्तृत्व के विषय में भी श्वेताम्बर-साहित्य में प्रामाणिक ऊहापोह है। श्वेताम्बर आचार्यों ने इस पर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, टीका, दीपिका, अवचूरि आदि-आदि व्याख्या-ग्रन्थ लिखे हैं।

दिगम्बर-परम्परा में भी यह सूत्र प्रिय रहा है। धवला, जयधवला, तत्त्वार्थवार्तिक (राजवार्तिक), तत्त्वार्थवृत्ति श्रुतसागरीय आदि में इस विषय का उल्लेख मिलता है। परन्तु इसके निश्चित कर्तृत्व तथा स्वरूप का कहीं भी विवरण प्राप्त नहीं होता। इसके कर्तृत्व का उल्लेख करते हुए आरातीयैराचार्यैर्निर्यूढं—इतना मात्र संकेत देते हैं। कब तक यह सूत्र उनको मान्य रहा और कब से यह अमान्य हुआ—यह प्रश्न आज भी असमाहित है।

११ : दशवैकालिक : व्याकरण-विमर्श

प्राचीन आगम अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणों की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। उन्हें व्याकरण की कसौटी पर कसने का हमारा प्रयत्न भी सम्मान्य नहीं है। जिन वैयाकरण परम्पराओं और नियमों के सदर्भ में आगम लिखे गए, वे परम्पराएँ और नियम अर्वाचीन काल में परिवर्तित हो गए। इसलिए उनमें परस्पर पूर्ण-सामंजस्य प्राप्त नहीं होता। व्याकरण-विमर्श की हमारी दृष्टि इतनी ही हो सकती है कि हम प्राचीन रचनाओं में अर्वाचीन व्याकरणों से जो अतिरिक्तता पाते हैं, वह सुलभ हो जाए।

१—(क) दशवैकालिक, ४। सूत्र ९ : मिलाइये—आचारांग, १।१।६।४९।
(ख) दशवैकालिक, ५।२।२८ : मिलाइये—आचारांग, १।१।२।४।
(ग) दशवैकालिक, ६।५३ : मिलाइये—सूत्रकृतांग, १।२।२।१८।

प्रस्तुत सूत्र में अलाक्षणिक (व्याकरण-असिद्ध) मकार के अनेक प्रयोग मिलते हैं—वत्थगन्धमलंकारं (२।२), आहारमाईणि (६।४६), निक्खम्ममाणाए (१०।१)।

विभक्ति और वचन के व्यत्यय भी मिलते हैं—पीढए (७।२८)—यहाँ चतुर्थी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है। वुद्धवयणे (१०।६)—यहाँ तृतीया के अर्थ में सप्तमी विभक्ति है।

अच्छन्दा जे न भुंजन्ति, न से चाइ त्ति वुच्चइ (२।२)—यहाँ 'भुंजन्ति' बहुवचन है और 'से चाइ' एकवचन है।

इस प्रकार कुछेक उदाहरण हमने प्रस्तुत किए हैं। विस्तार के लिए देखें—"दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन", अध्ययन १ : व्याकरण-विमर्श।

१२ : दशवैकालिक : भाषा की दृष्टि से

इसमें अर्धमागधी और जैन-महाराष्ट्री आदि के संवलित प्रयोग हैं। 'हत्थंसि वा', 'पायंसि वा' (४। सूत्र २३) में अर्धमागधी के प्रयोग हैं। प्राकृत में सप्तमी के एकवचन के दो रूप बनते हैं—'हत्थे, हत्थम्मि'।[1] 'हत्थंसि' यह अर्धमागधी में बनता है। 'जे' (२।३), 'करेमि' (४। सूत्र १०)—इनमें 'ओकार' के स्थान में जो 'एकार' है, वह अर्धमागधी का लक्षण है।[2]

मणसा (८।३) जोगसा (८।१७)—ये अर्धमागधी के प्रयोग हैं। प्राकृत में ये नहीं मिलते।

बहवे (७।४८)—बहु शब्द का प्रथमा का बहुवचन, जसोकामी (२।७), दोच्चे (४।सूत्र १२), तच्चे (४।सूत्र १३), सोच्चा (४।११), लद्धूण (५।२।४७), ऊसंढं (५।२।२५), संवुड (५।१।८३), परिवुड (६।१।१५), कड (४। २०), कट्टु (चूलिका १।१४) आदि-आदि तथा मकार के अलाक्षणिक प्रयोग—ये सब अर्धमागधी के प्रयोग हैं, जिन्हें हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आर्षप्रयोग कहा है। हियट्ठयाए (४।सूत्र १७)—यहाँ स्वार्थ में 'या' और 'य' के स्थान में 'एकार' का प्रयोग है, जो प्राकृत-सिद्ध नहीं है। तेइंदिया में 'ति' का 'तें' हुआ है। यह अर्धमागधी का प्रयोग है।[3] कहीं शौरसेनी के लक्षण भी मिलते हैं जैसे—अत्तवं (आत्मवान्) (८।४८)। यहाँ 'न' को 'म' किया है, जो शौरसेनी में होता है।[4]

१–हेमशब्दानुशासन, ८।३।११ : ङे म्मि ङेः।

२–वही, ८।४।२८७ :
अत एत्सौ पुंसि मागध्याम्।

३–प्राकृत भाषाओं का व्याकरण :
पैरा ४३८, पृष्ठ ६५१।

४–हेमशब्दानुशासन, ८।४।२६४ : मो वा।

देशी या अपभ्रंश शब्दों के प्रयोग भी प्रचुर है। गावी (५।१।१२) को पतञ्जलि 'गो' शब्द का अपभ्रंश बतलाते हैं।[1] आचार्य हेमचन्द्र ने प्राकृत-भाषा-विशेष के शब्दों को 'देशी' माना है।[2]

१३ : दशवैकालिक के व्याख्या-ग्रन्थ

दशवैकालिक की प्राचीनतम व्याख्या निर्युक्ति है। उसमें इसकी रचना के प्रयोजन, नामकरण उद्धरण-स्थल, अध्ययनों के नाम, उनके विषय आदि का संक्षेप में बहुत ही सुन्दर वर्णन मिलता है। यह ग्रन्थ उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों का आधार रहा है। यह पद्यात्मक है। इसकी गाथाओं का परिमाण टीकाकार के अनुसार ३७१ है। इसके कर्ता द्वितीय भद्रबाहु माने जाते हैं। इनका काल-मान विक्रम की पाँचवीं-छठी शताब्दी है।

इसकी दूसरी पद्यात्मक व्याख्या भाष्य है। चूर्णिकार ने भाष्य का उल्लेख नहीं किया। टीकाकार भाष्य और भाष्यकार का अनेक स्थलों में उल्लेख करते हैं।[3] टीकाकार के अनुसार भाष्य की ६३ गाथाएँ है। इसके कर्त्ता की जानकारी हमें नहीं है। टीकाकार ने भी भाष्यकार के नाम का उल्लेख नहीं किया है।[4] वे निर्युक्तिकार के बाद और चूर्णिकार से पहले हुए हैं।

हरिभद्र सूरि ने जिन गाथाओं को भाष्यगत माना है, वे चूर्णि में है। इससे जान पड़ता है कि भाष्यकार चूर्णिकार से पूर्ववर्ती है। इसके बाद चूर्णियाँ लिखी गई है। अभी दो चूर्णियाँ प्राप्त है। एक के कर्त्ता अगस्त्यसिंह स्थविर है और दूसरी के कर्ता जिनदास महत्तर (वि० की ७ वीं शताब्दी)।

१–पातञ्जल महाभाष्य, पस्पशाह्निक :
  एकस्यैव गोशब्दस्य गावी-गोणी-गोता-गोपोतलिकेत्यादयोऽनेकेऽपशब्दाः।

२–देशीनाममाला, १।४ :
  देसविसेसपसिद्धीइ, भण्णमाणा अणन्तया हुंति।
  तम्हा अणाइपाइयपयट्टभासाविसेसओ देसी॥

३–(क) दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र ६४ : भाष्यकृता पुनरुपन्यस्त इति।
  (ख) वही, पत्र १२० : आह च भाष्यकारः।
  (ग) वही, पत्र १२८ : व्यासार्थस्तु भाष्यादवसेयः।
  (घ) वही, पत्र १२३,१२५,१२६,१२९,१३३,१३४,१४०,१६१,१६२,२७८।

४–दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका, पत्र १३२ :
  तामेव निर्युक्तिगाथां लेशतो व्याचिख्यासुराह भाष्यकारः।······ एतदपि नित्यत्वादिप्रसाधकमिति निर्युक्तिगाथायामनुपन्यस्तमप्युक्तं सूक्ष्मधिया भाष्यकारेणेति गाथार्थः।

दशवैकालिक की द्वितीय चूर्णि के अन्त में कोई प्रशस्ति नहीं है और न ग्रन्थकार का नाम ही उपलब्ध है। पारंपरिक अनुश्रुति से यह जिनदास महत्तर कृत मानी जाती है।

उत्तराध्ययन (अ० ३०) चूर्णि पृ० २७४ में एक उल्लेख आता है—"षष्ठोऽपि चित्तो नानाप्रकारो प्रकीर्णतपोऽभिधीयते, तदन्यत्राभिहितं, शेषं दशवैकालिकचूर्णौ अभिहितम्।" इस वाक्य से दशवैकालिक और उत्तराध्ययन की चूर्णियाँ एक-कर्तृक प्रतीत होती हैं। दशवैकालिक चूर्णि (पृ० २१) में इत्वरिक तप का वर्णन बहुत संक्षिप्त रूप में किया गया है। शेष वर्णन विस्तृत है। उत्तराध्ययन चूर्णि (पृ० २७४) में इत्वरिक तप के पाँच प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन किया गया है। छठे प्रकीर्ण तप के कहीं अन्यत्र वर्णन करने की सूचना दी है और शेष वर्णन दशवैकालिक चूर्णि में किया गया है—ऐसा लिखा है।

दशवैकालिक (१।१) की चूर्णि में पृ० २१ से ३७ तक तप का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसीलिए उत्तराध्ययन में उन्होंने इसकी पुनरुक्ति नहीं की। सही अर्थ में तप का इतना विस्तृत वर्णन उत्तराध्ययन के तपोध्ययन (अ० ३०) की चूर्णि में करना चाहिए था किन्तु दशवैकालिक चूर्णि की रचना पहले की थी। वहाँ प्रथम अध्ययन के प्रथम श्लोक में आए 'तप' शब्द का विशद वर्णन कर डाला। इसीलिए उत्तराध्ययन में, जो दशवैकालिक की चूर्णि में नहीं था, उसी का उल्लेख कर शेष के लिए दशवैकालिक चूर्णि में अभिहित की सूचना दे दी।

मुनि श्री पुण्यविजयजी के मतानुसार अगस्त्यसिंह की चूर्णि का रचना-काल विक्रम की तीसरी शताब्दी के आस-पास है।[1]

अगस्त्यसिंह स्थविर ने अपनी चूर्णि में तत्त्वार्थसूत्र, आवश्यकनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति, व्यवहारभाष्य, कल्पभाष्य आदि ग्रन्थों का उल्लेख किया है। इनमें अन्तिम रचनाएँ भाष्य हैं। उनके रचना-काल के आधार पर अगस्त्यसिंह का समय पुनः अन्वेषणीय है।

अगस्त्यसिंह ने पुस्तक रखने की औत्सर्गिक और आपवादिक—दोनों विधियों की चर्चा की है।[2] इस चर्चा का आरम्भ जब देवर्द्धिगणी ने आगम पुस्तकारूढ़ किए तब या उसके आस-पास हुआ होगा। अगस्त्यसिंह यदि देवर्द्धिगणी के उत्तरवर्ती और जिनदास के पूर्ववर्ती हों तो इनका समय विक्रम की ५-६ठीं शताब्दी हो जाता है।

१—बृहत्कल्प भाष्य, भाग ६, आमुख पृष्ठ ४।

२—दशवैकालिक १।१ अगस्त्य चूर्णि :

उस्सारणं संजमो—पोत्थएसु घेप्पंतेसु असंजमो महाधणमोल्लेसु वा दूसेसु, वज्जणं तु संजमो, कालं पडुच्च चरणकरणट्ठं अव्वोच्छित्तिनिमित्तं गेण्हंतस्स संजमो भवति।

इन चूर्णियों के अतिरिक्त कोई प्राकृत व्याख्या और रही है पर वह अब उपलब्ध नहीं है। उसके अवतरण हरिभद्र सूरि की टीका में मिलते हैं।[1]

प्राकृत युग समाप्त हुआ और संस्कृत युग आया। आगम की व्याख्याएँ संस्कृत भाषा में लिखी जाने लगीं। इस पर हरिभद्र सूरि ने संस्कृत में टीका लिखी। इनका समय विक्रम की आठवीं शताब्दी है।

यापनीय संघ के अपराजित सूरि (या विजयाचार्य—विक्रम की आठवीं शताब्दी) ने इस पर विजयोदया नाम की टीका लिखी। इसका उल्लेख उन्होंने स्वरचित मूलाराधना की टीका में किया है।[2] परन्तु वह अभी उपलब्ध नहीं है। हरिभद्र सूरि की टीका को आधार मान कर तिलकाचार्य (१३-१४वीं शताब्दी) ने टीका, माणिक्यशेखर (१५वीं शताब्दी) ने निर्युक्ति दीपिका, समयसुन्दर (विक्रम सं० १६११) ने दीपिका, विनयहंस (विक्रम सं० १५७३) ने वृत्ति, रामचन्द्र सूरि (विक्रम सं० १६७८) ने वार्तिक

१–दशवैकालिक हारिभद्रीय टीका पत्र १६५

तथा च वृद्धव्याख्या—वेसादिगयभावस्स मेहुणं पीडिज्जइ अणुवओगेण एसणाकरणे हिंसा पडुप्पायणे अन्नपुच्छणअवलवणासच्चवयणं अणणुण्णायवेसाइदसणे अदत्तादाणं, ममत्तकरणे परिग्गहो एवं सव्ववयपीडा, दव्वसामन्ने पुण संसयो उण्णिक्खमणेण त्ति।

दशवैकालिक चूर्णि (पृ० १७१) में इस आशय की जो पंक्तियाँ हैं वे इन पंक्तियों से भिन्न हैं

जइ उण्णिक्खमइ तो सव्ववया पीडिया भवन्ति, अहवि ण उण्णिक्खमइ तोवि तग्गयमाणसस्स भावाओ मेहुणं पीडियं भवइ, तग्गयमाणसोय एसणं न रक्खइ तत्थ पाणाइवायपीडा भवति, जोएमाणो पुच्छिज्जइ—किं जोएसि? ताहे अवलवइ ताहे मुसावायपीडा भवति ताओ य तित्थगरेहिं णाणुण्णायाउत्तिकाउ अदिण्णादाणपीडा भवइ, तासु य ममत्तं करेंतस्स परिग्गहपीडा भवति।

अगस्त्य चूर्णि की पंक्तियाँ इस प्रकार हैं —

तस्स पीडा वयाणं तासु गयचित्तो रियं न सोहेतित्ति पाणातिवातो पुच्छितो किं जोएसित्ति? अवलवति मुसावातो अदत्तादाणमणणुण्णातो तित्थकरेहि मिहुणे वि गयभावो मुच्छाए परिग्गहो वि।

२-मूलाराधना गा० ११९७ की वृत्ति

दशवैकालिकटीकायां श्रीविजयोदयायां प्रपञ्चिता उद्गमादिदोषा इति नेह प्रतन्यते।

और पायचन्द्र सूरि तथा धर्मसिंह मुनि (विक्रम की १८वीं शताब्दी) ने गुजराती-राजस्थानी-मिश्रित भाषा में टब्बा लिखा। किन्तु इनमें कोई उल्लेखनीय नया चिन्तन और स्पष्टीकरण नहीं है। ये सब सामयिक उपयोगिता की दृष्टि से रचे गए हैं। अतः इसकी महत्त्वपूर्ण व्याख्याएँ तीन ही हैं—(१) अगस्त्य चूर्णि, (२) जिनदास चूर्णि और (३) हारिभद्रीय वृत्ति।

अगस्त्यसिंह स्थविर की चूर्णि इन सबमें प्राचीनतम है, इसलिए यह सर्वाधिक मूल-स्पर्शी है। जिनदास महत्तर अगस्त्यसिंह स्थविर के आस-पास भी चलते हैं और कहीं-कहीं इनसे दूर भी चले जाते हैं। टीकाकार तो कहीं-कहीं बहुत दूर चले जाते हैं।[1]

लगता है चूर्णि के रचना-काल में भी दशवैकालिक की परम्परा अविच्छिन्न नहीं रही थी। अगस्त्यसिंह स्थविर ने अनेक स्थलों पर अर्थ के कई विकल्प किए हैं। उन्हें देखकर सहज ही जान पडता है कि वे मूल अर्थ के बारे में असंदिग्ध नहीं हैं।

आर्य सुहस्ती ने एक बार जो आचार-शैथिल्य की परम्परा का सूत्रपात किया वह आगे चल कर उग्र बन गया। ज्यों-ज्यों जैन आचार्य लोक-संग्रह की ओर अधिक झुके, त्यों-त्यों अपवादों की बाढ़-सी आ गई। वीर-निर्वाण की नवीं शताब्दी (८५०) में चैत्यवास का प्रारम्भ हुआ। इसके बाद शिथिलाचार की परम्परा बहुत ही उग्र हो गई। देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण (वीर-निर्वाण की दसवीं शताब्दी) के बाद चैत्यवास का प्रभुत्व बढ़ा और वह जैन परम्परा पर छा गया। अभयदेव सूरि ने इस स्थिति का चित्रण इन शब्दों में किया है—"देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण तक की परम्परा को मैं भाव-परम्परा मानता हूँ। इसके बाद शिथिलाचारियों ने अनेक द्रव्य-परम्पराओं का प्रवर्तन कर दिया।"[2] आचार-शैथिल्य की परम्परा में जो ग्रन्थ लिखे गए, उनमें ऐसे अपवाद भी हैं जो आगम में प्राप्त नहीं हैं। प्रस्तुत आगम की चूर्णि और टीका तात्कालिक वातावरण से मुक्त नहीं हैं। इन्हें पढ़ते समय इस तथ्य को नहीं भूल जाना चाहिए।

उत्सर्ग की भाँति अपवाद भी मान्य होते हैं। पर उनकी भी एक निश्चित सीमा है। जिनका बनाया हुआ आगम प्रमाण होता है, उन्हीं के किए अपवाद मान्य हो सकते हैं। वर्तमान में जो व्याख्याएँ उपलब्ध हैं, वे चौदहपूर्वी या दसपूर्वी की नहीं हैं, इसलिए उन्हें आगम (अर्थागम) की कोटि में नहीं रखा जा सकता।

१—उदाहरण के लिए देखें : दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २६६, टिप्पण १७७।

२—आगम अट्ठुत्तरी, गाथा १४ :

देवड्ढिखमासमणजा, परंपरं भावओ वियाणेमि।
सिढिलायारे ठविया, दव्वेण परंपरा बहुहा॥

उत्तराध्ययनों का एक श्रुतस्कन्ध (एक ग्रन्थ रूप) स्वीकार किया है। फिर भी उन्होंने इसका नाम बहुवचनात्मक माना है।[1]

इस बहुवचनात्मक नाम से यह फलित होता है कि उत्तराध्ययन अध्ययनों का योग मात्र है एक कर्तृक एक ग्रन्थ नहीं।

उत्तर शब्द पूर्व सापेक्ष है। चूर्णिकार ने प्रस्तुत अध्ययनों की तीन प्रकार से योजना की है[2]—

(१) स उत्तर —पहला अध्ययन
(२) निरुत्तर —छत्तीसवाँ अध्ययन
(३) स उत्तर निरुत्तर —बीच के सारे अध्ययन

किन्तु उत्तर शब्द की यह अर्थ योजना चूर्णिकार की दृष्टि में अधिकृत नहीं है। उनकी दृष्टि में अधिकृत अर्थ वही है जो निर्युक्तिकार के द्वारा प्रस्तुत है। निर्युक्तिकार के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन आचारांग के उत्तरकाल में पढ़े जाते थे इसलिए इन्हें उत्तर अध्ययन कहा गया।[3] श्रुतकेवली शय्यंभव (वीर निर्वाण सं० ९८) के पश्चात् ये अध्ययन दशवैकालिक के उत्तरकाल में पढ़े जाने लगे।[4] इसलिए ये उत्तर अध्ययन ही बने रहे। यह उत्तर शब्द की संगत व्याख्या प्रतीत होती है।

दिगम्बर आचार्यों ने भी उत्तर शब्द की अनेक दृष्टिकोणों से व्याख्या की है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि पृष्ठ ८
ऐतेसिं चेव छत्तीसाए उत्तरज्झयणाण समुदयसमितिसमागमेण उत्तरज्झयणभाव सुतक्खंधेति लब्भइ ताणि पुण छत्तीसं उत्तरज्झयणाणि इमेहिं नामेहिं अणुगंतव्वाणि।

२—उत्तराध्ययन चूर्णि पृष्ठ ६
विणयसुयसउत्तरं जीवाजीवाभिगमो णिरुत्तरो सव्वत्तिर इत्यर्थं सज्झयणाणि सउत्तराणि णिरुत्तराणि य कहं? परीसहा विणयसुयस्स उत्तरा चउरंगिज्ज स सु पुव्वा इतिकाउ णिरुत्तरा।

३—उत्तराध्ययन निर्युक्ति गाथा ३
कमउत्तरेण पगयं आयारस्सेव उवरिमाइ तु।
तम्हा उ उत्तरा खलु अज्झयणा हुंति णायव्वा॥

४—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति पत्र ५
विशेषश्चाय यथा—शय्यम्भवं यावदेष क्रम तदाऽऽरतस्तु दशवैकालिकोत्तरकाल पठ्यन्त इति।

धवलाकार (वि० ९ वीं शताब्दी) के मतानुसार 'उत्तराध्ययन' उत्तर-पदों का वर्णन करता है। यह 'उत्तर' शब्द समाधान सूचक है।[1]

अंगपण्णत्ति (वि० १६ वीं शताब्दी) से 'उत्तर' शब्द के दो अर्थ फलित होते हैं—

(१) उत्तरकाल—किसी ग्रन्थ के पश्चात् पढ़े जाने वाले अध्ययन।

(२) उत्तर—प्रश्नों का उत्तर देने वाले अध्ययन।[2]

ये अर्थ भी 'उत्तर' और 'अध्ययनों' के सम्बन्ध की वास्तविकता पर प्रकाश डालते हैं।

उत्तराध्ययन में प्रश्नोत्तर-शैली में लिखित पाँच अध्ययन हैं—९,१६,२३,२५ और २९। आंशिक रूप में कुछ प्रश्नोत्तर अन्य अध्ययनों में भी हैं। इस दृष्टि से 'उत्तर' का समाधान-सूचक अर्थ संगत होते हुए भी पूर्णतः व्याप्त नहीं है।

'उत्तरकाल' वाची अर्थ संगत होने के साथ-साथ पूर्णतः व्याप्त भी है, इसलिए इस 'उत्तर' का मुख्य अर्थ यही प्रतीत होता है।

१५ : उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व

उत्तराध्ययन एक कृति है। कोई भी कृति शाश्वत नहीं होती, इसलिए यह प्रश्न भी स्वाभाविक है कि इसका कर्त्ता कौन है? इस प्रश्न पर सर्व प्रथम निर्युक्तिकार ने विचार किया है। चूर्णिकार ने भी इस प्रश्न को स्पष्ट शब्दों में उठाया है।[3] निर्युक्तिकार की दृष्टि में उत्तराध्ययन एक-कर्तृक नहीं है। उनके मतानुसार उत्तराध्ययन के अध्ययन, कर्तृत्व की दृष्टि से, चार वर्गों में विभक्त होते हैं—

(१) अंगप्रभव

(२) जिन-भाषित

(३) प्रत्येकबुद्ध-भाषित

(४) संवाद-समुत्थित[4]

१—धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति, लिखित) :
उत्तरज्झयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ।

२—अंगपण्णत्ति ३।२५,२६ :
उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्झयणं पदं जिणिंदेहिं।

३—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :
एयाणि पुण उत्तरज्झयणाणि कओ केण वा भासियाणित्ति?

४—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४ :
अंगप्पभवा जिणभासिया य पत्तेयबुद्धसंवाया।
बंधे मुक्खे य कया छत्तीसं उत्तरज्झयणा॥

दोनों चूर्णियों में पाठ और अर्थ का भेद है। टीकाकार का मार्ग तो उनसे बहुत ही भिन्न है।

चैत्यवासी और संविग्न-पक्ष के आपसी खिंचाव के कारण संभव है उन्हें (टीकाकार को) अगस्त्य चूर्णि उपलब्ध न हुई हो। उसके उपलब्ध होने पर भी यदि इतने बड़े पाठ और अर्थ के भेदों का उल्लेख न किया हो तो यह बहुत बड़े आश्चर्य की बात है। पर लगता यही है कि टीका-काल में टीकाकार के सामने अगस्त्य चूर्णि नहीं रही। यदि वह उनके सम्मुख होती तो टीका और चूर्णि में इतना अर्थ-भेद नहीं होता। टीकाकार ने 'अन्ये तु', 'तथा च वृद्धसम्प्रदाय', 'तथा च वृद्धव्याख्या'—आदि के द्वारा जिनदास महत्तर का उल्लेख किया है।[1] पर उनके नाम और चूर्णि का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया।

हरिभद्र संविग्न-पाक्षिक थे। इनका समय चैत्यवास के उत्कर्ष का समय है। पुस्तकों का संग्रह अधिकांशतया चैत्यवासियों के पास था। संविग्न पक्ष एक प्रकार से नया था। चैत्यवासी इसे मिटा देना चाहते थे। इस परिस्थिति में टीकाकार को पुस्तक-प्राप्ति की दुर्लभता रही हो, यह भी आश्चर्य की बात नहीं है।

आगमों की माथुरी और वल्लभी—ये दो वाचनाएँ हुई। देवर्द्धिगणी ने आगमों को पुस्तकारूढ करते हुए उन दोनों का समन्वय किया। माथुरी में उससे भिन्न पाठ थे। उन्हें पाठ-भेद मान शेष अंश को वल्लभी में समन्वित कर दिया। यह पाठ-भेद की

१—(क) दशवैकालिक, हारिभद्रीय टीका पत्र ७ :

अन्यस्त्वनादिष्टो दशकालिकाख्य आदिष्टस्तु तदध्ययनविशेषो द्रुमपुष्पिकादिरिति व्याचष्टे।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्णि, पृष्ठ ४

तत्थ अणादिट्ठं जहा दसकालियं आदिट्ठं दुमपुप्फियं सामण्णपुव्वय एवमादि।

(ख) वही, हारिभद्रीय टीका, पत्र १७२

अत्रायं वृद्धसम्प्रदाय—गच्छवासी जइ थणजीवी ... मज्जारादि वा अवहरेज्ज त्ति।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्णि, पृष्ठ-१८०-१८१ :

तत्थ गच्छवासी जति थणजीवी ... मज्जाराइ वा अवधरेज्जा।

(ग) वही, हारिभद्रीय टीका, पत्र १४२-४२ :

तथा च वृद्धव्याख्या—एसो खलु छट्ठो ...... आगासत्थिकाओ अवगाहलक्खणो।

मिलाइए—दशवैकालिक चूर्णि, पृष्ठ १४१-४२ :

छट्ठो जीवनिकायो ....आगासत्थिकाओ अवगाहलक्खणो।

परम्परा मिटी नहीं। कुछ आगमों के पाठ-भेद केवल आगमों की व्याख्याओं में उपलब्ध हैं। व्याख्याकार—'नागार्जुनीयास्तु एवं पठन्ति' लिखकर उसका निर्देश करते रहे हैं और कुछ आगमों के पाठ-भेद मूल से ही सम्बद्ध रहे, इस कारण से उनका परम्परा-भेद चलता ही रहा। दशवैकालिक सम्भवतः इसी दूसरी कोटि का आगम है। इसकी उपलब्ध व्याख्याओं में सबसे प्राचीन व्याख्या अगस्त्य चूर्णि है। उसमें अनेक स्थलों पर परम्परा-भेद का उल्लेख है।[1] इस सारी वस्तु-सामग्री को देखते हुए लगता है कि चूर्णिकार और टीकाकार के सामने भिन्न-भिन्न परम्परा के आदर्श रहे हैं और टीकाकार ने अपनी परम्परा के आदर्श और व्याख्या-पद्धति को महत्त्व दिया हो तथा सम्भव है कि परम्परा-भेद के कारण चूर्णियों की उपेक्षा की हो। कल्पना की इस भूमिका पर पहुँचने के बाद चूर्णि एवं टीका के पाठ और अर्थ के भेद की पहेली सुलझ जाती है।

दशवैकालिक के रचना-काल, रचना-शैली, व्याकरण-विमर्श, छन्द-विमर्श आदि विषयों की विस्तृत चर्चा हम 'दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में कर चुके हैं। यहाँ हम उत्तराध्ययन के बारे में कुछ विस्तार से विचार करेंगे।

१४ : उत्तराध्ययन

आलोच्यमान आगम का नाम 'उत्तराध्ययन' है। इसमें दो शब्द हैं—'उत्तर' और 'अध्ययन'। समवायांग के—'छत्तीसं उत्तरज्झयणा'[2]—इस वाक्य में उत्तराध्ययन के 'छत्तीस अध्ययन' प्रतिपादित नहीं हुए हैं, किन्तु 'छत्तीस उत्तर अध्ययन' प्रतिपादित हुए हैं। नंदी में भी 'उत्तरज्झयणाणि' यह बहुवचनात्मक नाम मिलता है।[3] उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक में भी—'छत्तीसं उत्तरज्झाए'—ऐसा बहुवचनात्मक नाम मिलता है।[4] निर्युक्तिकार ने 'उत्तराध्ययन' का बहुवचन में प्रयोग किया है।[5] चूर्णिकार ने छत्तीस

१—देखिए—दशवैकालिक, भाग २, पृष्ठ २२१, टिप्पण २९ तथा पृष्ठ ३५२, टिप्पण ७८।

२—समवायांग, समवाय ३६।

३—नंदी, सूत्र ४३।

४—उत्तराध्ययन ३६।२६८।

५—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४ :
देखिये : पृ० २१, पा० टि० ४।

उत्तराध्ययनो का एक श्रुतस्कन्ध (एक ग्रन्थ रूप) स्वीकार किया है। फिर भी उन्होंने इसका नाम बहुवचनात्मक माना है।[1]

इस बहुवचनात्मक नाम से यह फलित होता है कि उत्तराध्ययन अध्ययनों का योग मात्र है एक-कर्तृक एक ग्रन्थ नहीं।

'उत्तर' शब्द 'पूर्व' सापेक्ष है। चूर्णिकार ने प्रस्तुत अध्ययनों की तीन प्रकार से योजना की है[2]—

(१) स उत्तर —पहला अध्ययन
(२) निरुत्तर —छत्तीसवाँ अध्ययन
(३) स उत्तर-निरुत्तर —बीच के सारे अध्ययन

किन्तु उत्तर शब्द की यह अर्थ-योजना चूर्णिकार की दृष्टि में अधिकृत नहीं है। उनकी दृष्टि में अधिकृत अर्थ वही है जो निर्युक्तिकार के द्वारा प्रस्तुत है। निर्युक्तिकार के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन आचारांग के उत्तरकाल में पढ़े जाते थे, इसलिए इन्हें 'उत्तर अध्ययन' कहा गया।[3] श्रुतकेवली शय्यम्भव (वीर-निर्वाण सं० ९८) के पश्चात ये अध्ययन दशवैकालिक के उत्तरकाल में पढ़े जाने लगे।[4] इसलिए ये 'उत्तर अध्ययन' ही बने रहे। यह 'उत्तर' शब्द की संगत व्याख्या प्रतीत होती है।

दिगम्बर-आचार्यों ने भी 'उत्तर' शब्द की अनेक दृष्टिकोणों से व्याख्या की है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि पृष्ठ ८
ऐतेसिं चेव छत्तीसाए उत्तरज्झयणाण समुदयसमितिसमागमेण उत्तरज्झयणभावसुतखंधेति लब्भइ ताणि पुण छत्तीस उत्तरज्झयणाणि इमेहिं नामेहिं अणुगंतव्वाणि।

२—उत्तराध्ययन चूर्णि पृष्ठ ६
विणयसुयसउत्तर जीवाजीवाभिगमो णिरुत्तरो, सर्वोत्तर इत्यर्थः सेसज्झयणाणि सउत्तराणि णिरुत्तराणि य, कहं? परीसहा विणयसुयस्स उत्तरा चउरंगिज्जस्स तु पुव्वा इतिकाउ णिरुत्तरा।

३—उत्तराध्ययन निर्युक्ति गाथा ३
कमउत्तरेण पगयं आयारस्सेव उवरिमाइ तु।
तम्हा उ उत्तरा खलु अज्झयणा हुति णायव्वा॥

४—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ५
विशेषश्चायं यथा—शय्यम्भवं यावदेष क्रमः तदाऽऽरतस्तु दशवैकालिकोत्तरकालं पठ्यन्त इति।

धवलाकार (वि० ६ वीं शताब्दी) के मतानुसार 'उत्तराध्ययन' उत्तर-पदों का वर्णन करता है। यह 'उत्तर' शब्द समाधान-सूचक है।[1]

अंगपण्णत्ति (वि० १६ वीं शताब्दी) से 'उत्तर' शब्द के दो अर्थ फलित होते हैं—

(१) उत्तरकाल—किसी ग्रन्थ के पश्चात् पढ़े जाने वाले अध्ययन।

(२) उत्तर—प्रश्नों का उत्तर देने वाले अध्ययन।[2]

ये अर्थ भी 'उत्तर' और 'अध्ययनों' के सम्बन्ध की वास्तविकता पर प्रकाश डालते हैं।

उत्तराध्ययन में प्रश्नोत्तर-शैली से लिखित पाँच अध्ययन हैं—९,१६,२३,२५ और २९। आंशिक रूप में कुछ प्रश्नोत्तर अन्य अध्ययनों में भी हैं। इस दृष्टि से 'उत्तर' का समाधान-सूचक अर्थ संगत होते हुए भी पूर्णतः व्याप्त नहीं है।

'उत्तरकाल' वाची अर्थ संगत होने के साथ-साथ पूर्णतः व्याप्त भी है, इसलिए इस 'उत्तर' का मुख्य अर्थ यही प्रतीत होता है।

१५ : उत्तराध्ययन : रचना-काल और कर्तृत्व

उत्तराध्ययन एक कृति है। कोई भी कृति शाश्वत नहीं होती, इसलिए यह प्रश्न भी स्वाभाविक है कि इसका कर्त्ता कौन है ? इस प्रश्न पर सर्व प्रथम निर्युक्तिकार ने विचार किया है। चूर्णिकार ने भी इस प्रश्न को स्पष्ट शब्दों में उठाया है।[3] निर्युक्तिकार की दृष्टि में उत्तराध्ययन एक-कर्तृक नहीं है। उनके मतानुसार उत्तराध्ययन के अध्ययन, कर्तृत्व की दृष्टि से, चार वर्गों में विभक्त होते हैं—

(१) अंगप्रभव

(२) जिन-भाषित

(३) प्रत्येकबुद्ध-भाषित

(४) संवाद-समुत्थित[4]

१—धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति, लिखित) :
उत्तरज्झयणं उत्तारपदाणि वण्णेइ।

२—अंगपण्णत्ति ३।२५,२६ :
उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्झयणं पदं जिणिंदेहिं।

३—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ ६ :
एयाणि पुण उत्तरज्झयणाणि कओ केण वा भासियाणित्ति ?

४—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा ४ :
अंगप्पभवा जिणभासिया य पत्तेयबुद्धसंवाया।
बंधे मुक्खे य कया छत्तीसं उत्तरज्झयणा॥

निर्युक्ति में दूसरे अध्ययन को कर्मप्रवाद-पूर्व से निर्यूढ़ माना गया है और इसके प्रारम्भिक वाक्य से यह फलित होता है कि वह जिन-भाषित है।

निर्युक्तिकार के चार वर्गों से कर्तृत्व पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता, किन्तु विषय-वस्तु पर प्रकाश पड़ता है। दसवें अध्ययन की विषय-वस्तु भगवान् महावीर द्वारा कथित है। किन्तु उस अध्ययन के कर्त्ता भगवान् महावीर नहीं हैं—यह उस अध्ययन के अंतिम वाक्य—'बुद्धस्स निसम्म भासियं'—से स्पष्ट है। इसी प्रकार दूसरे और उनतीसवें अध्ययन के प्रारम्भिक वाक्यों से भी यही तथ्य प्रकट होता है। छठे अध्ययन के अंतिम श्लोक से भी यही सूचित होता है—

एवं से उदाहु अणुत्तरनाणी अणुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे।
अरहा नायपुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए॥ (६।१७)

प्रत्येकबुद्ध-भाषित अध्ययन प्रत्येकबुद्ध-विरचित नहीं हैं। आठवें अध्ययन के अंतिम श्लोक से इस अभिमत की पुष्टि होती है—

इइ एस धम्मे अक्खाए कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति तेहिं आराहिया दुवे लोगे॥ (८।२०)

संवाद-समुत्थित अध्ययन, नवाँ और तेईसवाँ भी नमि तथा केशि-गौतम द्वारा विरचित नहीं हैं। इसका समर्थन भी उनके अन्तिम श्लोकों से होता है—

एवं करेन्ति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि॥ (९।६२)
तोसिया परिसा सव्वा सम्मग्गं समुवट्ठिया।
संथुया ते पसीयन्तु भयवं केसिगोयमे॥ (२३।८९)

इस प्रकार हम देखते हैं कि निर्युक्तिकार के चार वर्गों से इतना ही फलित होता कि भगवान् महावीर, कपिल, नमि और केशि-गौतम—इनके उपदेशों, उपदेश-गाथाओं या संवादों को आधार बनाकर ये अध्ययन रचे गए हैं। वे कब और किसके द्वारा रचे गए—इस प्रश्न का निर्युक्ति में कोई उत्तर प्राप्त नहीं है। चूर्णि और बृहद्वृत्ति में भी नहीं है। अन्य किसी साधन से भी प्रस्तुत सूत्र के कर्त्ता का नाम ज्ञात नहीं हो सका है। इसके रचना-काल की मीमांसा से हम इतना जान सकते हैं कि ये अध्ययन विभिन्न युगों में हुए अनेक ऋषियों द्वारा उद्गीत हैं।

सांख्य, न्याय, वैशेषिक आदि दर्शन ई० पू० ५ वीं शताब्दी से लेकर ई० पू० पहली शताब्दी तक व्यवस्थित रूप धारण कर चुके थे। भगवद्गीता और उत्तरवर्ती उपनिषदों का निर्माण ई० पू० ५०० के लगभग हुआ था। आत्मा, पुनर्जन्म, मोक्ष, कर्म, संसार की क्षणभंगुरता, वैराग्य व संन्यास की चर्चा इस युग में विशेष विकसित हुई थी।

उत्तराध्ययन में ई० पू० ६०० से ई० सन् ४०० तक की धार्मिक व दार्शनिक धारा का प्रतिनिधित्व या विकास प्राप्त है। हो सकता है कि इसका कुछ अंश महावीर से पहले का भी हो। चूर्णि में ऐसा संकेत भी मिलता है कि उत्तराध्ययन का एक अध्ययन भगवान् पार्श्व द्वारा उपदिष्ट है।[1]

दशवैकालिक वीर निर्वाण की पहली शताब्दी की रचना है।[2] उत्तराध्ययन एक ग्रन्थ के रूप में उससे पूर्व संकलित हो चुका था। उस समय उसके अध्ययन कितने थे यह निश्चय पूर्वक नहीं कहा जा सकता।

वीर निर्वाण की दसवीं शताब्दी (९८० ९९३) में देवर्द्धिगणी ने आगमों का संकलन किया था। उस समय उत्तराध्ययन के आकार प्रकार व विषय-वस्तु में कोई अभिवृद्धि की या नहीं की इसका प्रमाण उपलब्ध नहीं है किन्तु नहीं की ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। अतः उत्तराध्ययन को हम एक शताब्दी की विचारधारा का प्रतिनिधि सूत्र नहीं कह सकते हैं। इसमें जहाँ वेद और ब्राह्मण साहित्य-कालीन यज्ञ और जातिवाद की चर्चा है वहाँ द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषाएँ भी हैं। इन परिभाषाओं को उत्तरकालीन (ई०पू० ४ थी से ई०पू० पहली शताब्दी) माना जाए तो यह निष्पन्न होता है कि उत्तराध्ययन के अध्ययन विभिन्न कालों में निर्मित हुए और अन्तिम वाचना के समय देवर्द्धिगणी ने उनको छत्तीस अध्ययनात्मक एक ग्रन्थ के रूप में संकलित किया। इसीलिए समवायांग में छत्तीस उत्तर अध्ययनों के नाम उल्लिखित हुए। अन्यथा अंग-साहित्य में इनका उल्लेख सम्भव नहीं होता। वर्तमान संकलन को सामने रखकर हम चिन्तन करें तो उत्तराध्ययन के संकलयिता देवर्द्धिगणी हैं। इसके प्रारम्भिक संकलन और देवर्द्धिगणी कालीन संकलन में अध्ययनों की संख्या और विषय वस्तु में पर्याप्त अन्तर आया है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से उत्तराध्ययन के अध्ययन चार भागों में विभक्त होते हैं—

(१) धर्मकथात्मक—७ ८ ९ १२ १३ १४ १८ १९ २० २१ २२ २३ २५ और २७।

(२) उपदेशात्मक—१ ३ ४ ५ ६ और १०

(३) आचारात्मक—२ ११ १५ १६ १७ २४ २६ ३२ और ३५।

(४) सैद्धान्तिक—२८ २९ ३० ३१ ३३ ३४ और ३६।

१–उत्तराध्ययन चूर्णि पृष्ठ १५७
केचिदन्यथा पठंति—एव से उदाहु अरहा पासे पुरिसादाणीए।
भगवंते वेसालीए बुद्धे परिणिव्वुडे॥

२–दशवैकालिक भाग २ भूमिका पृष्ठ १५।

आर्य रक्षित सूरि (वि० शती प्रथम) ने आगमों के चार वर्ग किए—

(१) चरण-करणानुयोग (३) गणितानुयोग
(२) धर्मकथानुयोग (४) द्रव्यानुयोग

इस वर्गीकरण में उत्तराध्ययन धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत गृहीत है।[1] पर आचारात्मकअध्ययन चरण-करणानुयोग में तथा सैद्धान्तिक अध्ययन द्रव्यानुयोग में समाते हैं। इस प्रकार उत्तराध्ययन का वर्तमान स्वरूप अनेक अनुयोगों का सम्मिश्रण है। यह सम्मिश्रण देवर्द्धिगणी के संकलन-काल में हुआ, यह बहुत संभव है।

कुछ विद्वानों का अभिमत है कि उत्तराध्ययन के पहले अठारह अध्ययन प्राचीन हैं और उत्तरवर्ती अठारह अध्ययन अर्वाचीन। किन्तु इस अभिमत की पुष्टि के लिए उन्होंने कोई निश्चित हेतु प्रस्तुत नहीं किया है। यह हो सकता है कि कुछ उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हों, किन्तु सारे उत्तरवर्ती अध्ययन अर्वाचीन हैं, ऐसा मानने के लिए कोई कारण प्राप्त नहीं है। इकतीसवें अध्ययन में आचारांग, सूत्रकृतांग आदि प्राचीन आगमों के साथ-साथ दशाश्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहार और निशीथ जैसे अर्वाचीन आगमों के नाम भी उपलब्ध होते हैं।[2] ये श्रुतकेवली भद्रबाहु (वीर-निर्वाण दूसरी शती) द्वारा निर्यूढ या कृत हैं।[3] इसलिए प्रस्तुत अध्ययन भद्रबाहु के बाद की रचना है।

१—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ १ :
अत्र धम्माणुयोगेनाधिकारः।

२—उत्तराध्ययन, ३१।१६-१८ :
तेवीसइ सूयगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले॥
पणवीसभावणाहिं, उद्देसेसु दसाइणं।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले॥
अणगारगुणेहिं च, पकप्पम्मि तहेव य।
जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मण्डले॥

३—(क) दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति, गाथा १ :
वंदामि भद्दबाहुं, पाईणं चरिमसयलसुयणाणिं।
सुत्तस्स कारगमिसिं, दसासु कप्पे य ववहारे॥
(ख) पंचकल्प भाष्य, गाथा २३, चूर्णि :
तेण भगवता आयारपकप्प दसाकप्प ववहारा य नवमपुव्वनीसंदभूता निज्जूढा।

अठारहवें अध्ययन में अंग और अंग-बाह्य—इन दो आगमिक विभागों के अतिरिक्त ग्यारह अंग, प्रकीर्णक और दृष्टिवाद का उल्लेख भी मिलता है।[1] प्राचीन आगमों में चौदह पूर्वों, ग्यारह अंगों या बारह अंगों के अध्ययन का वर्णन मिलता है। किन्तु अंग-बाह्य या प्रकीर्णक श्रुत के अध्ययन का वर्णन नहीं मिलता, इसलिए यह अध्ययन भी उत्तरकालीन आगम-व्यवस्था के आस-पास की रचना प्रतीत होता है।

इस अध्ययन में द्रव्य, गुण तथा पर्याय की परिभाषाएँ भी हैं। इनकी तुलना क्रमशः वैशेषिक दर्शन के द्रव्य, गुण और कर्म से की जा सकती है—

उत्तराध्ययन[2]	वैशेषिक दर्शन[3]
(१) द्रव्य—	(१) द्रव्य—
गुणाणमासओ दव्वं	क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम्।
(२) गुण—	(२) गुण—
एगदव्वस्सिया गुणा।	द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोगविभागेष्वकारणमनपेक्ष इति गुणलक्षणम्।
(३) पर्याय—	(३) कर्म—
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ अस्सिया भवे।	एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमिति कर्म-लक्षणम्।

आगम साहित्य में द्रव्य, गुण और पर्याय की परिभाषा प्रथम बार उत्तराध्ययन में प्राप्त होती है। आगमों में विवरणात्मक अंश ही अधिक मिलते हैं, सम्मित परिभाषाएँ प्रायः नहीं मिलतीं। इसकी पूर्ति व्याख्या-ग्रन्थों से होती है। उत्तराध्ययन में ये परिभाषाएँ विशेष अर्थ-सूचक हैं। प्रस्तुत अध्ययन के कर्ता वैशेषिक दर्शन की उक्त परिभाषाओं से परिचित रहे हैं, ऐसा प्रतीत होता है। इसलिए यह अध्ययन भी अर्वाचीन संकलन में संकलित हुआ—ऐसा अनुमान होता है। उत्तराध्ययन के प्राचीन संस्करण में कितने अध्ययन संकलित थे और अर्वाचीन संस्करण में कितने अध्ययन संकलित किए गये, यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। किन्तु स्थूल रूप में इतना कहा जा सकता है कि प्राचीन संस्करण का मुख्य भाग कथा भाग था और अर्वाचीन परिवर्द्धन का मुख्य भाग सैद्धान्तिक है।

१—(क) उत्तराध्ययन २८।२१
 अंगेण बाहिरेण व ।
 (ख) वही २८।२३
 एक्कारस अंगाइं पइण्णगं दिट्ठिवाओ य ॥

२—वही, २८।६।

३—वैशेषिक दर्शन, प्रथम अध्याय, प्रथम आह्निक, सूत्र १५, १७।

उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का उल्लेख श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों परम्पराओं में मिलता है।

'जैन सिद्धान्त भवन', आरा (बिहार) में प्राप्त धवला की प्रति (पत्र ५४५) में मिलता है—"उत्तराध्ययन में उद्गम, उत्पादन और एषणा से सम्बन्धित दोषों के प्रायश्चित्तों का विधान है।"[1]

अंगपण्णत्ति में लिखा है—"बाईस परीषहों और चार प्रकार के उपसर्गों के सहन का विधान, उसका फल तथा इस प्रश्न का यह उत्तर है—यह उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य विषय है।"[2]

धवला में यह भी लिखा है कि उत्तराध्ययन उत्तरपदों का वर्णन करता है।[3]

हरिवंश पुराण (वि० सं० ८४०) में लिखा है कि उत्तराध्ययन में वीर-निर्वाणगमन का वर्णन है।[4]

इस प्रकार दिगम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का जो वर्णन मिलता है, उसकी संगति उत्तराध्ययन के वर्तमान स्वरूप से नहीं होती। अंगपण्णत्ति का विषय-वर्णन आंशिक रूप से संगत होता है। जैसे—

(१) बाईस परीषहों के सहन का विधान, देखिए—दूसरा अध्ययन।

(२) प्रश्नों के उत्तर, देखिए—उनतीसवाँ अध्ययन।

प्रायश्चित्त विधि के वर्णन तथा महावीर के निर्वाण-प्राप्ति के वर्णन की वर्तमान उत्तराध्ययन के साथ कोई संगति नहीं। संभव है इन लेखकों के सामने उत्तराध्ययन का कोई दूसरा संस्करण रहा है या भ्रान्त अनुश्रुति के आधार पर ऐसा लिखा है।

दिगम्बर-साहित्य से एक बात निश्चित रूप से फलित होती है कि उत्तराध्ययन

१–उत्तरज्झयणं उग्गमुप्पायणेसणदोसगयपायच्छित्तविहाणं कालादि विसेसिदं वण्णेदि।

२–अंगपण्णत्ति, ३।२५,२६ :

उत्तराणि अहिज्जंति, उत्तरज्झयणं मदं जिणिंदेहिं।
बावीसपरीसहाणं, उवसग्गाणं च सहणविहिं॥
वण्णेदि तप्फलमवि, एवं पण्हे च उत्तरं एवं।
कहदि गुरुसीसयाण, पइण्णिय अट्ठमं तं खु॥

३–धवला, पृष्ठ ९७ (सहारनपुर प्रति) :

उत्तरज्झयणं उत्तरपदाणि वण्णेइ।

४–हरिवंश पुराण, १०।१३४ :

उत्तराध्ययनं वीर-निर्वाणगमनं तथा।

अंग-बाह्य प्रकीर्णक है। इसका अर्थ यह हुआ कि वह आरातीय आचार्यों (गणधरों के उत्तर कालीन आचार्यों) की रचना है।[१]

श्वेताम्बर-साहित्य में उत्तराध्ययन की विषय-वस्तु का वर्णन वही मिलता है, जो वर्तमान उत्तराध्ययन में प्राप्त है।[२]

वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी की पूर्ति के साथ साथ दशवैकालिक की रचना हो चुकी थी। उत्तराध्ययन उससे पूर्ववर्ती रचना है। वह आचारांग के बाद पढ़ा जाने लगा था। उसे अपनी विशेषता के कारण थोड़े समय में ही महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो चुका था। इस स्थिति के संदर्भ में यह अनुमान किया जा सकता है कि उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की संकलना वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही हो चुकी थी।

उत्तराध्ययन के प्रारम्भिक संस्करण की प्राचीनता असंदिग्ध है। उसकी प्राचीनता जानने के दो साधन हैं—

(१) भाषा-प्रयोग और

(२) सिद्धान्त।

भाषा-प्रयोग तीसरे अध्ययन (श्लोक १४) में 'जक्ख' (सं० यक्ष) शब्द का 'अर्चनीय देव' के अर्थ में प्रयोग हुआ है। यह प्रयोग इसकी प्राचीनता का सूचक है। यज्ञ के उत्कर्ष काल में ही 'यक्ष' शब्द उत्कर्षवाची था। दोनों की निष्पत्ति एक ही धातु (यज्) से है। यज्ञ के अपकर्ष के साथ-साथ 'यक्ष' शब्द के अर्थ का भी अपकर्ष हो गया। उत्तरकालीन साहित्य में वह देवों की एक हीन जाति का वाचक मात्र रह गया।

इसी प्रकार 'पाढव' (३।१३) 'कुसीमओ' (५।१८) 'मिलेक्खुया' (१०।१६) 'अज्झत्थ' (६।६) 'ममिय' (६।४) आदि अनेक शब्द हैं, जो आचारांग और सूत्रकृतांग जैसे प्राचीन आगमों में ही मिलते हैं।

सिद्धान्त : जातिवाद (अध्ययन १२ और १३) यज्ञ एवं तीर्थस्नान (अध्ययन १२) ब्राह्मणों के लक्षणों का प्रतिपादन (अध्ययन २५) ये इन अध्ययनों की प्राचीनता के सूचक हैं। ये सम्बन्धित चर्चाओं के उत्कर्ष काल में लिखे गए हैं अन्यथा शान्त चर्चा का

१–तत्त्वार्थवार्तिक, १।२०, पृष्ठ ७८

यद् गणधरशिष्यप्रशिष्यैरारातीयैरधिगतश्रुतार्थतत्त्वैः कालदोषादल्पमेधायुर्बलानां प्राणिनामनुग्रहार्थमुपनिबद्धं संक्षिप्ताङ्गार्थवचनविन्यासं तदङ्गबाह्यम्।
तद्भेदा उत्तराध्ययनादयोऽनेकविधाः।

२–उत्तराध्ययन निर्युक्ति, १८-२६।

इसकी समापना के साथ प्रतिपादन नहीं हो सकता। इसी तथ्य के आधार पर कहा जा सकता है कि ये अध्ययन महावीर-कालीन अथवा उनके परिपार्श्व-कालीन हैं। संभव है कुछ अध्ययन पूर्ववर्ती भी हों।

चिकित्सा का वर्जन (२।३२,३३), परिकर्म का वर्जन (अध्ययन १९), अचेलकता का प्रतिपादन (२।३४,३५ ; २३।२९) तथा अचेलकता और सचेलकता की सामंजस्यपूर्ण स्थिति का स्वीकार (२।१२,१३)—ये सभी जैन आचार की प्राचीनतम परम्परा के अवशेष है जो उत्तरवर्ती साहित्य में नवीन परम्पराओं की पृष्ठभूमि में प्रश्न-चिह्न बने हुए है।

उत्तराध्ययन अपने मूल रूप में धर्मकथानुयोग है। इसके कथा-भाग में भगवान् महावीर के उत्तरकालीन किसी भी राजा, मुनि या व्यक्ति का नाम नहीं है। इससे भी यह ज्ञात होता है कि इसका प्रारम्भिक संस्करण भगवान् महावीर के निर्वाण-काल के आस-पास ही संकलित हो गया था।

१६ : क्या उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की अंतिम वाणी है ?

कल्पसूत्र में बताया गया है कि भगवान् महावीर कल्याणफल-विपाक वाले ५५ अध्ययनों, पाप-फल वाले ५५ अध्ययनों तथा ३६ अपृष्ट-व्याकरणों का व्याकरण कर 'प्रधान' नामक अध्ययन का निरूपण करते-करते सिद्ध-बुद्ध-मुक्त हो गए।[1]

उपर्युक्त उद्धरण के आधार पर यह माना जाता है कि छत्तीस अपृष्ट-व्याकरण वस्तुतः उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन ही हैं। उत्तराध्ययन के अंतिम श्लोक (३६।२६८) से इसकी पुष्टि की जाती है—

> इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुए।
> छत्तीसं उत्तरज्झाए, भवसिद्धीयसंमए॥

चूर्णिकार ने इसका अर्थ निम्न प्रकार किया है—ज्ञातकुल में उत्पन्न वर्द्धमान स्वामी छत्तीस उत्तराध्ययनों का प्रकाशन या प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।[2]

१—कल्पसूत्र, सूत्र १४६ :

···पच्चूसकालसमयंसि संपलियंकनिसन्ने पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाण-फलविवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं छत्तीसं च अपुट्ठवागरणाइं वागरित्ता पधाणं नाम अज्झयणं विभावेमाणे २ कालगए वितिक्कंते समुज्जाए छिन्नजाइजरामरणबंधणे सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतकडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे।

२—उत्तराध्ययन चूर्णि, पृष्ठ २८३ :

इति परिसमाप्तौ उपप्रदर्शने च, प्रादुः प्रकाशे, प्रकाशीकृत्य—प्रज्ञापयित्वा बुद्धः—अवगतार्थः ज्ञातकः—ज्ञातकुलसमुद्भवः वर्द्धमानस्वामी, ततः परिनिर्वाणं गतः, किं प्रज्ञापयित्वा ?, षट्त्रिंशदुत्तराध्ययनानि।

शान्त्याचार्य ने चूर्णिकार का अनुसरण करते हुए भी इसमें अपनी ओर से दो बातें और जोड़ी है। पहली यह है कि भगवान महावीर ने उत्तराध्ययन के कुछ अध्ययनों का अर्थ रूप में और कुछ अध्ययनों का सूत्र रूप में प्रज्ञापन किया।[1] दूसरी यह कि उन्होंने परिनिवृ'त का वैकल्पिक अर्थ स्वस्थीभूत किया है।[2]

निर्युक्तिकार ने इन अध्ययनों को जिन प्रज्ञप्त बतलाया है।[3] शान्त्याचार्य ने 'जिन' शब्द का अर्थ श्रुत जिन अर्थात् श्रुतकेवली किया है।[4]

निर्युक्तिकार के अभिमतानुसार ये छत्तीस अध्ययन श्रुतकेवली आदि स्थविरों द्वारा प्ररूपित हैं। उन्होंने इसकी भी कोई चर्चा नहीं की कि भगवान ने अन्तिम देशना में इन छत्तीस अध्ययनों का प्ररूपण किया। बृहद्वृत्तिकार शान्त्याचार्य भी परिनिर्वाण के विषय में असंदिग्ध नहीं है। केवल चूर्णिकार ने अपना असंदिग्ध मत प्रगट किया है।

उत्तराध्ययन के अध्ययनों की संख्या ३६ होने के कारण सहज ही उस ओर ध्यान जाता है कि कल्पसूत्र में उल्लिखित ३६ अपृष्ट-व्याकरण ये ही होने चाहिए। यहाँ यह स्मरणीय है कि समवायांग में छत्तीस अपृष्ट-व्याकरणों का उल्लेख नहीं है। वहाँ केवल इतना ही बतलाया गया है कि भगवान महावीर ने अंतिम रात्रि के समय ५५ कल्याण

१–उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ७१२

इति इत्यनन्तरमुपवर्णितान् पाउकरे'त्ति सूत्रत्वात् 'प्रादुष्कृत्य' कांश्चिदर्थत काश्चन सूत्रतोऽपि प्रकाश्य कोऽर्थ ? प्रज्ञाप्य, किमित्याह— परिनिर्वृ'त' निर्वाण गत इति सम्बन्धनीयम् कीदृश सन् क इत्याह— बुद्ध' केवलज्ञानादवगतसकलवस्तुतत्त्व ज्ञातको' ज्ञातजो' वा— ज्ञातकुलसमुद्भव, स चेह भगवान् वर्द्धमानस्वामी षट्त्रिंशद्' इति षट्त्रिंशत्संख्या उत्तरा— प्रधाना अधीयन्त इत्यध्याया— अध्ययनानि तत उत्तराश्च तेऽध्यायाश्चोत्तराध्यायास्तान् विनयश्रुतादीन् ।

२–वही, पत्र ७१२

अथवा पाउकरे'त्ति प्रादुरकार्षीत् प्रकाशितवान्, शेष पूर्ववत् नवर परिनिर्वृ'त' क्रोधादिदहनोपशमत समन्तात्स्वस्थीभूत ।

३–उत्तराध्ययन निर्युक्ति गाथा ५५९

तम्हा जिणपन्नत्ते अणतगमपज्जवेहि संजुत्ते ।
अज्झाए जहाजोग गुरुप्पसाया अहिज्झिज्जा ॥

४–उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति पत्र ७१३

तस्मात् जिनै श्रुतजिनादिभि प्ररूपिता ।

फल-विपाक वाले अध्ययनों तथा ५५ पाप-फल-विपाक वाले अध्ययनों का व्याकरण कर परिनिर्वृत हुए।[1] समवायांग के छत्तीसवें समवाय में भी इसकी कोई चर्चा नहीं है।

उत्तराध्ययन की रचना तथा 'इइ एस धम्मे अक्खाए, कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं' जैसे उल्लेखों से यह प्रमाणित नहीं होता कि ये सब अध्ययन महावीर के द्वारा निरूपित हैं। निर्युक्ति के साक्ष्य से इसकी चर्चा हम पहले कर चुके हैं। अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के प्रथम दो चरण वे ही हैं, जो छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक के हैं—

१८।२४	३६।२६८
इइ पाउकरे बुद्धे	इइ पाउकरे बुद्धे
नायए परिनिव्वुडे।	नायए परिनिव्वुए।
विज्जाचरणसंपन्ने	छत्तीसं उत्तरज्झाए
सच्चे सच्चपरक्कमे॥	भवसिद्धीयसंमए॥

अठारहवें अध्ययन के चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का जो अर्थ वृत्तिकार ने किया है, वही अर्थ छत्तीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध का होना चाहिए। वृत्तिकार ने चौबीसवें श्लोक के पूर्वार्द्ध की व्याख्या इस प्रकार की है—बुद्ध (अवगत तत्त्व), परिनिर्वृत (शीतीभूत), ज्ञातपुत्र महावीर ने इस तत्त्व का प्रज्ञापन किया है।[2] इस अर्थ के संदर्भ मे जब हम छत्तीसवें अध्ययन के अंतिम श्लोक को पढ़ते हैं, तब उससे यह फलित नहीं होता कि ज्ञातपुत्र महावीर छत्तीस अध्ययनों का प्रज्ञापन कर परिनिर्वाण को प्राप्त हुए।

महावीर की परम्परा में जो अर्थ-प्रतिपादन होता है, वह उनकी धर्मदेशना के आधार पर होता है। इसी पारंपरिक सत्य का उल्लेख उत्तराध्ययन के संकलनकर्त्ता ने अन्तिम श्लोक में किया है।

१७ : महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र

अविकल उत्तराध्ययन भगवान् महावीर की प्रत्यक्ष वाणी भले न हो, किन्तु उसमें भगवान् महावीर की वाणी का जिस समीचीन पद्धति से संगुम्फन हुआ है, उसे देख कर सहज ही यह कहने को मन ललचा उठता है कि यह महावीर-वाणी का प्रतिनिधि सूत्र है।

अहिंसा, अपरिग्रह आदि तत्त्व नवीन नहीं हैं और भगवान् महावीर के समय में भी नवीन नहीं थे। उनसे पहले अनेक तीर्थङ्कर और धर्माचार्य उनका प्रयोग कर चुके थे।

१—समवायांग, समवाय ५५।

२—उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति, पत्र ४४४ :

इत्येवंरूपं 'पाउकरे'त्ति प्रादुरकार्षीत्—प्रकटितवान् 'बुद्धः' अवगततत्त्वः सन् ज्ञात एव ज्ञातकः—जगत्प्रतीतः क्षत्रियो वा, स चेह प्रस्तावान्महावीर एव, 'परिनिर्वृतः' कषायानलविध्यापनात्समन्ताच्छीतीभूतः।

किन्तु भगवान् महावीर ने तात्कालिक परिस्थितियों के संदर्भ में उसकी जो अभिव्यक्ति दी, वह उसका नवीन रूप है[१]। भगवान् महावीर के समय की सामाजिक परिस्थिति में अहिंसा और अपरिग्रह के मुख्य बाधक-तत्त्व ये थे—

(१) दास-प्रथा	(४) अमित संग्रह
(२) जातिवाद	(५) दण्ड का उच्छृंखल प्रयोग
(३) पशुबलि	(६) अनियंत्रित भोग

इन बाधक-तत्त्वों के निरसन के लिए भगवान् महावीर ने जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया उसका हृदयग्राही सकलन उत्तराध्ययन में हुआ है।

पार्श्वनाथ के समय में चार महाव्रत थे और सामायिक चारित्र था। भगवान् *महावीर ने महाव्रत पाँच किए और छेदोपस्थापनीय चारित्र की व्यवस्था की।* छेदोपस्थापनीय का अर्थ है - विभाग-युक्त चारित्र।

पूज्यपाद (वि० ५-६ शताब्दी) ने लिखा है "भगवान् महावीर ने चारित्र धर्म के तेरह विभाग किए—पाँच महाव्रत, पाँच समितियाँ और तीन गुप्तियाँ। ये विभाग पार्श्वनाथ के समय में नहीं थे।"[१]

उत्तराध्ययन में इसका सुव्यवस्थित प्रतिपादन हुआ है। षड्जीवनिकायवाद महावीर के तत्त्ववाद का प्रधान अंग है। जीव विषयक इतना व्यवस्थित और विस्तृत प्रतिपादन अन्य किसी धर्म-परम्परा में नहीं था। आचार्य सिद्धसेन ने इसे भगवान् महावीर की सर्वज्ञता की कसौटी के रूप में प्रस्तुत किया है।[२]

उत्तराध्ययन में जीव-विभक्ति का भी एक सुन्दर प्रकरण है। अजीव-विभक्ति, कर्मवाद, षड्द्रव्य, नव तत्त्व आदि-आदि भी समुचित रूपेण प्रतिपादित हुए हैं।

यद्यपि उत्तराध्ययन को धर्मकथानुयोग के अन्तर्गत रखा गया है, किन्तु अपने वर्तमान आकार में वह चारों अनुयोगों का संगम है। इस दृष्टि से इसे महावीर-वाणी (आगमों) का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१–चारित्र भक्ति, ७

तिस्रः सत्तमगुप्तयस्तनुमनोभाषानिमित्तोदयाः
पंचेर्यादिसमाश्रयाः समितयः पंचव्रतानीत्यपि।
चारित्रोपहितं त्रयोदशतयं पूर्वं न दिष्टं परै-
राचारं परमेष्ठिनो जिनमतेर्वीरान् नमामो वयम्॥

२–प्रथम द्वात्रिंशिका, श्लोक १३

य एष षड्जीवनिकायविस्तरः परैरनालीढपथस्त्वयोदितः।
अनेन सर्वज्ञपरीक्षणक्षमा—स्त्वयि प्रसादोदयसोत्सवाः स्थिताः॥

१८ : उत्तराध्ययन : आकार और विषय-वस्तु

उत्तराध्ययन के छत्तीस अध्ययन हैं। यह संकलित सूत्र है। इसका प्रारम्भिक संकलन वीर-निर्वाण की पहली शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ। उत्तरकालीन संस्करण देवर्द्धिगणी के समय में सम्पन्न हुआ। वर्तमान अध्ययनों के नाम समवायांग तथा उत्तराध्ययन निर्युक्ति में मिलते हैं। उनमें क्वचित् थोड़ा अन्तर भी है—

समवायांग[1]	उत्तराध्ययन निर्युक्ति[2]
१. विणयसुयं	विणयसुयं
२. परीसह	परीसह
३. चाउरंगिज्जं	चउरंगिज्जं
४. असंखयं	असंखयं
५. अकाममरणिज्जं	अकाममरणं
६. पुरिसविज्जा	नियंठ (खुड्डागनियंठ[3])
७. उरब्भिज्जं	ओरब्भं
८. काविलिज्जं	काविलिज्जं
९. नमिपव्वज्जा	णमिपव्वज्जा
१०. दुमपत्तयं	दुमपत्तयं
११. बहुसुयपूजा	बहुसुयपुज्जं
१२. हरिएसिज्जं	हरिएस
१३. चित्तसंभूयं	चित्तसंभूइ
१४. उसुकारिज्जं	उसुआरिज्जं

१—समवायांग, समवाय ३६।

२—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १३-१७।

३—वही, गाथा २४३ :

एसा खलु निज्जुत्ती खुड्डागनियंठसुत्तस्स।

१५ सभिक्खुग	सभिक्खु
१६ समाहिठाणाई	समाहिठाण
१७ पावसमणिज्ज	पावसमणिज्ज
१८ संजइज्ज	संजईज्ज
१९ मियचारिता	मियचारिया
२० अणाहपव्वज्जा	नियठिज्ज (महानियंठ[1])
२१ समुद्दपालिज्ज	समुद्दपालिज्ज
२२ रहनेमिज्ज	रहनेमीय
२३ गोयमकेसिज्ज	केसिगोयमिज्ज
२४ समितीओ	समिइओ
२५ जन्नतिज्ज	जन्नइज्ज
२६ सामायारी	सामायारी
२७ खलुंकिज्ज	खलुंकिज्ज
२८ मोक्खमग्गगई	मुक्खगई
२९ अप्पमाओ	अप्पमाओ
३० तवोमग्गो	तव
३१ चरणविही	चरण
३२ पमायट्ठाणाइ	पमायठाण
३३ कम्मपगडी	कम्मपयडी
३४ लेसज्झयण	लेसा
३५ अणगारमग्गे	अणगारमग्ग
३६ जीवाजीवविभत्ती	जीवाजीवविभत्ती

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति गाथा ४२२
एसा खलु निज्जुत्ती महानियंठस्स सुत्तस्स ।

निर्युक्ति के अनुसार छत्तीस अध्ययनों का विषय-वर्णन इस प्रकार है[1] :

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
१	४८		विनय
२	४६	३	ग्राम-कण्ट-सहन का विधान।
३	२०		चार दुर्लभ अंगों का प्रतिपादन।
४	१३		प्रमाद और अप्रमाद का प्रतिपादन।
५	३२		मरण-विभक्ति—अकाम और सकाम मरण।
६	१७		विद्या और आचरण।

१—उत्तराध्ययन निर्युक्ति, गाथा १८-२७ :

पढमे विणओ बीए परिसहा दुलहंगया तइय।
अहिगारो य चउत्थे होइ पमायप्पमाएत्ति ॥
मरणविभत्ती पुण पंचमम्मि विज्जा चरणं च छट्ठअज्झयणे।
रसगेहिपरिच्चाओ सत्तमे अट्ठमि अलाभे ॥
निक्कंपया य नवमे दसमे अणुसासणोवमा भणिया।
इक्कारसमे पूया तवरिद्धी चेव वारसमे ॥
तेरसमे अ नियाणं अनियाणं चेव होइ चउदसमे।
भिक्खुगुणा पन्नरसे सोलसमे बंभगुत्तीओ ॥
पावाण वज्जणा खलु सत्तरसे भोगिड्ढिविजहणट्ठारे।
एगुणि अप्पडिकम्मे अणाहया चेव वीसइमे ॥
चरिया य विचित्ता इक्कवीसि बावीसिमे थिरं चरणं।
तेवीसइमे धम्मो चउवीसइमे य समिइओ ॥
बंभगुण पन्नवीसे सामायारी य होइ छव्वीसे।
सत्तावीसे असढया अट्ठावीसे य मुक्खगई ॥
एगुणतीस आवस्सगप्पमाओ तवो अ होइ तीसइमे।
चरणं च इक्कतीसे वत्तीसि पमायठाणाइं ॥
तेत्तीसइमे कम्मं चउतीसइमे य हुंति लेसाओ।
भिक्खुगुणा पणतीसे जीवाजीवा य छत्तीसे ॥
उत्तरज्झयणाणेसो पिंडत्थो वण्णिओ समासेणं।
इत्तो इक्किक्कं पुण अज्झयणं कित्तइस्सामि ॥

अध्ययन	श्लोक	सूत्र	विषय
७	३०		रस-गृद्धि का परित्याग।
८	२०		लाभ और लोभ के योग का प्रतिपादन।
९	६२		संयम में निष्प्रकम्प भाव।
१०	३७		अनुशासन।
११	३२		बहुश्रुत की पूजा।
१२	४७		तप का ऐश्वर्य।
१३	३५		निदान—भोग-संकल्प।
१४	५३		अनिदान—भोग-असंकल्प।
१५	१६		भिक्षु के गुण।
१६	१७	१२	ब्रह्मचर्य की गुप्तियाँ।
१७	२१		पाप वर्जन।
१८	५३		भोग और ऋद्धि का त्याग।
१९	९८		अपरिकर्म—देहाध्यास का परित्याग।
२०	६०		अनाथता।
२१	२४		विचित्र चर्या।
२२	४९		चरण का स्थिरीकरण।
२३	८९		धर्म—चातुर्याम और पंचयाम।
२४	२७		समितियाँ-गुप्तियाँ।
२५	४३		ब्राह्मण के गुण।
२६	५२		सामाचारी।
२७	१७		अशठता।
२८	३६		मोक्ष-गति।
२९		७४	आवश्यक में अप्रमाद।
३०	३७		तप।
३१	२१		चारित्र।
३२	१११		प्रमाद-स्थान।
३३	२५		कर्म।
३४	६१		लेश्या।
३५	२१		भिक्षु के गुण।
३६	२६८		जीव और अजीव का प्रतिपादन।

निर्युक्तिकार ने उत्तराध्ययन के प्रतिपाद्य के संक्षिप्त संकेत प्रस्तुत किए हैं। इनसे एक स्थूल-सी रूपरेखा हमारे सामने आ जाती है। विस्तार में जाएँ तो उत्तराध्ययन का प्रतिपाद्य बहुत विशद है। भगवान् पार्श्व और भगवान् महावीर की धर्म-देशनाओं का स्पष्ट चित्रण यहाँ मिलता है। वैदिक और श्रमण संस्कृति के मतवादों का संवादात्मक शैली में इतना व्यवस्थित प्रतिपादन अन्य आगमों में नहीं है। इसमें धर्म-कथाओं, आध्यात्मिक-उपदेशों तथा दार्शनिक-सिद्धान्तों का आकर्षक योग है। इसे भगवान् महावीर की विचार-धारा का प्रतिनिधि सूत्र कहा जा सकता है।

१६ : उत्तराध्ययन की कथाएँ : तुलनात्मक दृष्टिकोण

भारतीय धर्मों की अनेक साहित्यिक शाखाएँ हैं। उनमें अनेक कथाएँ एक जैसी हैं। प्रस्तुत सूत्र में चार कथाएँ ऐसी हैं, जो किंचित् रूपान्तर के साथ महाभारत और बौद्ध-साहित्य में मिलती हैं। जैसे—

उत्तराध्ययन	महाभारत	जातक
१. हरिकेश बल (अ० १२)	×	मातंग (सं० ४९७)
२. चित्त-संभूत (अ० १३)	×	चित्तसंभूत (सं० ४९८)
३. इषुकारीय (अ० १४)	शान्तिपर्व, अ० १७५ शान्तिपर्व, अ० २७७	हस्तिपाल (सं० ५०९)
४. नमि-प्रव्रज्या (अ० ९)	शान्तिपर्व, अ० १७८ तथा अ० २७६	महाजन (सं० ५३९)

इनके सादृश्य का कारण पूर्व कालीन 'श्रमण-साहित्य' का स्वीकरण है। प्रत्येक-बुद्धों द्वारा रचित प्रकरण हजारों की संख्या में प्रचलित थे। उन्होंने भारतीय साहित्य की प्रत्येक धारा को प्रभावित किया था। मार्कण्डेय पुराण के पिता-पुत्र संवाद की तुलना उत्तराध्ययन के चौदहवें इषुकारीय अध्ययन गत पिता-पुत्र संवाद से करने पर दोनों का स्रोत एक ही परम्परा में प्राप्त होता है। इसकी विस्तृत चर्चा हमने 'उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में की है।

२० : उत्तराध्ययन : व्याकरण-विमर्श

वर्तमान प्राकृत व्याकरण की अपेक्षा प्राचीन आगमों में कुछ विशिष्ट प्रयोग उपलब्ध होते हैं। उत्तराध्ययन भी उसी कोटि का आगम है। इसके अनेक स्थलों में विभक्ति-विहीन शब्द प्रयोग हैं। अनेक स्थलों में ह्रस्व का दीर्घीकरण और दीर्घ का ह्रस्वीकरण है। संस्कृत तुल्य तथा प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि-प्रयोग प्राप्त होते हैं। विभक्ति, वचन आदि का व्यत्यय भी विपुल मात्रा में मिलता है। इसमें समालोच्य शब्द भी प्रयुक्त हैं।

विभक्ति विहीन शब्द प्रयोग :

बुद्धपुत्त (१।७)
भाय (१।३६)
कल्लाण (१।३६)
भिक्खु (२।२२)
तेल्ल (१४।१८)
जीविय (३२।२०)

ह्रस्व का दीर्घीकरण :

समाययन्ती (४।२)
परत्था (४।५)
दुक्खपउराए (८।१)
जाईमय (१२।५)
अन्नमन्नमणूरत्ता (१३।५)
अग्गमाहिमी (१६।१)

दीर्घ का ह्रस्वीकरण :

पक्खिणि (१४।४१)
जिया (२२।१६)
पमाणि (२६।२७)

संस्कृत तुल्य संधि प्रयोग :

मुद्गदवि ७।१८

प्राकृत व्याकरण से असिद्ध संधि प्रयोग :

उवसग्गे + अभिधारए = उवसग्गाभिधारए (२।२१)
बुद्धेहि + आयरिय = बुद्धेहायरिय (१।४२)
विपरियास + उवेइ = विपरियासुवेइ (२०।४६)

विभक्ति-व्यत्यय :

आणुपुव्वि (१।१)—यहाँ तृतीया के अर्थ में द्वितीया विभक्ति है।
अदीणमणसो (२।३)—यहाँ प्रथमा के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है।
मज्झदुक्खाण (८।८) यहाँ तृतीया के अर्थ में षष्ठी विभक्ति है।
चोइयाहि ठाणेहिं (११।६)—यहाँ सप्तमी के अर्थ में तृतीया विभक्ति है।
मुहाजीवी (२५।२७)—यहाँ द्वितीया के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है।
नरमाण (३०।२०)—यहाँ षष्ठी के अर्थ में प्रथमा विभक्ति है।

वचन-व्यत्यय :

विहन्नइ (२।६)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है।

आहु (१२।२५)—यहाँ एकवचन के स्थान पर बहुवचन है।

तं (३६।४८)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है।

परित्तसंसारी (३६।२६०)—यहाँ बहुवचन के स्थान पर एकवचन है।

अलाक्षणिक :

फग्गु+आईहिं	=	फग्गुमाईहिं १९।६६
मुट्ठि+आईहिं	=	मुट्ठिमाईहिं १९।६७
असजत्	=	संजए २१।२०

समालोच्य शब्द :

अप्पायंके (३।१८)—यहाँ 'अप्प' का प्रचलित अर्थ 'अल्प' प्राप्त नहीं होता। यहाँ यह शब्द निषेधार्थ में प्रयुक्त है।

मुदिट्ठं (१२।३८) ; सुजट्ठं (१२।४०)—इन दोनों में समान प्रयोग चाहिए। संभव है 'मुदिट्ठं' के स्थान में लिपि-दोष से 'सुजट्ठं' हो गया हो।

भवताम् = भवयाणं (१२।१०)

२१ : उत्तराध्ययन : भाषा की दृष्टि से

उत्तराध्ययन की भाषा प्राकृत है। भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में सात प्राकृतों का उल्लेख किया है—मागधी, आवन्ती, प्राच्या, शौरसेनी, अर्द्धमागधी, वाल्हीका और दाक्षिणात्या।[1]

१—नाट्यशास्त्र, १७।४८ :

मागध्यवन्तिजा प्राच्या शौरसेन्यर्द्धमागधी।
वाल्हीका दाक्षिणात्याश्च सप्तभाषाः प्रकीर्तिताः॥

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत व्याकरण में प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची चूलिका पैशाचिक और अपभ्रंश—इन छह प्राकृतों का उल्लेख किया है।

षड्भाषा चन्द्रिका' में भी प्राकृत के ये ही छह विभाग मिलते हैं। वहाँ महाराष्ट्र की भाषा को प्राकृत, शूरसेन (मथुरा के आसपास के प्रदेश) की भाषा को शौरसेनी मगध की भाषा को मागधी पिशाच (पाण्ड्य, केकय आदि देशों) की भाषा को पैशाची और चूलिका पैशाची तथा आभीर आदि देशों की भाषा को अपभ्रंश कहा गया है[1]।

भगवान महावीर अर्द्धमागधी भाषा में बोलते थे। आगमों में स्थान-स्थान पर यही उल्लेख मिलता है[2]। प्राचीन जैन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी और मागधी रही है।

१–*षड्भाषाचन्द्रिका, उपोद्घात*

षड्विधा सा प्राकृती च शौरसेनी च मागधी।
पैशाची चूलिकापैशाच्यपभ्रंश इति क्रमात्॥
तत्र तु प्राकृत नाम महाराष्ट्रोद्भव विदु।
शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते॥
मगधोत्पन्नभाषा ता मागधी सम्प्रचक्षते।
पिशाचदेशनियत पैशाचीद्वितय भवेत्॥
पाण्ड्यकेकयवाल्हीक सिंह नेपाल कुन्तला।
सुधेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजकास्तथा॥
एते पिशाचदेशा स्युस्तद्देश्यस्तद्गुणो भवेत्।
पिशाचजातमथवा पैशाचीद्वयमुच्यते॥
अपभ्रंशस्तु भाषा स्यादाभीरादिगिरा चय।
॥

२–(क) औपपातिक, सूत्र ३४
तए ण समणे भगव महावीरे कूणिअस्स भभासारपुत्तस्स ...
अद्धमागहाए भासाए भासति ।

(ख) समवायांग समवाय ३४
भगव च ण अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ (२२)।

क्षेत्र की दृष्टि से अर्द्धमागधी उस भाषा का नाम है, जो आधे मगध में अर्थात् मगध के पश्चिमी भाग में व्यवहृत थी। इसमें मागधी भाषा के लक्षण प्राप्त थे, इसलिये प्रवृत्ति की दृष्टि से भी संभव है इसे अर्द्धमागधी कहा गया। भाषा-शास्त्रियों के अनुसार मागधी की तीन मुख्य विशेषताएँ हैं—

(१) प्रथमा विभक्ति के एकवचन में 'ओकार' के स्थान पर 'एकार' होना।

(२) 'र' का 'ल' होना।

(३) 'ष', 'स' के स्थान पर 'श' होना।

अर्द्धमागधी में प्रथम विशेषता बहुलता से मिलती है, दूसरी कहीं-कहीं मिलती है और तीसरी प्रायः नहीं मिलती।

जब जैन मुनि पूर्वी भारत से हट कर पश्चिमी भारत में विहार करने लगे तब उनकी मुख्य भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत हो गई। अर्द्धमागधी और मागधी में लिखे हुए आगम भी उससे प्रभावित हुए। प्राकृत के सभी रूपों में महाराष्ट्री ने उत्कर्ष भी प्राप्त कर लिया। महाकवि दण्डी ने भी इसका उल्लेख किया है—"महाराष्ट्राश्रयां, प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः"[१]।

फिर भी जैन आचार्यों को आगमों की मूल भाषा की विस्मृति नहीं हुई। वे समय के विविध परिवर्तों में भी इसी तथ्य की पुनरावृत्ति करते रहे हैं कि आगमों की मूल भाषा अर्द्धमागधी है। प्रज्ञापना में अर्द्धमागधी भाषा बोलने वाले को 'भाषा-आर्य' कहा गया है।[२] स्थानांग[३] और अनुयोगद्वार[४] में संस्कृत तथा प्राकृत को ऋषिभाषित कहा गया है। आचार्य हरिभद्र सूरि ने भाषा-आर्य की व्याख्या में संस्कृत और जोड़ा है।[५] कुछ आचार्य पूर्वों की भाषा भी संस्कृत मानते हैं।[६] इन सब तथ्यों के अध्ययन के उपरान्त भी हम इस तथ्य की विस्मृति नहीं कर सकते कि प्राचीन आगमों की भाषा अर्द्धमागधी थी।

१—काव्यादर्श, १।३४।

२—प्रज्ञापना, पद १, सूत्र ३७ : भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासेंति।

३—स्थानांग ७।३।५५३, गाथा २८ :

सक्कता पागता चेव, दुहा भणितीओ आहिया।
सरमंडलंमि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिता॥

४—अनुयोगद्वार, सूत्र १२७ गाथा ५३ :

सक्कया पायया चेव, भणिईओ होंति दोण्णि वा।
सरमंडलम्मि गिज्जंते, पसत्था इसिभासिआ॥

५—तत्त्वार्थ सूत्र ३।१५, हारिभद्रीय वृत्ति पृष्ठ १८० :

शिष्टाः-सर्वातिशयसम्पन्ना गणधरादयः तेषां भाषा संस्कृताऽर्धमागधिकादिका च।

६—प्रभावक चरित, पृष्ठ ५८, वृद्धवादिसूरि चरित, श्लोक ११३ :

चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन्।

अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री

उत्तराध्ययन की भाषा महाराष्ट्री से प्रभावित अर्द्धमागधी है। अर्द्धमागधी और महाराष्ट्री का अन्तर निम्न प्रकार है

अर्द्धमागधी	महाराष्ट्री
असयुक्त क को ग या त होता है—	क का प्राय लुक होता है—
कुमारगा (१४।११)	अज्झावयाण (१२।१६)
लोगो (१४।२२)	
असयुक्त ग का लुक नही होता—	ग का प्राय लुक होता है—
कामभोगेसु (१४।६)	भोग (१४।३७)
सगरो (१८।३५)	
असयुक्त च और ज के तकार बहुल प्रयोग मिलते है—	च और ज का प्राय लुक होता है
तेगिच्छ (२।३३)	समुवाय (१४।३७)
वितिगिच्छा (१६। सू० ४)	बीयाइ (१२।१२)
असयुक्त त का प्राय लुक नहीं होता—	त का प्राय लुक होता है—
अतर (८।६)	पुरोहिय (१४।३७)
असयुक्त द का प्राय लुक नहीं होता और कही कही उसको त हो जाता है—	द का प्राय लुक होता है—
उत्तग (७।२३)	विइयाणि (१२।१३)
असयुक्त प को प्राय व हो जाता है—	प का प्राय लुक होता है—
महानीवो (२३।६६)	तउय (३६।७३)
असयुक्त य का प्राय लुक नही होता और कहा-कही उसको त हो जाता है—	य का प्राय लुक होता है—
उवाया (३२।६)	काए (३६।८२)
	आउ (७।१०)
असयुक्त व का प्राय लुक नहीं होता और कही-कही उसको त हो जाता है—	व का प्राय लुक होता है—
पत्तरे (११।१६)	चय (२४।१६)
निवायरे (११।२४)	
प्रथमा के एकवचन में एकार होता है—	प्रथमा के एकवचन में ओकार होता है—
कयरे (१२।६)	गणगुत्तो (१२।३)
धीरे (१५।३)	

शब्द-भेद—

अर्द्धमागधी	महाराष्ट्री
कम्मुणा	कम्मेण
वेयसां (२५।१६)	वेयाणं
विसालिसेहिं (३।१४)	विसरिसेहिं
दुवालसंगं (२४।३)	वारसंग (२३।७)
गेही (६।४)	गिद्धी
सोही (३।१२)	सुद्धी
तेगिच्छं (२।३३)	चीइच्छं
मिलेक्खुया (१०।१६)	मिलिच्छा, मिच्छा
माहणा (१२।१३)	बम्हणो (२५।१९)
पडुप्पन्न (२९।सू०१३)	पच्चुप्पन्न (७।९)

उत्तराध्ययन में अर्द्धमागधी के साथ-साथ महाराष्ट्री-प्राकृत के प्रयोग भी मिलते हैं। इसलिए भाषा की दृष्टि से इसे भाषा-द्वय की मिश्रित कृति कहा जा सकता है।

२२ : उत्तराध्ययन के व्याख्या-ग्रन्थ

जैन आगमों में उत्तराध्ययन सर्वाधिक प्रिय आगम है। उसकी प्रियता का कारण उसके सरस कथानक, सरस संवाद और सरस रचना-शैली है। उसकी सर्वाधिक प्रियता के साक्ष्य व्यापक अध्ययन-अध्यापन और विशाल व्याख्या-ग्रन्थ हैं। जितने व्याख्या-ग्रन्थ उत्तराध्ययन के हैं, उतने अन्य किसी आगम के नहीं हैं।

१—निर्युक्ति :

यह उत्तराध्ययन के प्राप्त व्याख्या-ग्रन्थों में सर्वाधिक प्राचीन है। इसमें ५५७ गाथाएँ हैं। यह लघु कृति है, किन्तु इसमें अनेक महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ उपलब्ध हैं। इसलिय यह उत्तरवर्ती सभी व्याख्या-ग्रन्थों की आधार-भित्ति रही है। इसके कर्त्ता द्वितीय भद्रबाहु (वि० छठीं शताब्दी) हैं।

२—चूर्णि :

यह प्राकृत-संस्कृत में लिखी गई उत्तराध्ययन की महत्त्वपूर्ण व्याख्या है। इसमें अन्तिम अठारह अध्ययनों का व्याख्यान बहुत ही संक्षिप्त है। ग्रन्थ की प्रशस्ति में ग्रन्थकार

४–सुखबोधा :

यह बृहद्वृत्ति से समुद्धृत लघु वृत्ति है। इसके कर्त्ता नेमिचन्द्र सूरि हैं। सूरिपद-प्राप्ति से पूर्व इनका नाम देवेन्द्र था। इस वृत्ति का रचना-काल विक्रम सं० ११२६ है।

५–सर्वार्थसिद्धि :

इसके रचयिता भावविजय हैं। इसका रचना-काल विक्रम संवत् १६७६ है। इसमें कथाएँ पद्यबद्ध हैं।

इनके अतिरिक्त और भी व्याख्या-ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। वे सारे के सारे प्रायः इन्हीं मुख्य व्याख्या-ग्रन्थों के उपजीवी हैं। हम उनका संक्षिप्त परिचय—नाम, कर्त्ता और रचना-काल के विवरण-सहित—नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं[1] :

६–अवचूरि	ज्ञानसागर	वि० सं० १६४१
७–वृत्ति	कमल संयम	,, १५५४
८–दीपिका	उदयसागर	,, १५४६
९–लघुवृत्ति	खरतर तपोरत्नवाचक	,, १५५०
१०–वृत्ति	कीर्तिवल्लभ	,, १५५२
११–वृत्ति	विनयहंस	,, १५६७-८१
१२–टीका	अजितदेव सूरि	,, १६२८
१३–दीपिका	हर्षकुल	१६ वीं शताब्दी
१४–अवचूरि	अजितदेव सूरि	
१५–टीका-दीपिका	माणिक्यशेखर सूरि	
१६–दीपिका	लक्ष्मीवल्लभ	१८ वीं शताब्दी
१७–वृत्ति-टीका	हर्षनन्दन	वि० सं० १७११
१८–वृत्ति	शान्तिभद्राचार्य	
१९–टीका	मुनिचन्द्र सूरि	
२०–अवचूरि	ज्ञानशीलगणी	
२१–अवचूरि		वि० सं० १४९१
२२–बालावबोध	समरचन्द्र	
२३–बालावबोध	कमललाभ	१६ वीं शताब्दी
२४–बालावबोध	मानविजय	वि० सं० १७४१

१–जैनभारती (वर्ष ७, अंक ३३, पृ० ५६५-६८) में प्रकाशित श्री अगरचन्दजी नाहटा के उत्तराध्ययन सूत्र और उसकी टीकाएँ लेख पर आधृत।

इनके अतिरिक्त कुछ वृत्ति-टीकाएँ, दीपिकाएँ तथा अवचूरियाँ भी उपलब्ध होती हैं। कई में कर्त्ता का नाम नहीं है तो कई में रचना-काल का उल्लेख नहीं है। वे ये हैं—

व्याख्या ग्रन्थ	कर्त्ता	रचना-काल
मकरन्द टीका		वि० सं० १७५०
दीपिका		,, १६३७
वृत्ति-दीपिका		
दीपिका		,, १६४३
वृत्ति		
अक्षरार्थ लवलेश		
टब्बा	आदिचन्द्र या रायचन्द्र	
टब्बा	पार्श्वचन्द्र, धर्मसिंह	१८ वीं शताब्दी
वृत्ति	मतिकीर्त्ति के शिष्य	
भाषा पद्यसार	ब्रह्म ऋषि	वि० सं० १५९९

तेरापन्थ के चतुर्थ आचार्य श्रीमज्जयाचार्य (वि० सं० १८६०-१९३८) ने इस सूत्र के उनतीस अध्ययनों पर राजस्थानी भाषा में पद्य बद्ध 'जोड' की रचना की। यत्र-तत्र उन्होंने विषय को स्पष्ट करने के लिए वार्तिक भी लिखे हैं।

२३ : उपसंहार

प्रस्तुत भूमिका में दसवेआलियं और उत्तराध्ययन का संक्षिप्त पर्यालोचन किया गया है। उनके छन्द आदि अनेक विषयों पर यहाँ कोई विमर्श नहीं किया गया है। इनका पर्यालोचन 'दसवेआलियं : एक समीक्षात्मक अध्ययन' तथा 'उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन' में किया जा चुका है। इसलिए उनके अवलोकन की सूचना के साथ-साथ मैं इस विषय को सम्पन्न कर रहा हूँ।

कोठिया-भवन
बीकानेर
१ अगस्त, १९६६

आचार्य तुलसी

भूमिका में प्रयुक्त ग्रन्थों की तालिका

१. *अनुयोगद्वार* (वि० सं० २०१६) ले० आर्यरक्षित सूरि
   (प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार फण्ड, बम्बई)

२. *आगम अट्ठुत्तरी* ले० अभयदेव सूरि

३. *आगम पुरुषनुं रहस्य, श्री* (वि०सं० २०१०) ले० मुनि अभयसागर
   (प्र० श्री गोडीजी मित्र मंडल, बम्बई)

४. *आगमाधिकार* ले० श्रीमज्जयाचार्य
   (अप्रकाशित)

५. *आचारांग सूत्रम्* (वि० सं० २००७) अनु० मुनि सौभाग्यमलजी
   (प्र० श्री जैन साहित्य समिति, नयापुरा, उज्जैन)

६. *आवश्यक निर्युक्ति* (वि० सं० १९८४) ले० भद्रबाहु स्वामी (द्वितीय)
   (प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)

७. *आवश्यकवृत्ति* (वि० सं० १९८८) ले० मलयगिरि
   (प्र० आगमोदय समिति, बम्बई)

८. *उत्तराध्ययन चूर्णि* (वि० सं० १९८९) ले० जिनदासगणि महत्तर
   (प्र० श्री ऋषभदेव केसरीमलजी
   श्री श्वे० संस्था, इन्दौर)

९. *उत्तराध्ययन निर्युक्ति* भा० १-३ (वि०सं० १९७२) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
   (प्र० देवचन्द्र लालभाई जैन पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था)

१०. *उत्तराध्ययन बृहद्वृत्ति* (वि०सं० १९७२) ले० वेतालवादी शान्ति सूरि
   (भा० १-३)
   (प्र० देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धार भांडागार संस्था)

११. *उत्तराध्ययन सूत्र : एक समीक्षात्मक अध्ययन* वाचना-प्रमुख आचार्य तुलसी
   (अप्रकाशित)

१२. *उत्तराध्ययन सूत्र, दी* (२ भाग) (सन् १९२२) सं० जार्ज शार्पेन्टियर
   (प्र० उप्पसला विश्वविद्यालय)

१३ *औपपातिक सूत्रम्* (सवृत्ति) (वि०स०१९९४) सं० मुनि हेमसागर
(प्र० प० भूरालाल कालीदास)

१४ *ओघनिर्युक्ति, श्रीमती* (वृत्ति सहित) (वि०स०१९७५) ले० भद्रबाहु (द्वितीय)
(प्र० आगमोदय समिति)

१५ *अगपण्णत्ति*
(प्र० माणिकचन्द्र दिगम्बर जैन ग्रन्थमाल)

१६ *कल्पसूत्र* (वि०स० २००८) ले० आर्य भद्रबाहु स्वामी
(प्र० साराभाई मणिकलाल नवाब अहमदाबाद) स० मुनि पुण्यविजयजी

१७ *कषायपाहुड* (भाग १-६)(वि०स०२००० से २०२२) ले० भगवद् गुणधराचार्य
(प्र० भारतीय दिगम्बर जैन सघ, चौरासी, मथुरा)

१८ *काव्यादर्श* (सन् १९२४) ले० दडी
(प्र० ओरियन्टल बुक्स सप्लाई ऐजेन्सी, पूना)

१९ *केनोनिकल लिटरेचर ऑफ दी जैन्स* ले० हीरालाल रसिकदास
(प्र० ही०रा० सकडीसेरी गोपीपुरा, सूरत)

२०. *गाथा सहस्री* ले० समयसुन्दर गणी

२१ *गोम्मटसार* (जीवकाड) (सन १९२७) ले० नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती
(प्र० सन्ट्रल जैन पब्लिशिंग हाउस, अजिताश्रम, लखनऊ) अनु० सं० जे० एल० जैनी एम० ए०

२२ *चारित्रभक्ति* (क्रियाकलाप में मुद्रित) ले० पूज्यपाद स्वामी

२३ *जयधवला* (६ भाग) (वि०स० २००० से २०२२) ले० वीरसेनाचार्य
(प्र० भारत दिगम्बर जैन सघ, चौरासी, मथुरा) स० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री, सं० कैलाशचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

२४ *जातक* (६ खड) (प्रथम सस्करण) अनु० भदन्त आनन्द कौसल्यायन
(प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग)

२५ *जैनधर्मवरस्तोत्र* (स्वोपज्ञवृत्ति सहित) (वि० सं० १९८९) ले० भावप्रभ सूरि
(प्र० जव्हेरी जीवनचन्द साकरचन्द)

२६ *जैन भारती* (साप्ताहिक) (वर्ष ७ अंक ३३)
(प्र० जैन श्वे० तेरापंथी महासभा, कलकत्ता-१)

४१ धवला (षट्खण्डागम) (भा०१-६) (वि०सं०१९९६ से २००६) — ले० वीरसेनाचार्य
(प्र० जैन साहित्योद्धार कार्यालय, अमरावती) — सं० हीरालाल जैन

४२ *नन्दी चूर्णि*
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था, रतलाम)

४३ *नन्दी वृत्ति* (वि०सं०१९८०) — ले० मलयगिरि
(प्र० आगमोदय समिति)

४४ *नन्दी वृत्ति* (वि०सं०१९८४) — ले० हरिभद्र
(प्र० ऋषभदेव केशरीमल जैन श्री श्वे० संस्था रतलाम)

४५ *नन्दी सुत्त* (सन १९५८) — सं० सुबोध मुनि
(प्र० सन्मति ज्ञानपीठ लोहामंडी आगरा)

४६ *नन्दी सूत्रम् श्रीमद* (चूर्णि और हारिभद्रीय वृत्ति सहित) — सं० विजयदान सूरि
(वि०सं०१९८८)
(प्र० श्रीमद् रूपचन्द्रजी नवलमलजी इन्दौर)

४७ *नाट्यशास्त्र* (सन १९३६) — ले० भरत मुनि
(प्र० गायकवाड ओरियंटल सीरीज)

४८ *प्रथम द्वात्रिंशिका* — ले० सिद्धसेन

४९ *प्रभावकचरित* (१९१७) — ले० श्री प्रभाचन्द्र आचार्य
(प्र० सिंघी जैन ग्रन्थमाला अहमदाबाद) — सं० मुनि जिनविजय

५० *प्रज्ञापना* (वि०सं०१९७४) — ले० श्यामाचार्य
(प्र० आगमोदय समिति मेसाणा)

५१ *पंचकल्प भाष्य* (बृहद्) — ले० संघदास क्षमाश्रमण

५२ *पंचकल्प चूर्णि*

५३ *प्राकृत भाषाओं का व्याकरण* (वि०सं०२०१५) — ले० आर० पिशल
(प्र० बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् पटना) — अनु० डा० हेमचन्द्र जोशी

५४ *पातंजल महाभाष्य* (सन १९५१) — ले० पतंजलि
(प्र० निर्णयसागर बम्बई) — सं० भार्गव शास्त्री

५५ *पिण्ड निर्युक्ति* (वि०सं०२०१८) — ले० भद्रबाहु स्वामी
(प्र० शासन कण्टकोद्धारक ज्ञानमंदिर भावनगर (सौराष्ट्र)) — अनु० श्री हंससागरजी महाराज

५६. *बृहत्कल्पसूत्रम्* (भाष्य निर्युक्ति सहित) (सन् १९३३ से १९३८) ले० भद्रबाहु
(प्र० श्री जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, (सौराष्ट्र) सं० पुण्यविजयजी

५७. *महाभारत* (प्रथम संस्करण) ले० महर्षि वेदव्यास
(प्र० गीताप्रेस, गोरखपुर)

५८. *मार्कण्डेय पुराण* (वि०सं० २०१८) ले० [illegible]
(प्र० गुरुमंडल ग्रन्थमाला, मनसुखराय मोर, कलकत्ता)

५९. *मूलाचार* (वि०सं० २४८४) ले० वट्टकेर आचार्य
(प्र० श्रुत भाण्डागार ग्रन्थमाला समिति, अनु० जिनदास पार्श्वनाथ फडकुले शास्त्री फलटन, जि० उत्तरसातारा)

६०. *मूलाचार* (वि०सं० १९७७) ले० वट्टकेर आचार्य
(प्र० जैन ग्रन्थमाला समिति) सं०पं०पन्नालाल न्याय-काव्यतीर्थ
सं०पं०गजाधरलाल

६१. *मूलाराधना* (टीका-विजयोदया) ले० अपराजित सूरि

६२. *रत्नमुनि स्मृति ग्रन्थ* (वि०सं०२००१) सं० विजय मुनि
(प्र० गुरुदेव स्मृतिग्रन्थ ग्रन्थमाला समिति,
लोहामंडी, आगरा) डॉ० हरिशंकर शर्मा

६३. *रिलीजियन द जैन० ल* अनु० डॉ० ग्यारीनो

६४. *व्यवहारभाष्य* (वि०सं०१९९४) संशोधक मुनि माणक
(प्र० वकील केशवलाल प्रेमचन्द, भावनगर)

६५. *विचारलेस* (विचारसार प्रकरण) ले० प्रद्युम्न सूरि

६६. *वैशेषिक दर्शन* (सन् १९५४, द्वितीय संस्करण) ले० दर्शनानन्द सरस्वती
(प्र० पुस्तक भण्डार, बरेली)

६७. *स्थानांग* (द्वितीय संस्करण, सं० १९५४)
(प्र० माणिकचन्द चुन्नीलाल, अहमदाबाद)

६८. *समवायांग सूत्रम्* (वि०सं०१९७४)
(प्र० आगमोदय समिति)

६९. *सामाचारीशतक* (वि०सं०१९९६) ले० समयसुन्दरगणी
(प्र० जवेरी मूलचन्द हीराचंद भगत, बम्बई)

७०. *सिद्धान्तस्तवस्रोत* ले० जिनप्रभ सूरि

७१ *सूत्रकृतांग* (सं०१९७३)
(प्र० आगमोदय समिति)

७२ *षड्भाषाचन्द्रिका*

७३ *हरिवंश पुराण* (दो भाग) (ग्रन्थांक ३२, ३३) ले० जिनसेन
(प्र० माणिकचन्द दिगम्बर जैन ग्रन्थमाला) स० प० दरबारीलाल

७४ *हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर* (भाग-२) (सन १९३३)
(प्र० कलकत्ता विश्वविद्यालय) ले० मोरी विन्टरनित्ज, पी एच०डी०

७५ *हिस्ट्री ऑफ दी केनोनिकल लिटरेचर*
ऑफ दी जैन्स, ए (सन् १९४१) ले० एच०आर०कापड़िया
(प्र० हीरालाल रसिकदास कापडिया गोपीपुरा, सूरत)

७६ *हेमशब्दानुशासन* (स १९६२) ले० आचार्य हेमचन्द्र सूरि
(प्र० सेठ मनसुख भाई पोरवाड डायमंड जुबली
प्रिन्टिंग प्रेस सालापोस दरवाजा अहमदाबाद)

७७ *श्रमण भगवान् महावीर* (वि०सं०१९९८) ले० प० कल्याणविजयजी गणी
(प्र० श्री क० वि० शास्त्रसंग्रह समिति जालोर)

७८ *श्रावक विधि* ले० धनपाल

दसवेआलियं : विषय-सूची

पिंडेसणा (उ० २) २६

रइवक्का (पढमा चूलिया) … … पृ० ७६

विवित्तचरिया (बिइया चूलिया) … … ८१

●●●●

उत्तरज्झयणं : विपय-सूची

पढमं अज्झयणं

दुमपुप्फिया

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो ॥ १ ॥

जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आवियइ रसं।
न य पुप्फं किलामेइ सो य पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥

एमेए समणा मुत्ता जे लोए संति साहुणो।
विहंगमा व पुप्फेसु दाणभत्तेसणे रया ॥ ३ ॥

वयं च वित्तिं लब्भामो न य कोइ उवहम्मई।
अहागडेसु रीयंति पुप्फेसु भमरा जहा ॥ ४ ॥

महुकारसमा बुद्धा जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता तेण वुच्चंति साहुणो[1] ॥ ५ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—साहुणु (क, ख, ग)।

बीअं अज्झयणं

सामण्णपुव्वयं

'कहं नु कुज्जा'[1] सामण्णं जो कामे न निवारए।
पए पए विसीयंतो संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥

वत्थगन्धमलंकारं इत्थीओ सयणाणि य।
अच्छन्दा जे न भुंजन्ति न से चाइ त्ति वुच्चइ ॥ २ ॥

जे य[2] कन्ते पिए भोए लद्धे विपिट्ठिकुव्वई[3]।
साहीणे चयइ भोए[4] से हु चाइ त्ति वुच्चइ ॥ ३ ॥

समाए[5] पेहाए परिव्वयंतो
सिया मणो निस्सरई बहिद्धा।
न सा महं नोवि अहं पि तीसे
इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥

आयावयाही चय सोउमल्लं
कामे कमाही कमियं खु दुक्खं।
'छिन्दाहि दोसं विणएज्ज रागं'[6]
एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥

१—कयाऽहं कुज्जा (आ, जा, हा), कइऽहं कुज्जा (आ ज, हा), कह ण कुज्जा (जा), कह स कुज्जा (आ) कह णु कुज्जा (जा)।
२—उ (अ)।
३—विप्पिट्ठ ० (अ), विप्पिट्ठि ० (ख), विप्पिट्ठ ० (ग)।
४—भोगी (अ)।
५—समाय (आ)।
६—छिंदाहि रागं विणएहि दोसं (अ)।

पक्खन्दे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वन्तयं भोत्तुं[1] कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥

धिरत्थु 'ते जसोकामी'[2] जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥

अहं च भोयरायस्स[3] तं चऽसि अन्धगवण्हिणो ।
मा 'कुले गंधणा'[4] होमो संजमं निहुओ चर ॥ ८ ॥

जइ तं काहिसि भावं जा जा दच्छसि नारिओ ।
वायाइद्धो व्व हडो[5] अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥

तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥ १० ॥

एवं करेन्ति संबुद्धा[6] पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से पुरिसोत्तमो[7] ॥ ११ ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—भुत्तं (ख) ।
२—ते ऽजसो ० (आ, जा) ।
३—भोग ० (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।
४—कुल गन्धिणो (जा) ।
५—हढो (अ, क, ज) ।
६—संपन्ना (अ, ज) ।
७—पुरिसोत्तिमे (अ) ; पुरिसुत्तमु (ख, ग, घ) ; पुरिसुत्तमो (ज) ।

तइयं अज्झयण

खुड्डियायारकहा

सजमे सुट्ठिअप्पाण विप्पमुक्काण ताइण ।
तेसिमेयमणाइण्ण निग्गथाण महेसिण ॥ १ ॥

उद्देसिय कीयगड नियागमभिहडाणि य ।
राइभत्ते सिणाणे य गधमल्ले य वीयणे ॥ २ ॥

सन्निही गिहिमत्ते य रायपिंडे किमिच्छए ।
सवाहणा दतपहोयणा य सपुच्छणा[1] देहपलोयणा य ॥ ३॥

अट्ठावए य[2] नालीय छत्तस्स य धारणट्ठाए ।
तेगिच्छ पाणहा पाए समारभ च जोइणो ॥ ४ ॥

सेज्जायरपिंड च 'आसदीपलियकए'[3] ।
गिहतरनिसेज्जा य गायस्सुव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥

गिहिणो वेयावडिय 'जा य आजीववित्तिया[4]'[5] ।
तत्तानिव्वुडभोइत्त आउरस्सरणाणि[6] य ॥ ६ ॥

मूलए सिंगबेरे य उच्छुखडे अनिव्वुडे ।
कदे मूले य सच्चिते फले बीए य आमए ॥ ७ ॥

१—संपुच्छणो (अ) ।
२—× (ग) ।
३—आसण्णं परिवज्जए (आ जा) ।
४—°वत्तिया (ख ग) ।
५—जाइ याजीव° (ग), ज य आजीवि° (अ) ।
६—आउरेस्सर° (अ), आउरसर° (हा जा) ।

सोवच्चले सिंधवे लोणे रोमालोणे[1] य आमए ।
सामुद्दे पंसुखारे य कालालोणे य आमए ॥ ८ ॥
धूवणेत्ति वमणे य वत्थीकम्म विरेयणे ।
अंजणे दंतवणे य गायाभंगविभूसणे ॥ ९ ॥
सव्वमेयमणाइण्णं निग्गंथाण महेसिणं ।
'संजमम्मि य[2] जुत्ताणं'[3] लहुभूयविहारिणं[4] ॥ १० ॥
पंचासवपरिन्नाया तिगुत्ता छसु संजया ।
पंचनिग्गहणा धीरा[5] निग्गंथा उज्जुदंसिणो ॥ ११ ॥
आयावयंति गिम्हेसु हेमंतेसु अवाउडा ।
वासासु पडिसंलीणा संजया सुसमाहिया ॥ १२ ॥
परीसहरिऊदंता धुयमोहा जिइंदिया ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा 'पक्कमंति महेसिणो'[6] ॥ १३ ॥
[7]दुक्कराइं करेत्ताणं दुस्सहाइं सहेत्तु य ।
केइत्थ देवलोएसु केई सिज्झंति नीरया ॥ १४ ॥
खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य ।
सिद्धिमग्गमणुप्पत्ता ताइणो परिनिव्वुडा[8] ॥ १५ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—रुमा० (अ, घ, ज)।
२—उ (अ)।
३—संजमं अणुपालंता (ज)।
४—०विहारिणो (ज)।
५—वीरा (अ)।
६—ते वदंति सिवं गतिं (अ); परक्कमंति महेसिणो (ज)।
७—अगस्त्यचूर्णी में श्लोक १४ और १५ पाठान्तर रूप में स्वीकृत हैं।
८—परिनिव्वुड (क, ख, घ, हा); परिनिव्वुडे (ख); परिनिव्वुए (ह)।

चउत्थं अज्झयणं

छज्जीवणिया

सुयं मे 'आउसं! तेणं'[1] भगवया एवमक्खायं—इह खलु छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता। सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० १ ॥

कयरा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता ? सेयं मे अहिज्जिउ अज्झयणं धम्मपन्नत्ती ॥ सू० २ ॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता। सेयं मे अहिज्जिउं अज्झयणं धम्मपन्नत्ती त जहा—पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया तसकाइया ॥ सू० ३ ॥

पुढवी चित्तमतमक्खाया[2] अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ४ ॥

आऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ५ ॥

तेऊ चित्तमतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ६ ॥

१—आवसतेण, आमुसंतेण (हाटी प०)।

२—चित्तमता अक्खाया (जिचू); चित्तमत्त अक्खाया (जिचू पा०), चित्तमत्त मक्खाया (अचू पा०, हाटी पा०)।

वाऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ७ ॥

वणस्सई चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, तं जहा—अग्गवीया मूलवीया पोरवीया खंधवीया वीयरुहा सम्मुच्छिमा तणलया वणस्सइकाइया सबीया चित्तमंतमक्खाया, अणेगजीवा, पुढोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं ॥ सू० ८ ॥

से जे पुण इमे अणेगे वहवे तसा पाणा तं जहा—अंडया पोयया जराउया रसया संसेइमा[1] सम्मुच्छिमा उब्भिया उववाइया। जेसिं केसिंचि[2] पाणाणं अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रुयं भंतं तसियं पलाइयं आगइगइविन्नाया—जे य कीडपयंगा जा य कुंथुपिवीलिया 'सव्वे वेइंदिया सव्वे तेइंदिया सव्वे चउरिंदिया सव्वे पंचिंदिया सव्वे तिरिक्खजोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा'[3] परमाहम्मिया[4] एसो[5] खलु छट्ठो जीवनिकाओ तसकाओ त्ति पवुच्चई ॥ सू० ९ ॥

इच्चेसिं[6] छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं दंडं समारंभेज्जा नेवन्नेहिं दंडं समारंभावेज्जा दंडं समारंभंते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा[7]

१—संसेयगा (जिचू)।

२—केसिं च (ख)।

३—सव्वे नेरइया, सव्वे पंचेंदिया, सव्वे तिरिक्खजोणिया, सव्वे मणुया, सव्वे देवा, सव्वे पाणा (जिचू)।
सव्वे देवा, सव्वे असुरा, सव्वे नेरइया, सव्वे पंचिंदियतिरिक्खजोणिया, सव्वे मणुस्सा, सव्वे पाणा (अचू)।

४—परधम्मिता (जिचू पा० ; जिचू पा०)।

५—× (अचू)।

६—इच्चेतेहिं (जिचू ; अचू)।

७—समणुजाणामि (क, ख, ग, अचू ; सू १० से २२ तक)।

जावज्जीवाए तिविह तिविहेण 'मणेण वायाए काएण'[1] न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि तस्स भते। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सू० १० ॥

पढमे भते। महव्वए[2] पाणाइवायाओ वेरमण सव्व भते। पाणाइवाय पच्चक्खामि—से सुहुम वा वायर वा तस वा 'थावर वा'[3] नेव सय पाणे अइवाएज्जा[4] नेवन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा[5] पाणे अइवायते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भते। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

पढमे भते। महव्वए उवट्ठिओमि[6] सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण ॥ सू० ११ ॥

अहावरे दोच्चे भते। महव्वए मुसावायाओ वेरमण सव्व भते। मुसावाय पच्चक्खामि—से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सय मुस वएज्जा[7] नेवन्नेहिं मुस वायावेज्जा[8] मुस वयते वि अन्ने न समणुजाणज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न

१—मणसा वयसा कायसा (अचू)।
२—महव्वए उवट्ठिओमि (अचू सू० ११ से १५ तक)।
३—थावरं वा से त पाणातिवाते चतुव्विहे तं दव्वतो खत्तो कालतो भावतो (अचू पा०)।
४—अइवाएमि (अचू) एवं षोडश सूत्र पर्यन्त प्रथमपुरुषस्य स्थाने उत्तमपुरुषस्य प्रयोग ।
५—अइवायावेमि (अचू)।
६—× (अचू) सू ११ से १५ तक।
७—वयामि (अचू)।
८—वयावेमि (अचू)।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा 'एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा'[1]—से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं[2] वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण वा 'कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा'[3] सलागहत्थेण वा, न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १८ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करगं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओल्लं वा कायं उदओल्लं वा वत्थं ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमुसेज्जा न संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं न आमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं आमुसंतं वा संफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा

१—सुत्ते वा जागरपाणे वा एगओ वा परिसागओ वा (अ, ज)। एवं सूत्र १९ से २३ में।
२—लेलं (ख)।
३—अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा कलिंचेण वा (अ)।

अहावरे पचमे भते! महव्वए परिग्गहाओ वेरमण सव्व भते! परिग्गह पच्चक्खामि— से गामे वा[1] नगरे वा रण्णे[2] वा अप्प वा बहु वा अणु वा थूल वा चित्तमत वा अचित्तमत वा, नेव सय परिग्गह परिगेण्हेज्जा नेवन्नेहिं परिग्गह परिगेण्हावेज्जा परिग्गह परिगेण्हते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

पचमे भते! महव्वए उवट्ठिओमि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ॥ सू० १५ ॥

अहावरे छट्ठे भते! वए राईभोयणाओ वेरमण सव्व भते! राईभोयण पच्चक्खामि—से असण वा पाण वा खाइम वा साइम वा नेव सय राइ भुजेज्जा नेवन्नेहिं राइ भुजावेज्जा राइ भुजते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविह तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि।

छट्ठे भते! वए उवट्ठिओमि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमण ॥ सू० १६ ॥

इच्चेयाइ[3] पच महव्वयाइ राईभोयणवेरमणछट्ठाइ अत्त हियट्ठयाए[4] उवसपज्जित्ताण विहरामि ॥ सू० १७ ॥

१—× (क ख ग घ हाटी०)।
२—अरण्ण (अचू)।
३—इच्चइयाइ (ख ग घ)।
४—° हियट्ठाए (घ ज)।

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा 'एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा'[1]—से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं[2] वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण वा 'कट्ठेण वा किलिंचेण वा अंगुलियाए वा सलागाए वा'[3] सलागहत्थेण वा, न आलिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा अन्नं न आलिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा अन्नं आलिहंतं वा विलिहंतं वा घट्टंतं वा भिंदंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० १८ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करगं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओल्लं वा कायं उदओल्लं वा वत्थं ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं, न आमुसेज्जा न संफुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं न आमुसावेज्जा न संफुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावेज्जा न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा अन्नं आमुसंतं वा संफुसंतं वा आवीलंतं वा पवीलंतं वा अक्खोडंतं वा पक्खोडंतं वा

१—सुत्ते वा जागरमाणे वा एगओ वा परिसागओ वा (अ, ज)। एवं सूत्र १९ से २३ में।
२—लेलं (ख)।
३—अंगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा कलिंचेण वा (अ)।

आयावत वा पयावन वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंत पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भंते। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सू० १९ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा -- से अगणि वा इंगाल वा मुम्मुर वा अच्चिं वा 'जालं वा अलायं वा'[1] सुद्धागणिं वा उक्कं वा, न उंजेज्जा 'न घट्टेज्जा न उज्जालेज्जा'[2] न निव्वावेज्जा अन्नं न उंजावेज्जा न घट्टावेज्जा न उज्जालावेज्जा'[3] न निव्वावेज्जा अन्नं उंजंतं वा 'घट्टंतं वा उज्जालंतं वा'[4] निव्वावंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्न न समणुजाणामि। तस्स भंते। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ सू० २० ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से सिएण वा विहुयणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा'[5] साहाए वा साहाभंगेण वा पिहुणेण वा पिहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पुग्गलं, न फुमेज्जा न वीएज्जा अन्नं न फुमावेज्जा न वीयावेज्जा अन्नं फुमंतं वा वीयंतं वा न

१—अलायं वा जालं वा (अ)।
२—न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा न उज्जालेज्जा न पज्जालेज्जा (क ख ग घ)।
३—न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा (क ख ग घ)।
४—घट्टन्तं वा भिंदंतं वा उज्जालंतं वा पज्जालंतं वा (क ख ग घ)।
५—पत्तेण वा पत्तभंगेण वा (क ख ग घ)।

समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २१ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से बीएसु वा बीयपइट्ठिएसु[1] वा रूढेसु वा रूढपइट्ठिएसु वा जाएसु वा जायपइट्ठिएसु वा हरिएसु वा हरियपइट्ठिएसु वा छिन्नेसु वा 'छिन्नपइट्ठिएसु वा'[2] सच्चित्तकोलपडिनिस्सिएसु वा, न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा अन्नं न गच्छावेज्जा न चिट्ठावेज्जा न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा अन्नं गच्छंतं वा चिट्ठंतं वा निसीयंतं वा तुयट्टंतं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि। तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ सू० २२ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजयविरय-पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा—से कीडं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिवीलियं वा हत्थंसि वा पायंसि वा "बाहुंसि वा ऊरुंसि वा 'उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा 'पडिग्गहंसि वा'[3] रयहरणंसि वा'[4] गोच्छगंसि वा उंडगंसि वा दंडगंसि वा

१—वीयपइट्ठेसु (क, ख, ग, घ)।

२—छिन्नपइट्ठिएसु वा सच्चित्तेसु वा (क, ख, ग, घ, ह)।

३—पडिग्गहंसि वा कंबलंसि वा पाय-पुंछणंसि वा (क, ख, ग)।

४—उदरंसि वा वत्थंसि वा रयहरणंसि वा (ह)।

पीढगसि वा''[1] फलगसि वा सेज्जसि वा सथारगसि वा अन्नयरसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ सजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय एगतमवणेज्जा नो ण सघायमावज्जेज्जा ॥सू०२३॥

अजय चरमाणो उ[2] पाणभूयाइ हिंसई[3]।
बधई[4] पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ १ ॥
अजय चिट्ठमाणो उ पाणभूयाइ हिंसई।
वधई पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ २ ॥
अजय आसमाणो उ पाणभूयाइ हिंसई।
वधई पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ ३ ॥
अजय सयमाणो उ पाणभूयाइ हिंसई।
बधई पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ ४ ॥
अजय भुजमाणो उ पाणभूयाइ हिंसई।
बधई पावय कम त से होइ कडुय फल ॥ ५ ॥
अजय भासमाणो उ पाणभूयाइ हिंसई।
बधई पावय कम्म त से होइ कडुय फल ॥ ६ ॥
कह चरे? कह चिट्ठ? कहमासे? कह सए?
कह भुजन्तो भासन्तो पाव कम्म न बधई? ॥ ७ ॥
जय चरे जय चिट्ठ जयमासे जय सए।
जय भुजन्तो भासन्तो पाव कम्म न बधई ॥ ८ ॥
सव्वभूयप्पभूयस्स सम्म भूयाइ पासओ।
पिहियासवस्स दतस्स पाव कम्म न बधई ॥ ९ ॥

१—बाहंसि वा उदसीसंसि वा उरुसि वा उदरसि वा पातसि वा रयहरणसि वा गोच्छगसि वा डडगसि वा कबलसि वा उडुयसि वा पीढगसि वा (अ)।
२—य (ख ग)। गाथा १ से ६ तक।
३—हिंसओ (अ ज)। गाथा १ से ६ में।
४—वज्झइ (अ)। गाथा १ से ६ व ९ में।

पढमं नाणं तओ दया एवं चिट्ठइ सव्वसंजए ।
अन्नाणी किं काही ? किं वा नाहिइ छेय पावगं ? ॥१०॥

सोच्चा जाणइ कल्लाणं सोच्चा जाणइ पावगं ? ।
उभयं पि जाणई सोच्चा जं छेयं तं समायरे ॥११॥

जो जीवे वि न याणाइ अजीवे वि न याणई ।
जीवाजीवे अयाणंतो कहं सो नाहिइ संजमं ? ॥१२॥

जो जीवे वि वियाणाइ अजोवे वि वियाणई ।
जीवाजीवे वियाणंतो सो हु 'नाहिइ संजमं ॥१३॥

जया 'जीवे अजीवे'[1] य दो वि एए वियाणई ।
तया गइं वहुविहं सव्वजीवाण जाणई ॥१४॥

जया गइं वहुविहं सव्वजीवाण जाणई ।
तया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई ॥१५॥

जया पुण्णं च पावं च बंधं मोक्खं च जाणई ।
तया निव्विंदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥१६॥

जया निव्विंदए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ[2] संजोगं सब्भिंतरबाहिरं ॥१७॥

जया चयइ[2] संजोगं सब्भिंतरबाहिरं ।
तया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए[3] अणगारियं ॥१८॥

जया मुंडे भवित्ताणं पव्वइए[3] अणगारियं ।
तया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे[4] अणुत्तरं ॥१९॥

जया संवरमुक्किट्ठं धम्मं फासे[4] अणुत्तरं ।
तया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥

१—जीवमजीवे (क, ख, ग, घ) ।
२—जहइ (अ, ज) ।
३—पव्वए (ग) ; पव्वाति (अ) ।
४—फासेइ (अ, ज) ; फासइ (घ) ।

जया धुणइ कम्मरयं अबोहिकलुसं कडं ।
तया सव्वत्तग[1] नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥२१॥
जया सव्वत्तगं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ।
तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥२२॥
जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ।
तया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ॥२३॥
जया जोगे निरुंभित्ता सेलेसिं पडिवज्जई ।
तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥२४॥
जया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ।
तया लोग मत्थयत्थो सिद्धो हवइ सासओ ॥२५॥

सुहसायगस्स[2] समणस्स
सायाउलगस्स निगामसाइस्स ।
उच्छोलणापहोइस्स
दुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२६॥

तवोगुणपहाणस्स
उज्जुमइ खंतिसंजमरयस्स ।
परीसहे जिणंतस्स
सुलहा सुग्गइ तारिसगस्स ॥२७॥

[पच्छा वि ते पयाया
खिप्पं गच्छन्ति अमरभवणाइं ।
जेसिं पिओ तवो संजमो य
खन्ती य बम्भचेरं च ॥][3]

१—सव्वत्थगं (ज) ।
२—सुहसीलगस्स (अ) ; सुहसायगस्स (आ) ।
३—यह गाथा (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णिद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

इच्चेयं छज्जीवणियं
सम्मद्दिट्ठी सया जए ।
दुलहं[1] लहित्तु सामण्णं
कम्मुणा न विराहिज्जासि ॥२८॥

त्ति बेमि ॥

१—दुलहं (ज) ; दुलभं (आ) ।

पचम अज्भयण

पिंडेसणा (पढमोद्देसो)

सपत्ते भिक्खकालम्मि[1] असभतो अमुच्छिओ ।
इमेण कमजोगेण भत्तपाण गवेसए ॥ १ ॥

से गामे वा नगरे वा गोयरग्गगओ मुणी ।
चरे मदमणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण[2] चेयसा ॥ २ ॥

पुरओ[3] जुगमायाए[4] पेहमाणो महिं चरे ।
वज्जतो बीयहरियाइ पाणे य दगमट्टिय ॥ ३ ॥

ओवाय विसम खाणु विज्जल परिवज्जए ।
सकमेण न गच्छेज्जा विज्जमाणे परक्कमे ॥ ४ ॥

पवडन्ते व से तत्थ पक्खलन्ते व सजए ।
हिंसेज्ज पाणभूयाइ[5] तसे अदुव थावरे ॥ ५ ॥

तम्हा तेण न गच्छेज्जा सजए सुसमाहिए ।
सइ अन्नेण मग्गेण जयमेव परक्कमे ॥[6] ६ ॥

१—भिक्खु ° (क ग)।
२—अवखित्तेण (अ), अव्विखित्तेण (ग)।
३—सव्वतो (आ जा)।
४—° मायाय (जा), ° मादाय (आ)।
५—° भूतेय (अ ज)।
६—श्लोक ६ के पश्चात् अगस्त्यचूर्णि में निम्न श्लोक का (जो कि कुछ परिवर्तन के साथ ६५वें ६६वें श्लोक के प्रथम दो दो चरण हैं) उल्लेख है (अयं केसिंचि सिलोगो उवरिं भणेहिति)—
चर्म कट्ठ सिलं वावि इट्टालं वावि संकमो ।
न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।

इंगालं छारियं रासिं तुसरासिं च गोमयं।
'ससरक्खेहिं पाएहिं'[1] संजओ तं 'न अक्कमे'[2] ॥ ७ ॥
न चरेज्ज वासे वासंते महियाए व[3] पडंतीए।
महावाए व वायंते तिरिच्छसंपाइमेसु वा ॥ ८ ॥
न चरेज्ज वेससामंते बंभचेरवसाणुए[4]।
बंभयारिस्स दंतस्स होज्जा तत्थ विसोत्तिया ॥ ९ ॥
अणायणे चरंतस्स संसग्गीए अभिक्खणं।
होज्ज वयाणं पीला सामण्णम्मि य संसओ ॥१०॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वज्जए वेससामंतं मुणी एगंतमस्सिए ॥११॥
साणं सूइयं[5] गाविं दित्तं गोणं हयं गयं।
संडिब्भं कलहं जुद्धं दूरओ परिवज्जए ॥१२॥
अणुन्नए नावणए अप्पहिट्ठे अणाउले।
इंदियाणि जहाभागं[6] दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥
दवदवस्स न गच्छेज्जा भासमाणो य[7] गोयरे।
हसंतो नाभिगच्छेज्जा कुलं उच्चावयं सया ॥१४॥
आलोयं थिग्गलं दारं संधिं दगभवणाणि य।
चरंतो न विणिज्झाए संकट्ठाणं विवज्जए ॥१५॥
रन्नो गिहवईणं च 'रहस्सारक्खियाण'[8] य।
संकिलेसकरं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥१६॥

१—ससरक्खेण पाएण (अ)।
२—नऽइक्कमे (क, ख, ग, घ)।
३—× (अ)।
४—बंभचारी° (आ); °वसाणए (ह)।
५—सूयं (क, ख, ग, घ, ह); सूवेयं (ज)।
६—जहाभावं (ज)।
७—व (ह)।
८—रहस्सारक्खियाणि (ख)।

पडिकुट्ठकुलं न पविसे मामगं परिवज्जए।
अचियत्तकुलं न पविसे चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥
साणीपावारपिहियं अप्पणा नावपंगुरे।
कवाडं नो पणोल्लेज्जा ओग्गहंसि अजाइया ॥१८॥
गोयरग्गपविट्ठो उ वच्चमुत्तं न धारए।
ओगासं फासुयं नच्चा अणुन्नविय वोसिरे ॥१९॥
नीयदुवारं तमसं कोट्ठगं परिवज्जए।
अचक्खुविसओ जत्थ पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥
जत्थ पुप्फाइं बीयाइं विप्पइण्णाइं कोट्ठए।
अहुणोवलित्तं उल्लं दट्ठूणं परिवज्जए ॥२१॥
एलगं दारगं साणं वच्छगं वावि कोट्ठए।
उल्लंघिया न पविसे विऊहित्ताण व संजए ॥२२॥
असंसत्तं पलोएज्जा नाइदूरावलोयए।
उप्फुल्लं न विणिज्झाए नियट्टेज्ज अयंपिरो ॥२३॥
अइभूमिं न गच्छेज्जा गोयरग्गगओ मुणी।
कुलस्स भूमिं जाणित्ता मियं भूमिं परक्कमे ॥२४॥
तत्थेव पडिलेहेज्जा भूमिभागं वियक्खणो।
सिणाणस्स य वच्चस्स संलोगं परिवज्जए ॥२५॥
'दगमट्टियआयाणं'[1] बीयाणि हरियाणि य[2]।
परिवज्जंतो चिट्ठेज्जा सव्विंदियसमाहिए ॥२६॥
तत्थ से चिट्ठमाणस्स आहरे पाणभोयणं।
अकप्पियं न इच्छेज्जा[3] पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥२७॥

१— °आयाणं (क ख ग घ)।
२—वा (अ)।
३—गिण्हेज्जा (क घ, ह)।

आहरंती सिया तत्थ परिसाडेज्ज भोयणं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२८॥

सम्मद्दमाणी पाणाणि वीयाणि हरियाणि य ।
असंजमकरिं नच्चा तारिसं[1] परिवज्जए ॥२९॥

साहट्टु निक्खिवित्ताणं सच्चित्तं घट्टियाण[2] य ।
तहेव समणट्ठाए उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥

आगाहइत्ता[3] चलइत्ता आहरे पाणभोयणं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥

[एवं उदओल्ले ससिणिद्धे ससरक्खे मट्टिया ऊसे ।
हरियाले हिंगुलए मणोसिला अंजणे लोणे ॥३३॥
गेरुय वण्णिय सेडिय सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कुस कए य ।
उक्कट्ठमसंसट्ठे संसट्ठे चेव बोधव्वे ॥३४॥][4]

१—तारिसिं (ह) ।
२—घट्टियाणि (क, ख, ग) ।
३—ओगाहइत्ता (अ, ज, ह) ।
४—अगस्त्य चूर्णि में गाथा ३३-३४ के स्थान में सतरह श्लोक हैं :

१—उदउल्लेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥
२—ससिणिद्धेण हत्थेण ......
३—ससरक्खेण ,, ...
४—मट्टियागतेण ,, ...
५—ऊसगतेण ,, ...
६—हारतालगतेण ,, ...
७—हिंगोलएगतेण ,, ...
८—मणोसिलागतेण ,, ...
९—अंजणगतेण ,, ...
१०—लोणगतेण हत्थेण ......
११—गेरुयगतेण ,, ...
१२—वण्णियगतेण ,, ...
१३—सेडियगतेण ,, ...
१४—सोरट्ठियगतेण ,, ...
१५—पिट्ठगतेण ,, ...
१६—कुक्कुसगतेण ,, ...
१७—उक्कुट्ठगतेण ,, ...

असंसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाण न इच्छेज्जा पच्छाकम्म जहिं भवे ॥३५॥
संसट्ठेण हत्थेण दव्वीए भायणेण वा।
दिज्जमाण पडिच्छेज्जा ज तत्थेसणिय भवे ॥३६॥
दोण्ह तु भुजमाणाण एगो तत्थ निमंतए।
दिज्जमाण न इच्छेज्जा छद से पडिलेहए ॥३७॥
दोण्ह तु भुजमाणाण दोवि तत्थ निमतए।
दिज्जमाण पडिच्छेज्जा ज तत्थेसणिय भवे ॥३८॥
गुव्विणीए उवन्नत्थ विविह पाणभोयण।
भुज्जमाण[1] विवज्जेज्जा भुत्तसेस पडिच्छए ॥३९॥
सिया य समणट्ठाए गुव्विणी कालमासिणी।
उट्ठिया वा निसीएज्जा निसन्ना वा पुणुट्ठए ॥४०॥
'त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय।'[2]
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४१॥
'थणग पिज्जेमाणी दारग वा कुमारिय।'[2]
त निक्खिवित्तु रोयत आहरे पाणभोयण ॥४२॥
त भवे भत्तपाण तु सजयाण अकप्पिय।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४३॥
ज भवे भत्तपाण तु कप्पाकप्पम्मि सकिय।
देतिय पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिस ॥४४॥
दगवारएण पिहिय नीसाए पीढएण वा।
लोढेण वा वि लेवेण सिलेसेण व केणई ॥४५॥

१—-जन,तं (क, ख ग घ ज)।
२—अगस्त्य चूर्णी मे श्लोक ४१ ४३ के प्रथम दो चरण नहीं है—पुव्व भणितं सुत्तं सिलोगद्ध वितीरं अणुस्सरिज्जति 'देतियं पडियाइक्खे न मे कप्पति तारिसं' अहवा दिवड्ढ सिलोगो (अ)।

तं च उब्भिदिया देज्जा समणट्ठाए व दावए।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा दाणट्ठा पगडं इमं ॥४७॥

'तं भवे'[1] भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥४८॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा पुण्णट्ठा पगडं इमं ॥४९॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५०॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा वणिमट्ठा पगडं इमं ॥५१॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५२॥

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा समणट्ठा पगडं इमं ॥५३॥

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥५४॥

उद्देसियं कीयगडं पूईकम्मं च आहडं।
अज्झोयर पामिच्चं मीसजायं 'च वज्जए'[2] ॥५५॥

उग्गमं से पुच्छेज्जा कस्सट्ठा केण वा कडं?।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं पडिगाहेज्ज संजए ॥५६॥

१—तारिसं (अ, क, ह)।
२—विवज्जए (अ, ज)।

असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
पुप्फेसु होज्ज उम्मीसं बीएसु हरिएसु वा ॥५७॥
'तं भवे'[1] भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं॥५८॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
उदगम्मि होज्ज निक्खित्तं उत्तिंगपणगेसु वा ॥५९॥
'तं भवे'[1] भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥
असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
'तेउम्मि'[2]होज्ज निक्खित्तं तं च संघट्टिया दए ॥६१॥
तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६२॥
[एवं उस्सक्किया ओसक्किया उज्जालिया पज्जालिया निव्वाविया।
उस्सिंचिया निस्सिंचिया ओवत्तिया ओयारिया दए ॥६३॥][3]

१—तारिसं (अ, क, ह)।
२—अगणिम्मि (अ)।
३—अगस्त्यचूर्णि में गाथा ६३ के स्थान पर निम्न अट्ठारह श्लोक हैं—
१—असणं पाणगं वा वि खाइमं साइमं तहा।
तेउम्मि होज्ज निक्खित्तं तं च उस्सक्किया दए॥
२—तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं॥
३— तं च ओसक्किया दए॥
५— तं च उज्जालिया ,, ॥
७— तं च निव्वाविया ,, ॥
९— तं च उस्सिंचिया ,, ॥
११— तं च उक्कड्ढिया ,, ॥
१३— तं च निस्सिंचिया ,, ॥
१५— तं च ओवत्तिया ,, ॥
१७— तं च ओयारिया ,, ॥
श्लोक ४, ६, ८, १०, १२, १४, १६, १८ ठीक दूसरे श्लोक की तरह हैं।

तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥

'होज्ज कट्ठं सिलं वा वि इट्टालं वा वि एगया ।
ठवियं संकमट्ठाए तं च होज्ज चलाचलं ॥६५॥'[1]

'न तेण भिक्खू गच्छेज्जा दिट्ठो तत्थ असंजमो ।'[2]
गंभीरं झुसिरं चेव सव्विंदियसमाहिए ॥६६॥

निस्सेणिं फलगं पीढं उस्सवित्ताणमारुहे ।
मंचं कीलं च पासायं समणट्ठाए व दावए ॥६७॥

दुरुहमाणी[3] पवडेज्जा हत्थं पायं व लूसए ।
पुढविजीवे[4] वि हिंसेज्जा जे य[5] तन्निस्सिया जगा ॥६८॥

'एयारिसे महादोसे जाणिऊण महेसिणो ।'[6]
तम्हा[7] मालोहडं भिक्खं न 'पडिगेण्हंति संजया'[8] ॥६९॥

कंदं मूलं पलंबं वा आमं छिन्नं व सन्निरं ।
तुंबागं सिंगबेरं च आमगं परिवज्जए ॥७०॥

तहेव सत्तुचुण्णाइं कोलचुण्णाइं आवणे ।
सक्कुलिं फाणियं पूयं अन्नं वा वि तहाविहं ॥७१॥

विक्कायमाणं पसढं रएण परिफासियं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७२॥

१—अगस्त्य चूर्णि में यह श्लोक यहाँ नहीं है। किन्तु इसी उद्देशक के छठे श्लोक के पश्चात् है।
२—६६वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि में व्याख्यात नहीं हैं।
३—दुरूहमाणे (अ·)।
४—पुढवि-क्कायं (अ, ज,)
५—वा (अ)।
६—६९वें श्लोक के प्रथम दो चरण अगस्त्य चूर्णि में व्याख्यात नहीं हैं।
७—हंदि (हा)।
८—पडिगाहेज्ज संजए (अ)।

बहु-अट्ठियं पुग्गलं अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।[1]
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व सिंबलिं ॥७३॥
अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥७५॥
जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥
अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥
तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
तं 'अप्पणा न पिवे'[2] नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प[3] पडिक्कमे ॥८१॥
सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥
अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥८३॥

१—च (क, ख, घ)।
२—अप्पणा वि न पिवे अ)।
३—पडिट्ठप्प (ह)।

तत्थ से भुंजमाणस्स अट्ठियं कंटओ सिया ।
तण-कट्ठ-सक्करं वा वि अन्नं 'वा वि'[1] तहाविहं ॥८४॥
तं उक्खिवित्तु न निक्खिवे आसएण न छड्डुए ।
हत्थेण तं गहेऊणं एगंतमवक्कमे ॥८५॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प[2] पडिक्कम्मे ॥८६॥
सिया य भिक्खू इच्छेज्जा सेज्जमागम्म भोत्तुयं ।
सपिंडपायमागम्म उंडुयं[3] पडिलेहिया ॥८७॥
विणएण पविसित्ता सगासे गुरुणो मुणी ।
इरियावहियमायाय[4] आगओ य पडिक्कमे ॥८८॥
आभोएत्ताण नीसेसं अइयारं[5] जहक्कमं ।
गमणागमणे चेव भत्तपाणे व[6] संजए ॥८९॥
उज्जुप्पन्नो अणुव्विग्गो अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
आलोए गुरुसगासे जं जहा गहियं भवे ॥९०॥
न सम्ममालोइयं होज्जा पुव्विं पच्छा व जं कडं ।
पुणो पडिक्कमे तस्स वोसट्ठो चिंतए इमं ॥९१॥
अहो जिणेहिं असावज्जा वित्ती साहूण देसिया ।
मोक्खसाहणहेउस्स साहुदेहस्स धारणा ॥९२॥
नमोक्कारेण पारेत्ता करेत्ता जिणसंथवं ।
सज्झायं पट्ठवेत्ताणं वीसमेज्ज खणं मुणी ॥९३॥

१—चापि (ह) ।
२—पडिट्ठप्प (ह) ।
३—उण्णयं (अ) ।
४—०मायाए (ख) ।
५—अइयारं च (क, ग, घ, ह) ।
६—य (क, ख, ग, घ, ह) ।

बहु-अट्ठियं पुग्गलं अणिमिसं वा बहु-कंटयं ।
अत्थियं तिंदुयं बिल्लं उच्छुखंडं व[1] सिंबलिं ॥७३॥
अप्पे सिया भोयणजाए बहु-उज्झिय-धम्मिए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७४॥
तहेवुच्चावयं पाणं अदुवा वारधोयणं ।
संसेइमं चाउलोदगं अहुणाधोयं विवज्जए ॥७५॥
जं जाणेज्ज चिराधोयं मईए दंसणेण वा ।
पडिपुच्छिऊण सोच्चा वा जं च निस्संकियं भवे ॥७६॥
अजीवं परिणयं नच्चा पडिगाहेज्ज संजए ।
अह संकियं भवेज्जा आसाइत्ताण रोयए ॥७७॥
थोवमासायणट्ठाए हत्थगम्मि दलाहि मे ।
मा मे अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ॥७८॥
तं च अच्चंबिलं पूइं नालं तण्हं विणित्तए ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥७९॥
तं च होज्ज अकामेणं विमणेण पडिच्छियं ।
तं 'अप्पणा न पिवे'[2] नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥
एगंतमवक्कमित्ता अचित्तं पडिलेहिया ।
जयं परिट्ठवेज्जा परिट्ठप्प[3] पडिक्कमे ॥८१॥
सिया य गोयरग्गगओ इच्छेज्जा परिभोत्तुयं ।
कोट्ठगं भित्तिमूलं वा पडिलेहित्ताण फासुयं ॥८२॥
अणुन्नवेत्तु मेहावी पडिच्छन्नम्मि संवुडे ।
हत्थगं संपमज्जित्ता तत्थ भुंजेज्ज संजए ॥८३॥

१—च (क, ख, घ)।
२—अप्पणा वि न पिवे (अ)।
३—पडिट्ठप्प (ह)।

पंचमं अज्झयणं

पिंडेसणा (बीओ उद्देसो)

पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेव-मायाए[1] संजए।
दुगंधं वा सुगंधं वा सव्वं भुंजे न छड्डए[2] ॥ १ ॥
सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व[3] गोयरे।
अयावयट्ठा भोच्चाणं जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥
तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाणं गवेसए।
विहिणा पुव्व-उत्तेण इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥
कालेण निक्खमे भिक्खू 'कालेण य[4]' पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
अकाले चरसि भिक्खू कालं न पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं।
अलाभो त्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया।
त-उज्जुयं न गच्छेज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
गोयरग्ग-पविट्ठो उ[5] न निसीएज्ज कत्थई।
कहं च न पबंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए।
अवलंबिया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥

१—० -मायाय (ग) ; मादाय (आ) ; मायाइ (ख)।
२—उज्झए (ह)।
३—य (क, ख, ग)।
४—कालेणे व (अ)।
५—य (ग)।

वीसमतो इमं चिंते हियमट्ठं - लाभमट्ठिओ।
जइ मे अणुग्गहं कुज्जा साहू होज्जामि तारिओ ॥९४॥
साहवो तो चियत्तेणं निमंतेज्ज जहक्कमं।
जइ तत्थ केइ[1] इच्छेज्जा तेहिं सद्धिं तु भुंजए ॥९५॥
अह कोइ न इच्छेज्जा तओ भुंजेज्ज एक्कओ।
आलोए[2] भायणे साहू जयं 'अपरिसाडयं'[3] ॥९६॥
तित्तगं व कडुयं व कसायं
अंबिलं व[4] महुरं लवणं वा।
एय लद्धमन्नट्ठ-पउत्तं
महु-घयं व भुंजेज्ज संजए ॥९७॥
अरसं विरसं वा वि सूइयं[5] वा असूइयं।
उल्लं वा जइ वा सुक्कं मन्थु-कुम्मास-भोयणं ॥९८॥
उप्पण्णं नाइहीलेज्जा अप्पं पि[6] बहु फासुयं।
मुहालद्धं मुहाजीवी भुंजेज्जा दोसवज्जियं ॥९९॥
दुल्लहा उ[7] मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा।
मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छंति सोग्गइं ॥१००॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—कोइ (अ)।
२—आलोय (अ, ज)।
३—अपरिसाडियं (क, ख, ग, घ, ज)।
४—× (ग, घ)।
५—सूवियं (अ)।
६—वा (क, ख, ग, घ, ह)।
७—हु (अ)।

पंचमं अज्झयणं

पिंडेसणा (बीओ उद्देसो)

पडिग्गहं संलिहित्ताणं लेव-मायाए[1] संजए।
दुगंधं वा सुगंधं वा सव्वं भुंजे न छड्डए[2] ॥ १ ॥
सेज्जा निसीहियाए समावन्नो व[3] गोयरे।
अयावयट्ठा भोच्चाणं जइ तेणं न संथरे ॥ २ ॥
तओ कारणमुप्पन्ने भत्तपाणं गवेसए।
विहिणा पुव्व-उत्तेण इमेणं उत्तरेण य ॥ ३ ॥
कालेण निक्खमे भिक्खू 'कालेण य[4]' पडिक्कमे।
अकालं च विवज्जेत्ता काले कालं समायरे ॥ ४ ॥
अकाले चरसि भिक्खू कालं न पडिलेहसि।
अप्पाणं च किलामेसि सन्निवेसं च गरिहसि ॥ ५ ॥
सइ काले चरे भिक्खू कुज्जा पुरिसकारियं।
अलाभो त्ति न सोएज्जा तवो त्ति अहियासए ॥ ६ ॥
तहेवुच्चावया पाणा भत्तट्ठाए समागया।
त-उज्जुयं न गच्छेज्जा जयमेव परक्कमे ॥ ७ ॥
गोयरग्ग-पविट्ठो उ[5] न निसीएज्ज कत्थई।
कहं च न पवंधेज्जा चिट्ठित्ताण व संजए ॥ ८ ॥
अग्गलं फलिहं दारं कवाडं वा वि संजए।
अवलंबिया न चिट्ठेज्जा गोयरग्गगओ मुणी ॥ ९ ॥

१—० -मायाय (ग) ; मादाय (आ) ; मायाइ (ख)।
२—उज्झए (ह)।
३—य (क, ख, ग)।
४—कालेणे व (अ)।
५—य (ग)।

समणं माहणं वा वि किविणं वा वणीमगं।
'उवसंकमंतं भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए'[1] ॥१०॥
तं अइक्कमित्तु[2] न पविसे न चिट्ठे 'चक्खु-गोयरे'[3]।
'एगंतमवक्कमित्ता तत्थ चिट्ठेज्ज संजए'[1] ॥११॥
वणीमगस्स वा तस्स दायगस्सुभयस्स वा।
अप्पत्तियं सिया होज्जा लहुत्तं[4] पवयणस्स वा ॥१२॥
पडिसेहिए व दिन्ने[5] वा तओ तम्मि नियत्तिए।
उवसंकमेज्ज भत्तट्ठा पाणट्ठाए व संजए ॥१३॥
उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च संलुंचिया दए ॥१४॥
'तं भवे'[6] भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१५॥
उप्पलं पउमं वा वि कुमुयं वा मगदंतियं।
अन्नं वा पुप्फ सच्चित्तं तं च सम्मद्दिया दए ॥१६॥
'तं भवे भत्तपाणं तु संजयाण अकप्पियं'[7]।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥१७॥
सालुयं वा विरालियं कुमुदुप्पलनालियं[8]।
मुणालियं सासवनालियं उच्छुखंडं अनिव्वुडं ॥१८॥

१—अगस्त्य चूर्णि में दस और ग्यारह श्लोक के अन्तिम दो दो चरण व्याख्यात नहीं हैं।
२—अइक्कम्म (अ)।
३—चक्खु फासओ (अ)।
४—लहुयत्त (घ)।
५—दिन्नं (अ)।
६—तारिसं (ह), एतस्स सिलोगस्स प्रागेणं पच्चद्धं पढंति (अ)।
७—अगस्त्य चूर्णि में ये दो चरण व्याख्यात नहीं हैं।
८—कुमुयं उप्पल० (क, ख, ग, घ)।

तरुणगं वा पवालं रुक्खस्स तणगस्स वा ।
अन्नस्स वा वि हरियस्स आमगं परिवज्जए ॥१९॥

तरुणियं व छिवाडिं आमियं भज्जियं सइं ।
देंतियं पडियाइक्खे न मे कप्पइ तारिसं ॥२०॥

तहा कोलमणुस्सिन्नं वेलुयं कासवनालियं ।
तिलपप्पडगं नीमं आमगं परिवज्जए ॥२१॥

तहेव चाउलं पिट्ठं वियडं वा तत्तनिव्वुडं ।
तिलपिट्ठ पूइ पिन्नागं आमगं परिवज्जए ॥२२॥

कविट्ठं माउलिंगं च मूलगं 'मूलगत्तियं'[1] ।
आमं असत्थपरिणयं मणसा वि न पत्थए ॥२३॥

तहेव फलमंथूणि बीयमंथूणि जाणिया ।
बिहेलगं पियालं च आमगं परिवज्जए ॥२४॥

समुयाणं चरे भिक्खू कुलं उच्चावयं सया ।
नीयं कुलमइक्कम्म ऊसढं नाभिधारए ॥२५॥

अदीणो वित्तिमेसेज्जा न विसीएज्ज पंडिए ।
अमुच्छिओ भोयणम्मि मायन्ने एसणारए ॥२६॥

बहुं परघरे अत्थि विविहं खाइमसाइमं ।
न तत्थ पंडिओ कुप्पे इच्छा देज्ज परो न वा ॥२७॥

सयणासण वत्थं वा भत्तपाणं व संजए ।
अदेंतस्स न कुप्पेज्जा पच्चक्खे वि य दीसओ ॥२८॥

इत्थियं पुरिसं वा वि डहरं वा महल्लगं ।
वंदमाणो[2] न जाएज्जा नो य णं फरुसं वए ॥२९॥

१—मूलवत्तियं (घ, ह) ।
२—वंदमाणं (अ, क, ख, ग, घ, ज, ह) ; वंदमाणो (आ, जा, हः) ।

जे न वदे न से कुप्पे वदिओ न समुक्से ।
एवमन्नेसमाणस्स सामण्णमणुचिट्ठई ॥३०॥
सिया एगइओ लद्धु[1] लोभेण विणिगूहई ।
मा मेय दाइय सत दट्ठूण सयमायए ॥३१॥
अत्तट्ठगुरुओ लुद्धो वहु पाव पकुव्वई ।
दुत्तोसओ य से होइ निव्वाण च न गच्छई ॥३२॥
सिया एगइओ लद्धु विविह पाणभोयण ।
भद्दग भद्दग भोच्चा विवण्ण विरसमाहरे ॥३३॥
जाणतु ता इमे समणा आययट्ठी अय मुणी ।
सतुट्ठो सेवई पत लूहवित्ती सुतोसओ ॥३४॥
पूयणट्ठी[2] जसोकामी माणसम्माणकामए ।
वहु पसवई पाव मायासल्ल 'च कुव्वई'[3] ॥३५॥
सुर वा मेरग वा वि अन्न वा मज्जग रस ।
ससक्ख न पिबे भिक्खू जस सारक्खमप्पणो ॥३६॥
पिया एगइओ तेणो न मे कोइ वियाणई ।
तस्स पस्सह दोसाइ नियडिं च सुणेह मे ॥३७॥
वड्ढई सोंडिया तस्स मायमोस च भिक्खुणो ।
अयसो य अनिव्वाण[4] सयय च असाहुया ॥३८॥
निच्चुव्विग्गो जहा तेणो अत्तकम्मेहि दुम्मई ।
तारिसो मरणते वि नाराहेइ सवर ॥३९॥
आयरिए नाराहेइ समणे यावि तारिसो ।
गिहत्था वि ण गरहति जेण जाणति तारिस ॥४०॥

१—लद्ध (ख)।
२—पूयणट्ठा (क ख ग घ ह)।
३—पकुव्वइ (ख) वि कुव्वइ (ज)।
४—अनिव्वाणी (अ)।

'एवं तु अगुणप्पेही गुणाणं च विवज्जओ।
तारिसो मरणंते वि नाराहेइ संवरं ॥४१॥'[1]

तवं कुव्वइ मेहावी पणीयं वज्जए रसं।
मज्जप्पमायविरओ तवस्सी अइउक्कसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लाणं अणेगसाहुपूइयं[2]।
विउलं अत्थसंजुत्तं कित्तइस्सं सुणेह मे ॥४३॥

एवं 'तु गुणप्पेही'[3] अगुणाणं 'च विवज्जओ'[4]।
तारिसो मरणंते वि आराहेइ संवरं ॥४४॥

आयरिए आराहेइ समणे यावि तारिसो।
गिहत्था वि णं पूयंति जेण जाणंति तारिसं ॥४५॥

तवतेणे वयतेणे रूवतेणे य जे नरे।
आयारभावतेणे य कुव्वइ देवकिब्बिसं ॥४६॥

लद्धूण वि देवत्तं उववन्नो देवकिब्बिसे।
तत्था वि से न याणाइ किं मे किच्चा ईमं फलं? ॥४७॥

तत्तो वि से चइत्ताणं लब्भिही एलमूययं।
नरयं तिरिक्खजोणिं वा बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥

एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं।
अणुमायं पि मेहावी मायामोसं विवज्जए ॥४९॥

१—यह श्लोक चूर्णिद्वय में व्याख्यात नहीं है।
२—अणेगं० (ज)।
३—स गुणप्पेही (ह); अगुणप्पेही (जा)।
४—विवज्जए (अ, क, जा)।

सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं
संजयाण बुद्धाण सगासे।
तत्थ भिक्खू सुप्पणिहिंदिए
तिव्वलज्ज गुणवं विहरेज्जासि ॥५०॥
—त्ति बेमि ॥

छट्ठमज्झयणं

महायारकहा

नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं ।
गणिमागमसंपन्नं उज्जाणम्मि समोसढं ॥ १ ॥

रायाणो रायमच्चा य माहणा अदुव खत्तिया ।
पुच्छंति निहुअप्पाणो कहं भे आयारगोयरो ? ॥२॥

तेसिं सो निहुओ दंतो सव्वभूयसुहावहो ।
सिक्खाए सुसमाउत्तो आइक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥

हंदि धम्मत्थकामाणं निग्गंथाणं सुणेह मे ।
आयारगोयरं भीमं सयलं दुरहिट्ठियं ॥ ४ ॥

नन्नत्थ एरिसं वुत्तं जं लोए परमदुच्चरं ।
विउलट्ठाणभाइस्स[1] न भूयं न भविस्सई ॥ ५ ॥

सखुड्डगवियत्ताणं वाहियाणं च जे गुणा ।
अखंडफुडिया[2] कायव्वा तं सुणेह जहा तहा ॥ ६ ॥

दस अट्ठ य ठाणाइं जाइं बालोऽवरज्झई ।
तत्थ अन्नयरे ठाणे निग्गंथत्ताओ भस्सई ॥ ७ ॥

[वयछक्कं कायछक्कं अकप्पो गिहिभायणं ।
पलियंक निसेज्जा य सिणाणं सोहवज्जणं ॥][3]

१—° भाविस्स (अ) ।
२—° फुडा (ज) ; ° फुल्ला (अ) ।
३—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों में है किन्तु चूर्णिद्वय व टीका में व्याख्यात नहीं है ।

तत्थिमं पढमं ठाणं महावीरेण देसियं ।
अहिंसा निउणं[1] दिट्ठा सव्वभूएसु[2] संजमो ॥ ८ ॥
जावंति लोए पाणा तसा अदुव थावरा ।
ते जाणमजाणं वा न हणे णो वि[3] घायए ॥ ९ ॥
सव्वे[4] जीवा वि इच्छन्ति जीविउं न मरिज्जिउं ।
तम्हा पाणवहं[5] घोरं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१०॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा कोहा वा जइ वा भया ।
हिंसगं न मुसं बूया नो वि अन्नं वयावए ॥११॥
मुसावाओ य लोगम्मि सव्वसाहूहिं गरहिओ ।
अविस्सासो य भूयाणं तम्हा मोसं विवज्जए ॥१२॥
चित्तमंतमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
दंतसोहणमेत्तं पि ओग्गहंसि अजाइया ॥१३॥
तं अप्पणा न गेण्हंति नो वि गेण्हावए परं ।
अन्नं वा गेण्हमाणं पि नाणुजाणंति संजया[6] ॥१४॥
अबंभचरियं घोरं पमायं दुरहिट्ठियं ।
नायरंति मुणी लोए भेयाययणवज्जिणो ॥१५॥
मूलमेयमहम्मस्स महादोससमुस्सयं ।
तम्हा मेहुणसंसग्गिं निग्गंथा वज्जयंति णं ॥१६॥

१—निउणा (क ख ग घ ज, हृ)।
२—°जीवेसु (अ ज)।
३—व (क ख ग)।
४—सव्व (अ ख)।
५—पाणिवहं (क ग घ)।
६—नाणुजाणेज्ज संजए (अ)।

विडमुब्भेइमं[1] लोणं तेल्लं सप्पि च फाणियं ।
न ते सन्निहिमिच्छन्ति नायपुत्तवओरया ॥१७॥

लोभस्सेसो अणुफासो मन्ने अन्नयरामवि ।
जे सिया सन्निहीकामे गिही पव्वइए न से ॥१८॥

जं पि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं ।
तं पि संजमलज्जट्ठा धारंति परिहरंति य ॥१९॥

न सो परिग्गहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।
मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इइ वुत्तं महेसिणा ॥२०॥

सव्वत्थुवहिणा बुद्धा संरक्खणपरिग्गहे ।
अवि अप्पणो वि देहम्मि नायरंति ममाइयं ॥२१॥

अहो निच्चं तवोकम्मं सव्वबुद्धेहिं वण्णियं ।
जा य[2] लज्जासमा वित्ती एगभत्तं च भोयणं ॥२२॥

संतिमे सुहुमा पाणा तसा अदुव थावरा ।
जाइं राओ अपासंतो कहमेसणियं चरे ? ॥२३॥

उदउल्लं बीयसंसत्तं पाणा निवडिया महिं ।
दिया ताइं विवज्जेज्जा राओ तत्थ कहं चरे ? ॥२४॥

एयं च दोसं दट्ठूणं नायपुत्तेण भासियं ।
सव्वाहारं न भुंजंति निग्गंथा राइभोयणं ॥२५॥

पुढविकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२६॥

पुढविकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥२७॥

१—पिंडमुब्भे० (अ) ।
२—व (अ) ।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
पुढविकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥२८॥
आउकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥२९॥
आउकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥३०॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
आउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३१॥
जायतेयं न इच्छंति पावगं जलइत्तए ।
तिक्खमन्नयरं सत्थं सव्वओ वि दुरासयं ॥३२॥
पाईणं पडिणं वा वि उड्ढं अणुदिसामवि ।
अहे दाहिणओ वा वि दहे उत्तरओ वि य ॥३३॥
भूयाणमेसमाघाओ हव्ववाहो न संसओ ।
तं पईवपयावट्ठा[1] संजया किंचि नारभे ॥३४॥
तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तेउकायसमारंभं[2] जावज्जीवाए वज्जए ॥३५॥
अनिलस्स समारंभं बुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्जबहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥३६॥
तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा ।
न ते वीइउमिच्छन्ति 'वीयावेऊण वा परं'[3] ॥३७॥
जंपि वत्थं व पायं वा कंबलं पायपुंछणं ।
न ते वायमुईरंति[4] जयं परिहरंति य ॥३८॥

१—° वियावट्ठा (अ)।
२—अगणिकाय ° (क घ)।
३—ना वि वीयावए परं (क)।
४—वाउ ° (ख घ)।

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥३९॥

वणस्सइं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४०॥

वणस्सइं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४१॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
वणस्सइसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४२॥

तसकायं न हिंसंति मणसा वयसा कायसा ।
तिविहेण करणजोएण संजया सुसमाहिया ॥४३॥

तसकायं विहिंसंतो हिंसई उ तयस्सिए ।
तसे य विविहे पाणे चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४४॥

तम्हा एयं वियाणित्ता दोसं दुग्गइवड्ढणं ।
तसकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४५॥

जाइं चत्तारिऽभोज्जाइं इसिणाहारमाईणि[1] ।
ताइं तु विवज्जंतो संजमं अणुपालए ॥४६॥

पिंडं सेज्जं च वत्थं च चउत्थं पायमेव य ।
अकप्पियं न इच्छेज्जा पडिगाहेज्ज कप्पियं ॥४७॥

जे नियागं ममायंति कीयमुद्देसियाहडं ।
वहं ते समणुजाणंति इइ वुत्तं महेसिणा ॥४८॥

तम्हा असणपाणाइं कीयमुद्देसियाहडं ।
वज्जयंति ठियप्पाणो निग्गंथा धम्मजीविणो ॥४९॥

१—असणा० (ख)।

कंसेसु कंसपाएसु 'कुंडमोएसु'[1] वा पुणो।
भुंजंतो असणपाणाइं आयारा परिभस्सइ ॥५०॥

सीओदगसमारंभे मत्तधोयणछड्डणे।
जाइं छन्नंति[2] भूयाइं दिट्ठो तत्थ असंजमो ॥५१॥

पच्छाकम्मं पुरेकम्मं सिया तत्थ न कप्पई।
एयमट्ठं न भुंजंति निग्गंथा गिहिभायणे ॥५२॥

आसंदीपलियंकेसु मंचमासालएसु वा।
अणायरियमज्जाणं आसइत्तु सइत्तु वा ॥५३॥

'नासंदीपलियंकेसु न निसेज्जा न पीढए।
निग्गंथाऽपडिलेहाए बुद्धवुत्तमहिट्ठगा ॥५४॥'[3]

गंभीरविजया एए पाणा दुप्पडिलेहगा।
आसंदीपलियंका[4] य एयमट्ठं विवज्जिया ॥५५॥

गोयरग्गपविट्ठस्स निसेज्जा जस्स कप्पई।
इमेरिसमणायारं आवज्जइ अबोहियं ॥५६॥

विवत्ती बंभचेरस्स पाणाणं अवहे[5] वहो।
वणीमगपडिग्घाओ पडिकोहो अगारिणं ॥५७॥

अगुत्ती बंभचेरस्स इत्थीओ यावि[6] संकणं।
कुसीलवड्ढणं ठाणं दूरओ परिवज्जए ॥५८॥

१—कुंडकोसेसु (आ, जा)।
२—छिन्नंति (क, ख, ग), छिप्पंति (ह)।
३—'णासंदीपलियंकेसु' एस सिलोगो केसिंचि णेव अत्थि (अ) ; जिनदास चूर्णि में भी यह श्लोक व्याख्यात नहीं है।
४—° पलियंको (क, ग) ; ° पलेयंके (ख)।
५—च वहे (क, ख, ग, घ, ह)।
६—वावि (अ, क, ख, ग, ज)।

तिण्हमन्नयरागस्स निसेज्जा जस्स कप्पई ।
जराए अभिभूयस्स वाहियस्स तवस्सिणो ॥५९॥

वाहिओ वा अरोगी वा सिणाणं जो उ पत्थए ।
वोक्कंतो होइ आयारो जढो हवइ संजमो ॥६०॥

संतिमे सुहुमा पाणा घसासु भिलुगासु य ।
जे उ[1] भिक्खू सिणायंतो वियडेणुप्पिलावए ॥६१॥

तम्हा ते न सिणायंति सीएण उसिणेण वा ।
जावज्जीवं वयं घोरं असिणाणमहिट्ठगा ॥६२॥

सिणाणं अदुवा कक्कं लोद्धं पउमगाणि य ।
गायस्सुव्वट्टणट्ठाए नायरंति कयाइ वि ॥६३॥

नगिणस्स वा वि मुंडस्स दीहरोमनहंसिणो ।
मेहुणा उवसंतस्स किं विभूसाए कारियं ? ॥६४॥

विभूसावत्तियं भिक्खू कम्मं वंधइ चिक्कणं ।
संसारसायरे घोरे जेणं पडइ[2] दुरुत्तरे ॥६५॥

विभूसावत्तियं चेयं वुद्धा मन्नंति तारिसं ।
सावज्जवहुलं चेयं नेयं ताईहिं सेवियं ॥६६॥

खवेंति अप्पाणममोहदंसिणो
तवे रया संजम अज्जवे गुणे ।
धुणंति पावाइं पुरेकडाइं
नवाइ पावाइं न ते करेंति ॥६७॥

१—य (ख) ।
२—भमइ (अ) ।

सओवसंता अममा अकिंचणा
सविज्जविज्जाणुगया जसंसिणो ।
उउप्पसन्ने विमले व चंदिमा
सिद्धिं विमाणाइ उवेंति[1] ताइणो ॥६८॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—वयंति (क ग)।

सत्तमज्झयणं

वक्कसुद्धि

चउण्हं खलु भासाणं परिसंखाय पन्नवं ।
दोण्हं तु विणयं[1] सिक्खे दो न भासेज्ज सव्वसो ॥ १ ॥
जा य[2] सच्चा अवत्तव्वा सच्चामोसा य जा मुसा ।
जा य बुद्धेहिंऽणाइन्ना न तं भासेज्ज पन्नवं ॥ २ ॥
असच्चमोसं सच्चं च अणवज्जमकक्कसं ।
समुप्पेहमसंदिद्धं गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३ ॥
एयं च अट्ठमन्नं वा जं तु नामेइ सासयं ।
स भासं सच्चमोसं पि[3] तं पि धीरो विवज्जए ॥ ४ ॥
वितहं पि तहामुत्तिं जं गिरं भासए नरो ।
तम्हा सो पुट्ठो पावेणं किं पुण जो मुसं वए ? ॥ ५ ॥
तम्हा गच्छामो वक्खामो अमुगं वा णे भविस्सई ।
अहं वा णं करिस्सामि एसो वा णं करिस्सई ॥ ६ ॥
एवमाई उ जा भासा एसकालम्मि संकिया ।
संपयाईयमट्ठे वा तं पि धीरो विवज्जए ॥ ७ ॥
'अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
जमट्ठं तु न जाणेज्जा एवमेयं ति नो वए ॥ ८ ॥
अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
जत्थ संका भवे तं तु एवमेयं ति नो वए ॥ ९ ॥

१—विजयं (अ) ; विनयं (आ) ।
२—जा (अ) ।
३—च (ख) ।

अईयम्मि य कालम्मी पच्चुप्पन्नमणागए ।
निस्संकियं भवे जं तु 'एवमेयं' ति निद्दिसे ॥१०॥[2]

तहेव फरुसा भासा[1] गुरुभूओवघाइणी ।
सच्चा वि सा न वत्तव्वा जओ पावस्स आगमो ॥११॥

तहेव काणं काणे त्ति पंडगं पंडगे त्ति वा ।
वाहियं वा वि रोगि त्ति तेणं चोरे त्ति नो वए ॥१२॥

एएणन्नेण वट्ठेण[3] परो जेणुवहम्मई ।
आयारभावदोसन्नू[4] न तं भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥

तहेव होले गोले त्ति साणे वा वसुले त्ति य ।
दमए दुहए वा[5] वि नेवं[6] भासेज्ज पन्नवं ॥१४॥

अज्जिए पज्जिए वा वि अम्मो माउस्सिय त्ति य ।
पिउस्सिए भाइणेज्ज त्ति धूए नत्तुणिए त्ति य ॥१५॥

हले हले त्ति अन्ने त्ति भट्टे सामिणि गोमिणि ।
होले गोले वसुले त्ति इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥

१—थोवं थोवं तु निद्दिसे (हा)।
२—श्लोक ८, ९ व १० के स्थान पर चूर्णिद्वय में निम्न श्लोक हैं —
तहेव्ऽणागतं अट्ठं जं व्ऽण्णं मणु(ण)व धारियं ।
संकितं पडुपण्णं वा 'एवमेयं' ति, णो वदे ॥८॥
तहेव्ऽणागतं अट्ठं जं वण्णं मु(म)व धारियं ।
नीसंकितं पडुपण्णं थाव थावाए णिद्दिसे ॥९॥ (अ)।
तं तहेव अइयंमि कालमि्ऽणवधारियं ।
जं चण्णं संकियं वावि 'एवमेयं' ति नो वए ॥८॥
तहेवाणागयं अट्ठं जं होइ उवहारियं ।
निस्संकियं पडुप्पन्ने 'एवमेयं' ति निद्दिसे ॥९॥ (ज)।
३—अट्ठेण (क ख ग, घ)।
४—°दोसेण (अ)।
५—चा (हे)।
६—नेवं (ख)।

नामधिज्जेण णं बूया इत्थीगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥१७॥

अज्जए पज्जए वा वि बप्पो चुल्लपिउ त्ति य ।
माउला भाइणेज्ज त्ति पुत्ते नत्तुणिय त्ति य ॥१८॥

हे हो हले त्ति अन्ने त्ति भट्टा सामिय गोमिए ।
होल गोल वसुले त्ति पुरिसं नेवमालवे ॥१९॥

नामधेज्जेण णं बूया पुरिसगोत्तेण वा पुणो ।
जहारिहमभिगिज्झ आलवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥

पंचिंदियाण पाणाणं एस इत्थी अयं पुमं ।
जाव णं न विजाणेज्जा ताव जाइ त्ति आलवे ॥२१॥

तहेव मणुस्सं पसुं पक्खि वा वि सरीसिवं ।
थूले पमेइले वज्झे पाइमे त्ति य नो वए ॥२२॥

परिवुड्ढे त्ति णं बूया बूया उवचिए त्ति य ।
संजाए पीणिए वा वि महाकाए त्ति आलवे ॥२३॥

तहेव गाओ दुज्झाओ दम्मा गोरहग त्ति य ।
वाहिमा रहजोग त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥

जुवं गवे त्ति णं बूया धेणुं रसदय त्ति य ।
रहस्से महल्लए[1] वा वि वए संवहणे त्ति य ॥२५॥

तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य ।
रुक्खा महल्ल पेहाए नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२६॥

अलं पासायखंभाणं तोरणाणं गिहाण य ।
फलिहग्गलनावाणं अलं उदगदोणिणं ॥२७॥

१—महव्वए (अ, ज) ।

पीढए चंगवेरे य नंगले मइयं सिया।
जंतलट्ठी व नाभी वा गंडिया[1] व अलं सिया ॥२८॥

आसणं सयणं जाणं होज्जा वा 'किंचुवस्सए'[2]।
भूओवघाइणिं भासं नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२९॥

तहेव गंतुमुज्जाणं पव्वयाणि वणाणि य।
रुक्खा महल्ल पेहाए एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३०॥

जाइमंता इमे रुक्खा दीहवट्टा महालया।
पयायसाला विडिमा[3] वए दरिसणि त्ति य ॥३१॥

तहा फलाइं पक्काइं पायखज्जाइं नो वए।
वेलोइयाइं टालाइं वेहिमाइ त्ति नो वए ॥३२॥

असंथडा इमे अंबा बहुनिवट्टिमा फला।
वएज्ज बहुसंभूया भूयरूव त्ति वा पुणो ॥३३॥

तहेवोसहीओ पक्काओ नीलियाओ छवीइय।
लाइमा भज्जिमाओ त्ति पिहुखज्ज त्ति नो वए ॥३४॥

रूढा[4] बहुसंभूया थिरा ऊसढा[5] वि य।
गब्भियाओ पसूयाओ ससाराओ[6] त्ति आलवे ॥३५॥

'तहेव संखडिं नच्चा 'किच्चं कज्जं'[7] ति नो वए।
तेणगं वा वि वज्झे त्ति सुतित्थ त्ति य आवगा ॥३६॥

१—दंडिया (क, ख, ग)।
२—किं सुवस्सए (ख)।
३—पडिमा (ख)।
४—विरूढा (ज)।
५—उस्सडा (अ); उस्सिया (ज)।
६—संसाराओ (ह)।
७—करणिज्जंति (घ)।

संखडिं संखडिं बूया 'पणियट्ठ त्ति'[1] तेणगं।
बहुसमाणि तित्थाणि आवगाणं वियागरे ॥३७॥

तहा नईओ पुण्णाओ 'कायतिज्ज त्ति'[2] नो वए।
नावाहिं तारिमाओ त्ति पाणिपेज्ज त्ति नो वए ॥३८॥

बहुवाहडा अगाहा बहुसलिलुप्पिलोदगा।
बहुवित्थडोदगा यावि एवं भासेज्ज पन्नवं ॥३९॥[3]

तहेव सावज्जं जोगं परस्सट्ठाए निट्ठियं।
कीरमाणं ति वा नच्चा सावज्जं न लवे मुणी ॥४०॥

सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुछिन्ने सुहडे मडे।
सुनिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥४१॥

पयत्तपक्के त्ति व पक्कमालवे।
पयत्तछिन्न त्ति व छिन्नमालवे।
पयत्तलट्ठ त्ति व कम्महेउयं,
'पहारगाढ'[4] त्ति व गाढमालवे ॥४२॥

सव्वुक्कसं परग्घं वा अउलं नत्थि एरिसं।
अवक्कियमवत्तव्वं[5] अचियत्तं चेव नो वए ॥४३॥

सव्वमेयं वइस्सामि सव्वमेयं त्ति नो वए।
अणुवीइ सव्वं सव्वत्थ एवं भासेज्ज पन्नवं ॥४४॥

सुक्कीयं वा सुविक्कीयं अकेज्जं केज्जमेव वा।
इमं गेण्ह इमं मुंच पणियं नो वियागरे ॥४५॥

१—पणियट्ठं ति (ख, ग, घ)।
२—काय-पेज्जति (अ); काय-तेज्जति (आ); काय-पेज्जंति (जा)।
३—अगस्त्य चूर्णि में श्लोक ३६, ३७ के स्थान में ३८, ३९ और ३८, ३९ के स्थान में ३६, ३७ इस प्रकार दो श्लोकों का व्यत्यय है।
४—गाढप्पहार (अ, ज, ह)।
५—अचक्किय० (ख, ग); अवक्किय० (अ)।

अप्पग्घे वा महग्घे वा कए वा विक्कए वि वा।
पणियट्ठे समुप्पन्ने अणवज्जं वियागरे ॥४६॥
तहेवासंजयं धीरो आस एहि करेहि वा।
सय चिट्ठ वयाहि त्ति नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥४७॥
बहवे इमे असाहू लोए वुच्चंति साहुणो।
न लवे असाहुं साहुं त्ति साहुं साहुं त्ति आलवे ॥४८॥
नाणदंसणसंपन्नं संजमे य तवे रयं।
एवं गुणसमाउत्तं संजयं साहुमालवे ॥४९॥
देवाणं मणुयाणं च तिरियाणं च वुग्गहे[1]।
अमुयाणं जओ होउ मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥
वाओ वुट्ठं व सीउण्हं खेमं धायं सिवं ति वा।
कया णु होज्ज एयाणि मा वा होउ त्ति नो वए ॥५१॥
तहेव मेहं व नहं व माणवं
न देव देव त्ति गिरं वएज्जा।
समुच्छिए उन्नए वा पओए
वएज्ज वा वुट्ठ बलाहए त्ति ॥५२॥
अंतलिक्खे त्ति णं बूया गुज्झाणुचरिय त्ति य।
रिद्धिमंतं नरं दिस्स रिद्धिमंतं ति आलवे ॥५३॥
तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा
ओहारिणी जा य परोवघाइणी।
से कोह लोह भयसा[2] व माणवो[3]
न हासमाणो वि गिरं वएज्जा ॥५४॥

१—विग्गहे (ह)।
२—भय हास (ख ज ह)।
३—माणवा (ख)।

सवक्कसुद्धि[1] समुपेहिया मुणी
गिरं च दुट्ठं परिवज्जए सया ।
मियं अदुट्ठं अणुवीइ भासए
सयाण मज्झे लहई पसंसणं ॥५५॥

भासाए दोसे य गुणे य जाणिया
तीसे य दुट्ठे परिवज्जए[2] सया ।
छसु संजए सामणिए सया जए
वएज्ज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥

परिक्खभासी सुसमाहिइंदिए
चउक्कसायावगए अणिस्सिए ।
स निद्धुणे धुन्नमलं पुरेकडं
आराहए लोगमिणं तहा परं ॥५७॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सव्वक्क° (क, घ); सुव्वक्क° (ख, ग)।
२—विवज्जगो (अ)।

अट्ठमज्झयणं

आयारपणिही

अयारप्पणिहिं लद्धुं जहा कायव्व भिक्खुणा।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्वि सुणेह मे ॥ १ ॥
पुढवि दग अगणि मारुय तणरुक्ख सबीयगा।
तसा य पाणा जीव त्ति इइ वुत्तं महेसिणा ॥ २ ॥
तेसिं अच्छणजोएण निच्चं होयव्वयं सिया।
मणसा कायवक्केण एवं भवइ संजए ॥ ३ ॥
पुढवि भित्तिं सिलं लेलुं नेव भिंदे न संलिहे।
तिविहेण करणजोएण संजए सुसमाहिए ॥ ४ ॥
सुद्धपुढवीए[1] न निसिए ससरक्खम्मि य आसणे।
पमज्जित्तु निसीएज्जा जाइत्ता जस्स ओग्गहं ॥ ५ ॥
सीओदगं न सेवेज्जा सिलावुट्ठं[2] हिमाणि य।
उसिणोदगं तत्तफासुयं पडिगाहेज्ज संजए ॥ ६ ॥
उदउल्लं अप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे।
समुप्पेह[3] तहाभूयं नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥
इंगालं अगणिं अच्चिं अलायं व सजोइयं।
न उंजेज्जा न घट्टेज्जा नो णं निव्वावए मुणी ॥ ८ ॥
तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयणेण वा।
न वीएज्ज अप्पणो कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं ॥ ९ ॥

१—°पुढवी (ख)।
२—°वुट्ठिं (क, ख)।
३—समुप्पेहे (अ, ज)।

तणरुक्खं[1] न छिंदेज्जा फलं मूलं व कस्सई ।
आमगं विविहं वीयं मणसा वि न पत्थए ॥१०॥

गहणेसु[2] न चिट्ठेज्जा वीएसु हरिएसु वा ।
उदगम्मि तहा निच्चं उत्तिगपणगेसु वा ॥११॥

तसे पाणे न हिंसेज्जा वाया अदुव कम्मुणा ।
उवरओ सव्वभूएसु पासेज्ज विविहं जगं ॥१२॥

अट्ठ सुहुमाइं 'पेहाए'[3] 'जाइं जाणित्तु संजए'[4] ।
दयाहिगारी भूएसु आस चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥

कयराइं अट्ठ सुहुमाइं जाइं पुच्छेज्ज संजए ।
इमाइं ताइं मेहावी आइक्खेज्ज वियक्खणो ॥१४॥

सिणेहं पुप्फसुहुमं च पाणुत्तिगं तहेव य ।
पणगं बीय हरियं च अंडसुहुमं च अट्ठमं ॥१५॥

एवमेयाणि जाणित्ता सव्वभावेण संजए ।
अप्पमत्तो जए निच्चं सव्विंदियसमाहिए ॥१६॥

धुवं च पडिलेहेज्जा जोगसा पायकंवलं ।
सेज्जमुच्चारभूमिं च संथारं अदुवासणं ॥१७॥

उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं ।
फासुयं पडिलेहित्ता परिट्ठावेज्ज संजए ॥१८॥

पविसित्तु परागारं पाणट्ठा भोयणस्स वा ।
जयं चिट्ठे मियं भासे ण[5] य रूवेसु मणं करे ॥१९॥

१—° रुक्खे (अ) ।
२—गहणंमि (अ) ।
३—मेहावी (अ) ।
४—पडिलेहित्तु संजए (अ) ।
५—णो (अ) ।

वहुं सुणेइ कण्णेहिं वहु अच्छीहिं पेच्छइ[1] ।
न य दिट्ठं सुयं सव्वं भिक्खू अक्खाउमरिहइ ॥२०॥
सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लवेज्जोवघाइयं ।
न य केणइ[2] उवाएणं गिहिजोगं समायरे ॥२१॥
निट्ठाणं रसनिज्जूढं भद्दगं पावगं ति वा ।
पुट्ठो वा वि अपुट्ठो वा लाभालाभं न निद्दिसे ॥२२॥
न य भोयणम्मि गिद्धो चरे उंछं अयंपिरो ।
अफासुयं न भुंजेज्जा कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥
सन्निहिं च न कुव्वेज्जा अणुमायं पि संजए ।
मुहाजीवी असंबद्धे हवेज्ज जगनिस्सिए ॥२४॥
लूहवित्ती सुसंतुट्ठे अप्पिच्छे सुहरे सिया ।
आसुरत्तं न गच्छेज्जा सोच्चाणं जिणसासणं ॥२५॥
कण्णसोक्खेहिं सद्देहिं पेमं नाभिनिवेसए ।
दारुणं कक्कसं फासं काएण अहियासए ॥२६॥
खुहं पिवासं दुस्सेज्जं सीउण्हं अरई भयं ।
अहियासे अव्वहिओ देहे[3] दुक्खं महाफलं ॥२७॥
अत्थंगयम्मि आइच्चे पुरत्था य अणुग्गए ।
आहारमइयं[4] सव्वं मणसा वि न पत्थए ॥२८॥
अतिंतिणे अचवले अप्पभासी[5] मियासणे ।
हवेज्ज उयरे दंते थोवं लद्धुं न खिंसए ॥२९॥

१—पासति (अ)।
२—कोइ (ज), केण (ख घ)।
३—देह (क ख घ)।
३—°माइयं (क)।
५—°वादी (अ, ज)।

न बाहिरं परिभवे अत्ताणं न समुक्कसे ।
सुयलाभे न मज्जेज्जा जच्चा तवसिबुद्धिए ॥३०॥

से जाणमजाणं वा कट्टु आहम्मियं पयं ।
संवरे खिप्पमप्पाणं बीयं तं न समायरे ॥३१॥

अणायारं परक्कम्म नेव गूहे न निण्हवे ।
सुई सया वियडभावे असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥

अमोहं वयणं कुज्जा आयरियस्स महप्पणो ।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥३३॥

अधुवं जीवियं नच्चा सिद्धिमग्गं वियाणिया ।
विणियट्टेज्ज[1] भोगेसु आउं परिमियमप्पणो ॥३४॥

[बलं थामं च पेहाए सद्धामारोगमप्पणो ।
खेत्तं कालं च विन्नाय तहप्पाणं निजुंजए ॥][2]

जरा जाव न पीलेइ वाही जाव न वड्ढई ।
जाविंदिया न हायंति ताव धम्मं समायरे ॥३५॥

कोहं माणं च मायं च लोभं च पापवड्ढणं ।
वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो ॥३६॥

कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो ॥३७॥

उवसमेण हणे कोहं माणं मद्दवया जिणे ।
मायं चज्जवभावेण लोभं संतोसओ[3] जिणे ॥३८॥

१—विणिव्विज्जेज्ज (अ) ।
२—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों मे है, किन्तु चूर्णि व टीका मे व्याख्यात नहीं है ।
३—संतुट्ठिए (ज) ।

कोहो य माणो य अणिग्गहीया
माया य लोभो य पवड्ढमाणा ।
चत्तारि एए कसिणा कसाया
सिंचंति मूलाइं पुणब्भवस्स ॥३९॥

राइणिएसु विणयं पउंजे
धुवसीलयं सययं न हावएज्जा ।
कुम्मो व्व अल्लीणपलीणगुत्तो
परक्कमेज्जा तवसंजमम्मि ॥४०॥

निद्दं च न बहुमन्नेज्जा सप्पहासं[1] विवज्जए ।
मिहोकहाहिं न रमे सज्झायम्मि[2] रओ सया ॥४१॥

जोगं च समणधम्मम्मि[3] जुंजे अणलसो धुवं ।
जुत्तो य समणधम्मम्मि अट्ठं लहइ अणुत्तरं ॥४२॥

इहलोगपारत्तहियं जेणं गच्छइ सोग्गइं ।
बहुस्सुयं पज्जुवासेज्जा पुच्छेज्जत्थविणिच्छयं ॥४३॥

हत्थं पायं च कायं च पणिहाय जिइंदिए ।
अल्लीणगुत्तो निसिए सगासे गुरुणो मुणी ॥४४॥

न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ ।
न य ऊरुं समासेज्जा चिट्ठेज्जा गुरुणंतिए ॥४५॥

अपुच्छिओ न भासेज्जा भासमाणस्स अंतरा ।
पिट्ठिमंसं न खाएज्जा मायामोसं विवज्जए ॥४६॥

अप्पत्तियं जेण सिया आसु कुप्पेज्ज वा परो ।
सव्वसो तं न भासेज्जा भासं अहियगामिणिं[4] ॥४७॥

१—सप्पहासं (क, ख, ग, घ, ह)।
२—अज्झयणम्मि (ज)।
३—° धम्मस्स (अ)।
४—° गामिणी (अ)।

दिट्ठं मियं असंदिद्धं पडिपुन्नं वियंजियं ।
अयंपिरमणुव्विग्गं भासं निसिर अत्तवं ॥४८॥

आयारपन्नत्तिधरं दिट्ठिवायमहिज्जगं ।
वइविक्खलियं नच्चा न तं उवहसे मुणी ॥४९॥

नक्खत्तं सुमिणं जोगं निमित्तं मंत भेसजं ।
गिहिणो तं न आइक्खे भूयाहिगरणं पयं ॥५०॥

अन्नट्ठं पगडं लयणं भएज्ज सयणासणं ।
उच्चारभूमिसंपन्नं इत्थीपसुविवज्जियं ॥५१॥

विवित्ता य भवे सेज्जा नारीणं न लवे कहं ।
गिहिसंथवं न कुज्जा कुज्जा साहूहिं संथवं ॥५२॥

जहा कुक्कुडपोयस्स निच्चं कुललओ भयं ।
एवं खु बंभयारिस्स इत्थीविग्गहओ भयं ॥५३॥

चित्तभित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुअलंकियं ।
भक्खरं पिव दट्ठूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥५४॥

हत्थपायपडिच्छिन्नं कण्णनासविगप्पियं ।
अवि वाससइं नारिं 'बंभयारी विवज्जए'[1] ॥५५॥

विभूसा इत्थिसंसग्गी पणीयरसभोयणं[2] ।
नरस्सत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥५६॥

अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लवियपेहियं[3] ।
इत्थीणं तं न निज्झाए कामरागविवड्ढणं ॥५७॥

विसएसु मणुन्नेसु पेमं नाभिनिवेसए ।
अणिच्चं तेसिं विन्नाय परिणामं पोग्गलाण उ[4] ॥५८॥

१—दूरओ परिवज्जए (ज) ।
२—पणीयं रसं (क, ख, ग) ।
३—चारुलविय० (अ, ज) ।
४—य (क, ख, ग, घ) ।

पोग्गलाण परीणामं तेसिं नच्चा जहा तहा ।
विणीयतण्हो विहरे सीईभूएण अप्पणा ॥५९॥
जाए सद्धाए निक्खंतो परियायट्ठाणमुत्तमं ।
तमेव अणुपालेज्जा गुणे आयरियसम्मए ॥६०॥
तवं चिमं संजमजोगयं[1] च
सज्झायजोगं च सया अहिट्ठए ।
सूरे व सेणाए समत्तमाउहे
अलमप्पणो होइ अलं परेसिं ॥६१॥
सज्झायसज्झाणरयस्स ताइणो
अपावभावस्स तवे रयस्स ।
विसुज्झई जं सि मलं[2] पुरेकडं
समीरियं रुप्पमलं व जोइणा ॥६२॥
से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए
सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे ।
विरायई[3] कम्मघणम्मि[4] अवगए
कसिणब्भपुडावगमे व चंदिमा ॥६३॥
—त्ति बेमि ॥

२—०जोग (अ)।
३—रय (अ)।
१—विसुज्झाई (अ), विमुच्चइ (ज)।
२—पुव्वकडेण कम्मुणा (अ, ज)।

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (पढमो उद्देसो)

थंभा व कोहा व मयप्पमाया
गुरुस्सगासे विणयं न सिक्खे[1] ।
सो चेव उ तस्स अभूइभावो
फलं व कीयस्स वहाय होइ ॥ १ ॥

जे यावि मंदि त्ति गुरुं विइत्ता
डहरे इमे अप्पसुए त्ति नच्चा ।
हीलंति मिच्छं पडिवज्जमाणा
करेंति आसायण ते गुरूणं ॥ २ ॥

पगईए मंदा वि भवंति एगे
डहरा वि य जे सुयबुद्धोववेया ।
आयारमंता गुण सुट्ठिअप्पा
जे हीलिया सिहिरिव भास कुज्जा ॥३॥

जे यावि नागं डहरं ति नच्चा
आसायए से अहियाय होइ ।
एवायरियं पि हु हीलयंतो
नियच्छई जाइपहं खु मंदे ॥ ४ ॥

आसीविसो यावि[2] परं सुरुट्ठो
किं जीवनासाओ[3] परं नु कुज्जा ।
आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ॥ ५ ॥

१—चिट्ठे (अ, ज, हा) ।
२—उावि (क, ख, ग, ज) ।
३—जीवि० (घ) ; जीवित० (अ) ।

जो पावगं जलियमवक्कमेज्जा
आसीविसं वा वि हु कोवएज्जा ।
जो वा विसं खायइ जीवियट्ठी
एसोवमासायणया गुरूण ॥ ६ ॥

सिया हु से पावय नो डहेज्जा
आसीविसो वा कुविओ न भक्खे ।
सिया विसं हालहलं न मारे
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ७ ॥

जो पव्वयं सिरसा भेत्तुमिच्छे
सुत्तं व सीहं पडिवोहएज्जा ।
जो वा दए सत्तिअग्गे पहारं
एसोवमासायणया गुरूण ॥ ८ ॥

सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे
सिया हु सीहो कुविओ न भक्खे ।
सिया न भिंदेज्ज व सत्तिअग्गं
न यावि मोक्खो गुरुहीलणाए ॥ ९ ॥

आयरियपाया पुण अप्पसन्ना
अबोहिआसायण नत्थि मोक्खो ।
तम्हा अणाबाह सुहाभिकंखी
गुरुप्पसायाभिमुहो रमेज्जा ॥१०॥

जहाहियग्गी जलणं नमसे
नाणाहुईमंतपयाभिसित्तं ।
एवायरियं उवचिट्ठएज्जा
अणंतनाणोवगओ वि संतो ॥११॥

जस्संतिए धम्मपयाइ सिक्खे
तस्संतिए वेणइयं पउंजे ।
सक्कारए सिरसा पंजलीओ
कायग्गिरा भो मणसा य[1] निच्चं ॥१२॥

लज्जा दया संजम बंभचेरं
कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं ।
जे मे गुरू सययमणुसासयंति
ते हं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥

जहा निसंते तवणच्चिमाली
पभासई केवलभारहं तु ।
एवायरिओ सुयसीलबुद्धिए
विरायई सुरमज्झे व इंदो ॥१४॥

जहा ससी कोमुइजोगजुत्तो
नक्खत्ततारागणपरिवुडप्पा ।
खे सोहई विमले अब्भमुक्के
एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्झे ॥१५॥

महागरा आयरिया महेसी
'समाहिजोगे सुयसीलबुद्धिए'[2] ।
संपाविउकामे अणुत्तराइं
आराहए[3] तोसए धम्मकामी ॥१६॥

१—वि (ख) ।
२—समाहिजोगस्सुय ° (हा) ।
३—उवट्ठिओ (अ) ।

सोचाण मेहावी सुभासियाइं
सुस्सूसए आयरियप्पमत्तो ।
आराहइत्ताण गुणे अणगे
से पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥
—त्ति बेमि ॥

*

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (बीओ उद्देसो)

मूलाओ खंधप्पभवो दुमस्स
खंधाओ पच्छा समुवेंति साहा ।
साहप्पसाहा विरुहंति पत्ता
तओ से पुप्फं च फलं रसो य ॥ १ ॥

एवं धम्मस्स विणओ मूलं परमो से मोक्खो ।
जेण कित्तिं सुयं सिग्घं निस्सेसं चाभिगच्छई[1] ॥ २ ॥

जे य चंडे मिए थद्धे दुव्वाई नियडी सढे ।
वुज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा ॥ ३ ॥

विणयं पि जो उवाएणं चोइओ कुप्पई नरो ।
दिव्वं सो सिरिमेज्जंति दंडेण पडिसेहए ॥ ४ ॥

तहेव अविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥ ५ ॥

तहेव सुविणीयप्पा उववज्झा हया गया ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढिं[2] पत्ता महायसा ॥ ६ ॥

तहेव अविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
दीसंति दुहमेहंता छाया विगलितेंदिया[3] ॥ ७ ॥

दंडसत्थपरिजुण्णा असब्भ वयणेहि य ।
कलुणा विवन्नछंदा खुप्पिवासाए[4] परिगया ॥ ८ ॥

१—चाधिगच्छई (अ, ह) ।
२—इड्ढि (अ) ।
३—ते विगलिंदिया (क, ख, ग, घ) ; विगलिंदिया (अ) ।
४—खुप्पिवासा (घ) ; खुप्पिवासाहि (क, ग) ; खुप्पिवासा य (ख) ।

तहेव सुविणीयप्पा लोगंसि नरनारिओ ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढि पत्ता महायसा ॥ ९ ॥
तहेव अविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसंति दुहमेहंता आभिओगमुवट्ठिया ॥१०॥
तहेव सुविणीयप्पा देवा जक्खा य गुज्झगा ।
दीसंति सुहमेहंता इड्ढि पत्ता महायसा ॥११॥
जे आयरियउवज्झायाण सुस्सूसावयणंकरा ।
तेसिं सिक्खा पवड्ढंति जलसित्ता इव[1] पायवा ॥१२॥
अप्पणट्ठा परट्ठा वा सिप्पा णेउणियाणि य ।
गिहिणो उवभोगट्ठा इहलोगस्स कारणा ॥१३॥
जेण बंधं वहं घोरं परियावं च दारुणं ।
सिक्खमाणा नियच्छंति जुत्ता ते ललिइंदिया ॥१४॥
ते वि तं गुरुं पूयंति तस्स सिप्पस्स कारणा ।
सक्कारेंति नमंसंति[2] तुट्ठा निद्देसवत्तिणो ॥१५॥
किं पुण जे सुयग्गाही 'अणंतहियकामए'[3] ।
आयरिया जं वए भिक्खू तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥
नीयं सेज्जं गइं ठाणं नीयं च आसणाणि य ।
नीयं च पाए वंदेज्जा नीयं कुज्जा य अंजलिं ॥१७॥
संघट्टइत्ता काएणं तहा उवहिणामवि ।
खमेह अवराहं मे वएज्ज न पुणो त्ति य ॥१८॥
दुग्गओ वा पओएणं चोइओ वहई रहं ।
एवं दुबुद्धि किच्चाणं[4] वुत्तो वुत्तो पकुव्वई ॥१९॥

१—व (अ)।
२—साणेंति (अ)।
३—°सुहकामए (अ)।
४—किचाइं (अ, ज, हा)।

[आलवंते लवंते वा न निसेज्जाए पडिस्सुणे ।
मोत्तूणं आसणं धीरो सुस्सूसाए पडिस्सुणे ॥][1]
कालं छंदोवयारं च पडिलेहित्ताण हेउहिं ।
तेण तेण उवाएण तं तं संपडिवायए ॥२०॥
विवत्ती अविणीयस्स संपत्ती विणियस्स य ।
जस्सेयं दुहओ नायं सिक्खं से अभिगच्छइ[2] ॥२१॥
जे यावि चंडे मइइड्ढिगारवे
पिसुणे नरे साहस हीणपेसणे ।
अदिट्ठधम्मे विणए अकोविए
असंविभागी न हु तस्स मोक्खो ॥२२॥
निद्देसवत्ती पुण जे गुरूणं
सुयत्थधम्मा विणयम्मि कोविया ।
तरित्तु ते ओहमिणं दुरुत्तरं
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गय ॥२३॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—यह श्लोक (क, ख, ग, घ) प्रतियों मे है, किन्तु चूर्णि व टीका में व्याख्यात नहीं है।
२—अधिगच्छइ (हा) ।

नवम अज्झयण

विणयसमाही (तइओ उद्देसो)

आयरिय[1] अग्गिमिवाहियग्गी
सुस्सूसमाणो पडिजागरेज्जा ।
आलोइय[2] इंगियमेव नच्चा
जो छन्दमाराहयइ स पुज्जो ॥ १ ॥

आयारमट्ठा विणय पउंजे
सुस्सूसमाणो परिगिज्झ वक्क ।
जहोवइट्ठ अभिकंखमाणो[3]
गुरु तु नासाययई[4] स पुज्जो ॥ २ ॥

राइणिएसु विणय पउंजे
डहरा वि य जे परियायजेट्ठा ।
नियत्तणे वट्टइ सच्चवाई
ओवायव वक्करे स पुज्जो ॥ ३ ॥

अन्नायउंछ चरई विसुद्ध
जवणट्ठया समुयाण च निच्च ।
अलद्धुय नो परिदेवएज्जा
लद्धु न विकत्थयई[5] स पुज्जो ॥ ४ ॥

१—आयरियग्गि (अ क ख ग)।
२—आलोइय (क ख)।
३—अविकपमाणो (अ ज)।
४—जो छदमाराहयइ (अ ज)।
५—विकथई (ग) विकथयई (क ख घ)।

संथारसेज्जासणभत्तपाणे
अप्पिच्छया अइलाभे वि संते ।
जो एवमप्पाणभितोसएज्जा
संतोसपाहन्न रए स पुज्जो ॥ ५ ॥

सक्का सहेउं आसाए[1] कंटया
अओमया उच्छहया नरेणं ।
अणासए जो उ सहेज्ज कंटए
वईमए कण्णसरे स पुज्जो ॥ ६ ॥

मुहुत्तदुक्खा हु[2] हवंति कंटया
अओमया ते वि तओ सुउद्धरा[3] ।
वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि
वेराणुबंधीणि महब्भयाणि ॥ ७ ॥

समावयंता वयणाभिघाया
कण्णंगया दुम्मणियं जणंति ।
धम्मो त्ति किच्चा परमग्गसूरे
जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ ८ ॥

अवण्णवायं च परम्मुहस्स
पच्चक्खओ पडिणीयं च भासं ।
ओहारिणिं अप्पियकारिणिं च
भासं न भासेज्ज सया स पुज्जो ॥ ९ ॥

१—आसाय (ख) ।
२—उ (क, ख, ग, घ) ।
३—सुदुद्धरा (क) ।

अलोलुए अक्कुहए अमाई
अपिसुणे यावि अदीणवित्ती ।
नो भावए नो वि य भावियप्पा
अकोउहल्ले य सया स पुज्जो ॥१०॥

गुणेहि साहू अगुणेहिऽसाहू
गिण्हाहि साहूगुण मुचऽसाहू ।
वियाणिया अप्पगमप्पएण
जो रागदोसेहिं समो स पुज्जो ॥११॥

तहेव डहर व महल्लग वा
इत्थीपुम पव्वइय गिहिं वा ।
नो हीलए नो वि य खिसएज्जा
थभ च कोह च चए स पुज्जो ॥१२॥

ज माणिया सयय माणयति
जत्तण कन्न व निवेसयति ।
ते माणए माणरिहे तवस्सी
जिइदिए सच्चरए स पुज्जो ॥१३॥

तेसिं गुरूण गुणसागराण
सोच्चाण मेहावि सुभासियाइ ।
चरे मुणी पचरए[1] तिगुत्तो
चउक्कसायावगए स पुज्जो ॥१४॥

१—पंचजए (अ)।

गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी
जिणमयनिउणे[1] अभिगमकुसले ।
धुणिय रयमलं पुरेकडं
भासुरमउलं गइं गय[2] ॥१५॥

—त्ति बेमि ॥

१—जिणवयण० (
२—वइं (ज, ह) ।

नवमं अज्झयणं

विणयसमाही (चउत्थो उद्देसो)

सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ॥ सू० १ ॥

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता ? ॥ सू० २ ॥

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, तंजहा—(१) विणयसमाही (२) सुयसमाही (३) तवसमाही (४) आयारसमाही ।

विणए सुए अ तवे आयारे निच्चं पंडिया ।
अभिरामयंति अप्पाणं जे भवंति जिइंदिया ॥ १ ॥
॥ सू० ३ ॥

चउव्विहा खलु विणयसमाही भवइ, तंजहा—(१) अणुसासिज्जंतो सुस्सूसइ (२) सम्म सपडिवज्जइ (३) वेयमाराहयइ[1] (४) न य भवइ अत्तसंपग्गहिए । चउत्थं पयं भवइ ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

पेहेइ[2] हियाणुसासणं
सुस्सूसइ तं च पुणो अहिट्ठए ।
न य माणमएण मज्जइ
विणयसमाही आययट्ठिए ॥ २ ॥
॥ सू० ४ ॥

१—वेयमाराहइ (ख, ज)।
२—पीहेति (अ)।

चउव्विहा खलु सुयसमाही भवइ, तंजहा—(१) सुयं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (२) एगग्गचित्तो भविस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (३) अप्पाणं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ (४) ठिओ परं ठावइस्सामि त्ति अज्झाइयव्वं भवइ। चउत्थं पयं भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

नाणमेगग्गचित्तो य[1] ठिओ ठावयई परं।
सुयाणि य अहिज्जित्ता रओ सुयसमाहिए॥ ३॥

॥ सू० ५॥

चउव्विहा खलु तवसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा। चउत्थं पयं भवइ।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

विविहगुणतवोरए य निच्चं
भवइ निरासए निज्जरट्ठिए।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
जुत्तो सया तवसमाहिए॥ ४॥

॥ सू० ६॥

चउव्विहा खलु आयारसमाही भवइ, तंजहा—(१) नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (२) नो परलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (३) नो कित्तिवण्णसद्दसिलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठेज्जा (४) नन्नत्थ आरहंतेहिं हेऊहिं आयारमहिट्ठेज्जा। चउत्थं पयं भवइ।

१—× (ख)।

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जिणवयणरए[1] अतिंतिणे
पडिपुण्णाययमाययट्ठिए ।
आयारसमाहिसंवुडे
भवइ य दंते भावसंधए ॥ ५ ॥
॥ सू० ७ ॥

अभिगम[2] चउरो समाहिओ[3]
सुविसुद्धो सुसमाहियप्पओ ।
विउलहियसुहावहं पुणो
कुव्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६ ॥

जाइमरणाओ मुच्चई
इत्थथं[4] च चयइ[5] सव्वसो ।
सिद्धे वा भवइ सासए
देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥ ७ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—°मए (अ) ।
२—अभिगत (अ) ।
३—समाहीओ (स) ।
४—इत्थत्त (अ) ।
५—जहाइ (अ ज) ।

दसमज्झयणं

स-भिक्खु

निक्खम्ममाणाए[1] बुद्धवयणे[2]
निच्चं चित्तसमाहिओ हवेज्जा ।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे
वंतं नो पडियायई जे स भिक्खू ॥१॥

पुढविं[3] न खणे न खणावए
सीओदगं न पिए[4] न पियावए[5] ।
अगणिसत्थं जहा सुनिसियं
तं न जले न जलावए जे स भिक्खू ॥२॥

अनिलेण न 'वीए न वीयावए'[6]
हरियाणि न 'छिंदे न छिंदावए'[7] ।
बीयाणि सया विवज्जयंतो
सच्चित्तं नाहारए जे स भिक्खू ॥३॥

वहणं तसथावराण होइ
पुढवितणकट्ठनिस्सियाणं ।
तम्हा उद्देसियं न भुंजे
नो 'वि पए'[8] न पयावए जे स भिक्खू ॥४॥

१— ०माणाइय (क, ख, ग) ; ०मादाय (जा) ।
२— ०वयणं (जा) ।
३—पुढवि (अ) ।
४—पीए (ख) ।
५—पीयावए (ख) ।
६—वीयावए न वीए (अ) ।
७—छिंदावए न छिंदे (अ) ।
८—न पए (अ) ।

रोइय नायपुत्तवयणे
अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए।
पंच य फासे महव्वयाइं
पंचासवसंवरे[1] जे स भिक्खू ॥५॥

चत्तारि वमे सया कसाए
धुवजोगी य[2] हवेज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरूवरयए[3]
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥६॥

सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे
अत्थि हु नाणे तवे संजमे य।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥७॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
होही अट्ठो सुए परे वा
तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥८॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे
भोच्चा सज्झायरए य[4] जे स भिक्खू ॥९॥

१—°संवुडे (घ, ह)।
२—× (ज, ह)।
३—°रए (ख, ग)।
४—× (क, ख, ग)।

न य वुग्गहियं[1] कहं कहेज्जा
न य[2] कुप्पे निहुइंदिए पसंते ।
संजमधुवजोगजुत्ते
उवसंते अविहेडए[3] जे स भिक्खू ॥१०॥

जो सहइ हु[4] गामकंटए
अक्कोसपहारतज्जणाओ य ।
भयभेरवसद्दसंपहासे[5]
समसुहदुक्खसहे य जे स भिक्खू ॥११॥

पडिमं पडिवज्जिया मसाणे
नो भायए भयभेरवाइं दिस्स[6] ।
विविहगुणतवोरए य निच्चं
न सरीरं चाभिकंखई जे स भिक्खू ॥१२॥

असइं वोसट्ठचत्तदेहे
अक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा ।
पुढवि समे मुणी हवेज्जा
अनियाणे अकोउहल्ले[7] य जे स भिक्खू ॥१३॥

१—विग्गहियं (अ, ह) ।
२—हु (क, ख, ग) ।
३—अवहेडए (क, ग) ।
४—इइ (ख) ।
५—० सप्पहासे (क, ख, ग, घ, ज, ह) ।
६—दिअस्स (ख) ।
७— अकूतुहलि (अ) ।

रोइय नायपुत्तवयणे
अत्तसमे मन्नेज्ज छप्पि काए।
पंच य फासे महव्वयाइं
पंचासवसंवरे[1] जे स भिक्खू ॥५॥

चत्तारि वमे सया कसाए
धुवजोगी य[2] हवेज्ज बुद्धवयणे।
अहणे निज्जायरूवरयए[3]
गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥६॥

सम्मद्दिट्ठी सया अमूढे
अत्थि हु नाणे तवे संजमे य।
तवसा धुणइ पुराणपावगं
मणवयकायसुसंवुडे जे स भिक्खू ॥७॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
होही अट्ठो सुए परे वा
तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥८॥

तहेव असणं पाणगं वा
विविहं खाइमसाइमं लभित्ता।
छंदिय साहम्मियाण भुंजे
भोच्चा सज्झायरए य[4] जे स भिक्खू ॥९॥

१—°संवुडे (घ, ह)।
२—× (ज, ह)।
३—°रए (ख, ग)।
४—× (क, ख, ग)।

न जाइमत्ते न य रूवमत्ते
न लाभमत्ते न सुएणमत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता[1]
धम्मज्झाणरए जे[2] स भिक्खू ॥१९॥

पवेयए अज्जपयं[3] महामुणी
धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं
न यावि हस्सकुहए[4] जे स भिक्खू ॥२०॥

तं देहवासं असुइं असासयं
सया चए[5] निच्च हियट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं
उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—विवज्जयंतो (क, ख); विगिं च धीरो (ज)।
२—°रए य जे (क)।
३—अज्जवयं (अ)।
४—हासं° (क, ख, ग, घ)।
५—जहे (अ)।

अभिभूय काएण परीसहाइं
समुद्धरे जाइपहाओ[1] अप्पयं।
विइत्तु जाईमरणं महब्भयं
तवे[2] रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥

हत्थसंजए पायसंजए
वायसंजए संजइंदिए।
अज्झप्परए सुसमाहियप्पा
सुत्तत्थं च वियाणई जे स भिक्खू ॥१५॥

उवहिम्मि अमुच्छिए अगिद्धे[3]
अन्नायउंछं पुलनिप्पुलाए।
कयविक्कयसन्निहिओ[4] विरए
सव्वसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥

अलोल भिक्खू न रसेसु गिद्धे
उंछं चरे जीविएनाभिकंखे[5]।
इड्ढिं च सक्कारण पूयणं च
चए[6] ठियप्पा अणिहे[7] जे स भिक्खू ॥१७॥

न परं वएज्जासि अयं कुसीले
जेणऽन्नो कुप्पेज्ज न तं वएज्जा।
जाणिय पत्तेयं पुण्णपावं
अत्ताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥१८॥

१—°वहाओ (अ, ज)।
२—भवे (अ)।
३—अगढिए (अ)।
४—°सन्निहीहिं (अ)।
५—°नावकखे (अ), °नाभिकखी (क, ख, ग, घ)।
६—जहे (अ, ज)।
७—अणिहिय (क), अणिहिए (ग)।

न जाइमत्ते न य रूवमत्ते
न लाभमत्ते न सुएणमत्ते ।
मयाणि सव्वाणि विवज्जइत्ता[1]
धम्मज्झाणरए जे[2] स भिक्खू ॥१९॥

पवेयए अज्जपयं[3] महामुणी
धम्मे ठिओ ठावयई परं पि ।
निक्खम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं
न यावि हस्सकुहए[4] जे स भिक्खू ॥२०॥

तं देहवासं असुइं असासयं
सया चए[5] निच्च हियट्ठियप्पा ।
छिंदित्तु जाईमरणस्स बंधणं
उवेइ भिक्खू अपुणागमं गइं ॥२१॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—विवज्जयंतो (क, ख) ; विगिं च धीरो (ज) ।
२—° रए य जे (क) ।
३—अज्जवयं (अ) ।
४—हासं ° (क, ख, ग, घ) ।
५—जहे (अ) ।

रइवक्का (पढमा चूलिया)

इह खलु भो ! पव्वइएणं, उप्पन्नदुक्खेणं, संजमे अरइसमावन्नचित्तेणं, ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव, हयरस्सिगयंकुसपोयपडागाभूयाइं[1] इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहियव्वाइं भवंति । तंजहा—

१–हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी[2] ।

२–लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा ।

३–भुज्जो य साइबहुला[3] मणुस्सा ।

४–इमे य मे दुक्खे न चिरकालो वट्ठाई भविस्सइ ।

५–ओमजणपुरक्कारे ।

६–वंतस्स य पडियाइयणं ।

७–अहरगइवासोवसंपया ।

८–दुलभे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं ।

९–आयंके से वहाय होइ ।

१०–संकप्पे से वहाय होइ ।

११–सोवक्केसे गिहवासे ॥ निरुवक्केसे परियाए ॥

१२–बंधे गिहवासे ॥ मोक्खे परियाए ॥

१३–सावज्जे गिहवासे ॥ अणवज्जे परियाए ॥

१४–बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥

१५–पत्तेयं पुण्णपावं ॥

१६–अणिच्चे खलु[4] भो ! मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले ॥

१—° पडागारो (अ) ।
२—दुप्पजीव (अ) ।
३—साय ° (क, दी, ग, घ)
४—× (आ, जा) ।

१७–बहुं च खलु[1] पावं कम्मं पगडं ॥

१८–पावाणं च खलु भो ! कडाणं कम्माणं पुव्विं दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं[2] वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता अट्ठारसमं पयं भवइ ॥ सू० १ ॥

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जया य चयई[3] धम्मं अणज्जो भोगकारणा ।
से तत्थ मुच्छिए बाले आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होइ इंदो वा पडिओ छमं ।
सव्वधम्म परिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥

जया य वंदिमो होइ पच्छा होइ अवंदिमो ।
देवया व चुया ठाणा स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥

जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो ।
राया व रज्जपब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो ।
सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥

जया य थेरओ होइ समइक्कंतजोव्वणो ।
मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥

'जया य कुकुडंबस्स कुतत्तीहिं विहम्मइ ।
हत्थी व बंधणे बद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥'[4]

१—खलु भो (ख, घ,) ।
२—दुप्परक्कंताणं (ह) ; दुप्परिकंताणं (ज) ।
३—जहइ (अ, ज) ।
४—यह श्लोक हस्तलिखित प्रतियों मे है तथा टीका में व्याख्यात है किन्तु चूर्णिद्वय में व्याख्यात नहीं है ।

रइवक्का (पढमा चूलिया)

इह खलु भो! पव्वइएणं, उप्पन्नदुक्खेणं, संजमे अरइसमावन्न-चित्तेणं, ओहाणुप्पेहिणा अणोहाइएणं चेव, हयरस्सिगयंकुस-पोयपडागाभूयाइं[1] इमाइं अट्ठारस ठाणाइं सम्मं संपडिलेहियव्वाइं भवंति। तंजहा—

१—हं भो! दुस्समाए दुप्पजीवी[2]।

२—लहुस्सगा इत्तरिया गिहीणं कामभोगा।

३—भुज्जो य साइबहुला[3] मणुस्सा।

४—इमे य मे दुक्खे न चिरकालो वट्टाई भविस्सइ।

५—ओमजणपुरक्कारे।

६—वंतस्स य पडियाइयणं।

७—अहरगइवासोवसंपया।

८—दुलभे खलु भो! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्झे वसंताणं।

९—आयंके से वहाय होइ।

१०—संकप्पे से वहाय होइ।

११—सोवक्केसे गिहवासे॥ निरुवक्केसे परियाए॥

१२—बंधे गिहवासे॥ मोक्खे परियाए॥

१३—सावज्जे गिहवासे॥ अणवज्जे परियाए॥

१४—बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा॥

१५—पत्तेयं पुण्णपावं॥

१६—अणिच्चे खलु[4] भो! मणुयाण जीविए कुसग्गजलबिंदुचंचले॥

१—°पडागारो (अ)।

२—दुप्पजीव (अ)।

३—साय° (क, दी, ग, घ)

४—× (आ, जा)।

१७—बहुं च खलु[1] पावं कम्मं पगडं ॥

१८—पावाणं च खलु भो ! कडाणं कम्माणं पुव्वि दुच्चिण्णाणं दुप्पडिकंताणं[2] वेयइत्ता मोक्खो, नत्थि अवेयइत्ता, तवसा वा झोसइत्ता अट्ठारसमं पयं भवइ ॥ सू० १ ॥

भवइ य इत्थ सिलोगो—

जया य चयई[3] धम्मं अणज्जो भोगकारणा ।
से तत्थ मुच्छिए बाले आयइं नावबुज्झइ ॥ १ ॥

जया ओहाविओ होइ इंदो वा पडिओ छमं ।
सव्वधम्म परिब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥

जया य वंदिमो होइ पच्छा होइ अवंदिमो ।
देवया व चुया ठाणा स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥

जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो ।
राया व रज्जपब्भट्ठो स पच्छा परितप्पइ ॥ ४ ॥

जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अमाणिमो ।
सेट्ठि व्व कब्बडे छूढो स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥

जया य थेरओ होइ समइक्कंतजोव्वणो ।
मच्छो व्व गलं गिलित्ता स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥

'जया य कुकुडंबस्स कुतत्तीहिं विहम्मइ ।
हत्थी व बंधणे बद्धो स पच्छा परितप्पइ ॥ ७ ॥'[4]

१—खलु भो (ख, घ,) ।
२—दुप्परक्कंताणं (ह) ; दुप्परिकंताणं (ज) ।
३—जहइ (अ, ज) ।
४—यह श्लोक हस्तलिखित प्रतियों में है तथा टीका में व्याख्यात है किन्तु चूर्णिद्वय में व्याख्यात नहीं है ।

पुत्तदारपरिकिण्णो मोहसंताणसंतओ ।
पंकोसन्नो जहा नागो स पच्छा परितप्पइ ॥ ८ ॥

'अज्ज आहं'[1] गणी हुंतो भावियप्पा वहुस्सुओ ।
जइ हं रमंतो परियाए सामण्णे जिणदेसिए ॥ ९ ॥

देवलोगसमाणो उ[2] परियाओ महेसिणं ।
रयाणं अरयाणं तु[3] महानिरयसारिसो ॥१०॥

अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं
रयाण परियाए तहारयाणं ।
निरओवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं
रमेज्ज तम्हा परियाय पंडिए ॥११॥

धम्माउ भट्ठं सिरिओ ववेयं[4]
जन्नग्गि विज्झायमिव प्पतेयं ।
हीलंति णं दुव्विहियं कुसीला[5]
दाढुद्धियं[6] घोरविसं व नागं ॥१२॥

इहेवधम्मो अयसो अकित्ती
दुन्नामधेज्जं[7] च पिहुज्जणम्मि ।
चुयस्स धम्माउ अहम्मसेविणो
संभिन्नवित्तस्स य[8] हेट्ठओ गई ॥१३॥

१—अज्जत्तेह (जा)।
२—य (ख)।
३—च (क, ख, ग, घ, ह)।
४—अवेय (क, ग, घ, ह)।
५—कुसील (अ, ज,)।
६—दाढुड्ढिय (क, ज, ह)।
७—° गोत्तं (अ, ज)।
८—उ (क, घ)।

भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा
तहाविहं कट्टु असंजमं बहुं ।
गइं च गच्छे अणभिज्झियं[1] दुहं
बोही य से नो सुलभा पुणो पुणो ॥१४॥

इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो
दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो ।
पलिओवमं झिज्जइ सागरोवमं
किमंग पुण मज्झ इमं मणोदुहं ? ॥१५॥

न मे चिरं दुक्खमिणं भविस्सई
असासया भोगपिवास जंतुणो ।
न चे[2] सरीरेण इमेणवेस्सई
अविस्सई[3] जीवियपज्जवेण मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छिओ[4]
चएज्ज[5] देहं न उ[6] धम्मसासणं ।
तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया
उवेंतवाया[7] व सुदंसणं गिरिं ॥१७॥

१—अणिहिज्झियं (क, ख, ग, घ) ।
२—मे (अ) ।
३—वियस्सई (अ) ।
४—निच्छओ (ख) ।
५—जहेज्ज (अ) ।
६—य (अ, ज) ।
७—उविंति ° (क) ; उवंति ° (ग) ।

इच्चेव संपस्सिय बुद्धिमं नरो
आयं उवायं विविहं वियाणिया ।
काएण वाया अदु माणसेणं
तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिट्ठिज्जासि' ॥१८॥
—त्ति बेमि ॥

*

विवित्तचरिया (विइया चूलिया)

चूलियं तु पवक्खामि सुयं केवलिभासियं ।
जं सुणित्तु सपुन्नाणं[1] धम्मे उप्पज्जए मई ॥ १ ॥

अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि पडिसोयलद्धलक्खेणं ।
पडिसोयमेव अप्पा दायव्वो होउकामेणं ॥ २ ॥

अणुसोयसुहोलोगो
पडिसोओ आसवो[2] सुविहियाणं ।
अणुसोओ संसारो
पडिसोओ तस्स उत्तारो[3] ॥ ३ ॥

तम्हा[4] आयारपरक्कमेण संवरसमाहिबहुलेणं ।
चरिया गुणा य नियमा य होंति साहूण दट्ठव्वा ॥ ४ ॥

अणिएयवासो समुयाणचरिया
अन्नायउंछं पइरिक्कया य ।
अप्पोवही कलहविवज्जणा य[5]
विहारचरिया इसिणं पसत्था ॥ ५ ॥

आइण्णओमाणविवज्जणा य
ओसन्नदिट्ठाहडभत्तपाणे[6] ।
संसट्ठकप्पेण चरेज्ज भिक्खू
तज्जायसंसट्ठ जई जएज्जा ॥ ६ ॥

१—सपुज्जाणं (घ) ; सुपुन्नाणं (ह) ।
२—आसमो (अ, हा) ।
३—निग्घाडो (अ, ज) ।
४—एवं (अ, ज) ।
५—उ (ज) ।
६— ० पाणं (आ) ।

अमज्जमसासि अमच्छरीया
'अभिक्खण निव्विगइ' गया य'[1]।
अभिक्खण काउस्सग्गकारी
सज्झायजोगे पयओ हवेज्जा ॥ ७ ॥

न पडिन्नवेज्जा सयणासणाइ
सेज्ज निसेज्ज तह भत्तपाण।
गामे कुले वा नगरे व देसे
ममत्तभाव[3] न 'कहिं चि'[4] कुज्जा ॥ ८ ॥

गिहिणो वेयावडिय न कुज्जा
अभिवायण वदण पूयण च[5]।
असकिलिट्ठेहिं सम वसेज्जा
मुणी चरित्तस्स जओ न हाणी ॥ ९ ॥

न या लभेज्जा निउण सहाय
गुणाहियं वा गुणओ सम वा।
एक्को वि पावाइ विवज्जयतो
विहरेज्ज[6] कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥

सवच्छर चावि पर पमाण
बीय च वास न तहिं वसेज्जा।
सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू
सुत्तस्स अत्थो जह आणवेइ ॥११॥

१—निव्विगई (अ घ)।
२—अभिक्खणि व्विगियजोगया य (आ जा)।
३—ममत्ति० (अ)।
४—कहि पि (ख)।
५—वा (क ख ग घ ह)।
६—चरेज्ज (अ)।

जो पुव्वरत्तावररत्तकाले
संपिक्खई[1] अप्पगमप्पएणं ।
किं मे कडं ? किं च मे किच्चसेसं ?
किं सक्कणिज्जं न समायरामि ? ॥१२॥

किं मे परो पासइ ? किं व[2] अप्पा ?
किं वाहं[3] 'खलियं न विवज्जयामि'[4] ?
इच्चेव सम्मं अणुपासमाणो
अणागयं नो पडिबंध कुज्जा ॥१३॥

जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं[5]
काएण वाया अदु माणसेणं ।
तत्थेव धीरो पडिसाहरेज्जा
आइन्नओ[6] खिप्पमिव[7] क्खलीणं ॥१४॥

जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स
धिइमओ सप्पुरिसस्स निच्चं ।
तमाहु लोए पडिबुद्धजीवी
सो जीवइ संजमजीविएणं ॥१५॥

१—सारक्खई (अ, ज) ।
२—च (क, ग, घ, ज) ।
३—चाहं (क) ।
४—खलितो वि० (अ) ; खलितं ण वि० (आ) ।
५—दुप्पणीयं (अ, ज) ; दुप्पइत्तं (क) ।
६—आइण्णो (अ) ; आइण्ण (ज) ।
७—खिप्प० (आ, जा) ; खित्त० (अ. जा) ; ओखित्त० (ज) ।

अप्पा[1] खलु सययं रक्खियव्वो
सव्विंदिएहिं सुसमाहिएहिं।
अरक्खिओ जाइपहं[2] उवेइ
सुरक्खिओ सव्वदुहाण मुच्चइ ॥१६॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—अप्पा हु (क ख ग घ)।
२—[illegible] (ग घ)।

पढमं अज्झयणं

विणयसुयं

१—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥

२—आणानिद्देसकरे गुरूणमुववायकारए ।
इंगियागारसंपन्ने से विणीए त्ति वुच्चई ॥

३—आणाऽनिद्देसकरे[1] गुरूणमणुववायकारए ।
पडिणीए असंबुद्धे अविणीए त्ति वुच्चई ॥

४—जहा सुणी पूइकण्णी निक्कसिज्जइ सव्वसो ।
एवं दुस्सीलपडिणीए मुहरी निक्कसिज्जई ॥

५—कणकुण्डगं चइत्ताणं[2] विट्ठं भुंजइ सूयरे ।
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए[3] ॥

६—सुणियाऽभावं साणस्स सूयरस्स नरस्स य ।
विणए ठवेज्ज अप्पाणं इच्छन्तो हियमप्पणो ॥

७—तम्हा विणयमेसेज्जा सीलं 'पडिलभे जओ'[4] ।
बुद्धपुत्त[5] नियागट्ठी न निक्कसिज्जइ कण्हुई ॥

१—आणा अनिद्देसयरे (अ) ।
२—जहित्ताणं (बृ०, चू०) ।
३—मिई (आ) ।
४—पडिलभिज्जओ (ऋ) ; पडिलभेज्जओ (अ) ।
५—बुद्धउत्ते (बृ०) ; बुद्धपुत्ते, बुद्धवुत्ते (बृ० पा०) ।

८–निसन्ते सियाऽमुहरी[1] बुद्धाणं अन्तिए सया ।
अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा निरट्ठाणि उ वज्जए ॥

९–अणुसासिओ न कुप्पेज्जा खंतिं सेविज्ज पण्डिए ।
खुड्डेहिं सह संसग्गिं हासं कीडं च वज्जए ॥

१०–मा य चण्डालियं कासी[2] बहुयं मा य आलवे ।
कालेण य अहिज्जित्ता तओ झाएज्ज एगगो[3] ॥

११–आहच्च चण्डालियं कट्टु न निण्हविज्ज कयाइ वि ।
कडं कडे त्ति भासेज्जा अकडं नो कडे त्ति य ॥

१२–मा 'गलियस्सेव'[4] कसं वयणमिच्छे पुणो पुणो ।
कसं व दट्ठुमाइण्णे पावगं परिवज्जए[5] ॥

१३–अणासवा[6] थूलवया कुसीला
मिउं पि चण्डं पकरेंति सीसा ।
चित्ताणुया लहु दक्खोववेया
पसायए ते हु दुरासयं पि ॥

१४–नापुट्ठो वागरे किंचि पुट्ठो वा नालियं वए ।
कोहं असच्चं कुव्वेज्जा धारेज्जा पियमप्पियं ॥

१५–'अप्पा चेव दमेयव्वो'[7] अप्पा हु खलु दुद्दमो ।
अप्पा दन्तो सुही होइ अस्सिं लोए परत्थ य ॥

१—सियाअमुहरी (अ) ।
२—कुज्जा (उ) ।
३—एक्कओ (अ) ।
४—गलियस्सुव्व (उ, ऋ), गलियस्सेव्व (अ) ।
५—पडिवज्जए (अ, बृ० पा०) ।
६—अणासुणा (बृ० पा०) ।
७—अप्पाणमेव दमए (बृ०, चू०) ।

१६—वरं[1] मे अप्पादन्तो संजमेण तवेण य।
माहं परेहि दम्मन्तो बन्धणेहि वहेहि य॥

१७—पडिणीयं च बुद्धाणं वाया अदुव कम्मुणा।
आवी वा जइ वा रहस्से नेव कुज्जा कयाइ वि॥

१८—न पक्खओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ।
न जुंजे ऊरुणा ऊरुं सयणे नो पडिस्सुणे॥

१९—नेव पल्हत्थियं कुज्जा पक्खपिण्डं व संजए।
पाए पसारिए[2] वावि न चिट्ठे गुरुणन्तिए॥

२०—आयरिएहिं वाहित्तो[3] तुसिणीओ न कयाइ वि।
पसायपेही[4] नियागट्ठी उवचिट्ठे गुरुं सया॥

२१—आलवन्ते लवन्ते वा न निसीएज्ज कयाइ वि।
चइऊणमासणं धीरो जओ जत्तं[5] पडिस्सुणे॥

२२—आसणगओ न पुच्छेज्जा नेव 'सेज्जागओ कया'[6]।
आगम्मुक्कुडुओ सन्तो पुच्छेज्जा पंजलीउडो[7]॥

२३—एवं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्थं च तदुभयं।
पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरेज्ज जहासुयं॥

२४—मुसं परिहरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए।
भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया॥

२५—न लवेज्ज पुट्ठो सावज्जं न निरट्ठं न मम्मयं।
अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्सन्तरेण वा॥

१—वर (अ, उ, म)।
२—पसारे नो (वृ०); पसारिए (वृ० पा०)।
३—वाहित्तो (अ, आ, इ, उ)।
४—पसायट्ठी (वृ० पा०)।
५—जुत्तं (अ, उ)।
६—णिसिज्जागओ कयाइ (चू०)।
७—पंजलीगडे (वृ०); पंजलीउडो (वृ० पा०)।

२६—समरेसु अगारेसु 'सन्धीसु य महापहे'[1] ।
एगो एगित्थिए सद्धिं नेव चिट्ठे न संलवे ॥

२७—जं मे बुद्धाणुसासन्ति सीएण[2] फरुसेण वा ।
मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे ॥

२८—अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं[3] ।
हियं तं मन्नए पण्णो वेसं होइ असाहुणो ॥

२९—हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं ।
वेसं तं होइ मूढाणं खन्तिसोहिकरं[4] पयं ॥

३०—आसणे उवचिट्ठेज्जा 'अणुच्चे अकुए'[5] थिरे ।
अप्पुट्ठाई निरुट्ठाई निसीएज्जप्पकुक्कुए ॥

३१—कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे ।
अकालं च विवज्जित्ता काले कालं समायरे ॥

३२—परिवाडीए न चिट्ठेज्जा भिक्खू दत्तेसणं चरे ।
पडिरूवेण एसित्ता मियं कालेण भक्खए ॥

३३—नाइदूरमणासन्ने[6] नन्नेसिं चक्खुफासओ ।
एगो चिट्ठेज्ज भत्तट्ठा लंघिया तं नइक्कमे[7] ॥

३४—नाइउच्चे व नीए वा नासन्ने नाइदूरओ ।
फासुयं परकडं पिण्ड पडिगाहेज्ज संजए ॥

१—गिहसन्धीसु महापहे (सु), गिहसधिसु अ महापहेसु (वृ०) ।
२—सीतेण (अ), सीलेण (वृ० पा०, चू० पा०) ।
३—पेरणं (वृ०), चोयणा (चू०) ।
४—° सुद्धिकरं (वृ०) ।
५—अणुच्चेऽकुक्कुए (वृ०) ।
६—णाइ दूरे अणासण्णे (चू०) ।
७—न अइक्कमे (अ) ।

३५—अप्पपाणेऽप्पबीयंमि[1] पडिच्छन्नंमि संवुडे।
समयं संजए भुंजे जयं अपरिसाडियं[2] ॥

३६—सुकडे त्ति सुपक्के त्ति सुच्छिन्ने सुहडे मडे।
सुणिट्ठिए सुलट्ठे त्ति सावज्जं वज्जए मुणी ॥

३७—रमए पण्डिए सासं हयं भद्दं व वाहए।
बालं सम्मइ सासन्तो गलियस्सं व वाहए ॥

३८—'खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे'[3]।
कल्लाणमणुसासन्तो[4] पावदिट्ठि त्ति मन्नई ॥

३९—पुत्तो मे भाय नाइ त्ति साहू कल्लाण मन्नई।
पावदिट्ठी उ अप्पाणं सासं 'दासं व'[5] मन्नई ॥

४०—न कोवए आयरियं अप्पाणं पि न कोवए।
बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ॥

४१—आयरियं कुवियं नच्चा पत्तिएण पसायए।
विज्झवेज्ज पंजलिउडो वएज्ज न पुणो त्ति य ॥

४२—धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहायरियं सया।
तमायरन्तो ववहारं[6] गरहं नाभिगच्छई ॥

४३—'मणोगयं वक्कगयं'[7] जाणित्तायरियस्स उ।
तं परिगिज्झ वायाए कम्मुणा उववायए ॥

१—अप्पपाणऽप्पं० (अ, उ, ऋ)।
२—अप्परि० (उ, ऋ, वृ०)।
३—खड्डुयाहिं चवेडाहिं, अक्कोसेहि वहेहि य (वृ०, चू०)। खड्डुया मे चवेडा मे अक्कोसा य वहा य मे (चू० पा०, वृ० पा०)।
४—०सासन्तं (वृ०, चू०)।
५—दासे त्ति (अ, आ, इ, उ, सु)।
६—मेहावी (वृ० पा०)।
७—मणोरुइं वक्करुइं (वृ० पा०, चू० पा०)।

४४—वित्ते अचोइए निच्चं[1] 'खिप्पं हवइ सुचोइए'[2]।
जहोवइट्ठं सुकयं किच्चाइं कुव्वई सया ॥
४५—नच्चा नमइ मेहावी लोए 'कित्ती से'[3] जायए।
हवई किच्चाणं सरणं भूयाणं जगई जहा ॥
४६—पुज्जा जस्स पसीयन्ति संबुद्धा पुव्वसंथुया।
पसन्ना[4] लाभइस्सन्ति विउलं अट्ठियं सुयं ॥
४७—स पुज्जसत्थे सुविणीयससए
'मणोरुई[5] चिट्ठइ कम्मसंपया।'[6]
तवोसमायारिसमाहिसंवुडे
महज्जुई पंचवयाइं पालिया ॥
४८—स देवगन्धव्वमणुस्सपूइए
चइत्तु देहं मलपंकपुव्वयं।
सिद्धे वा हवइ सासए
देवे वा अप्परए महिड्ढिए ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—खिप्पं (वृ० पा०, चू० पा०)।
२—पसन्ने थामवं करे (वृ० पा०, चू० पा०)।
३—कित्तीय (अ, उ, ऋ), कित्ती सि (ऋ)।
४—संपन्ना (वृ० पा०)।
५—मणोरुइ (वृ० पा०)।
६—मणोरुइं चिट्ठइ कम्मसंपयं (वृ० पा०), मणिच्छियं संपयमुत्तमं गया (नागार्जुनीया)।

बीयं अज्झयणं

परीसहपविभत्ती

सू० १—सुयं मे, आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—

इह खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महावीरेणं क पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अ भिक्खायरियाए[1] परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा[2] ।

सू० २—कयरे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भ महावीरेणं कासवेणं पवेइया जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, अभिभूय, भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा ?

सू० ३—इमे ते खलु बावीसं परीसहा समणेणं भगवया महा कासवेणं पवेइया, जे भिक्खू सोच्चा, नच्चा, जिच्चा, अ भिक्खायरियाए परिव्वयन्तो पुट्ठो नो विहन्नेज्जा, तं जहा—

१. दिगिंछापरीसहे, २. पिवासापरीसहे, ३. सीयपर ४. उसिणपरीसहे, ५. दंसमसयपरीसहे, ६. अचेलपरीसहे, ७. परीसहे, ८. इत्थीपरीसहे, ९. चरियापरीसहे, १०. निसी परीसहे, ११. सेज्जापरीसहे, १२. अक्कोसपरीसहे,[3] १३. वहपर १४. जायणापरीसहे, १५. अलाभपरीसहे, १६. रोगपर १७. तणफासपरीसहे, १८. जल्लपरीसहे, १९. सक्कारपुरक्कारपर २०. पन्नापरीसहे, २१. अन्नाणपरीसहे, २२. दंसणपरीसहे ।

१—परीसहाणं पविभत्ती कासवेणं पवेइया ।
तं भे उदाहरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥

१—भिक्खुचरियाए (वृ०) ; भिक्खायरियाए (वृ० पा०) ।
२—विनिहन्नेज्जा (वृ०) ।
३—उक्कोस ० (अ, ऋ) ।

(१) दिगिछापरीसहे

२—दिगिंछापरिगए[1] देहे तवस्सी भिक्खु थामवं।
न छिन्दे न छिन्दावए न पए न पयावए॥

३—कालीपव्वंगसंकासे किसे धमणिसंतए।
मायन्ने असणपाणस्स अदीणमणसो चरे॥

(२) पिवासापरीसहे

४—तओ पुट्ठो पिवासाए दोगुंछी लज्जसंजए[2]।
सीओदगं न सेविज्जा वियडस्सेसणं चरे॥

५—छिन्नावाएसु पन्थेसु आउरे सुपिवासिए[3]।
परिसुक्कमुहेऽदीणे[4] 'तं तितिक्खे परीसहं'[5]॥

(३) सीयपरीसहे

६—चरन्तं विरयं लूहं सीयं फुसइ एगया।
'नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं'[6]॥

७—न मे निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जई।
अहं तु अग्गिं सेवामि इइ भिक्खू न चिन्तए॥

(४) उसिणपरीसहे

८—उसिणपरियावेणं परिदाहेण तज्जिए।
घिंसु वा परियावेण सायं नो परिदेवए॥

१—°परियावेण (वृ०); °परितावेण (चू०); °परिगते (वृ० पा०)।
२—लद्धसंजमे (वृ० चू०); लज्जासंजए, लज्जसंजमे (वृ० पा०); लज्जसंजते (चू० पा०)।
३—सुप्पिवासिए (अ); सुपिवासए (ऋ)।
४—°मुहद्दीणे (अ, सु), °मुहोदीणे (ऋ)।
५—सव्वतो य परिव्वए (वृ० पा०)।
६—नाइवेलं विहन्निज्जा पावदिट्ठी विहन्नइ (चू०, वृ०); नाइवेलं मुणी गच्छे सोच्चाणं जिणसासणं (चू० पा०, वृ० पा०)।

९—उण्हाहितत्ते मेहावी सिणाणं 'नो वि पत्थए'[1]।
गायं नो परिसिंचेज्जा[2] न वीएज्जा य अप्पयं ॥

(५) दंसमसयपरीसहे

१०—पुट्ठो य दंसमसएहिं समरेव[3] महामुणी।
नागो संगामसीसे वा सूरो अभिहणे परं ॥
११—न संतसे न वारेज्जा मणं पि न पओसए।
उवेहे[4] न हणे पाणे भुंजन्ते मंससोणियं ॥

(६) अचेलपरीसहे

१२—परिजुण्णेहि वत्थेहिं होक्खामि त्ति अचेलए।
अदुवा सचेलए होक्खं इइ भिक्खू न चिन्तए ॥
१३—'एगयाऽचेलए होइ'[5] सचेले यावि एगया।
एयं धम्महियं नच्चा नाणी नो परिदेवए ॥

(७) अरइपरीसहे

१४—गामाणुगामं रीयन्तं अणगारं अकिंचणं।
अरई अणुप्पविसे तं तितिक्खे परीसहं ॥
१५—अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए।
धम्मारामे निरारम्भे उवसन्ते मुणी चरे ॥

(८) इत्थीपरीसहे

१६—संगो एस मणुस्साणं जाओ लोगंमि इत्थिओ।
जस्स एया परिन्नाया सुकडं[6] तस्स सामण्णं ॥

१—नाभिपत्थए (चू०, बृ०); णोऽवि पत्थए (बृ० पा०)।
२—परिसेविज्जा (उ, ऋ)।
३—सम्र एव (अ)।
४—उवेह (उ, चू०, ऋ)।
५—एगता अचेलगो भवति (चू०); अचेलए सयं होइ (बृ० पा०, चू० पा०)।
६—सुकरं (बृ० पा०)।

१७—एवमादाय[1] मेहावी 'पकभूया उ इत्थिओ'[2]।
नो ताहिं विणिहन्नेज्जा[3] चरेज्जत्तगवेसए ॥

(९) चरियापरीसहे

१८—एग एव[4] चरे लाढे अभिभूय परीसहे।
गामे वा नगरे वावि निगमे वा रायहाणिए ॥

१९—असमाणो चरे भिक्खू नेव[5] कुज्जा परिग्गह।
असंसत्तो गिहत्थेहिं अणिएओ परिव्वए ॥

(१०) निसीहियापरीसहे

२०—सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एगओ।
अकुक्कुओ निसीएज्जा न य वित्तासए पर ॥

२१—तत्थ से चिट्ठमाणस्स[6] 'उवसग्गाभिधारए'[7]।
सकाभीओ न गच्छेज्जा उट्ठित्ता[8] अन्नमासण ॥

(११) सेज्जापरीसहे

२२—उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खु थामव।
नाइवेल विहन्नेज्जा पावदिट्ठी विहन्नई ॥

२३—पइरिक्कुवस्सय लद्धु कल्लाण अदु पावग।
'किमेगराय करिस्सइ'[9] एव तत्थऽहियासए ॥

१—एवमाणाय (चू०, वृ०), एवमादाय (चू० पा०, वृ० पा०)।
२—जहा एया लहुस्सगा (चू० पा०, वृ० पा०)।
३—विहन्नेज्जा (अ सु)।
४—एगो (चू० पा०), एगे (वृ० पा०)।
५—नेय (अ)।
६—अच्छमाणस्स (वृ० पा० चू०)।
७—उवसग्गभय भवे (वृ० पा० चू० पा०)।
८—उवट्ठित्ता (उ)।
९—किं मज्झ एग रायाए (चू०)।

(१२) अक्कोसपरीसहे

२४—अक्कोसेज्ज परो भिक्खुं न तेसिं पडिसंजले ।
सरिसो होइ बालाणं तम्हा भिक्खू न संजले ॥

२५—सोच्चाणं फरुसा भासा दारुणा गामकण्टगा ।
तुसिणीओ उवेहेज्जा न ताओ मणसीकरे ॥

(१३) वहपरीसहे

२६—हओ न संजले भिक्खू मणं पि न पओसए ।
तितिक्खं परमं नच्चा 'भिक्खुधम्मं विचिंतए'[1] ॥

२७—समणं संजयं दन्तं हणेज्जा कोइ कत्थई ।
नत्थि जीवस्स नासु त्ति 'एवं पेहेज्ज संजए'[2] ॥

(१४) जायणापरीसहे

२८—दुक्करं खलु भो निच्चं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वं से जाइयं होइ नत्थि किंचि अजाइयं ॥

२९—गोयरग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए ।
सेओ अगारवासु त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

(१५) अलाभपरीसहे

३०—परेसु घासमेसेज्जा भोयणे परिणिट्ठिए ।
लद्धे पिण्डे अलद्धे वा नाणुतप्पेज्ज संजए[3] ॥

३१—अज्जेवाहं न लब्भामि अवि लाभो सुए सिया ।
जो एवं पडिसंविक्खे[4] अलाभो तं न तज्जए ॥

१—°धम्मंमि चिंतए (वृ०) ; °धम्मं व चिंतए (वृ० पा०) ।
२—ग तं पेहे असाहुवं (वृ०) ; न ता पेहे असाधुवं (चू०) ; एवं पीहेज्ज संजए (चू० पा०) ; न य पेहे असाधुयं, पठन्ति च—एवं पेहिज्ज संजतो (वृ० पा०) ।
३—पंडिए (अ) ।
४—पडिसंचिक्खे (सु) ।

(१६) रोगपरीसह

३२—नच्चा उप्पइय दुक्ख वेयणाए दुहट्टिए ।
अदीणो थावए पन्न पुट्ठो तत्थहियासए ॥

३३—तेगिच्छ नाभिनन्देज्जा सचिक्खत्तगवेसए ।
एव[1] खु तस्स सामण्ण ज न कुज्जा न कारवे ॥

(१७) तणफासपरीसहे

३४—अचेलगस्स लूहस्स सजयस्स तवस्सिणो ।
तणेसु सयमाणस्स हुज्जा गायविराहणा ॥

३५—आयवस्स निवाएण अउला[2] हवइ वेयणा ।
एव[3] नच्चा न सेवन्ति तन्तुज[4] तणतज्जिया ॥

(१८) जल्लपरीसहे

३६—किलिन्नगाए[5] मेहावी पकेण व रएण वा ।
घिंसु वा परितावेण साय नो परिदेवए ॥

३७—वेएज्ज[6] निज्जरापेही आरिय धम्मऽणुत्तर[7] ।
जाव सरीरभेउ त्ति जल्ल काएण धारए[8] ।

(१९) सक्कारपुरक्कारपरीसहे

३८—अभिवायणमब्भुट्ठाण सामी कुज्जा निमन्तण ।
ज ताइ पडिसवन्ति न तेसिं पीहए मुणी ॥

१—एयं (अ उ ऋ वृ०) एव (वृ० पा०) ।
२—तिउला (चू० वृ०) अतुला विपुला वा (वृ० पा०) ।
३—एयं (अ उ ऋ वृ०) एव (वृ० पा०) ।
४—तन्तय (चू० पा० वृ० पा०)।
५—किलिट्ठगाए (चू० पा० वृ० पा०)
६—वेयज्ज (अ) वेइ त्तो वेइज्ज वेयंतो (वृ० पा०) ।
७—आयरियं धम्मपणुत्तर (स०) आरियं धम्ममणुत्तरं (अ) ।
८—उव्वटे (चू० वृ० पा०) धारए (चू० पा०) ।

३९—अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए ।
'रसेसु'[1] नाणुगिज्झेज्जा'[2] 'नाणुतप्पेज्ज पन्नवं'[3] ॥

(२०) पन्नापरीसहे

४०—से नूणं मए पुव्वं कम्माणाणफला कडा ।
जेणाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

४१—अह पच्छा उइज्जन्ति कम्माणाणफला कडा ।
एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ॥

(२१) अन्नाणपरीसहे

४२—निरट्ठगम्मि विरओ मेहुणाओ सुसंवुडो ।
जो सक्खं[4] नाभिजाणामि धम्मं कल्लाण पावगं ॥

४३—तवोवहाणमादाय पडिमं पडिवज्जओ[5] ।
एवं पि विहरओ मे छउमं न नियट्टई ॥

(२२) दंसणपरीसहे

४४—नत्थि नूणं परे लोए इड्ढी वावि तवस्सिणो ।
अदुवा वंचिओ मि त्ति इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४५—अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्सई ।
मुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिन्तए ॥

४६—एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया ।
जे भिक्खू न विहन्नेज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सरसेसु० (वृ०) ।
२—रसिएसु णातिगिज्झेज्जा (चू०) ; रसेसु नाणु० (वृ० पा०, चू० पा०) ।
३—न तेसिं पीहए मुणी (चू०, वृ०) ; नाणुतप्पेज्ज पण्णवं (वृ० पा०, चू० पा०) ।
४—सम्मक्खं (चू०) ।
५—पडिवज्जिअ (वृ०) ; पडिवज्जओ (वृ० पा०) ।

तइयं अज्झयणं

चाउरंगिज्जं

१—चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो[1] ।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं ॥

२—समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु ।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो[2] विस्संभिया पया ॥

३—एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया ।
एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहिं गच्छई ॥

४—एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्कसो ।
तओ कीडपयंगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥

५—एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा ।
न निविज्जन्ति संसारे 'सव्वट्ठेसु व[3]'[4] खत्तिया ॥

६—कम्मसंगेहिं सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा ।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणो ॥

७—कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता 'आययन्ति मणुस्सयं'[5] ॥

८—माणुस्सं विग्गहं लद्धु सुई धम्मस्स दुल्लहा ।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तवं खन्तिमहिंसयं ॥

१—देहिणो (वृ० पा०, चू०) ।
२—पुणो (चू० पा०) ।
३—य (अ), वि (ऋ) ।
४—सव्वट्ठ इव (वृ० पा०, चू० पा०) ।
५—जायन्ते मणुसत्तयं (वृ० पा०) ।

९—आहच्च सवणं लद्धुं सद्धा परमदुल्लहा ।
सोच्चा नेआउयं मग्गं बहवे परिभस्सई ॥

१०—सुइं च लद्धुं सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं ।
बहवे रोयमाणा वि 'नो एणं'[1] पडिवज्जए ॥

११—माणुसत्तंमि आयाओ जो धम्मं सोच्च सद्दहे ।
तवस्सी वीरियं लद्धुं संवुडे निद्धुणे रयं ॥

१२—"सोही उज्जुयभूयस्स धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ।
निव्वाणं परमं जाइ 'घयसित्त व्व'[2] पावए ॥"[3]

१३—विगिंच[4] कम्मुणो[5] हेउं जसं संचिणु खन्तिए ।
पाढवं सरीरं हिच्चा उड्ढं पक्कमई दिसं ॥

१४—विसालिसेहिं सीलेहिं जक्खा उत्तरउत्तरा ।
महासुक्का व दिप्पन्ता मन्नन्ता अपुणच्चवं ॥

१५—अप्पिया देवकामाणं कामरूवविउव्विणो ।
उड्ढं कप्पेसु चिट्ठन्ति पुव्वा वाससया बहू ॥

१६—तत्थ ठिच्चा जहाठाणं जक्खा आउक्खए चुया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं से दसंगेऽभिजायई ॥

१७—खेत्तं वत्थुं हिरण्णं च पसवो दासपोरुसं ।
चत्तारि कामखन्धाणि तत्थ से उववज्जई ॥

१—नो य णं (स, सु, वृ०) ।
२—घयसत्तिव्व (उ) ; घयसित्तिव्व (ऋ, सु,) ; घयसित्ते व (वृ०) ।
३—चउद्धा संपयं लद्धुं इहेव ताव भायते ।
तेयते तेजसंपन्ने घयसित्ते व पावए ॥ (नागार्जुनीयाः) ।
४—विकिंचि (अ, आ) ; विकिंच (चू०) ; विगिंच (चू० पा०) ।
५—कम्मणो (उ, ऋ) ।

तइयं अज्झयणं

चाउरंगिज्जं

१–चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणीह जन्तुणो[1]।
माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं ॥

२–समावन्नाण संसारे नाणागोत्तासु जाइसु।
कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो[2] विस्संभिया पया ॥

३–एगया देवलोएसु नरएसु वि एगया।
एगया आसुरं कायं आहाकम्मेहिं गच्छई ॥

४–एगया खत्तिओ होइ तओ चण्डालवोक्सो।
तओ कीडपयंगो य तओ कुन्थुपिवीलिया ॥

५–एवमावट्टजोणीसु पाणिणो कम्मकिब्बिसा।
न निविज्जन्ति संसारे सव्वट्ठेसु व[3] [4] खत्तिया ॥

६–कम्मसंगेहिं सम्मूढा दुक्खिया बहुवेयणा।
अमाणुसासु जोणीसु विणिहम्मन्ति पाणिणा ॥

७–कम्माणं तु पहाणाए आणुपुव्वी कयाइ उ।
जीवा सोहिमणुप्पत्ता [5]आययन्ति मणुस्सयं ॥

८–माणुस्सं विग्गहं लद्धुं सुई धम्मस्स दुल्लहा।
जं सोच्चा पडिवज्जन्ति तवं खन्तिमहिंसयं ॥

१—देहिणो (वृ० पा० चू०)।
२—पुणो (चू० पा०)।
३—य (अ) वि (ऋ)।
४—सव्वट्ठ इव (वृ० पा० चू० पा०)।
५—जायन्ते मणुसत्तयं (वृ० पा०)।

चउत्थं अज्झयणं

असंखयं

१—असंखयं जीविय मा पमायए
जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ।
एवं[1] वियाणाहि जणे पमत्ते
कण्णू विहिंसा अजया गहिन्ति ॥

२—जे पावकम्मेहि धणं मणूसा
समाययन्ती अमइं[2] गहाय ।
पहाय ते 'पास पयट्टिए'[3] नरे
वेराणुबद्धा नरयं उवेन्ति ॥

३—तेणे जहा सन्धिमुहे गहीए
सकम्मुणा किच्चइ पावकारी ।
एवं पया पेच्च[4] इहं च[5] लोए
'कडाण कम्माण न मोक्ख[6] अत्थि'[7] ॥

४—संसारमावन्न परस्स अट्ठा
साहारणं जं च करेइ कम्मं ।
कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले
न बन्धवा बन्धवयं उवेन्ति ॥

१—एणं (वृ० पा०) ।
२—अमयं (वृ० पा०, चू० पा०) ।
३—पासपयट्ठिए (ऋ) ; पासपइट्ठिए (उ) ।
४—पेच्छ (वृ०) ; पेञ्च (वृ० पा०) ।
५—पि (चू०, वृ० पा०) ।
६—मोक्खो (वृ०, चू०) ।
७—ण कम्मुणो पीहाति तो कयाती (वृ० पा०, चू० पा०) ।

१८—मित्तवं नायवं[1] होइ उच्चागोए य वण्णवं।
अप्पायंके महापन्ने अभिजाए जसोबले॥
१९—भोच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउयं।
पुव्वं विसुद्धसद्धम्मे केवलं बोहिं बुज्झिया॥
२०—चउरंगं दुल्लहं मत्ता[2] संजमं पडिवज्जिया।
तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे हवइ सासए॥
—त्ति बेमि॥

•

१—नाइव्व (अ); नाइव (उ)।
२—नच्चा (उ)।

११—मुहुं मुहुं मोहगुणे जयन्तं
अणेगरूवा समणं चरन्तं ।
फासा फुसन्ती असमंजसं च
न तेसु भिक्खू मणसा पउस्से ॥

१२—'मन्दा य फासा बहुलोहणिज्जा'[1]
तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ।
रक्खेज्ज कोहं विणएज्ज माणं
मायं न सेवे पयहेज्ज लोहं ॥

१३—जे संखया तुच्छ परप्पवाई
ते पिज्जदोसाणुगया परज्झा ।
एए 'अहम्मे'त्ति दुगुंछमाणो
कंखे गुणे जाव सरीरभेओ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—मंदाउ तहा हियस्स बहुलोभणेज्जा (चू० पा०) ।

५—वित्तेण ताण न लभे पमत्ते
इमंमि लोए अदुवा परत्था ।
दीवप्पणट्ठे व अणन्तमोहे
नेयाउय दट्ठुमदट्ठुमेव ॥

६—सुत्तेसु यावी पडिबुद्धजीवी
न वीससे पण्डिए आसुपन्ने ।
घोरा मुहुत्ता अबल सरीर
भारुण्डपक्खी व चरप्पमत्तो ॥

७—चरे पयाइ परिसकमाणो
ज किंचि पास इह मण्णमाणो ।
लाभन्तरे जीविय वूहइत्ता
पच्छा परिन्नाय मलावधसी ॥

८—छन्द निरोहेण उवेइ मोक्ख
आसे जहा सिक्खियवम्मधारी ।
पुव्वाइ वासाइ चरप्पमत्तो
तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मोक्ख ॥

९—स पुव्वमेव न लभेज्ज पच्छा
एसोवमा सासयवाइयाण ।
विसीयई सिढिले आउयमि[1]
कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥

१०—खिप्प न सक्केइ विवेगमेउ
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे ।
समिच्च लोय समया महेसी
अप्पाणरक्खी चरमप्पमत्तो[2] ॥

१—आउंपि (उ) ।
२—व चरप्पमत्तो (ऋ) चरप्पमत्तो (उ) ।

९—हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे।
भुंजमाणे सुरं मंसं सेयमेयं ति मन्नई॥
१०—कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु।
दुहओ मलं संचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं॥
११—तओ पुट्ठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई।
पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो॥
१२—सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई।
बालाणं कूरकम्माणं पगाढा जत्थ वेयणा॥
१३—तत्थोववाइयं ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं।
आहाकम्मेहिं गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई॥
१४—जहा सागडिओ जाणं समं हिच्चा महापहं।
विसमं मग्गमोइण्णो[1] 'अक्खे भग्गंमि'[2] सोयई॥
१५—एवं धम्मं विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जिया।
बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई॥
१६—तओ से मरणन्तंमि बाले सन्तस्सई[3] भया।
अकाममरणं मरई धुत्ते व कलिना जिए॥
१७—एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं।
एत्तो सकाममरणं पण्डियाणं सुणेह मे॥
१८—मरणं पि सपुण्णाणं[4] जहा मेयमणुस्सुयं।
विप्पसण्णमणाघायं[5] संजयाण वुसीमओ॥

१—मग्गमोगाढा (चू०) ; मग्गमोगाढो (वृ० पा०)।
२—अक्खभग्गंमि (वृ०) ; अक्खस्स भग्गे (चू०) ; अक्खे भग्गंमि (वृ० पा०)।
३—संतसई (चू०)।
४—सुपुण्णाणं (अ)।
५—सुपसन्नेहिं अक्खायं (वृ० पा०, चू०) ; सुप्पसन्नमणक्खायं (वृ०) ;
विप्पसण्णमणाघायं (चू० पा०)।

पञ्चम अज्झयण

अकाममरणिज्जं

१—अण्णवंसि महाहसि[1] एगे तिण्णे[2] दुरुत्तर ।
तत्थ एगे महापन्ने इम पट्ठमुदाहरे[3] ॥

२—सन्तिमे य[4] दुवे ठाणा अक्खाया मारणन्तिया ।
अकाममरण चेव सकाममरणं तहा ॥

३—बालाण[5] अकाम तु मरण असइ भवे ।
पण्डियाण सकाम तु उक्कोसेण सइ भवे ॥

४—तत्थिम पढम ठाण महावीरेण देसिय ।
कामगिद्ध जहा बाले भिस कूराइ कुव्वई ॥

५—जे गिद्धे कामभोगेसु एगे कूडाय गच्छई ।
न मे दिट्ठे परे लोए चक्खुदिट्ठा इमा रई ॥

६—हत्थागया इमे कामा
कालिया ज अणागया ।
को जाणइ परे लोए
अत्थि वा नत्थि वा पुणो ? ॥

७—जणेण सद्धि होक्खामि इइ बाले पगब्भई ।
कामभोगाणुराएण केस सपडिवज्जई ॥

८—तओ से दण्ड समारभई तसेसु थावरेसु य ।
अट्ठाए य अणट्ठाए भूयग्गाम विहिंसई ॥

१—महोघसि (वृ० पा०) ।
२—तरइ (वृ० चू०) तिण्णे (वृ० पा०) ।
३—पण्हमुदाहरे (वृ० पा० चू० पा० सु) ।
४—खलु (चू०) ए (वृ०) ।
५—बालाण य (क्र) ।

९—हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं सेयमेयं ति मन्नई ॥

१०—कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु ।
दुहओ मलं संचिणइ सिसुणागु व्व मट्टियं ॥

११—तओ पुट्ठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई ।
पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पेहि अप्पणो ॥

१२—सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई ।
बालाणं कूरकम्माणं पगाढा जत्थ वेयणा ॥

१३—तत्थोववाइयं ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं ।
आहाकम्मेहिं गच्छन्तो सो पच्छा परितप्पई ॥

१४—जहा सागडिओ जाणं समं हिच्चा महापहं ।
विसमं मग्गमोइण्णो[1] 'अक्खे भग्गंमि'[2] सोयई ॥

१५—एवं धम्मं विउक्कम्म अहम्मं पडिवज्जिया ।
बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गे व सोयई ॥

१६—तओ से मरणन्तंमि बाले सन्तस्सई[3] भया ।
अकाममरणं मरई धुत्ते व कलिना जिए ॥

१७—एयं अकाममरणं बालाणं तु पवेइयं ।
एत्तो सकाममरणं पण्डियाणं सुणेह मे ॥

१८—मरणं पि सपुण्णाणं[4] जहा मेयमणुस्सुयं ।
विप्पसण्णमणाघायं[5] संजयाण वुसीमओ ॥

१—मग्गमोगाढा (चू०) ; मग्गमोगाढो (वृ० पा०) ।
२—अक्खभग्गंमि (वृ०) ; अक्खस्स भग्गे (चू०) ; अक्खे भग्गंमि (वृ० पा०) ।
३—संतसई (चू०) ।
४—सुपुण्णाणं (अ) ।
५—सुपसन्नेहिं अक्खायं (वृ० पा०, चू०) ; सुप्पसन्नमणक्खायं (वृ०) ;
विप्पसण्णमणाघायं (चू० पा०) ।

१९—न इम 'सव्वेसु भिक्खूसु'[1]
न इम सव्वेसुऽगारिसु ।
नाणासीला अगारत्था
विसमसीला य भिक्खुणो ॥

२०—सन्ति एगेहिं भिक्खूहिं गारत्था सजमुत्तरा ।
गारत्थेहि य सव्वेहिं साहवो सजमुत्तरा ॥

२१—चीराजिण नगिणिण[2] जडीसंघाडिमुण्डिण ।
एयाणि वि न तायन्ति दुस्सील परियागय ॥

२२—पिण्डोलए व[3] दुस्सीले नरगाओ न मुच्चई ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा सुव्वए कम्मई दिव ॥

२३—अगारिसामाइयगाइ सड्ढी काएण फासए ।
पोसह दुहओ पक्ख एगराय न हावए ॥

२४—एव सिक्खासमावन्ने गिहवासे[4] वि सुव्वए ।
मुच्चई छविपव्वाओ गच्छे जक्खसलोगय ॥

२५—अह ज सवुडे भिक्खू दोण्ह अन्नयरे[5] सिया ।
सव्वदुक्खप्पहीणे वा देवे वावि महड्डिए ॥

२६—उत्तराइ विमोहाइ जुइमन्ताणुपुव्वसो ।
समाइण्णाइ जक्खेहिं आवासाइ जससिणो ॥

२७—दीहाउया इड्ढिमन्ता समिद्धा कामरूविणो ।
अहुणोववन्नसकासा भुज्जो अच्चिमालिप्पभा ॥

१—सव्वेसिं भिक्खूण (चू०) ।
२—णिगिणिग (वृ०) णियण (चू०) ।
३—वि० (अ चू०) ।
४—गिहिवासे (उ) ।
५—एगयरे (चू०) ।

२८—ताणि ठाणाणि गच्छन्ति सिक्खित्ता संजमं तवं ।
भिक्खाए वा गिहत्थे वा जे सन्ति परिनिव्वुडा ॥

२९—तेसिं सोच्चा सपुज्जाणं[1] संजयाण वुसीमओ ।
न संतसन्ति मरणन्ते सीलवन्ता बहुस्सुया ॥

३०—तुलिया विसेसमादाय दयाधम्मस्स खन्तिए ।
विप्पसीएज्ज मेहावी तहाभूएण अप्पणा ॥

३१—तओ काले अभिप्पेए सड्ढी तालिसमन्तिए ।
विणएज्ज लोमहरिसं भेयं देहस्स कंखए ॥

३२—अह कालंमि संपत्ते 'आघायाय समुस्सयं ।'[2]
सकाममरणं मरई तिण्हमन्नयरं मुणी ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—सुपुज्जाणं (चू०) ।

२—सुतक्खात समाहितो (चू०) ; आघायाए समुच्छयं (चू० पा०) ।

छट्ठमज्झयण

खुड्डागनियंठिज्जं

१—जावन्तऽविज्जापुरिसा सव्वे ते दुक्खसभवा[1]।
लुप्पन्ति बहुसो मूढा ससारंमि अणन्तए॥

२—समिक्ख पडिए तम्हा[2] पासजाईपहे बहू।
अप्पणा[3] सच्चमेसेज्जा मेत्ति भूएसु[4] कप्पए॥

३—माया पिया ण्हुसा भाया भज्जा पुत्ता य ओरसा।
नाल ते मम ताणाय लुप्पन्तस्स सकम्मुणा॥

४—एयमट्ठ सपेहाए पासे समियदसणे।
छिन्द गेहिं सिणह च न कखे पुव्वसथव॥

५—गवास मणिकुडल पसवो दासपोरुस।
सव्वमेय चइत्ताण कामरूवी भविस्ससि॥

[थावर जगम चेव धण धण्ण उवक्खर।
पचमाणस्स कम्मेहिं नाल दुक्खाउ मोयणे॥][6]

६—अज्झत्थ सव्वओ सव्व दिस्स पाणे पियायए।
न हण पाणिणो पाण[7] भयवेराओ उवरए॥

७—आयाण नरय दिस्स नायएज्ज तणामवि।
दोगुछी अप्पणो पाए दिन्न भुजज्ज भोयण॥

१—नै सव्वे दुक्खन ज्जया (न ग जुनीया)

२—तम्हा समिक्ख मेहावी (चू० वृ० पा०) समिक्ख पडिए तम्हा (चू० पा०)।

३—अत्तट्ठा (वृ० पा०)।

४—भूएहिं (चू०)।

५—गोह (उ)।

६—यह श्लोक चुर्णि व टीका में व्याख्यात नहीं है।

७—नो हिंसेज्ज पाणिणं पाणे (चू०) नो हणे पाणिण पाणे (वृ० पा०)।

८—दोगछी (ऋ)।

९—अप्पणो पाणिपाते (चू० पा०)।

८—इहमेगे उ मन्नन्ति अप्पच्चक्खाय पावगं ।
आयरियं[1] विदित्ताणं सव्वदुक्खा विमुच्चई ॥

९—भणन्ता अकरेन्ता य बन्धमोक्खपइण्णिणो ।
वायाविरियमेत्तेण समासासेन्ति अप्पयं ॥

१०—न चित्ता तायए भासा कओ विज्जाणुसासणं ? ।
विसन्ना पावकम्मेहिं[2] बाला पंडियमाणिणो ॥

११—जे केइ सरीरे सत्ता वण्णे रूवे य सव्वसो ।
'मणसा कायवक्केणं'[3] सव्वे ते दुक्खसंभवा ॥

१२—आवन्ना दीहमद्धाणं संसारंमि अणंतए ।
तम्हा सव्वदिसं पस्स अप्पमत्तो परिव्वए ॥

१३—बहिया उड्ढमादाय नावकंखे कयाइ वि ।
पुव्वकम्मक्खयट्ठाए इमं देहं समुद्धरे ॥

१४—विविच्च[4] कम्मुणो हेउं कालकंखी परिव्वए ।
मायं पिंडस्स पाणस्स कडं लद्धूण भक्खए ॥

१५—सन्निहिं च न कुव्वेज्जा लेवमायाए संजए ।
पक्खी पत्तं समादाय निरवेक्खो[5] परिव्वए ॥

१६—एसणासमिओ लज्जू गामे अणियओ चरे ।
अप्पमत्तो पमत्तेहि पिंडवायं गवेसए ॥

१—आयारियं (वृ० पा०, उ, सु) ।
२—पावकिच्चेहिं (वृ० पा०) ।
३—मणसा वयसा चेव (चू०, वृ०) ; मणसा कायवक्केणं (वृ० पा०) ।
४—विगिंच (अ, आ, इ, उ, वृ० पा०) ।
५—निरवेक्खी (चू०) ।

१७-'एव से उदाहु, अणुत्तरनाणी
अणुत्तरदसी अणुत्तरनाणदसणधरे।
अरहा नायपुत्ते
भगव वेसालिए वियाहिए ॥''
—त्ति बेमि।'

*

१—एवं से उदाहु अरहा पासे पुरिसादाणिए।
भगवंते वेसालिए बुद्धे परिनिव्वुडे ॥ (बृ० पा० चू० पा०)

सत्तमं अज्झयणं

उरब्भिज्जं

१—जहाएसं समुद्दिस्स कोइ पोसेज्ज एलयं।
ओयणं 'जवसं देज्जा'[1] पोसेज्जा 'वि सयंगणे'[2] ॥
२—तओ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे।
पीणिए विउले देहे आएसं परिकंखए[3] ॥
३—जाव न एइ[4] आएसे ताव जीवइ से दुही।
अह पत्तंमि आएसे सीसं छेत्तूण भुज्जई ॥
४—जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए।
एवं बाले अहम्मिट्ठे ईहई नरयाउयं ॥
५—हिंसे बाले[5] मुसावाई अद्धाणंमि विलोवए।
अन्नदत्तहरे तेणे[6] माई कण्हुहरे[7] सढे ॥
६—इत्थीविसयगिद्धे य महारंभपरिग्गहे ।
भुंजमाणे सुरं मंसं परिवूढे परंदमे ॥
७—अयकक्करभोई य तुंदिल्ले चियलोहिए[8] ।
आउयं नरए कंखे जहाएसं व एलए ॥
८—आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया।
दुस्साहडं धणं हिच्चा बहुं संचिणिया रयं ॥

१—जवसे देति (चू०)।
२—विसयंगणे (वृ० पा०, चू०)।
३—पडि० (वृ०) ; परि० (वृ० पा०)।
४—एज्जति (चू०)।
५—कोही (वृ० पा०)।
६—बाले (वृ०) ; तेणे (वृ० पा०)।
७—किन्नुहरे (चू०) ; कन्नुहरे (सु)।
८—०सोणिए (उ, ऋ)।

९—तओ कम्मगुरू जन्तू पच्चुप्पन्नपरायणे[1] ।
अय व्व आगयाएसे मरणन्तमि सोयई ॥

१०—तओ आउपरिक्खीणे 'चुया देहा'[2] विहिंसगा[3] ।
आसुरिय दिस बाला[4] 'गच्छन्ति अवसा'[5] तम ॥

११—जहा कागिणिए हेउ सहस्स हारए नरो ।
अपत्थ अम्बग भोच्चा राया रज्ज तु हारए ॥

१२—एव माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ।
सहस्सगुणिया भुज्जो आउ कामा य[6] दिव्विया ॥

१३—अणेगवासानउया जा सा पन्नवओ ठिई ।
जाणि जीयन्ति[7] दुम्मेहा ऊणे वाससयाउए ॥

१४—जहा य तिन्नि वणिया मूल घेत्तूण निग्गया ।
एगोऽत्थ लहई लाह एगो मूलेण आगओ ॥

१५—एगो मूल पि हारित्ता आगओ तत्थ वाणिओ ।
ववहारे उवमा एसा एव धम्मे वियाणह ॥

१६—माणुसत्त भवे मूल लाभो देवगई भवे ।
मूलच्छेएण जीवाण नरगतिरिक्खत्तण धुव ॥

१७—दुहओ गई बालस्स आवई वहमूलिया ।
देवत्त माणुसत्त च ज जिए लोलयासढे ॥

१—॰ पलज्जणे (चू॰) ।
२—चुओदेहा (वृ॰), चुयदेहो (वृ॰ पा॰) ।
३—विहिंसगो (वृ॰) ।
४—बालो (वृ॰) ।
५—गच्छइ अवसो (वृ॰) ।
६—उ (अ) ।
७—हारिन्ति (वृ॰ पा॰) ।

१८—तओ जिए सइं होइ दुविहं दोग्गइं गए ।
दुल्लहा तस्स उम्मज्जा अद्धाए सुइरादवि ॥

१९—एवं जियं[1] सपेहाए तुलिया बालं च पंडियं ।
मूलियं ते पवेसन्ति माणुसं जोणिमेन्ति[2] जे ॥

२०—वेमायाहिं सिक्खाहिं जे नरा गिहिसुव्वया ।
उवेन्ति माणुसं जोणिं कम्मसच्चा[3] हु पाणिणो ॥

२१—जेसिं तु विउला सिक्खा मूलियं ते अइच्छिया[4] ।
सीलवन्ता सवीसेसा अद्दीणा जन्ति देवयं ॥

२२—एवमद्दीणवं[5] भिक्खुं अगारिं[6] च वियाणिया ।
कहण्णु जिच्चमेलिक्खं 'जिच्चमाणे न'[7] संविदे ? ॥

२३—जहा कुसग्गे उदगं समुद्देण समं मिणे ।
एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अन्तिए ॥

२४—कुसग्गमेत्ता इमे कामा सन्निरुद्धंमि आउए ।
कस्स हेउं पुराकाउं[8] जोगक्खेमं न संविदे ? ॥

२५—इह कामाणियट्टस्स अत्तट्ठे अवरज्झई ।
'सोच्चा[9] नेयाउयं मग्गं जं भुज्जो परिभस्सई'[10] ॥

१—जिए (बृ०) ।
२—जोणिमिन्ति (उ, चू०) ।
३—कम्मसत्ता (बृ० पा०, चू० पा०) ।
४—तिउच्छिया (अ) ; ते उड्डिया (चू०) ; ते अइच्छिया (चू० पा०) ; विउट्टिया, अतिड्डिया, अतिच्छिया (बृ०) ।
५—एवं अदीणवं (चू०, बृ०) ।
६—आगारिं (उ, ऋ) ।
७—जिच्चमाणं व (चू०) ।
८—पुरोकाउं (चू०) ।
९—पत्तो (बृ० पा०, चू० पा०) ।
१०—पूइदेह निरोहेणं भवे देवे त्ति मे सुयं (चू० पा०) ।

२६–'इह कामणियट्टस्स अत्तट्ठे नावरज्झई।
पूइदेहनिरोहेण भवे देवि त्ति मे सुय॥[1]

२७–इड्ढी जुई जसो वण्णो आउ सुहमणुत्तर।
भुज्जो जत्थ मणुस्सेसु तत्थ से उववज्जई॥

२८–वालस्स पस्स बालत्त अहम्म पडिवज्जिया[2]।
चिच्चा धम्म अहम्मिट्ठ नरए[3] उववज्जई॥

२९–धीरस्स पस्स धीरत्त सव्वधम्माणुवत्तिणो।
चिच्चा अधम्म धम्मिट्ठ[4] देवेसु उववज्जई॥

३०–तुलियाण बालभाव अबाल चेव पण्डिए।
चइऊण बालभाव अबाल सेवए मुणि॥
—त्ति बेमि।

१—यह श्लोक चूर्णि में व्याख्यात नहीं है।
२—पडिवज्जिणो (अ वृ० पा०)।
३—नरएसु (अ उ)
४—धम्मिट्ठ (उ)।

अट्ठमं अज्झयणं

काविलीयं

१—'अधुवे असासयंमि'[1]
संसारंमि दुक्खपउराए ।
किं नाम होज्ज तं कम्मयं
'जेणाहं दोग्गइं न गच्छेज्जा'[2] ॥

२—विजहित्तु पुव्वसंजोगं
न सिणेहं कहिंचि कुव्वेज्जा ।
असिणेह सिणेहकरेहिं
दोसपओसेहिं[3] मुच्चए भिक्खू ॥

३—तो नाणदंसणसमग्गो
हियनिस्सेसाए[4] सव्वजीवाणं ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए
भासई मुणिवरो विगयमोहो ॥

४—सव्वं गन्थं कलहं च
विप्पजहे तहाविहं[5] भिक्खू ।
'सव्वेसु कामजाएसु'[6]
पासमाणो न लिप्पई ताई ॥

१—अधुवमि मोहगहणए (नागार्जुनीयाः) ।
२—जेणाहं(धं) दुग्गइतो मुच्चेज्जा (चू०, वृ० पा०) ।
३—दोसपएहिं (वृ०) ; दोसपउसेहिं (वृ० पा०) ।
४—हियनिस्सेसाय (चू०, सु) ।
५—तहाविहो (वृ० पा०, चू० पा०) ।
६—सव्वेहिं कामजाएहिं (चू०) ।

५—भोगामिसदोसविसण्णे
हियनिस्सेयसबुद्धिवोच्चत्थे ।
बाले य मन्दिए मूढे
बज्झई मच्छिया व खेलमि ॥

६—दुपरिच्चया इमे कामा
नो सुजहा अधीरपुरिसेहिं ।
अह सन्ति सुव्वया साहू[1]
जे तरन्ति 'अतर वणिया व'[2] ॥

७—समणा मु एगे वयमाणा
पाणवहं मिया अयाणन्ता ।
मन्दा निरयं[3] गच्छन्ति
बाला पावियाहिं दिट्ठीहिं ॥

८—न हु पाणवहं अणुजाणे
मुच्चेज्ज कयाइ सव्वदुक्खाण ।
एवारिएहिं[4] अक्खायं
जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥

९—पाणे य नाइवाएज्जा
से 'समिए त्ति'[5] वुच्चई ताई ।
तओ से पावयं कम्मं
निज्जाइ[6] उदगं व थलाओ ॥

१—सव्वे (चू०) ।
२—वणिया व समुद्द (बृ० पा०, चू०), अतरं वणिया व (चू० पा०) ।
३—नरयं (बृ० पा० चू०) ।
४—एवाय रिएहिं (अ, ऋ) एवमारिएहिं (आ सु) ।
५—समिय त्ति (चू०) समीए त्ति (अ०), समीइ त्ति (उ ऋ) ।
६—णिग्गाइ (बृ० पा०) ।

१०—'जगनिस्सिएहिं भूएहिं
तसनामेहिं थावरेहिं च।'[1]
नो तेसिमारभे दंडं
मणसा वयसा कायसा चेव ॥

११—सुद्धेसणाओ नच्चाणं
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं।
जायाए घासमेसेज्जा
रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥

१२—पन्ताणि चेव सेवेज्जा
सीयपिंडं पुराणकुम्मासं।
अदु वुक्कसं पुलागं वा
'जवणट्ठाए निसेवए'[2] मंथुं ॥

१३—जे लक्खणं च सुविणं च
अंगविज्जं च जे पउंजन्ति।
न हु ते समणा वुच्चन्ति
एवं आयरिएहिं[3] अक्खायं ॥

१४—इहजीवियं अणियमेत्ता
पब्भट्ठा समाहिजोएहि।
ते कामभोगरसगिद्धा
उववज्जन्ति आसुरे काए ॥

१—जगनिस्सियाण भूयाणं तसाणं थावराण य। (वृ० पा०);
जगणिसित भूताण तसणामाणं च थावराणं च। (चू०);
जगनिस्सितेसु थावरणामेसु भूतेसु तसणामेसु वा। (चू० पा०);
जगनिस्सिएहिं भूएहिं तसनामेहिं थावरे हिं वा। (चू०)।

२—जवणट्ठा वा सेवए (वृ०); जवणट्ठाए णिसेवए (वृ० पा०)।

३—आरिएहिं (अ, वृ०)।

१५—तत्तो वि य उवट्टित्ता
संसारं बहुं अणुपरियडन्ति[1] ।
बहुकम्मलेवलित्ताणं
बोही होइ[2] सुदुलहा तेसिं ॥

१६—कसिणं पि जो इमं लोयं
पडिपुण्णं दलेज्ज इक्कस्स ।
तेणावि से न संतुस्से[3]
इइ दुप्पूरए इमे आया ॥

१७—जहा लाहो तहा लोहो
लाहा लोहो पवड्ढई ।
दोमासकयं कज्जं
कोडीए वि न निट्ठियं ॥

१८—नो रक्खसीसु गिज्झेज्जा
गंडवच्छासुऽणेगचित्तासु ।
जाओ पुरिसं पलोभित्ता
खेलन्ति जहा व दासेहिं ॥

१९—नारीसु नोवगिज्झेज्जा
इत्थी विप्पजहे अणगारे ।
धम्मं च पेसलं नच्चा
तत्थ ठवेज्ज भिक्खू अप्पाणं ॥

१—अनुपरियट्ट ति (ऋ) ; अनुपरियंति (अ, वृ०) ; अनुचरंति (वृ० पा०) ।
२—जत्थ (वृ० पा०) ।
३—संतुसिज्जा (ऋ) ; तुसिज्ज (उ) ; तुसिज्जा (अ) ; (सं)तुस्से (वृ०) ।

२०—इइ एस धम्मे अक्खाए
कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं।
तरिहिन्ति जे उ काहिन्ति
तेहिं आराहिया दुवे लोग॥
—त्ति बेमि॥

*

नवम अज्भयण

नमिपव्वज्जा

१—चइऊण देवलोगाओ
उववन्नो माणुसमि लोगमि ।
उवसन्तमोहणिज्जो
सरई पोराणिय जाइ ॥

२—जाइ सरित्तु भयव
सहसबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्त ठवेत्तु रज्जे
अभिणिक्खमई नमी राया ॥

३—से देवलोगसरिसे
अन्तेउरवरगओ वरे भोए ।
भुजित्तु नमी राया
बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥

४—मिहिल सपुरजणवय
बलमोरोह च परियण सव्व ।
चिच्चा अभिनिक्खन्तो
एगन्तमहिट्ठिओ भयव ॥

५—कोलाहलगभूय
आसी मिहिलाए पव्वयन्तमि ।
तइया रायरिसिमि
नमिमि अभिणिक्खमन्तमि ॥

६—अब्भुट्ठिय रायरिसि पव्वज्जाठाणमुत्तम ।
सक्को माहणरूवेण इम वयणमब्बवी ॥

७—किण्णु भो ! अज्ज मिहिलाए कोलाहलगसंकुला ।
सुव्वन्ति दारुणा सद्दा पासाएसु गिहेसु य ? ॥

८—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

९—मिहिलाए चेइए वच्छे सीयच्छाए मणोरमे ।
पत्तपुप्फफलोवेए बहूणं बहुगुणे सया ॥

१०—वाएण हीरमाणंमि चेइयंमि मणोरमे ।
दुहिया असरणा अत्ता एए कन्दन्ति भो ! खगा ॥

११—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१२—एस अग्गी य वाऊ य एयं डज्झइ मन्दिरं ।
भयवं ! अन्तेउरं तेणं कीस णं नावपेक्खसि[1] ? ॥

१३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

१४—सुहं वसामो जीवामो जेसिं मो नत्थि किंचण ।
मिहिलाए डज्झमाणीए न मे डज्झइ किंचण ॥

१५—चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्स भिक्खुणो ।
पियं न विज्जई किंचि अप्पियं पि न विज्जए ॥

१६—बहुं खु मुणिणो भद्दं अणगारस्स भिक्खुणो ।
सव्वओ विप्पमुक्कस्स एगन्तमणुपस्सओ ॥

१७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१—नावपिक्खह (अ) ।

१८—पागारं कारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणि च ।
उस्सूलगसयग्घीओ[1] तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

१९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥

२०—सद्धं नगरं[2] किच्चा तवसंवरमग्गलं ।
'खन्ति निउणपागारं तिगुत्तं दुप्पधंसयं'[3] ॥

२१—धणु परक्कमं किच्चा जीवं च इरियं सया ।
धिइं च केयणं किच्चा सच्चेण पलिमन्थए[4] ॥

२२—तवनारायजुत्तेण भेत्तूणं कम्मकंचुयं ।
मुणी विगयसंगामो भवाओ परिमुच्चए ॥

२३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

२४—पासाए[5] कारइत्ताणं वद्धमाणगिहाणि य ।
वालग्गपोइयाओ य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

२५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्द इणमब्बवी ॥

२६—संसयं खलु सो कुणई, जो मग्गे कुणई घरं ।
जत्थेव गन्तुमिच्छेज्जा तत्थ कुव्वेज्ज सासयं ॥

२७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

१—उच्चूलग० (स) ।
२—नगरी (बृ०) ।
३—खन्ति निउणं पागारं तिगुत्ति दुप्पधंसयं (बृ० पा०) ।
४—पलिकंथए (चू०) ।
५—पासायं (ऋ) ।

२८—आमोसे लोमहारे य गंठिभेए य तक्करे ।
नगरस्स खेमं काऊणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

२९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

३०—असइं तु मणुस्सेहिं मिच्छा दण्डो पजुंजई ।
अकारिणोऽत्थ बज्झन्ति मुच्चई कारओ जणो ॥

३१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

३२—जे केइ पत्थिवा तुब्भं[1] नानमन्ति नराहिवा ! ।
वसे ते ठावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

३३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

३४—जो सहस्सं सहस्साणं संगामे दुज्जए जिणे ।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं एस से परमो जओ ॥

३५—अप्पाणमेव जुज्झाहि किं ते जुज्झेण बज्झओ ।
अप्पाणमेव[2] अप्पाणं जइत्ता सुहमेहए ॥

३६—पंचिन्दियाणि कोहं माणं मायं तहेव लोहं च ।
दुज्जयं चेव अप्पाणं सव्वं अप्पे जिए जियं ॥

३७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

३८—जइत्ता विउले जन्ने भोइत्ता समणमाहणे ।
दच्चा भोच्चा य जट्ठा य तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

१—तुज्झं (वृ० पा०) ।
२—अप्पणा चेव (अ) ।

३९—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

४०—जो सहस्सं सहस्साणं मासे मासे गवं दए ।
तस्सावि संजमो सेओ अदिन्तस्स वि किंचण ॥

४१—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

४२—घोरासमं चइत्ताणं[1] अन्नं पत्थेसि आसमं ।
इहेव पोसहरओ भवाहि मणुयाहिवा ! ॥

४३—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

४४—मासे मासे तु जो बालो कुसग्गेण तु[2] भुंजए ।
न सो सुयक्खायधम्मस्स कलं अग्घइ सोलसिं ॥

४५—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

४६—हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं कंसं दूसं 'च वाहणं'[3] ।
कोसं वड्ढावइत्ताणं तओ गच्छसि खत्तिया ! ॥

४७—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

४८—सुवण्णरुप्पस्स उ[4] पव्वया भवे
सिया हु केलाससमा असंखया ।
नरस्स लुद्धस्स न तेहिं[5] किंचि
इच्छा उ आगाससमा अणन्तिया ॥

१—जहित्ताणं (वृ० पा०) ।
२—व (अ) ।
३—सवाहणं (वृ० पा०, चू०) ।
४—य (अ) ।
५—तेणं (वृ० पा०) ।

४९—पुढवी साली जवा चेव हिरण्णं पसुभिस्सह ।
पडिपुण्णं[1] नालमेगस्स इइ विज्जा तवं चरे ॥

५०—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमिं रायरिसिं देविन्दो इणमब्बवी ॥

५१—अच्छेरगमब्भुदए भोए चयसि[2] पत्थिवा[3] ! ।
असन्ते कामे पत्थेसि संकप्पेण विहन्नसि ॥

५२—एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ ।
तओ नमी रायरिसी देविन्दं इणमब्बवी ॥

५३—सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा ।
कामे पत्थेमाणा अकामा जन्ति दोग्गइं ॥

५४—अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गई ।
माया गईपडिग्घाओ लोभाओ दुहओ भयं ॥

५५—अवउज्झिऊण माहणरूवं विउव्विऊण इन्दत्तं ।
वन्दइ अभित्थुणन्तो इमाहि महुराहिं वग्गूहिं ॥

५६—अहो ते निज्जिओ कोहो अहो ते माणो पराजिओ ।
अहो ते निरक्किया माया अहो ते लोभो वसीकओ ॥

५७—अहो ते अज्जवं साहु अहो ते साहु मद्दवं ।
अहो ते उत्तमा खन्ती अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥

५८—इहं सि उत्तमो भन्ते पेच्चा होहिसि उत्तमो ।
लोगुत्तमुत्तमं[4] ठाणं सिद्धिं गच्छसि नीरओ ॥

१—सव्वंतं (वृ० पा०) ।
२—जहासि (वृ०) ; चयसि (वृ० पा०) ।
३—खत्तिया (वृ० पा०) ।
४—लोगुत्तम मुत्तमं (वृ० पा०) ।

५९—एवं अभित्थुणन्तो
रायरिसिं उत्तमाए सद्धाए ।
पयाहिणं[1] करेन्तो
पुणो पुणो वन्दई सक्को ॥

६०—तो[2] वन्दिऊण पाए
चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स ।
आगासेणुप्पइओ
ललियचवलकुंडलतिरीडी ॥

६१—नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं[3] सक्केण चोइओ ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥

६२—एवं करेन्ति संबुद्धा[4] पंडिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा से नमी रायरिसि ॥
—त्ति बेमि ॥

१—पायाहिणं (वृ०) ।
२—स (वृ० पा०) ।
३—सक्क (ऋ) ।
४—संपन्ना (चू०) ।

दसमं अज्झयणं

दुमपत्तयं

१—दुमपत्तए पण्डुयए जहा
निवडइ राइगणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम! मा पमायए॥

२—कुसग्गे जह ओसबिन्दुए
थोवं चिट्ठइ लम्बमाणए।
एवं मणुयाण जीवियं
समयं गोयम! मा पमायए॥

३—'इइ इत्तरियम्मि आउए
जीवियए बहुपच्चवायए'[1]।
विहुणाहि रयं पुरे कडं
समयं गोयम! मा पमायए॥

४—दुलहे खलु माणुसे भवे
चिरकालेण वि सव्वपाणिणं।
गाढा य विवाग कम्मुणो
समयं गोयम! मा पमायए॥

५—पुढविकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए॥

१—एवं मणुयाण जीविए
एत्तिरिए बहुपच्चवायए। (वृ० पा०)।

६—आउकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

७—तेउकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

८—वाउकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखाईयं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

९—वणस्सइकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालमणन्तदुरन्तं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

१०—बेइन्दियकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

११—तेइन्दियकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे ।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम! मा पमायए ॥

१२—चउरिन्दियकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
कालं संखिज्जसन्नियं
समयं गोयम! मा पमायए॥

१३—पंचिन्दियकायमइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
सत्तट्ठभवग्गहणे
समयं गोयम! मा पमायए॥

१४—देवे नेरइए य अइगओ
उक्कोसं जीवो उ संवसे।
इक्किक्कभवग्गहणे
समयं गोयम! मा पमायए॥

१५—एवं भवसंसारे
संसरइ सुहासुहेहि कम्मेहिं।
जीवो पमायबहुलो
समयं गोयम! मा पमायए॥

१६—लद्धूण वि माणुसत्तणं
आरिअत्तं पुणरावि दुल्लहं।
वहवे दसुया मिलेक्खुया
समयं गोयम! मा पमायए॥

१७—लद्धूण वि आरियत्तणं
अहीणपंचिन्दियया हु दुल्लहा।
विगलिन्दियया हु दीसई
समयं गोयम! मा पमायए॥

१८—अहीणपंचिन्दियत्त पि से लहे
उत्तमधम्मसुई हु दुलहा।
कुतित्थिनिसेवए[1] जणे
समयं गोयम! मा पमायए॥

१९—लद्धूण वि उत्तमं सुइं
सद्दहणा पुणरावि दुलहा।
मिच्छत्तनिसेवए जणे
समयं गोयम! मा पमायए॥

२०—धम्मं पि हु सद्दहन्तया
दुल्लहया[2] काएण फासया।
इह कामगुणेहि[3] मुच्छिया
समयं गोयम! मा पमायए॥

२१—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से सोयबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२२—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से चक्खुबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

१—कुतित्थ० (वृ० पा० चू०)।
२—दुलहा (उ)।
३—कामगुणेसु (उ म वृ०), कामगुणेहिं (वृ० पा०)।

२३—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से घाणबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२४—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से जिब्भबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२५—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से फासबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२६—परिजूरइ ते सरीरयं
केसा पण्डुरया हवन्ति ते।
से सव्वबले य हायई
समयं गोयम! मा पमायए॥

२७—अरई गण्डं विसूइया
आयंका विविहा फुसन्ति ते।
विवडइ विद्धंसइ ते सरीरयं
समयं गोयम! मा पमायए॥

२८—वोछिन्द सिणेहमप्पणो
कुमुयं सारइयं व[१] पाणियं।
से सव्वसिणेहवज्जिए
समयं गोयम! मा पमायए॥

१—च (अ, उ)।

२९—चिच्चाण धणं च भारियं
पव्वइओ हि सि अणगारियं।
मा वन्तं पुणो वि आइए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३०—अवउज्झियं मित्तवन्धवं
विउलं चेव धणोहसंचयं।
मा तं विइयं गवेसए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३१—न हु जिणे अज्ज दिस्सई
वहुमए दिस्सई मग्गदेसिए।
संपइ नेयाउए पहे
समयं गोयम! मा पमायए॥

३२—अवसोहिय कण्टगापहं
ओइण्णो सि पहं महालयं।
गच्छसि मग्ग विसोहिया
समयं गोयम! मा पमायए॥

३३—अबले जह भारवाहए
मा मग्गे विसमे वगाहिया।
पच्छा पच्छाणुतावए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३४—तिण्णो हु सि अण्णवं महं
किं पुण चिट्ठसि तीरमागओ।
अभितुर पारं गमित्तए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३५—अकलेवरसेणिमुस्सिया
सिद्धिं गोयम लोयं गच्छसि।
खेमं च सिवं अणुत्तरं
समयं गोयम! मा पमायए॥

३६—बुद्धे परिनिव्वुडे चरे
गामगए नगरे व संजए।
सन्तिमग्गं च बूहए
समयं गोयम! मा पमायए॥

३७—बुद्धस्स निसम्म भासियं
सुकहियमट्ठपओवसोहियं।
रागं दोसं च छिन्दिया
सिद्धिगइं गए गोयमे॥

—त्ति बेमि॥

*

इक्कारसमं अज्झयणं

बहुस्सुयपुज्जा

१—संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो ।
आयारं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥

२—जे यावि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥

३—अह पंचहिं ठाणेहिं जेहिं सिक्खा न लब्भई ।
थम्भा कोहा पमाएणं रोगेणाऽलस्सएण य ॥

४—अह अट्ठहिं ठाणेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई ।
अहस्सिरे सया दन्ते न य मम्ममुदाहरे ॥

५—नासीले न विसीले न सिया अइलोलुए ।
अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥

६—अह चउदसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए ।
अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छइ ॥

७—अभिक्खणं कोही हवइ पबन्धं च पकुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो वमइ सुयं लद्धूण मज्जई ॥

८—अवि पावपरिक्खेवी अवि मित्तेसु कुप्पई ।
सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भासइ पावगं ॥

९—पइण्णवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे ।
असंविभागी अचियत्ते अविणीए त्ति वुच्चई ॥

१०—अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई ।
नीयावत्ती अचवले अमाई अकुऊहले ॥

११—अप्पं चाऽहिक्खिवई[1] पबन्धं च न कुव्वई ।
मेत्तिज्जमाणो भयई सुयं लद्धुं न मज्जई ॥

१२—न य पावपरिक्खेवी न य मित्तेसु कुप्पई ।
अप्पियस्सावि मित्तस्स रहे कल्लाण भासई ॥

१३—कलहडमरवज्जए बुद्धे अभिजाइए ।
हिरिमं पडिसंलीणे सुविणीए त्ति वुच्चई ॥

१४—वसे गुरुकुले निच्चं जोगवं उवहाणवं ।
पियंकरे पियंवाई से सिक्खं लद्धुमरिहई ॥

१५—जहा संखम्मि पयं
'निहियं दुहओ'[2] वि विरायइ ।
एवं बहुस्सुए भिक्खू
धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥

१६—जहा से कम्बोयाणं आइण्णे कन्थए सिया ।
आसे जवेण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१७—जहाइण्णसमारूढे सूरे दढपरक्कमे ।
उभओ नन्दिघोसेणं एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१८—जहा करेणुपरिकिण्णे कुंजरे सट्ठिहायणे ।
बलवन्ते अप्पडिहए एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१९—जहा से तिक्खसिंगे जायखन्धे विरायई ।
वसहे जूहाहिवई एवं हवइ बहुस्सुए ॥

२०—जहा से तिक्खदाढे उदग्गे दुप्पहंसए ।
सीहे मियाण पवरे एवं हवइ बहुस्सुए ॥

१—वाऽहिक्खिवइ (अ) ; चऽहिक्खिवइ (उ) ।
२—णिसितं उभयतो (चू०) ।

२१–जहा से वासुदेवे संखचक्कगयाधरे ।
अप्पडिहयबले जोहे एव हवइ बहुस्सुए ॥

२२–जहा से चाउरन्ते चक्कवट्टी महिड्ढिए ।
चउदसरयणाहिवई एव हवइ बहुस्सुए ॥

२३–जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरन्दरे ।
सक्के देवाहिवई एव हवइ बहुस्सुए ॥

२४–जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठन्ते दिवायरे ।
जलन्ते इव तेएण एव हवइ बहुस्सुए ॥

२५–जहा से उडुवई चन्दे नक्खत्तपरिवारिए ।
पडिपुण्णे पुण्णमासीए एव हवइ बहुस्सुए ॥

२६–जहा से सामाइयाण[1] कोट्ठागारे सुरक्खिए ।
नाणाधन्नपडिपुण्णे एव हवइ बहुस्सुए ॥

२७–जहा सा दुमाण पवरा जम्बू नाम सुदसणा ।
अणाढियस्स देवस्स एव हवइ बहुस्सुए ॥

२८–जहा सा नईण पवरा सलिला सागरगमा ।
सीया नीलवन्तपवहा[2] एव हवइ बहुस्सुए ॥

२९–जहा से नगाण पवरे सुमहं मन्दरे गिरी ।
नाणोसहिपज्जलिए एव हवइ बहुस्सुए ॥

३०–जहा से सयभूरमणे उदही अक्खओदए ।
नाणारयणपडिपुण्णे[3] एव हवइ बहुस्सुए ॥

१—सामाइयंगाणं (वृ० पा०) ।
२—°पभवा (वृ०), °पवहा (वृ० पा०) ।
३—°सपुण्णे (अ) ।

३१—समुद्दगम्भीरसमा दुरासया
अचक्किया केणइ दुप्पहंसया[1] ।
सुयस्स पुण्णा विउलस्स ताइणो
खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥

३२—तम्हा सुयमहिट्ठेज्जा उत्तमट्ठगवेसए[2] ।
जेणऽप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—दुप्पहंसिया (चू०) ।
२—उत्तमिट्ठ० (अ) ।

बारसमं अज्झयणं

हरिएसिज्जं

१–सोवागकुलसंभूओ
गुणुत्तरधरो[1] मुणी ।
हरिएसवलो नाम
आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥

२–इरिएसणभासाए
उच्चारसमिईसु य ।
जओ आयाणनिक्खेवे
सजओ सुसमाहिओ ॥

३–मणगुत्तो वयगुत्तो
कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि
जन्नवाड उवट्ठिओ ॥

४–त पासिऊणमेज्जन्त तवेण परिसोसियं ।
पन्तोवहिउवगरण उवहसन्ति अणारिया ॥

५–जाईमयपडियद्धा[2] हिंसगा अजिइन्दिया ।
अबम्भचारिणो बाला इम वयणमब्बवी ॥

६–'कयरे आगच्छइ'[3] दित्तरूवे
काले विगराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पसुपिसायभूए
सकरदूस परिहरिय कण्ठे ॥

१–अणुत्तरधरो (अ, वृ०पा०, चू०) ।
२–°पडिबद्धा (उ, वृ०पा०) ।
३–कयरे तुमं एसिध (चू०) ; कयरे आगच्छति (चू० पा०) ;
को रे आगच्छइ (वृ० पा०) ।

७—कयरे[1] तुमं इय अदंसणिज्जे
काए व आसाइ हमागओ सि ।
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया
गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥

८—जक्खो तहिं तिन्दुयरुक्खवासी
अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं
इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥

९—समणो अहं संजओ बम्भयारी
विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥

१०—वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य
अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणु[2] त्ति
सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥

११—उवक्खडंभोयण माहणाणं
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥

१—को रे (सु० पा०, वृ० पा०) ।
२—० जीवणो त्ति (वृ० पा०) ।

बारसमं अज्झयणं

हरिएसिज्जं

१–सोवागकुलसंभूओ
गुणुत्तरधरो[1] मुणी ।
हरिएसबलो नाम
आसि भिक्खू जिइन्दिओ ॥

२–इरिएसणभासाए
उच्चारसमिईसु य ।
जओ आयाणनिक्खेवे
संजओ सुसमाहिओ ॥

३–मणगुत्तो वयगुत्तो
कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
भिक्खट्ठा बम्भइज्जम्मि
जन्नवाडं उवट्ठिओ ॥

४–तं पासिऊणमेज्जन्तं तवेण परिसोसियं ।
पन्तोवहिउवगरणं उवहसन्ति अणारिया ॥

५–जाईमयपडिथद्धा[2] हिंसगा अजिइन्दिया ।
अबम्भचारिणो बाला इमं वयणमब्बवी ॥

६–'कयरे आगच्छइ'[3] दित्तरूवे
काले विगराले फोक्कनासे ।
ओमचेलए पंसुपिसायभूए
संकरदूसं परिहरिय कण्ठे ॥

१—अणुत्तरधरो (अ, बृ०पा०, चू०) ।
२— ०पडिबद्धा (उ, बृ०पा०) ।
३—कयरे तुम एसिध (चू०) ; कयरे आगच्छति (चू० पा०) ;
को रे आगच्छइ (बृ० पा०) ।

७—कयरे[1] तुमं इय अदंसणिज्जे
काए व आसा इहमागओ सि ।
ओमचेलगा पंसुपिसायभूया
गच्छ क्खलाहि किमिहं ठिओसि ? ॥

८—जक्खो तहिं तिन्दुयरुक्खवासी
अणुकम्पओ तस्स महामुणिस्स ।
पच्छायइत्ता नियगं सरीरं
इमाइं वयणाइमुदाहरित्था ॥

९—समणो अहं संजओ बम्भयारी
विरओ धणपयणपरिग्गहाओ ।
परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले
अन्नस्स अट्ठा इहमागओ मि ॥

१०—वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई य
अन्नं पभूयं भवयाणमेयं ।
जाणाहि मे जायणजीविणु[2] त्ति
सेसावसेसं लभऊ तवस्सी ॥

११—उवक्खडंभोयण माहणाणं
अत्तट्ठियं सिद्धमिहेगपक्खं ।
न ऊ वयं एरिसमन्नपाणं
दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओ सि ? ॥

१—को रे (सु० पा०, वृ० पा०) ।
२—० जीवणो त्ति (बृ० पा०) ।

१२–थलेसु बीयाइ ववन्ति कासगा
तहेव निन्नेसु य आससाए।
एयाए सद्धाए दलाह मज्झं
आराहए पुण्णमिणं खु खेत्तं[1] ॥

१३–खेत्ताणि अम्हं विइयाणि लोए
जहिं पकिण्णा विरुहन्ति पुण्णा।
जे माहणा जाइविज्जोववेया
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१४–कोहो य माणो य वहो य जेसिं
मोसं अदत्तं च परिग्गहं च।
ते माहणा जाइविज्जाविहूणा
ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥

१५–तुब्भेत्थ भो भावधरा[2] गिराणं
अट्ठं न जाणाह अहिज्ज वेए।
उच्चावयाइं मुणिणो चरन्ति
ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥

१६–अज्झावयाण पडिकूलभासी
पभाससे किं तु सगासि अम्हं।
अवि एयं विणस्सउ अन्नपाणं[3]
न य णं दहामु तुमं नियण्ठा! ॥

१—आराहगा होहिम पुण्ण खेत्त (वृ० पा०)।
२—भारवहा (वृ० पा०)।
३—भत्तपाणं (क्र)।

१७—समिईहि मज्झं सुसमाहियस्स
गुत्तीहि गुत्तस्स जिइन्दियस्स ।
जइ मे न दाहित्थ अहेसणिज्जं
किमज्ज जन्नाण लहित्थ लाहं ? ॥

१८—के एत्थ खत्ता उवजोइया वा
अज्झावया वा सह खण्डिएहिं ।
एयं[1] दण्डेण फलेण हन्ता
कण्ठम्मि घेत्तूण खलेज्ज जो णं ? ॥

१९—अज्झावयाणं वयणं सुणेत्ता
उद्धाइया तत्थ बहू कुमारा ।
दण्डेहि वित्तेहि कसेहि चेव
समागया तं 'इसि तालयन्ति'[2] ॥

२०—रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया
भद्द त्ति नामेण अणिन्दियंगी ।
तं पासिया संजय हम्ममाणं
कुद्धे कुमारे परिनिव्ववेइ ॥

२१—देवाभिओगेण निओइएणं
दिन्ना मु रन्ना मणसा न झाया ।
नरिन्ददेविन्दऽभिवन्दिएणं
जेणम्हि वन्ता इसिणा स एसो ॥

१—एयं खु (अ. उ) ; एयं तु (आ) ।
२—इसिं ताडयंति (उ, ऋ) ।

२२–एसो हु सो उग्गतवो महप्पा
जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी ।
'जो मे'[1] तया नेच्छइ दिज्जमाणिं
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥

२३–महाजसो एस महाणुभागो[2]
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य ।
मा एयं हीलह अहीलणिज्जं
मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा ॥

२४–एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा
पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं ।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए
जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति[3] ॥

२५–ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खे
असुरा तहिं तं जणं तालयन्ति ।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो ॥

२६–गिरिं नहेहिं खणह
अयं दन्तेहिं खायह ।
जायतेयं पाएहि हणह
जे भिक्खु अवमन्नह ॥

१—जो म (अ, आ०) ।
२—महानुभावो (वृ० पा०, चू०) ।
३—विणिवारयंति (वृ० पा०) ।

२७–आसीविसो उग्गतवो महेसी
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह[1] ॥

२८–सीसेण एयं सरणं उवेह
समागया सव्वजणेण तुब्भे।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा
लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥

२९–अवहेडिय[2] पिट्ठिसउत्तमंगे
पसारियाबाहु अकम्मचेट्ठे।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥

३०–ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए
विमणो विसण्णो अह माहणो सो।
इसिं पसाएइ सभारियाओ
हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते! ॥

३१–बालेहि मूढेहि अयाणएहिं
जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते!।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति
न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥

१–हणेह (ऋ)।
२–आवड्डिय (वृ० पा०)।

२२–एसो हु सो उग्गतवो महप्पा
जिइन्दिओ संजओ बम्भयारी।
'जो मे'[1] तया नेच्छइ दिज्जमाणिं
पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना॥

२३–महाजसो एस महाणुभागो[2]
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
मा एयं हीलह अहीलणिज्जं
मा सव्वे तेएण भे निद्दहेज्जा॥

२४–एयाइं तीसे वयणाइ सोच्चा
पत्तीइ भद्दाइ सुहासियाइं।
इसिस्स वेयावडियट्ठयाए
जक्खा कुमारे विणिवाडयन्ति[3]॥

२५–ते घोररूवा ठिय अन्तलिक्खे
असुरा तहिं तं जणं तालयन्ति।
ते भिन्नदेहे रुहिरं वमन्ते
पासित्तु भद्दा इणमाहु भुज्जो॥

२६–गिरिं नहेहिं खणह
अयं दन्तेहिं खायह।
जायतेयं पाएहि हणह
जे भिक्खुं अवमन्नह॥

१—जो म (अ, आ०)।
२—महानुभावो (बृ० पा०, चू०)।
३—विणिवारयंति (बृ० पा०)।

२७—आसीविसो उग्गतवो महेसी
घोरव्वओ घोरपरक्कमो य।
अगणिं व पक्खन्द पयंगसेणा
जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह[1] ॥

२८—सीसेण एयं सरणं उवेह
समागया सव्वजणेण तुब्भे।
जइ इच्छह जीवियं वा धणं वा
लोगं पि एसो कुविओ डहेज्जा ॥

२९—अवहेडिय[2] पिट्ठिसउत्तमंगे
पसारियावाहु अकम्मचेट्ठे।
निब्भेरियच्छे रुहिरं वमन्ते
उड्ढंमुहे निग्गयजीहनेत्ते ॥

३०—ते पासिया खण्डिय कट्ठभूए
विमणो विसण्णो अह माहणो सो।
इसिं पसाएइ सभारियाओ
हीलं च निन्दं च खमाह भन्ते! ॥

३१—बालेहि मूढेहि अयाणएहिं
जं हीलिया तस्स खमाह भन्ते!।
महप्पसाया इसिणो हवन्ति
न हु मुणी कोवपरा हवन्ति ॥

१—हणेह (ऋ)।
२—आवडिय (वृ० पा०)।

३२–'पुव्विं च इण्हिं च अणागयं च'[1]
मणप्पदोसो न मे अत्थि कोइ।
जक्खा हु वेयावडियं करेन्ति
तम्हा हु एए निहया कुमारा॥

३३–अत्थं च धम्मं च वियाणमाणा
तुब्भे न वि कुप्पह भूइपन्ना।
तुब्भं तु पाए सरणं उवेमो
समागया सव्वजणेण अम्हे॥

३४–अच्चेमु ते महाभाग![2] न ते किंचि न अच्चिमो।
भुंजाहि सालिमं कूर नाणावंजणसंजुयं॥

३५–इमं च मे अत्थि पभूयमन्नं
तं भुंजसू अम्ह अणुग्गहट्ठा।
बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं
मासस्स ऊ पारणए महप्पा॥

३६–तहियं गन्धोदयपुप्फवासं
दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा।
पहयाओ[3] दुन्दुहीओ सुरेहिं
आगासे अहो दाणं च घुट्ठं॥

३७–सक्खं खु दीसइ तवोविसेसो
न दीसई जाइविसेस कोई।
'सोवागपुत्ते हरिएससाहू'[4]
जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा॥

१—पुव्विं च पच्छा व तहेव मज्झे (वृ० पा०) ; पुव्विं च पच्छा व अणागयं च (चू०)।
२—महाभागा ! (अ, उ, ऋ)।
३—पहया (उ, ऋ)।
४—सोवागपुत्तं हरिएससाहं (वृ० पा०)।

३८–किं माहणा! जोइसमारभन्ता
उदएण सोहिं बहिया विमग्गहा ?।
जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं
न तं सुदिट्ठं कुसला वयन्ति ॥

३९–कुसं च जूवं तणकट्ठमग्गिं
सायं च पायं उदगं फुसन्ता।
पाणाइ भूयाइ विहेडयन्ता
भुज्जो वि मन्दा! पगरेह पावं ॥

४०–कहं चरे ? भिक्खु ! वयं जयामो ?
पावाइ कम्माइ पणोल्लयामो ?।
अक्खाहि णे संजय ! जक्खपूइया !
कहं सुजट्ठं कुसला वयन्ति ?॥

४१–छज्जीवकाए असमारभन्ता
मोसं अदत्तं च असेवमाणा।
परिग्गहं इत्थिओ माणमायं
एयं परिन्नाय चरन्ति[1] दन्ता ॥

४२–सुसंवुडो[2] पंचहिं संवरेहिं
इह जीवियं अणवकंखमाणो[3]।
वोसट्ठकाओ[4] सुइचत्तदेहो[5]
महाजयं जयई जन्नसिट्ठं ॥

१—चरेज्ज (वृ०) ; चरन्ति (वृ० पा०)।
२—सुसंवुडा (उ, सु)।
३—अणवकंखमाणा (उ, सु)।
४—वोसट्ठकाया (उ, सु)।
५—सुइचत्तदेहा (उ, सु)।

४३–के ते जोई ? के व ते जोइठाणे ?
का ते सुया ? किं व[1] ते कारिसग ? ।
एहा य ते कयरा सन्ति ? भिक्खू !
कयरेण होमेण हुणासि जोइ ? ॥

४४–तवो जोई जीवो जोइठाण
जोगा सुया सरीर कारिसग ।
कम्म एहा सजमजोगसन्ती
होम हुणामी इसिण पसत्थ ॥

४५–के ते हरए ? के य ते सन्तितित्थे ?
कहिंसि ण्हाओ व रय जहासि ? ।
आइक्ख ण सजय ! जक्खपूइया !
इच्छामो नाउ भवओ सगासे ॥

४६–धम्मे हरए बम्भे सन्तितित्थे
अणाविले अत्तपसन्नलेसे ।
जहिंसि ण्हाओ विमलो विसुद्धो
सुसीइभूओ[2] पजहामि दोस ॥

४७–एय सिणाण कुसलेहि दिट्ठ
महासिणाण इसिण पसत्थ ।
'जहिंसि ण्हाया'[3] विमला विसुद्धा
महारिसी उत्तम ठाण पत्त ॥
—त्ति बेमि ॥

•

१—च (उ ऋ) ।
२—सुसीलभूओ (वृ० पा०) ।
३—जहिं सिणाया (अ उ ऋ) ।

तेरसमं अज्झयणं

चित्तसम्भूइज्जं

१—जाईपराजिओ खलु
कासि नियाणं तु हत्थिणपुरम्मि ।
चुलणीए बम्भदत्तो
उववन्नो पउमगुम्माओ ॥

२—कम्पिल्ले संभूओ
चित्तो पुण जाओ पुरिमतालम्मि ।
सेट्ठिकुलम्मि विसाले
धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥

३—कम्पिल्लम्मि य नयरे
समागया दो वि चित्तसम्भूया ।
सुहदुक्खफलविवागं
कहेन्ति ते एक्कमेक्कस्स ॥

४—चक्कवट्टी महिड्ढीओ बम्भदत्तो महायसो ।
भायरं बहुमाणेणं इमं वयणमब्बवी ॥

५—आसिमो भायरा दो वि अन्नमन्नवसाणुगा ।
अन्नमन्नमणूरत्ता अन्नमन्नहिएसिणो ॥

६—दासा दसण्णे आसी मिया कालिंजरे नगे ।
हंसा मयंगतीरे[1] सोवागा[2] कासिभूमिए ॥

१—मयंगतीराए (अ, उ, ऋ) ।
२—चंडाला (उ, ऋ) ।

७—देवा य[1] देवलोगम्मि आसि अम्हे महिड्ढिया ।
'इमा नो'[2] छट्ठिया जाई अन्नमन्नेण जा विणा ॥

८—कम्मा नियाणप्पगडा तुमे राय विचिन्तिया ।
तेसिं फलविवागेण विप्पओगमुवागया ॥

९—सच्चसोयप्पगडा कम्मा मए पुरा कडा ।
ते अज्ज परिभुंजामो किं नु चित्ते वि से तहा ? ॥

१०—सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।
अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं
आया ममं पुण्णफलोववेए ॥

११—जाणासि संभूय ! महाणुभागं
महिड्ढियं पुण्णफलोववेयं ।
चित्तं पि जाणाहि तहेव रायं !
इड्ढी जुई तस्स वि य प्पभूया ॥

१२—महत्थरूवा वयणप्पभूया
गाहाणुगीया नरसंघमज्झे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया
'इहऽज्जयन्ते समणो'[3] म्हि जाओ ॥

१३—उच्चोयए महु कक्के य बम्भे
पवेइया आवसहा 'य रम्मा'[4] ।
इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं[5]
पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥

१—वि (उ) ।
२—इमाणे (बृ०) ; इमाणा (बृ० पा०) ।
३—इहऽज्जवंते समणो (चू० पा०), इहऽज्जयन्ते समणो (बृ० पा०) ।
४—ऽतिरम्मा सुरम्मा वा (बृ० पा०) ।
५—वित्तधणोववेयं (बृ०), धणवित्तोववेयं (चू०), वित्तधणप्पभूयं (बृ० पा०) ।

१४—नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं
नारीजणाइं परिवारयन्तो[1]।
भुंजाहि भोगाइ इमाइ भिक्खू !
मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥

१५—तं पुव्वनेहेण कयाणुरागं
नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं।
धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही
चित्तो इमं वयणमुदाहरित्था[2] ॥

१६—सव्वं विलवियं गीयं सव्वं नट्टं विडम्बियं[3]।
सव्वे आभरणा भारा सव्वे कामा दुहावहा ॥

१७—'बालाभिरामेसु दुहावहेसु
न तं सुहं कामगुणेसु रायं।
विरत्तकामाण तवोधणाणं
जं भिक्खुणं सीलगुणे रयाणं ॥'[4]

१८—नरिंद ! जाई अहमा नराणं
सोवागजाई दुहओ गयाणं।
जहिं वयं सव्वजणस्स वेस्सा
वसीय सोवागनिवेसणेसु ॥

१९—तीसे य जाईइ उ पावियाए
वुच्छामु सोवागनिवेसणेसु।
सव्वस्स लोगस्स दुगंछणिज्जा
इहं तु कम्माइं पुरेकडाइं ॥

१—पवियारियंतो (वृ० पा०) ; परियारयंतो (अ, उ, ऋ) ।
२—वक्क ° (वृ०) ; वयण ° (वृ० पा०) ।
३—विडंवणा (उ, चू०) ।
४—यह श्लोक चूर्णि में व्याख्यात नहीं है ।

२०—सो दाणि सिं राय ! महाणुभागो
महिड्ढिओ पुण्णफलोववेओ ।
चइत्तु भोगाइ असासयाइ
'आयाणहेउ अभिणिक्खमाहि'[1]॥

२१—इह जीविए राय ! असासयम्मि
धणिय तु पुण्णाइ अकुव्वमाणो ।
से सोयई मच्चुमुहोवणीए
धम्म अकाऊण परसि लोए ॥

२२—जहेह सीहो व मिय गहाय
मच्चू नर नेइ हु अन्तकाले ।
न तस्स माया 'व पिया व भाया'[2]
कालम्मि तम्मिसहरा[3] भवति ॥

२३—न तस्स दुक्ख विभयन्ति नाइओ
न मित्तवग्गा न सुया न बन्धवा ।
एक्को सय पच्चणुहोइ दुक्ख
कत्तारमेव अणुजाइ कम्म ॥

२४—चेच्चा दुपय च चउप्पय च
खेत्त गिह धणधन्न च सव्व ।
कम्मप्पबीओ[4] अवसो पयाइ
पर भव सुदर पावग वा ॥

१—आदाणमेवं अणुचिंतयाहि (चू०), आदाण हेउ अभिणिक्खमाहि (चू० पा०),
आयाणमेवा अणुचिंतयाहि (वृ० पा०)।
२—न पिया न माया (उ)।
३—तम्मंसहरा (उ)।
४—सकम्मप्पबीओ (उ), सकम्मबीओ (ऋ); कम्मप्पबिइओ (अ)।

२५—तं इक्कगं तुच्छसरीरगं से
चिईगयं डहिय उ पावगेणं ।
भज्जा य पुत्ता[1] वि य नायओ य
दायारमन्नं अणुसंकमन्ति ॥

२६—उवणिज्जई जीवियमप्पमायं
वण्णं जरा हरइ नरस्स रायं ।
पंचालराया! वयणं सुणाहि
मा कासि कम्माइं महालयाइं ॥

२७—अहं पि जाणामि 'जहेह साहू!'[2]
जं मे तुमं साहसि वक्कमेयं ।
भोगा इमे संगकरा हवन्ति
जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥

२८—हत्थिणपुरम्मि चित्ता दट्ठूणं नरवइं महिड्ढियं ।
कामभोगेसु गिद्धेणं नियाणमसुहं कडं ॥

२९—तस्स मे अपडिकन्तस्स इमं एयारिसं फलं ।
जाणमाणो वि जं धम्मं कामभोगेसु मुच्छिओ ॥

३०—नागो जहा पंकजलावसन्नो
दट्ठुं थलं नाभिसमेइ तीरं ।
एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा
न भिक्खुणो मग्गमणुव्वयामो ॥

१—पुत्तो (बृ०) ।
२—जो एत्थ सारो (बृ० पा०, चू०) ।

३१—अच्चेइ कालो तूरन्ति राइओ
न यावि भोगा पुरिसाण निच्चा ।
उविच्च भोगा पुरिसं चयन्ति[1]
दुमं जहा खीणफलं व पक्खी ॥

३२—'जइ ता सि'[2] भोगे चइउं असत्तो
अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं! ।
धम्मे ठिओ सव्वपयाणुकम्पी
तो होहिसि देवो इओ विउव्वी ॥

३३—न तुज्झ भोगे चइऊण बुद्धी
गिद्धो सि आरम्भपरिग्गहेसु ।
मोहं कओ एत्तिउ विप्पलावो
गच्छामि रायं । आमन्तिओ सि ॥

३४—पंचालराया वि य बम्भदत्तो
साहुस्स तस्स[3] वयणं अकाउं ।
अणुत्तरे भुंजिय कामभोगे
अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥

३५—चित्तो वि कामेहि विरत्तकामो
उदग्गचारित्ततवो[4] महेसी ।
अणुत्तरं संजम पालइत्ता
अणुत्तरं सिद्धिगइं गओ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—जहंति (चू०) ।
२—जइ तंसि (उ, वृ० पा०, ऋ) , जईऽसि (चू०) ।
३—तस्सा (अ, आ इ, स) ।
४—उदत्त° (चू०, वृ०, सु) ।

चउदसमं अज्झयणं

उसुयारिज्जं

१—देवा भवित्ताण पुरे भवम्मी
केई चुया एगविमाणवासी ।
पुरे पुराणे उसुयारनामे
खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥

२—सकम्मसेसेण पुराकएणं
कुलेसु दग्गेसु[1] य ते पसूया ।
निव्विण्णसंसारभया जहाय
जिणिन्दमग्गं सरणं पवन्ना ॥

३—पुमत्तमागम्म कुमार दो वी
पुरोहिओ तस्स जसा य पत्ती ।
विसालकित्ती य तहोसुयारो
रायत्थ देवी कमलावई य ॥

४—जाईजरामच्चुभयाभिभूया[2]
बहिंविहाराभिनिविट्ठचित्ता ।
संसारचक्कस्स विमोक्खणट्ठा
दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥

५—पियपुत्तगा दोन्नि वि माहणस्स
सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स ।
सरित्तु पोराणिय तत्थ जाइं
तहा सुचिण्णं तवसंजमं च ॥

१—दत्तेसु (चू०, वृ०) ; उग्गेसु (उ) ।
२—० भयाभिभूए (वृ० पा०) ।

६—ते कामभोगेसु असज्जमाणा
माणुस्सएसुं जे यावि दिव्वा ।
मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा
तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥

७—असासयं दट्ठु इम विहार
वहुअन्तराय न य दीहमाउं ।
तम्हा गिहंसि न रइ लहामो
आमन्तयामो चरिस्सामु मोण ॥

८—अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं
तवस्स वाघायकरं वयासी ।
इम वय वेयविओ वयन्ति
जहा न होई असुयाण लोगो ॥

९—अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे
पुत्ते पडिट्ठप्प[1] गिहंसि जाया! ।
भोच्चाण भोए सह इत्थियाहिं
'आरण्णगा होह मुणी पसत्था'[2]॥

१०—सोयग्गिणा आयगुणिन्धणेण
मोहाणिला पज्जलणाहिएण ।
सतत्तभाव परितप्पमाण
लोलुप्पमाणं वहुहा बहुं च ॥

१—परिट्ठप्प (वृ० पा०) ।
२—पच्छा वणप्पवेसं पसत्थ (चू०) ।

११—पुरोहियं तं कमसोऽणुणन्तं[1]
निमंतयन्तं च सुए धणेणं ।
जहक्कमं कामगुणेहि[2] चेव
कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥

१२—वेया अहीया न भवन्ति ताणं
भुत्ता दिया निन्ति तमं तमेणं ।
जाया य पुत्ता न हवन्ति ताणं
को णाम ते अणुमन्नेज्ज[3] एयं ॥

१३—खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा
पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा ।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया
खाणी अणत्थाण उ कामभोगा ॥

१४—परिव्वयन्ते अणियत्तकामे
अहो य राओ परितप्पमाणे ।
अन्नप्पमत्ते धणमेसमाणे
पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च ॥

१५—इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि
इमं च मे किच्च इमं अकिच्चं ।
तं एवमेवं लालप्पमाणं
हरा हरंति त्ति कहं पमाए ? ॥

१—० णिणतं (उ) ।
२—कामगुणेसु (वृ० पा०) ।
३—अणुमोदेज्ज (अ) ।

१६—धणं पभूयं सह इत्थियाहिं
सयणा तहा कामगुणा पगामा।
तव कए तप्पइ जस्स लोगो
तं सव्व साहीणमिहेव तुब्भं॥
१७—धणेण किं धम्मधुराहिगारे
सयणेण वा कामगुणेहि चेव।
समणा भविस्सामु गुणोहधारी
बहिंविहारा अभिगम्म भिक्खं॥
१८—जहा य अग्गी अरणीउऽसन्तो
खीरे घयं तेल्लमहा तिलेसु।
एमेव जाया। सरीरंसि सत्ता
संमुच्छई नासइ नावचिट्ठे॥
१९—नो इन्दियग्गेज्झ अमुत्तभावा
अमुत्तभावा वि य होइ निच्चो।
अज्झत्थहेउ निययऽस्स बन्धो
ससारहेउं च वयन्ति बन्धं॥
२०—जहा वयं धम्ममजाणमाणा
पावं पुरा कम्ममकासि मोहा।
ओरुज्झमाणा परिरक्खियन्ता
तं नेव भुज्जो वि समायरामो॥
२१—अब्भाहयंमि लोगंमि सव्वओ परिवारिए।
'अमोहाहिं पडन्तीहिं'[1] गिहंसि न रइं लभे॥
२२—केण अब्भाहओ लोगो? केण वा परिवारिओ?।
का वा अमोहा वुत्ता? जाया! चितावरो हुमि॥

१—अमोहायए पुतीहिं (उ)।

२३—मच्चुणाऽब्भाहओ लोगो जराए परिवारिओ ।
अमोहा रयणी वुत्ता एवं ताय! वियाणह ॥

२४—जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
अहम्मं कुणमाणस्स अफला जन्ति राइओ ॥

२५—जा जा वच्चइ रयणी न सा पडिनियत्तई ।
धम्मं च कुणमाणस्स सफला जन्ति राइओ ॥

२६—एगओ संवसित्ताणं दुहओ सम्मत्तसंजुया ।
पच्छा जाया! गमिस्सामो भिक्खमाणा कुले कुले ॥

२७—जस्सत्थि मच्चुणा सक्खं जस्स वऽत्थि[1] पलायणं ।
जो जाणे न मरिस्सामि सो हु कंखे सुए सिया ॥

२८—अज्जेव धम्मं पडिवज्जयामो
जहिं पवन्ना न पुणब्भवामो ।
अणागयं नेव य अत्थि किंचि
सद्धाखमं णे विणइत्तु रागं ॥

२९—पहीणपुत्तस्स हु नत्थि वासो
वासिट्ठि! भिक्खायरियाइ कालो ।
साहाहि रुक्खो लहए समाहिं
छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं ॥

३०—पंखाविहूणो व्व[2] जहेह[3] पक्खी
भिच्चाविहूणो[4] व्व[5] रणे नरिन्दो ।
विवन्नसारो वणिओ व्व पोए
पहीणपुत्तो मि तहा अहं पि ॥

१—चऽत्थि (ऋ) ।
२-५—व (उ, ऋ) ।
३—जहेव (अ, उ, ऋ) ।
४—भिच्चव्विहीणु (ऋ) ; भिच्चुविहीणु (उ) ।

३१—सुसंभिया कामगुणा इमे ते
संपिण्डिया अग्गरसापभूया[1] ।
भुंजामु ता कामगुणे पगामं
पच्छा गमिस्सामु पहाणमग्गं ॥

३२—भुत्ता रसा भोइ[2] ! जहाइ णे वओ
न जीवियट्ठा पजहामि भोए ।
लाभं अलाभं च सुहं च दुक्खं
संचिक्खमाणो[3] चरिस्सामि[4] मोणं ॥

३३—मा हू तुमं सोयरियाण संभरे
जुण्णो व हंसो पडिसोत्तगामी ।
भुंजाहि भोगाइ मए समाणं
दुक्खं खु भिक्खायरियाविहारो ॥

३४—जहा य भोई[5] ! तणुयं भुयगो[6]
निम्मोयणिं हिच्च पलेइ मुत्तो ।
एमेए[7] जाया पयहन्ति भोए
ते हं कहं नाणुगमिस्समेक्को ? ॥

३५—छिन्दित्तु जालं अबलं व रोहिया
मच्छा जहा कामगुणे पहाय ।
धोरेयसीला तवसा उदारा
धीरा हु भिक्खायरियं चरन्ति ॥

१—अग्गरसप्पभूया (उ ऋ) ।
२—होइ (वृ०) ।
३—संविक्खमाणो (चू० उ) ।
४—चरिसामि (अ ऋ) करिस्सामि (चू०) ।
५—भोगि (वृ० पा०) ।
६—भुयंगमो (अ वृ०) ।
७—इमेति (वृ० पा०) ।
८—ताहं (उ चू०), सोहं (अ) ।

३६—नहेव कुंचा समइक्कमन्ता
तयाणि जालाणि दलित्तु हंसा ।
पलेन्ति पुत्ता य पई य मज्झं
'ते हं'[1] कहं नाणुगमिस्समेक्का ? ॥

३७—पुरोहियं तं ससुयं सदारं
सोच्चाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए ।
कुडुम्बसारं विउलुत्तमं तं
रायं अभिक्खं समुवाय देवी ॥

३८—वन्तासी पुरिसो रायं ! न सो होइ पसंसिओ ।
माहणेण परिच्चत्तं धणं आदाउमिच्छसि ॥

३९—सव्वं जगं जइ तुहं सव्वं वावि धणं भवे ।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं नेव ताणाय तं तव ॥

४०—मरिहिसि रायं ! जया तया वा
मणोरमे कामगुणे पहाय[2] ।
एक्को हु धम्मो नरदेव ! ताणं
न विज्जई अन्नमिहेह किंचि ॥

४१—नाहं रमे पक्खिणि पंजरे वा
संताणछिन्ना चरिस्सामि मोणं ।
अकिंचणा उज्जुकडा निरामिसा
परिग्गहारम्भनियत्तदोसा ॥

४२—दवग्गिणा जहा रण्णे डज्झमाणेसु जन्तुसु ।
अन्ने सत्ता पमोयन्ति रागद्दोसवसं गया ॥

१—ताहं (उ, चू०) ; तोहं (अ) ।
२—जहाय (चू०) ।

४३—एवमेव[1] वयं मूढा कामभोगेसु मुच्छिया ।
उज्झमाणं न बुज्झामो रागद्दोसग्गिणा जगं ॥
४४—भोगे भोच्चा वमित्ता य लहुभूयविहारिणो ।
आमोयमाणा गच्छन्ति दिया कामकमा इव ॥
४५—इमे य बद्धा[2] फन्दन्ति मम हत्थऽज्जमागया ।
वयं च सत्ता कामेसु भविस्सामो जहा इमे ॥
४६—सामिसं कुललं दिस्स बज्झमाणं निरामिसं ।
आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामि निरामिसा ॥
४७—गिद्धोवमे उ नच्चाणं कामे संसारवड्ढणे ।
उरगो 'सुवण्णपासे व'[3] संकमाणो तणुं चरे ॥
४८—नागो व्व बन्धणं छित्ता अप्पणो वसहिं वए ।
एयं पत्थं महारायं! उसुयारि त्ति मे सुयं ॥
४९—चइत्ता विउलं रज्जं[4] कामभोगे य दुच्चए ।
निव्विसया निरामिसा निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥
५०—सम्मं धम्मं वियाणित्ता चेच्चा कामगुणे वरे ।
तव पगिज्झऽहक्खायं[5] घोरं घोरपरक्कमा ॥
५१—एवं ते कमसो बुद्धा
सव्वे धम्मपरायणा[6] ।
जम्ममच्चुभउव्विग्गा
दुक्खस्सन्तगवेसिणो ॥

१—एवमेव (वृ०) ।
२—लद्धा (चू०) ।
३—सुवण्णपासेव्व (उ, चू०, सु) ; सुवण्णपासित्ता (ऋ) ; सुवण्णपासिव्वा (अ) ।
४—रट्ठ (वृ०, चू०) ; रज्ज (वृ० पा०) ।
५—°अहकामं (चू० पा०) ।
६—°परंपरा (वृ० पा०) ।

५२—सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया ।
अचिरेणेव कालेण दुक्खस्सन्तमुवागया ॥

५३—राया सह देवीए माहणो य पुरोहिओ ।
माहणी दारगा चेव सव्वे ते परिनिव्वुड[1] ॥

—त्ति बेमि ॥

१—परिनिव्वुड्ड (ऋ) ; परिनिव्वुडि (अ) ; परिनिव्वुए (चू०)।

पनरसमं अज्झयणं

सभिक्खुयं

१–मोणं चरिस्सामि[1] समिच धम्मं
सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने ।
संथवं जहिज्ज अकामकामे
अन्नायएसी परिव्वए जे स भिक्खू ॥

२–राओवरयं[2] चरेज्ज लाढे
विरए वेयवियाऽऽयरक्खिए ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
जे कम्हिचि[3] न मुच्छिए स भिक्खू ॥

३–अक्कोसवहं विइत्तु धीरे
मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥

४–पन्तं सयणासणं भइत्ता
सीउण्हं विविहं च दसमसगं ।
अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे
जे कसिण अहियासए स भिक्खू ॥

५–नो सक्कियमिच्छई न पूयं
नो वि य वन्दणगं कुओ पसंसं ।
से सजए सुव्वए तवस्सी
सहिए आयगवेसए स भिक्खू ॥

१—चरिस्सामो (वृ०) ।
२—रागोवरय (वृ०) ; रातोवरय (वृ० पा०) ।
३—कम्हि वि (अ, उ, ऋ) ।

६—जेण पुण जहाइ जीवियं
मोहं वा कसिणं नियच्छई ।
नरनारिं पजहे सया तवस्सी
न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥

७—छिन्नं सरं भोमं अन्तलिक्खं
सुमिणं लक्खणदण्डवत्थुविज्जं ।
अंगवियारं सरस्स विजयं
जो विज्जाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥

८—मन्तं मूलं विविहं वेज्जचिन्तं
वमणविरेयणधूमणेत्तसिणाणं ।
आउरे सरणं तिगिच्छियं च
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

९—खत्तियगणउग्गरायपुत्ता
माहणभोइय विविहा 'य सिप्पिणो'[1]।
नो तेसिं वयइ[2] सिलोगपूयं
तं परिन्नाय परिव्वए स भिक्खू ॥

१०—गिहिणो जे पव्वइएण दिट्ठा
अप्पव्वइएण व संथुया हविज्जा ।
तेसिं इहलोइयफलट्ठा[3]
जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥

१—सिप्पिणोऽणे (वृ० पा०) ।
२—करेइ (चू०) ।
३—इहलोगफलट्ठाए (अ, आ, इ, चू०) ।

११–सयणासणपाणभोयण
विविह खाइमसाइम परेसिं।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे
जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू॥

१२–जं किंचि आहारपाणं[1] विविहं
खाइमसाइमं परेसिं लद्धुं।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे
मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू॥

१३–आयामगं चेव जवोदणं च
'सीयं च सोवीरजवोदगं च'[2]।
नो हीलए पिण्डं नीरसं तु
पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू॥

१४–सद्दा विविहा भवन्ति लोए
दिव्वा 'माणुस्सगा तहा तिरिच्छा'[3]।
भीमा भयभेरवा उराला
जो सोच्चा न वहिज्जई[4] स भिक्खू॥

१५–वादं विविहं समिच्च लोए
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
उवसन्ते अविहेडए[5] स भिक्खू॥

१–वाहार° (अ)।
२–सीयं सुवीरं च जवोदगं च (स सु)।
३–माणुस्सया तिरिच्छा य (चू०)।
४–वहिए (उ)।
५–उविहेडए (उ)।

१६—असिप्पजीवी[1] अगिहे अमित्ते
जिइन्दिए सव्वओ विप्पमुक्के ।
अणुक्कसाई लहुअप्पभक्खी
चेच्चा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥

—त्ति वेमि ॥

१—असिप्पजीवे

११–सयणासणपाणभोयणं
विविहं खाइमसाइमं परेसिं ।
अदए पडिसेहिए नियण्ठे
जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू ॥

१२–जं किंचि आहारपाणं[1] विविहं
खाइमसाइमं परेसिं लद्धुं ।
जो तं तिविहेण नाणुकम्पे
मणवयकायसुसंवुडे स भिक्खू ॥

१३–आयामगं चेव जवोदणं च
'सीयं च सोवीरजवोदगं च'[2] ।
नो हीलए पिण्डं नीरसं तु
पन्तकुलाइं परिव्वए स भिक्खू ॥

१४–सद्दा विविहा भवन्ति लोए
दिव्वा 'माणुस्सगा तहा तिरिच्छा'[3] ।
भीमा भयभेरवा उराला
जो सोच्चा न वहिज्जई[4] स भिक्खू ॥

१५–वादं विविहं समिच्च लोए
सहिए खेयाणुगए य कोवियप्पा ।
पन्ने अभिभूय सव्वदंसी
उवसन्ते अविहेडए[5] स भिक्खू ॥

१–पाहार° (अ)।
२–सीयं सुवीरं च जवोदगं च (स, सु)।
३–माणुस्सया तिरिच्छा य (चू०)।
४–वहिए (उ)।
५–उविहेडए (उ)।

सू० ४–नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । 'तम्हा नो इत्थीणं'[1] कहं कहेज्जा ।

सू० ५–नो इत्थीहिं[2] सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स, बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा[3] ।

सू० ६–नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता, निज्झाइत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं आलोएमाणस्स, निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि-

---

१—तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीणं (उ) ।
२—इत्थीणं (अ, ऋ) ।
३—विहरइ (आ) ।

सोलसम अज्झयण

वम्भचेरसमाहिठाणं

सू० १–सुय मे, आउस ! तेण भगवया एवमक्खाय—

इह खलु थेरेहिं भगवन्तेहिं दस वम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोचा, निसम्म, सजमवहुले, सवरवहुले, समाहिवहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तवम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ।

सू० २–कयरे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस वम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा, निसम्म, सजमवहुले, सवरवहुले, समाहिवहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तवम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा ?

सू० ३–इमे खलु ते थेरेहिं भगवन्तेहिं दस वम्भचेरसमाहिठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोचा निसम्म, सजमवहुले, सवरवहुले, समाहिवहुले, गुत्ते, गुत्तिन्दिए, गुत्तवम्भयारी सया अप्पमत्ते विहरेज्जा, त जहा—'विवित्ताइ सयणासणाइ सेविज्जा'[1], से निग्गन्थे ।'[2] नो इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

त कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु इत्थीपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेवमाणस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे सका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ 'वा धम्माओ'[3] भसेज्जा । तम्हा नो इत्थिपसुपण्डगससत्ताइ सयणासणाइ सेवित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

१—सेविज्जा हवइ (उ)।

२— विवित्ताइ सयणासणाइ सेविज्जा से निग्गन्थे इतना पाठ चूर्णि में नहीं है ।

३—धम्माओ (उ इ)।

सू० ४—नो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा 'तम्हा नो इत्थीणं'[1] कहं कहेज्जा ।

सू० ५—नो इत्थीहिं[2] सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरित्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागयस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा । तम्हा खलु नो निग्गन्थे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसेज्जागए विहरेज्जा[3] ।

सू० ६—नो इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ, से निग्गन्थे ।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीणं इन्दियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएमाणस्स, निज्झायमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलि

१—तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीणं (उ) ।

२—इत्थीणं (अ, ऋ) ।

३—विहरइ (अ) ।

पन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु 'निग्गन्थे नो'[1] इत्थीण इन्दियाइ मणोहराइ, मणोरमाइ आलोएज्जा, निज्झाएज्जा।

सू० ७–नो इत्थीण कुड्डन्तरसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि वा, कुइयसद्द वा, रुइयसद्द वा, गीयसद्द वा, हसियसद्द वा, थणियसद्द वा, कन्दियसद्द वा, विलवियसद्द वा, सुणेत्ता हवइ से निग्गन्थे।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु इत्थीण 'कुड्डन्तसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि[2] वा'[3], कुइयसद्द वा, रुइयसद्द वा, गीयसद्द वा, हसियसद्द वा, थणियसद्द वा, कन्दियसद्द वा, विलवियसद्द वा, सुणेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु निग्गन्थे नो इत्थीण कुड्डन्तरसि वा, दूसन्तरसि वा, भित्तन्तरसि वा, कुइयसद्द वा, रुइयसद्द वा, गीयसद्द वा, हसियसद्द वा, थणियसद्द वा, कन्दियसद्द वा, विलवियसद्द वा सुणेमाणे विहरेज्जा।

सू० ८–नो निग्गन्थे पुव्वरय पुव्वकीलिय अणुसरित्ता हवइ से निग्गन्थे।

त कहमिति चे ?

आयरियाह—निग्गन्थस्स खलु पुव्वरय[4], पुव्वकीलिय अणुसरमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे सका वा, कखा वा,

१—नो निगान्थे (अ)।
२– भित्ति अतरसि वा (अ ऋ), भित्तितरसि (उ)।
३—कुड्ड तरसि वा भित्त नरसि वा दूस तरसि वा (चू० स) कड्डुतरसि वा० (अ)।
४—इत्थीण पुव्वरय (उ ऋ)।

वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरेज्जा।

सू० ९–नो पणीयं आहारं आहारित्ता हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु पणीयं पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे पणीयं आहारं आहारेज्जा।

सू० १०–नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारेमाणस्स बम्भयारिस्स बम्भचेरे संका वा, कंखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेयं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे अइमायाए पाणभोयणं भुंजिज्जा।

सू० ११–नो विभूसाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे।

तं कहमिति चे ?

आयरियाह—विभूसावत्तिए[1], विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ। तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स

१—निग्गन्थस्स खलु विभूसावत्तिए (अ)।

वम्भचरे सका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे विभूसाणुवाई सिया।

सू० १२–नो सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हवइ, से निग्गन्थे।

त कहमिति चे ?

आयरियाह–निग्गन्थस्स खलु सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाइस्स वम्भयारिस्स वम्भचेरे सका वा, कखा वा, वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेय वा लभेज्जा, उम्माय वा पाउणिज्जा, दीहकालिय वा रोगायक हवेज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भसेज्जा। तम्हा खलु नो निग्गन्थे सद्दरूवरसगन्धफासाणुवाई हविज्जा। दसमे वम्भचेरसमाहिठाणे हवइ।

भवन्ति इत्थ सिलोगा, त जहा—

१–ज विवित्तमणाइण्ण रहिय थीजणेण य।
वम्भचेरस्स रक्खट्ठा आलय तु निसेवए॥

२–मणपल्हायजणणि कामरागविवड्ढणि।
वम्भचेररओ भिक्खू थीकह तु विवज्जए॥

३–सम च सथव थीहिं सकह च अभिक्खण।
वम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए॥

४–अगपच्चगसठाण चारुल्लवियपेहिय।
वम्भचेररओ थीण[1] चक्खुगिज्झ विवज्जए॥

५–कुइय रुइय गीय हसिय थणियकन्दिय।
वम्भचेररओ थीण सोयगिज्झ विवज्जए॥

१–भिक्खु (क)।

६—'हासं किड्डं रइं दप्पं सहसाऽवत्तासियाणि[1] य'[2]।
बम्भचेररओ थीणं नाणुचिन्ते कयाइ वि ॥

७—पणीयं भत्तपाणं तु[3] खिप्पं मयविवड्ढणं।
बम्भचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥

८—धम्मलद्धं[4] मियं काले जत्तत्थं पणिहाणवं।
नाइमत्तं तु भुंजेज्जा बम्भचेररओ सया ॥

९—विभूसं परिवज्जेज्जा सरीरपरिमण्डणं।
बम्भचेररओ भिक्खू सिंगारत्थं न धारए ॥

१०—सद्दे रूवे य गन्धे य रसे फासे तहेव य।
पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥

११—आलओ थीजणाइण्णो थीकहा य मणोरमा।
संथवो चेव नारीणं[5] तासिं इन्दियदरिसणं ॥

१२—कुइयं रुइयं गीयं हसियं[6] भुत्तासियाणि य।
पणीयं भत्तपाणं च अइमायं[7] पाणभोयणं ॥

१३—गत्तभूसणमिट्ठं च कामभोगा य दुज्जया।
नरस्सऽत्तगवेसिस्स विसं तालउडं जहा ॥

१४—दुज्जए कामभोगे य निच्चसो परिवज्जए।
संकट्ठाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा[8] पणिहाणवं ॥

१—सहसावित्ता° (ऋ); सहभुत्ता° (अ)।
२—हस्सं दप्पं रइं किड्डं सहभुत्ता° (वृ० पा०)।
३—च (अ)।
४—धम्मं लद्धं (वृ०); धम्मलद्धधुं, धम्मलद्धं (वृ० पा०)।
५—नारिहिं (ऋ)।
६—सहभुत्ता° (अ)।
७—अइमाणं (ऋ)।
८—वज्जिया (ऋ)।

१५–धम्मारामे चरे भिक्खू धिइमं धम्मसारही ।
धम्मारामरए दन्ते बम्भचेरसमाहिए ॥
१६–देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
बम्भयारिं नमंसन्ति दुक्करं जे करन्ति तं' ॥
१७–एस धम्मे धुवे निअए सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झन्ति चाणेण सिज्झिस्सन्ति तहापरे ॥
—त्ति बेमि ॥

सतरसमं अज्झयणं

पावसमणिज्जं

१—जे 'के इमे'[1] पव्वइए नियण्ठे
धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं
विहरेज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥

२—सेज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि
उप्पज्जई भोत्तुं[2] तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसु ! त्ति
किं नाम काहामि सुएण भन्ते ! ॥

३—जे के इमे पव्वइए निद्दासीले पगामसो ।
भोच्चा पेच्चा सुहं सुवइ[3] पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

४—आयरियउवज्झाएहिं सुयं विणयं च गाहिए ।
ते चेव खिंसई बाले पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

५—आयरियउवज्झायाणं सम्मं नो पडितप्पइ ।
अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

६—सम्मद्दमाणे पाणाणि बीयाणि हरियाणि य ।
असंजए संजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

७—संथारं फलगं पीढं निसेज्जं पायकम्बलं ।
अप्पमज्जियमारुहइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१—केइ उ (वृ०, ऋ, सु) ; के इमे (वृ० पा०) ।
२—भुत्तु (ऋ) ।
३—वसइ (वृ० पा०) ।

८—दवदवस्स चरई पमत्ते य अभिक्खणं।
उल्लंघणे य चण्डे य पावसमणि त्ति वुच्चई॥

९—पडिलेहेइ पमत्ते अवउज्झइ पायकम्बलं।
पडिलेहणाअणाउत्ते[1] पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१०—पडिलेहेइ पमत्ते से किंचि हु निसामिया।
गुरुपरिभावए[2] निच्चं पावसमणि त्ति वुच्चई॥

११—वहुमाई पमुहरे[3] थद्धे लुद्धे अणिग्गहे।
असंविभागी अचियत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१२—विवादं च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा[4]।
वुग्गहे कलहे रत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१३—अथिरासणे कुक्कुईए जत्थ तत्थ निसीयई।
आसणम्मि अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१४—ससरक्खपाए सुवई सेज्जं न पडिलेहइ।
संथारए अणाउत्ते पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१५—दुद्धदहीविगईओ आहारेइ अभिक्खणं।
अरए य तवोकम्मे पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१६—अत्थन्तम्मि[5] य सूरम्मि आहारेइ अभिक्खणं।
चोइओ पडिचोएइ पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१७—आयरियपरिच्चाई परपासण्डसेवए।
गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणि त्ति वुच्चई॥

१—पडिलेहा° (स)।
२—गुरुपरिभावए (अ), गुरुपरिभासए (बृ०), गुरुपरिभावए (बृ० पा०)।
३—पमुही (? बृ, स)
४—अत्तपण्णहा (बृ०), अत्तपन्नहा (बृ० पा०)।
५—अत्थंगयंमि (बृ० पा०)।

१८–सयं गेहं परिचज्ज परगेहंसि वावडे[1] ।
निमित्तेण य ववहरई पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

१९–सन्नाइपिण्डं जेमेइ नेच्छई सामुदाणियं ।
गिहिनिसेज्जं च वाहेइ पावसमणि त्ति वुच्चई ॥

२०–एयारिसे पंचकुसीलसंवुडे
रूवंधरे मुणिपवराण हेट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए
न से इहं नेव परत्थ लोए ॥

२१–जे वज्जए एए सया उ दोसे
से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए
आराहए 'दुहओ लोगमिणं'[2] ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—वावरे (वृ०, सु) ; ववहरे (वृ० पा०) ।
२—लोगमिणं तहापरं (उ, स, सु, ऋ) ।

अट्ठारसमं अज्झयण

संजइज्जं

उक्खेव-पदं

१—कम्पिल्ले नयरे राया उदिण्णबलवाहणे ।
नामेणं संजए नाम मिगव्वं उवणिग्गए ॥
२-हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव य ।
पायत्ताणीए महया सव्वओ परिवारिए[1] ॥
३-मिए छुभित्ता हयगओ कम्पिल्लुज्जाणकेसरे ।
भीए सन्ते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ॥
४—अह केसरम्मि उज्जाणे अणगारे तवोधणे ।
सज्झायज्झाणजुत्ते धम्मज्झाणं झियायई ॥
५-अप्फोवमण्डवम्मि झायई झवियासवे[2] ।
तस्सागए मिए पासं वहेई से नराहिवे ॥
६—अह आसगओ राया खिप्पमागम्म सो तहिं ।
हए मिए उ पासित्ता अणगारं तत्थ पासई ॥
७—अह राया तत्थ संभन्तो अणगारो मणाऽऽहओ ।
मए उ मन्दपुण्णेणं रसगिद्धेण घन्तुणा[3] ॥
८-आसं विसज्जइत्ताणं अणगारस्स सो निवो ।
विणएण वन्दए पाए भगवं ! एत्थ मे खमे ॥
९—अह मोणेण सो भगवं अणगारे झाणमस्सिए ।
रायाणं न पडिमन्तेइ तओ राया भयद्दुओ ॥

१—परिवारए (अ) ।
२—खवियासवे (स) ।
३—घत्तुणा (उ), धम्मुणा (ऋ) ।

१०—संजओ अहमम्मीति भगवं ! वाहराहि मे ।
कुद्धे तेएण अणगारे डहेज्ज नरकोडिओ ॥

११—अभओ[1] पत्थिवा ! तुब्भं अभयदाया भवाहि य ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥

संबोहि-पदं

१२—जया सव्वं परिच्चज्ज गन्तव्वमवसस्स ते ।
अणिच्चे जीवलोगम्मि किं रज्जम्मि[2] पसज्जसि ? ॥

१३—जीवियं चेव रूवं च विज्जुसंपायचंचलं ।
जत्थ तं मुज्झसी रायं पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥

१४—'दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह बन्धवा ।
जीवन्तमणुजीवन्ति मयं नाणुव्वयन्ति य ॥'[3]

१५—नीहरन्ति मयं पुत्ता पियरं परमदुक्खिया ।
पियरो वि तहा पुत्ते बन्धू रायं ! तवं चरे ॥

१६—तओ तेणऽज्जिए दव्वे दारे य परिरक्खिए ।
कीलन्तऽन्ने नरा रायं ! हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥

१७—तेणावि जं कयं कम्मं सुहं वा जइ वा दुहं ।
कम्मुणा तेण संजुत्तो गच्छई उ परं भवं ॥

रायरिसि-पदं

१८—सोऊण तस्स सो धम्मं अणगारस्स अन्तिए ।
महया संवेगनिव्वेयं समावन्नो नराहिवो ॥

१—अभयं (अ, आ) ।
२—रज्जेण (उ, ऋ) ; हिंसाए (वृ० पा०) ।
३—इदं सूत्रं चिरन्तनवृत्तिकृता न व्याख्यातं, प्रत्यन्तरेषु च दृश्यत इत्यस्माभिरुन्नीतम् (वृ०) ।

१९–सजओ चइउ रज्ज निक्खन्तो जिणसासणे।
गद्दभालिस्स भगवओ अणगारस्स अन्तिए॥
२०–चिच्चा रट्ठ पव्वइए खत्तिए परिभासइ।
जहा ते दीसई रूव पसन्न ते तहा मणो॥
२१–किंनामे ? किंगोत्ते ? कस्सट्ठाए व माहणे ?।
कह पडियरसी बुद्धे ? कह विणीए त्ति वुच्चसि[1] ?॥
२२–सजओ नाम नामेण तहा गोत्तेण गोयमे।
गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा॥
२३–किरिय अकिरिय विणय
अन्नाण च महामुणी।
एएहिं चउहिं ठाणहिं
मेयन्ने[2] किं पभासई ?॥
२४–इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुडे।
विज्जाचरणसपन्ने सच्चे सच्चपरक्कमे॥
२५–पडन्ति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो।
दिव्व च गइ गच्छन्ति चरित्ता धम्ममारिय॥
२६–मायावुइयमेय तु मुसाभासा निरत्थिया।
सजममाणो वि अह वसामि इरियामि य॥[3]
२७–सव्वे ते विइया मज्झ मिच्छादिट्ठी अणारिया।
विज्जमाणे पर लोए सम्म जाणामि अप्पग॥
२८–अहमासी महापाणे जुइम वरिससओवमे।
जा सा पाली महापाली दिव्वा वरिससओवमा॥

१–वुच्चई (अ ऋ वृ०)।
२–मियन्ना (चू०)।
३–इदमपि सूत्र प्रायो न दृश्यते (वृ०)।

२९—से चुए[1] बम्भलोगाओ माणुस्सं भवमागए ।
अप्पणो य परेसिं च आउं जाणे जहा तहा ॥

३०—नाणारुइं च छन्दं च परिवज्जेज्ज संजए ।
अणट्ठा जे य सव्वत्था इइ विज्जामणुसंचरे ॥

३१—पडिक्कमामि पसिणाणं परमन्तेहि वा पुणो ।
अहो उट्ठिए अहोरायं इइ विज्जा तवं चरे ॥

३२—जं च मे पुच्छसी काले सम्मं सुद्धेण[2] चेयसा ।
ताइं पाउकरे बुद्धे तं नाणं जिणसासणे ॥

३३—किरियं च रोयए धीरे अकिरियं परिवज्जए ।
दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने धम्मं चर सुदुच्चरं ॥

३४—एयं पुण्णपयं सोच्चा अत्थधम्मोवसोहियं ।
भरहो वि भारहं वासं चेच्चा कामाइ पव्वए ॥

३५—सगरो वि सागरन्तं भरहवासं नराहिवो ।
इस्सरियं केवलं हिच्चा दयाए परिनिव्वुडे[3] ॥

३६—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पव्वज्जमब्भुवगओ मघवं नाम महाजसो ॥

३७—सणंकुमारो मणुस्सिन्दो चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
पुत्तं रज्जे ठवित्ताणं[4] सो वि राया तवं चरे ॥

३८—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ ।
सन्ती सन्तिकरे लोए पत्तो गइमणुत्तरं ॥

१—चुया (अ) ।
२—बुद्धेण (बृ०) ।
३—परिनिव्वुओ (उ, ऋ) ।
४—ठवेऊण (उ, ऋ) ।

३९—इक्खागरायवसभो कुन्थू नाम नराहिवो।
विक्खायकित्ती धिइमं[1] 'मोक्खं गओ अणुत्तरं'[2]॥

४०—सागरन्तं जहित्ताणं[3] 'भरहं वासं नरीसरो'[4]।
अरो य अरयं[5] पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं॥

४१—चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी नराहिओ[6]।
चइत्ता उत्तमे भोए महापउमे तवं चरे॥

४२—एगच्छत्तं पसाहित्ता महिं माणनिसूरणो।
हरिसेणो मणुस्सिन्दो पत्तो[7] गइमणुत्तरं॥

४३—अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे।
जयनामो जिणक्खायं पत्तो गइमणुत्तरं॥

४४—दसण्णरज्जं मुइयं चइत्ताण मुणी चरे।
दसण्णभद्दो निक्खन्तो सक्खं सक्केण चोइओ॥

[नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्केण चोइओ।
चइऊण गेहं वइदेही सामण्णे पज्जुवट्ठिओ॥][8]

४५—करकण्डू कलिंगेसु पंचालेसु य दुम्मुहो[9]।
नमी राया विदेहेसु गन्धारेसु य नग्गई॥

१—भगवं (उ ऋ)।
२—पत्तो गइमणुत्तरं (उ ऋ)।
३—चइत्ताण (उ ऋ स)।
४—भरहं नरवरीसरो (उ ऋ)
५—अरसं (वृ० पा०)।
६—महिड्ढिओ (उ ऋ)।
७—गओ (अ)।
८—यह श्लोक वृत्ति में व्याख्यात नहीं है।
९—दुम्महो (ऋ)।

४६—एए[1] नरिन्दवसभा निक्खन्ता जिणसासणे ।
पुत्ते रज्जे ठवित्ताणं[2] सामण्णे पज्जुवट्ठिया ॥
४७—सोवीररायवसभो चेच्चा[3] रज्जं मुणी चरे ।
उद्दायणो[4] पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ॥
४८—तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्कमे ।
कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ॥
४९—तहेव विजओ राया 'अणट्ठाकित्ति'[5] पव्वए'[6] ।
रज्जं तु गुणसमिद्धं पयहित्तु महाजसो ॥
५०—तहेवुग्गं[7] तवं किच्चा अव्वक्खित्तेण चेयसा ।
महाबलो[8] रायरिसी अद्दाय[9] सिरसा सिरं[10] ॥

निक्खेव-पदं

५१—कहं धीरो अहेऊहिं उम्मत्तो[11] व्व[12] महिं चरे ? ।
एए विसेसमादाय सूरा दढपरक्कमा ॥
५२—अच्चन्तनियाणखमा सच्चा[13] मे भासिया वई ।
अतरिंसु तरन्तेगे[14] तरिस्सन्ति अणागया[15] ॥

१—एवं (उ, ऋ) ।
२—ठवेऊणं (उ, ऋ) ।
३—चइत्ताण (अ, उ, ऋ) ।
४—उदाहणो (ऋ) ; उदायणो (वृ०, आ, उ, ऋ) ।
५—अणट्ठा° (वृ०) ; आणट्ठा° (सु) ।
६—आणट्ठा किइ पव्वइ (वृ० पा०) ।
७—तहेवउग्ग (अ) ।
८—महब्बलो (अ, आ, ऋ) ; महबलो (उ) ।
९—आदाय (उ, ऋ, सु, वृ० पा०) ।
१०—सिरिं (वृ० पा०, अ, आ, उ, ऋ) ।
११—उम्मत्त (उ, ऋ) ।
१२—व (अ) ।
१३—एसा (वृ०) ; सव्वा, सच्चा (वृ० पा०) ।
१४—तरंतन्ने (वृ० पा०) ।
१५—अणागयं (अ) ।

५३—कहं धीरे अहेऊहिं अत्ताणं[1] परियावसे ? ।
सव्वसंगविनिम्मुक्के सिद्धे हवइ नीरए ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—अद्दाणं (वृ०), अत्ताणं (वृ० पा०) ।

एगूणविंसइमं अज्झयणं

मियापुत्तिज्जं

उक्खेव-पदं

१—सुग्गीवे नयरे रम्मे काणणुज्जाणसोहिए ।
राया बलभद्दो त्ति मिया तस्सग्गमाहिसी ॥

२—तेसिं पुत्ते बलसिरी मियापुत्ते त्ति विस्सुए ।
अम्मापिऊण दइए जुवराया दमीसरे ॥

३—नन्दणे सो उ पासाए कीलए[1] सह इत्थिहिं ।
देवो दोगुन्दगो चेव निच्चं मुइयमाणसो ॥

४—मणिरयणकुट्टिमतले पासायालोयणट्ठिओ ।
आलोएइ नगरस्स चउक्कतियचच्चरे ॥

५—अह तत्थ अइच्छन्तं पासई समणसंजयं ।
तवनियमसंजमधरं सीलड्ढं गुणआगरं ॥

६—तं देहई[2] मियापुत्ते दिट्ठीए अणिमिसाए उ ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥

७—साहुस्स दरिसणे तस्स अज्झवसाणम्मि सोहणे ।
मोहंगयस्स सन्तस्स जाईसरणं समुप्पन्नं ॥
[देवलोग चुओ संतो माणुसं भवमागओ ।
सन्निनाणे समुप्पण्णे जाइं सरइ पुराणयं ॥][3]

८—जाईसरणे समुप्पन्ने मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरई पोराणियं जाइं सामण्णं च पुराकयं ॥

१—कीलिए (ऋ) ।
२—पेहइ (बृ०) ।
३—यह श्लोक वृहद् वृत्ति और सर्वार्थसिद्धि में व्याख्यात नहीं है ।

९—विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो संजमम्मि य।
अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्ववी॥

१०—सुयाणि मे पंच महव्वयाणि
नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु।
निव्विण्णकामो मि[1] महण्णवाओ
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो!॥

११—अम्मताय! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा।
पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा॥

१२—इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं।
असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं॥

१३—असासए[2] सरीरम्मि रइं नोवलभामहं।
पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणवुब्बुयसन्निभे॥

१४—माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए।
जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं॥

दुक्ख-पद

१५—जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो[3]॥

१६—खेत्तं वत्थु हिरण्णं च पुत्तदारं च बन्धवा[4]।
चइत्ताणं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे॥

१७—जहा किम्पागफलाणं परिणामो न सुन्दरो।
एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो॥

१—हि (स)।
२—असासए (अ, उ)।
३—जन्तुणा (आ ऋ), पाणिणो (उ, स)।
४—बंधव (उ)।

धम्म-पदं

१८—अद्धाणं जो महन्तं तु अपाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्तो सो दुही होइ छुहातण्हाए पीडिओ ॥
१९—एवं धम्मं अकाऊणं जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो दुही होइ वाहीरोगेहिं पीडिओ ॥
२०—अद्धाणं जो महन्तं तु सपाहेओ पवज्जई ।
गच्छन्तो सो सुही होइ छुहातण्हाविवज्जिओ ॥
२१—एवं धम्मं पि काऊणं जो गच्छइ परं भवं ।
गच्छन्तो सो सुही होइ अप्पकम्मे अवेयणे ॥

सारभण्ड-पदं

२२—जहा गेहे पलित्तम्मि तस्स गेहस्स जो पहू ।
सारभण्डाणि नीणेइ असारं अवउज्झइ ॥
२३—एवं लोए पलित्तम्मि जराए मरणेण य ।
अप्पाणं तारइस्सामि तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥

महव्वय-पदं

२४—तं बिंत ऽम्मापियरो सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं ।
गुणाणं तु सहस्साइं धारेयव्वाइं भिक्खुणो[1] ॥
२५—समया सव्वभूएसु सत्तुमित्तेसु वा जगे ।
पाणाइवायविरई जावज्जीवाए दुक्करा[2] ॥
२६—निच्चकालऽप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं ।
भासियव्वं हियं सच्चं निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥
२७—दन्तसोहणमाइस्स अदत्तस्स विवज्जणं ।
अणवज्जेसणिज्जस्स गेण्हणा अवि दुक्करं ॥

१—भिक्खुणा (वृ०) ; भिक्खुणो (वृ० पा०) ।
२—दुक्करं (वृ०, सु) ।

९–विसएहि अरज्जन्तो रज्जन्तो संजमम्मि य।
अम्मापियरं उवागम्म इमं वयणमब्बवी॥
१०–सुयाणि मे पंच महव्वयाणि
नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु।
निव्विण्णकामो मि[1] महण्णवाओ
अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो!॥
११–अम्मताय! मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा।
पच्छा कडुयविवागा अणुबन्धदुहावहा॥
१२–इमं सरीरं अणिच्चं असुइं असुइसंभवं।
असासयावासमिणं दुक्खकेसाण भायणं॥
१३–असासए[2] सरीरम्मि रइं नोवलभामहं।
पच्छा पुरा व चइयव्वे फेणबुब्बुयसन्निभे॥
१४–माणुसत्ते असारम्मि वाहीरोगाण आलए।
जरामरणघत्थम्मि खणं पि न रमामऽहं॥

दुक्ख पद

१५–जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं रोगा य मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो जत्थ कीसन्ति जन्तवो[3]॥
१६–खेत्तं वत्थु हिरण्णं च पुत्तदारं च बन्धवा[4]।
चइत्ताणं इमं देहं गन्तव्वमवसस्स मे॥
१७–जहा किम्पागफलाणं परिणामो न सुन्दरो।
एवं भुत्ताण भोगाणं परिणामो न सुन्दरो॥

१–म्हि (स)।
२–आसासए (अ, उ)।
३–जन्तुणा (आ, ऋ); पाणिणो (उ, स)।
४–बंधव (उ)।

३८—अहीवेगन्तदिट्ठीए चरित्ते पुत्त दुच्चरे ।
जवा लोहमया चेव चावेयव्वा सुदुक्करं ॥

३९—जहा अग्गिसिहा दित्ता पाउं होइ सुदुक्करं[1] ।
तह दुक्करं करेउं जे तारुण्णे समणत्तणं ॥

४०—जहा दुक्खं भरेउं जे होइ वायस्स कोत्थलो ।
तहा दुक्खं करेउं जे कीवेणं समणत्तणं ॥

४१—जहा तुलाए तोलेउं दुक्करं मन्दरो गिरी ।
तहा निहुय नीसंकं दुक्करं समणत्तणं ॥

४२—जहा भुयाहिं तरिउं दुक्करं रयणागरो ।
तहा अणुवसन्तेणं दुक्करं[2] दमसागरो ॥

४३—भुंज माणुस्सए भोगे पंचलक्खणए तुमं ।
भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥

४४—'तं बिंत ऽम्मापियरो'[3] एवमेयं जहा फुडं ।
इह लोए निप्पिवासस्स नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥

भवदुक्ख-पदं

४५—सारीरमाणसा चेव वेयणाओ अणन्तसो ।
मए सोढाओ भीमाओ असइं दुक्खभयाणि य ॥

४६—जरामरणकन्तारे चाउरन्ते भयागरे ।
मए सोढाणि भीमाणि जम्माणि मरणाणि य ॥

नरयदुक्ख-पदं

४७—जहा इहं अगणी उण्हो 'एत्तोऽणन्तगुणे तहिं'[4] ।
नरएसु वेयणा उण्हा अस्साया वेइया मए ॥

१—सुदुक्करा (वृ० पा०) ।
२—दुत्तरं (आ) ।
३—सो वे अम्मापियरो (उ, वृ० पा०, ऋ) ; तो वेंतऽम्मापियरो (वृ० पा०) ।
४—इत्तोऽणंतगुणा तहिं (वृ० पा०) ।

२८–विरई अबम्भचेरस्स कामभोगरसन्नुणा ।
उग्गं महव्वयं बम्भं धारेयव्वं सुदुक्करं ॥
२९ धणधन्नपेसवग्गेसु परिग्गहविवज्जणं[1] ।
सव्वारम्भपरिच्चाओ निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥
३०–चउव्विहे वि आहारे राईभोयणवज्जणा ।
सन्निहीसंचओ चेव वज्जेयव्वो सुदुक्करो[2] ॥

दुक्कर-पद

३१–छुहा तण्हा य सीउण्हं दंसमसगवेयणा ।
अक्कोसा दुक्खसेज्जा य तणफासा जल्लमेव य ॥
३२–तालणा तज्जणा चेव वहबन्धपरीसहा ।
दुक्खं भिक्खायरिया जायणा य अलाभया ॥
३३–कावोया जा इमा वित्ती केसलोओ य दारुणो ।
दुक्खं बम्भवयं घोरं धारेउं अ महप्पणो ॥
३४–सुहोइओ तुमं पुत्ता ! सुकुमालो सुमज्जिओ ।
न हु सी पभू तुमं पुत्ता ! सामण्णमणुपालिउं ॥
३५–जावज्जीवमविस्सामो गुणाणं तु महाभरो ।
गुरुओ लोहभारो व्व जो पुत्ता ! होइ दुव्वहो ॥
३६–आगासे गंगसोउ व्व पडिसोओ व्व दुत्तरो ।
बाहाहिं सागरो चेव तरियव्वो गुणोयही ॥
३७–वालुयाकवले[3] चेव निरस्साए उ[4] संजमे ।
असिधारागमणं चेव दुक्करं चरिउं तवो ॥

१–°विवज्जणा (आ, इ, ऋ) ।
२–सुदुक्कर (उ) ।
३–°कवलो (अ) ।
४–व (उ) ।

५६—अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते[1] समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्झो वा जह पाडिओ ॥

५७—हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥

५८—बला संडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहि पक्खिहिं ।
विलुत्तो विलवन्तो हं ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो ॥

५९—तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदिं ।
जलं 'पाहिं ति'[2] चिन्तन्तो खुरधाराहिं विवाइओ[3] ॥

६०—उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो[4] ॥

६१—मुग्गरेहिं मुसंढीहिं सूलेहिं मुसलेहि य ।
गयासं भग्गगत्तेहिं पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥

६२—खुरेहिं तिक्खधारेहिं[5] छुरियाहिं[6] कप्पणीहि य ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो[7] य अणेगसो[8] ॥

६३—पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ[9] बद्धरुद्धो अ 'बहु सो'[10] चेव विवाइओ ॥

१—जलंत (वृ० पा०) ।
२—पाहं ति (वृ०) ।
३—विपाडिओ (वृ०) ; विवाइओ (वृ० पा०) ।
४,८—अणंतसो (उ, ऋ) ।
५—तिक्ख दाढेहिं (उ) ।
६—छुरीहिं (ऋ) ।
७—उक्कित्तो (वृ० पा०, सु) ।
९—गहिओ (वृ० पा०) ।
१०—विवसो (उ, ऋ) ।

४८—जहा 'इमं इहं'[1] सीयं 'एत्तोऽणन्तगुणं तहिं'[2] ।
नरएसु वेयणा सीया अस्साया वेइया मए ॥

४९—कन्दन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढपाओ अहोसिरो ।
हुयासणे जलन्तम्मि पक्कपुव्वो अणन्तसो ॥

५०—महादवग्गिसकासे मरुम्मि वइरवालुए ।
कलम्बवालुयाए य दड्ढपुव्वो अणन्तसो ॥

५१—रसन्तो कंदुकुम्भीसु उड्ढं बद्धो अबन्धवो ।
करवत्तकरकयाईहिं छिन्नपुव्वो अणन्तसो ॥

५२—अइतिक्खकण्टगाइण्णे तुंगे सिम्बलिपायवे ।
खेवियं[3] पासबद्धेणं कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥

५३—महाजन्तेसु उच्छू वा आरसन्तो सुभेरवं ।
पीलिओ मि सकम्मेहि पावकम्मो अणन्तसो ॥

५४—कूवन्तो कोलसुणएहिं
सामेहिं सबलेहि य ।
पाडिओ फालिओ छिन्नो
विप्फुरन्तो[4] अणेगसो ॥

५५—असीहि[5] अयसिवण्णाहिं
भल्लीहिं पट्टिसेहि य ।
छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य
ओइण्णो[6] पावकम्मुणा ॥

१—इह इम (उ, ऋ) ।
२—एत्तो ऽणन्तगुणा तहिं (वृ० पा०) ।
३—खेविय (वृ०) ।
४—विप्फरतो (अ, ऋ) ।
५—अरसाहिं (वृ०), असीहि (वृ० पा०) ।
६—उववण्णो (ऋ) ।

५६—अवसो लोहरहे जुत्तो जलन्ते[1] समिलाजुए ।
चोइओ तोत्तजुत्तेहिं रोज्झो वा जह पाडिओ ॥

५७—हुयासणे जलन्तम्मि चियासु महिसो विव ।
दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहि पाविओ ॥

५८—बला संडासतुण्डेहिं लोहतुण्डेहि पक्खिहिं ।
विलुत्तो विलवन्तो हं ढंकगिद्धेहिऽणन्तसो ॥

५९—तण्हाकिलन्तो धावन्तो पत्तो वेयरणिं नदिं ।
जलं 'पाहिं ति'[2] चिन्तन्तो खुरधाराहिं विवाइओ[3] ॥

६०—उण्हाभितत्तो संपत्तो असिपत्तं महावणं ।
असिपत्तेहिं पडन्तेहिं छिन्नपुव्वो अणेगसो[4] ॥

६१—मुग्गरेहिं मुसंढीहिं सूलेहिं मुसलेहि य ।
गयासं भग्गगत्तेहिं पत्तं दुक्खं अणन्तसो ॥

६२—खुरेहिं तिक्खधारेहिं[5] छुरियाहिं[6] कप्पणीहि य ।
कप्पिओ फालिओ छिन्नो उक्कत्तो[7] य अणेगसो[8] ॥

६३—पासेहिं कूडजालेहिं मिओ वा अवसो अहं ।
वाहिओ[9] बद्धरुद्धो अ 'बहु सो'[10] चेव विवाइओ ॥

१—जलंत (वृ० पा०) ।
२—पाहं ति (वृ०) ।
३—विपाडिओ (वृ०) ; विवाइओ (वृ० पा०) ।
४,८—अणंतसो (उ, ऋ) ।
५—तिक्ख दाढेहिं (उ) ।
६—छुरीहिं (ऋ) ।
७—उक्कित्तो (वृ० पा०, सु) ।
९—गहिओ (वृ० पा०) ।
१०—विवसो (उ, ऋ) ।

६४—गलेहिं मगरजालेहिं
मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ[1] फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो॥

६५—वीदसएहि[2] जालेहिं
लेप्पाहि सउणो विव।
गहिओ लग्गो[3] बद्धो य
मारिओ य अणन्तसो॥

६६—कुहाडफरसुमाईहिं
वडढईहिं दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो
तच्छिओ य अणन्तसो॥

६७—चवेडमुट्ठिमाईहि
कुमारेहिं अयं पिव।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो
चुण्णिओ य अणन्तसो॥

६८—तत्ताइं तम्बलोहाइं तउयाइं सीसयाणि य।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं॥

६९—तुहं पियाइं मसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य।
खाविओ मि[4] समसाइं अग्गिवण्णाइं णगसो॥

७० तुहं पिया सुरा सीहू मेरओ य महूणि य।
पाइओ[5] मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य॥

१—अल्लिओ (उ ऋ)।
२—वीसंदएहिं (ऋ) वीसं देहिए (उ)।
३—भग्गो (अ)।
४—वि (ऋ)।
५—[illegible]

७१—निच्चं[1] भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य।
परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए॥

७२—तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा।
महब्भयाओ[2] भीमाओ नरएसु वेइया मए॥

७३—जारिसा माणुसे लोए ताया! दीसन्ति वेयणा।
एत्तो[3] अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा॥

७४—सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए।
निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा॥

मिगचारिया-पदं

७५—तं बितऽम्मापियरो छन्देणं पुत्त! पव्वया।
नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया॥

७६—सो बित ऽम्मापियरो! एवमेयं जहाफुडं।
पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं?॥

७७—एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य॥

७८—जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई।
अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई[4]?॥

७९—को वा से ओसहं देई? को वा से पुच्छई सुहं?।
को से भत्तं च 'पाणं च'[5] आहरित्तु पणामए?॥

८०—जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं।
भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य॥

१—निच्च (अ, ऋ)।
२—महालया (वृ० पा०)।
३—तत्तो (अ); इत्तो (उ, ऋ)।
४—विगिच्छई (उ); चिगिच्छई (ऋ)।
५—पाणं वा (ऋ)।

६४—गलेहिं मगरजालेहिं
मच्छो वा अवसो अहं।
उल्लिओ[1] फालिओ गहिओ
मारिओ य अणन्तसो॥

६५—वीदंसएहि[2] जालेहिं
लेप्पाहिं सउणो विव।
गहिओ लग्गो[3] बद्धो य
मारिओ य अणन्तसो॥

६६—कुहाडफरसुमाईहिं
वड्ढईहिं दुमो विव।
कुट्टिओ फालिओ छिन्नो
तच्छिओ य अणन्तसो॥

६७—चवेडमुट्ठिमाईहिं
कुमारेहि अयं पिव।
ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो
चुण्णिओ य अणन्तसो॥

६८—तत्ताइं तम्बलोहाइ तउयाइ सीसयाणि य।
पाइओ कलकलन्ताइं आरसन्तो सुभेरवं॥

६९—तुह पियाइं मंसाइं खण्डाइं सोल्लगाणि य।
खाविओ मि[4] समसाइं अग्गिवण्णाइ णेगसो॥

७०—तुह पिया सुरा सीहू मेरओ य महूणि य।
पाइओ 'मि जलन्तीओ वसाओ रुहिराणि य॥

१—अल्लिओ (उ, ऋ)।
२—वीसंदएहिं (ऋ), वीसं देहिए (उ)।
३—भग्गो (अ)।
४—वि (ऋ)।

७१—निच्चं[1] भीएण तत्थेण दुहिएण वहिएण य।
परमा दुहसंबद्धा वेयणा वेइया मए॥

७२—तिव्वचण्डप्पगाढाओ घोराओ अइदुस्सहा।
महब्भयाओ[2] भीमाओ नरएसु वेइया मए॥

७३—जारिसा माणुसे लोए ताया! दीसन्ति वेयणा।
एत्तो[3] अणन्तगुणिया नरएसु दुक्खवेयणा॥

७४—सव्वभवेसु अस्साया वेयणा वेइया मए।
निमेसन्तरमित्तं पि जं साया नत्थि वेयणा॥

मिगचारिया-पदं

७५—तं बितऽम्मापियरो छन्देणं पुत्त! पव्वया।
नवरं पुण सामण्णे दुक्खं निप्पडिकम्मया॥

७६—सो बित ऽम्मापियरो! एवमेयं जहाफुडं।
पडिकम्मं को कुणई अरण्णे मियपक्खिणं?॥

७७—एगभूओ अरण्णे वा जहा उ चरई मिगे।
एवं धम्मं चरिस्सामि संजमेण तवेण य॥

७८—जया मिगस्स आयंको महारण्णम्मि जायई।
अच्छन्तं रुक्खमूलम्मि को णं ताहे तिगिच्छई[4]?॥

७९—को वा से ओसहं देई? को वा से पुच्छई सुहं?।
को से भत्तं च 'पाणं च'[5] आहरित्तु पणामए?॥

८०—जया य से सुही होइ तया गच्छइ गोयरं।
भत्तपाणस्स अट्ठाए वल्लराणि सराणि य॥

१—निच्च (अ, ऋ)।
२—महालया (वृ० पा०)।
३—तत्तो (अ); इत्तो (उ, ऋ)।
४—विगिच्छई (उ); चिगिच्छई (ऋ)।
५—पाणं वा (ऋ)।

८१—खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि य वा।
मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं॥
८२—एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ[1]।
मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं॥
८३—जहा मिगे एग अणेगचारी
अणेगवासे धुवगोयरे य।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे
नो हीलए नो वि य खिसएज्जा॥
८४—मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता! जहासुहं।
अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ जहाइ उवहिं तओ॥
८५—मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं।
तुब्भेहिं अम्म!ऽणुन्नाओ गच्छ पुत्त! जहासुहं॥

पव्वज्जा-पदं

८६—एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं।
ममत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं॥
८७—इड्ढि[2] वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ।
रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ॥

समता-पदं

८८—पंचमहव्वयजुत्तो
पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य।
सब्भिन्तरबाहिरओ
तवोकम्मंसि उज्जुओ॥

१—अणेगसो (अ, ऋ); अणिएयणे (वृ० पा०)।
२—इड्ढी (उ, ऋ)।

८९–निम्ममो निरहंकारो निस्संगो चत्तगारवो ।
समो य सव्वभूएसु तसेसु थावरेसु य ॥

९०–लाभालाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तहा ।
समो निन्दापसंसासु तहा माणावमाणओ ॥

९१–गारवेसु कसाएसु दण्डसल्लभएसु य ।
नियत्तो हाससोगाओ अनियाणो अबन्धणो ॥

९२–अणिस्सिओ इहं लोए परलोए अणिस्सिओ ।
वासीचन्दणकप्पो य असणे अणसणे तहा ॥

९३–अप्पसत्थेहिं दारेहिं सव्वओ पिहियासवे ।
अज्झप्पज्झाणजोगेहिं पसत्थदमसासणे ।

९४–एवं नाणेण चरणेण दंसणेण तवेण य ।
भावणाहि 'य सुद्धाहिं'[1] सम्मं भावेत्तु अप्पयं ॥

९५–बहुयाणि उ[2] वासाणि सामण्णमणुपालिया ।
मासिएण उ[3] भत्तेण सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥

निक्खेव-पदं

९६–एवं करन्ति संबुद्धा[4] पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु मियापुत्ते जहारिसी[5] ॥

९७–महापभावस्स महाजसस्स
मियाइ पुत्तस्स निसम्म भासियं ।
तवप्पहाणं चरियं[6] च उत्तमं
गइप्पहाणं च तिलोगविस्सुयं ॥

१—विसुद्धाहिं (वृ०, सु) ।
२—ओ (उ) ; अ (ऋ) ।
३—य (अ) ।
४—संपन्ना (उ, वृ०) ।
५—जहामिसी (वृ०, सु) ।
६—चरित्तं (अ) ।

८१–खाइत्ता पाणियं पाउं वल्लरेहिं सरेहि[1] वा ।
मिगचारियं चरित्ताणं गच्छई मिगचारियं ॥
८२–एवं समुट्ठिओ भिक्खू एवमेव अणेगओ[1] ।
मिगचारियं चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं ॥
८३–जहा मिगे एग अणेगचारी
अणेगवासे धुवगोयरे य ।
एवं मुणी गोयरियं पविट्ठे
नो हीलए नो वि य खिंसएज्जा ॥
८४–मिगचारियं चरिस्सामि एवं पुत्ता! जहासुहं ।
अम्मापिऊहिंऽणुन्नाओ जहाइ उवहिं तओ ॥
८५–मियचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
तुब्भेहिं अम्म!ऽणुन्नाओ गच्छ पुत्त! जहासुहं ॥

पव्वज्जा-पदं

८६–एवं सो अम्मापियरो अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिन्दई ताहे महानागो व्व कंचुयं ॥
८७–इड्ढि[2] वित्तं च मित्ते य पुत्तदारं च नायओ ।
रेणुयं व पडे लग्गं निद्धुणित्ताण निग्गओ ॥

समता-पदं

८८–पंचमहव्वयजुत्तो
पंचसमिओ तिगुत्तिगुत्तो य ।
सब्भिन्तरबाहिरओ
तवोकम्मंसि उज्जुओ ॥

१–अणेगसो (अ, ऋ) ; अणिएयणे (वृ० पा०) ।
२–इड्ढी (उ, ऋ) ।

विसइमं अज्झयणं

महानियण्ठिज्जं

उक्खेव-पदं

१—सिद्धाणं नमो किच्चा संजयाणं च भावओ ।
अत्थधम्मगइं[1] तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह मे ॥

२—पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो ।
विहारजत्तं निज्जाओ मण्डिकुच्छिंसि चेइए ॥

३—नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवियं ।
नाणाकुसुमसंछन्नं उज्जाणं नन्दणोवमं ॥

४—तत्थ सो पासई साहुं संजयं सुसमाहियं ।
निसन्नं रुक्खमूलम्मि सुकुमालं सुहोइयं ॥

५—तस्स रूवं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए ।
अच्चन्तपरमो आसी अउलो रूवविम्हओ ॥

६—अहो ! वण्णो अहो ! रूवं अहो ! अज्जस्स सोमया ।
अहो ! खन्ती अहो ! मुत्ती अहो ! भोगे असंगया ॥

७—तस्स पाए उ वन्दित्ता काऊण य पयाहिणं ।
नाइदूरमणासन्ने[2] पंजली पडिपुच्छई ॥

अणाह-पदं

८—तरुणो सि अज्जो ! पव्वइओ
भोगकालम्मि संजया ! ।
उवट्ठिओ[3] सि सामण्णे
एयमट्ठं सुणेमि ता ॥

१—० गतं (अ) ; ० वइं (वृ० पा०) ।
२—निसण्णो नाइदूरंमि (आ) ।
३—उवहितो (वृ० पा०) ।

९८—वियाणिया दुक्खविवद्धण घण
ममत्तबध च महब्भयावह ।
सुहावह धम्मधुर अणुत्तर
धारेह निव्वाणगुणावह' मह ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१८—कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी[1] ।
तत्थ आसी पिया मज्झ पभूयधणसंचओ ॥
१९—पढमे वए महाराय! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो[2] दाहो 'सव्वंगेसु य'[3] पत्थिवा! ॥
२०—सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरन्तरे[4] ।
पवेसेज्ज[5] अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥
२१—तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥
२२—उवट्ठिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छगा[6] ।
'अबीया सत्थकुसला'[7] मन्तमूलविसारया ॥
२३—ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
२४—पिया मे सव्वसारं पि दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा[8] विमोएइ[9] एसा मज्झ अणाहया ॥
२५—माया य[10] मे महाराय! पुत्तसोगदुहट्टिया[11] ।
न य दुक्खा[12] विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥

१—नगराण पुडभेयणं (वृ० पा०) ।
२—तिउलो (वृ०) ; विउलो (वृ० पा०) ।
३—सव्वगत्तेसु (वृ) ; सव्वंगेसु य (वृ० पा) ।
४—सरीर वीय अंतरे (वृ० पा०) ।
५—आविलिज्ज (उ, वृ० पा०, ऋ) ।
६—°विगिच्छगा (ऋ) ।
७—नाना सत्थत्थ कुसला (वृ० पा०) ; अधीया...... (अ) ।
८—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ) ।
९—विमोयंति (वृ०), एवं सर्वत्र ।
१०—वि (उ) ।
११—°दुहद्दिया (वृ० पा०) ।
१२—पा० टि० ७

९–अणाहो मि महाराय ! नाहो मज्झ न विज्जई ।
अणुकम्पगं सुहिं वावि 'कंचि नाभिसमेमऽहं'[१] ॥

१०–तओ सो पहसिओ राया सेणिओ मगहाहिवो ।
एवं ते इड्ढिमन्तस्स कहं नाहो न विज्जई? ॥

११–होमि नाहो भयन्ताणं ! भोगे भुंजाहि संजया ! ।
मित्तनाईपरिवुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥

१२–अप्पणा वि अणाहो सि सेणिया ! मगहाहिवा ! ।
अप्पणा अणाहो सन्तो कहं[२] नाहो भविस्ससि ? ॥

१३–एवं वुत्तो नरिन्दो सो सुसंभन्तो सुविम्हिओ ।
वयणं अस्सुयपुव्वं साहुणा विम्हयन्निओ[३] ॥

१४–अस्सा हत्थी मणुस्सा मे पुरं अन्तेउरं च मे ।
भुंजामि माणुसे भोगे[४] आणाइस्सरियं च मे ॥

१५–एरिसे सम्पयग्गम्मि[५] सव्वकामसमप्पिए ।
कहं अणाहो भवइ ? 'मा हु भन्ते ! मुसं वए'[६] ॥

१६–न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं 'पोत्थं व'[७] पत्थिवा ! ।
जहा अणाहो भवई सणाहो वा नराहिवा ? ॥

१७–सुणेह मे महाराय ! अव्वक्खित्तेण[८] चेयसा ।
जहा अणाहो भवई जहा मे य पवत्तियं ॥

१–कंचीनाहि तुमे मह (बृ०, सु) ; कंची नाभिसमेमऽहं (बृ० पा०) ।
२–कस्स (आ) ।
३–विम्हियन्निओ (अ, उ, ऋ) ।
४–लोए (ऋ) ।
५–संपयायम्मि (बृ० पा०) ।
६–भंते ! माइ मुसं वए (बृ० पा०) ।
७–उत्थं व (बृ०) ; पोत्थं च (अ) ; पोत्थं व (बृ० पा०) ।
८–अविक्खित्तेण (ऋ) ।

१८—कोसम्बी नाम नयरी पुराणपुरभेयणी[1] ।
तत्थ आसी पिया मज्झ पभूयधणसंचओ ॥
१९—पढमे वए महाराय! अउला मे अच्छिवेयणा ।
अहोत्था विउलो[2] दाहो 'सव्वंगेसु य'[3] पत्थिवा! ॥
२०—सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरन्तरे[4] ।
पवेसेज्ज[5] अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥
२१—तियं मे अन्तरिच्छं च उत्तमंगं च पीडई ।
इन्दासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥
२२—उवट्ठिया मे आयरिया विज्जामन्ततिगिच्छगा[6] ।
'अबीया सत्थकुसला'[7] मन्तमूलविसारया ॥
२३—ते मे तिगिच्छं कुव्वन्ति चाउप्पायं जहाहियं ।
न य दुक्खा विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया ॥
२४—पिया मे सव्वसारं पि दिज्जाहि मम कारणा ।
न य दुक्खा[8] विमोएइ[9] एसा मज्झ अणाहया ॥
२५—माया य[10] मे महाराय! पुत्तसोगदुहट्टिया[11] ।
न य दुक्खा[12] विमोएइ एसा मज्झ अणाहया ॥

१—नगराण पुडभेयणं (वृ० पा०)।
२—तिउलो (वृ०) ; विउलो (वृ० पा०)।
३—सव्वगत्तेसु (वृ) ; सव्वंगेसु य (वृ० पा)।
४—सरीर वीय अंतरे (वृ० पा०)।
५—आविलिज्ज (उ, वृ० पा०, ऋ)।
६—° विगिच्छगा (ऋ)।
७—नाना सत्थत्थ कुसला (वृ० पा०) ; अधीया...... (अ)।
८—दुक्खाओ (ऋ) ; दुक्खाउ (उ)।
९—विमोयंति (वृ०), एवं सर्वत्र।
१०—वि (उ)।
११— ° दुहट्टिया (वृ० पा०)।
१२—पा० टि० ७

२६—भायरो[1] मे महाराय! सगा जेट्ठकणिट्ठगा।
न य दुक्खा[2] विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया॥

२७—भइणीओ मे महाराय! सगा जेट्ठकणिट्ठगा।
न य दुक्खा[3] विमोयन्ति एसा मज्झ अणाहया॥

२८—भारिया मे महाराय! 'अणुरत्ता अणुव्वया'[4]।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं उरं मे परिसिंचई॥

२९—अन्नं पाणं च ण्हाणं च गन्धमल्लविलेवणं।
'मए नायमणायं वा'[5] सा बाला नोवभुंजई॥

३०—खणं पि मे महाराय! पासाओ वि[6] न फिट्टई।
न य दुक्खा विमोएइ एसा मज्झ अणाहया॥

३१—तओ हं एवमाहंसु दुक्खमा हु पुणो पुणो।
वेयणा अणुभविउं जे संसारम्मि अणन्तए॥

३२—सइं[7] च जइ मुच्चेज्जा वेयणा विउला इओ।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वए[8] अणगारियं॥

३३—एवं च चिन्तइत्ताणं पसुत्तो मि नराहिवा!
परियट्टन्तीए राईए वेयणा मे खयं गया॥

३४—तओ कल्ले पभायम्मि आपुच्छित्ताण बन्धवे।
खन्तो दन्तो निरारम्भो पव्वइओऽणगारियं॥

३५—ततो हं नाहो जाओ अप्पणो य परस्स य।
सव्वेसिं चेव भूयाणं तसाण थावराण य॥

१—भाया (उ)।
२, ३—दुक्खाओ (ऋ), दुक्खाउ (उ)।
४—अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ, वृ० पा०)।
५—तारिसं रोगमावण्णे (वृ० पा०)।
६—य (अ, आ, उ)।
७—सयं (उ, वृ०); सइयं (अ)।
८—पव्वइए (उ)।

अत्त-पदं

३६—अप्पा नई वेयरणी अप्पा मे कूडसामली।
अप्पा कामदुहा धेणू अप्पा मे नन्दणं वणं॥

३७—अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य।
अप्पा मित्तममित्तं च दुप्पट्ठियसुपट्ठिओ॥

धम्मलोव-पदं

३८—इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा!
तमेगचित्तो निहुओ सुणेहि।
नियण्ठधम्मं लहियाण वी जहा
सीयन्ति एगे वहुकायरा नरा॥

३९—जो पव्वइत्ताण महव्वयाइं
सम्मं नो फासयई[1] पमाया।
अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे
न मूलओ छिन्दइ वन्धणं से॥

४०—आउत्तया जस्स न अत्थि काइ
इरियाए भासाए तहेसणाए।
आयाणनिक्खेवदुगुंछणाए
न वीरजायं[2] अणुजाइ मग्गं॥

४१—चिरं पि से मुण्डरुई भवित्ता
अथिरव्वए तवनियमेहि भट्ठे।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता
न पारए होइ हु संपराए॥

१—फासइ (उ, ऋ)।
२—धीरजायं (सु)।

४२–'पोल्ले व'[1] मुट्ठी जह से असारे
अयन्तिए कूडकहावणे वा।
राढामणी वेरुलियप्पगासे
अमहग्घए होइ य जाणएसु॥

४३–कुसीललिंग इह धारइत्ता
इसिज्झय जीविय वूहइत्ता।
असजए सजयलप्पमाणे[2]
विणिघायमागच्छइ से चिर पि॥

४४–'विस तु पीय'[3] जह कालकूड
हणाइ सत्थ जह कुग्गहीय।
'एसे व'[4] धम्मो विसआववन्नो
हणाइ वेयाल इवाविवन्नो[5]॥

४५–जे लक्खण सुविण पउजमाणे
निमित्तकोऊहलसपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी
न गच्छई सरण तम्मि काले॥

४६–तमतमेणव उ से असीले
सया दुही विप्परियासुवेइ[6]।
सधावई नरगतिरिक्खजोणि
मोण विराहेत्तु असाहुरूवे॥

१—पोल्लार (वृ० पा०)।
२—सजयलाभमाणे (वृ० पा०)।
३—विस पिवित्ता (अ, आ), विसं पिवन्ती (वृ०)।
४—एसो वि (अ), एसो व (उ)।
५—इवाविवधणो (वृ० पा०)।
६—° समेइ (अ)।

४७—उद्देसियं कीयगडं नियागं
न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता
इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ॥

४८—न तं अरी कण्ठछेत्ता करेइ
जं से करे अप्पणिया दुरप्पा[1] ।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते
पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥

४९—निरट्ठिया नग्गरुई उ तस्स
जे उत्तमट्ठं विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए
दुहओ वि से झिज्जइ तत्थ लोए ॥

५०—एमेवऽहाछन्दकुसीलरूवे
मग्गं विराहेत्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा
निरट्ठसोया परियावमेइ ॥

निक्खेव-पदं

५१—सोच्चाण मेहावि सुभासियं इमं
अणुसासणं नाणगुणोववेयं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं
महानियण्ठाण वए पहेणं ॥

१—दुरप्पया (ऋ) ।

४२–'पोल्ले व'[1] मुट्ठी जह से असारे
अयन्तिए कूडकहावणे वा ।
राढामणी वेरुलियप्पगासे
अमहग्घए होइ य जाणएसु ॥

४३–कुसीललिंगं इह धारइत्ता
इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणे[2]
विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥

४४–'विसं तु पीयं'[3] जह कालकूडं
हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं ।
'एसे व'[4] धम्मो विसओववन्नो
हणाइ वेयाल इवाविवन्नो[5] ॥

४५–जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे
निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी
न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥

४६–तमंतमेणेव उ से असीले
सया दुही विप्परियासुवेइ[6] ।
संधावई नरगतिरिक्खजोणिं
मोणं विराहेत्तु असाहुरूवे ॥

१—पोल्लार (वृ० पा०) ।
२—संजयलाभमाणे (वृ० पा०) ।
३—विसं पिवित्ता (अ, आ) ; विसं पिवन्ती (वृ०) ।
४—एसो वि (अ) ; एसो व (उ) ।
५—इवाविवधणो (वृ० पा०) ।
६—° समेइ (अ) ।

५९–ऊससियरोमकूवो काऊण य पयाहिणं ।
अभिवन्दिऊण सिरसा अइयाओ[1] नराहिवो ॥

६०–इयरो वि गुणसमिद्धो
तिगुत्तिगुत्तो तिदण्डविरओ य ।
विहग इव विप्पमुक्को
विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—आइयो (उ) ।

५२–चरित्तमायारगुणन्निए[1] तओ
अणुत्तरं संजम पालियाणं।
निरासवे संखवियाण कम्मं
उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं॥

५३–एवुग्गदन्ते वि महातवोधणे
महामुणी महापइन्ने महायसे।
महानियण्ठिज्जमिणं महासुयं
से काहए महया वित्थरेणं॥

५४–तुट्ठो य सेणिओ राया इणमुदाहु कयंजली।
अणाहत्तं जहाभूय सुट्ठु मे उवदंसियं॥

५५–तुज्झं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं
लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी!।
तुब्भे सणाहा य सबन्धवा य
जं भे ठिया मग्गे जिणुत्तमाणं॥

५६–तं सि नाहो अणाहाणं सव्वभूयाण संजया!।
खामेमि ते महाभाग! इच्छामि अणुसासिउं॥

५७–पुच्छिऊण मए तुब्भं झाणविग्घो उ[2] जो कओ।
निमन्तिओ[3] य भोगेहिं तं सव्वं मरिसेहि मे॥

५८–एवं थुणित्ताण स रायसीहो
अणगारसीहं परमाइ भत्तिए।
'सओरोहो य सपरियणो य'[4]
धम्माणुरत्तो विमलेण चेयसा॥

१—° गुणत्तिए (अ)।
२—अ (ऋ)।
३—निमंतिया (अ, आ, इ, उ)।
४—सओरोहो सपरियणो सबंधवो (अ, आ, इ)।

९–तं पासिऊण संविग्गो[1] समुद्दपालो इणमब्बवी ।
अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥

१०–संबुद्धो सो तहिं भगवं 'परं संवेगमागओ'[2] ।
आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए[3] अणगारियं ॥

११–'जहित्तु संगं च'[4] महाकिलेसं
महन्तमोहं कसिणं भयावहं[5] ।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा
वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥

महव्वय-पदं

१२–अहिंस सच्चं च अतेणगं च
तत्तो य 'वम्भं अपरिग्गहं च'[6] ।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि
चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥

चरिया-पद

१३–सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी[7]
खन्तिक्खमे संजयबम्भयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥

[illegible]—संवेगं (उ, ऋ, वृ०) ।
[illegible]परम ० (उ) ।
[illegible]इए (उ) ।
[illegible]ज्ज सग्गंथ (वृ०) ; जहित्त ऽसंगंथ (चू०) ; जहित्त, सगंथ ०, (सु) ;
[illegible] संगं च, जहाय संगं च (वृ० पा०) ।
[illegible]ं (वृ०, चू०) ।
[illegible]रिग्गहं च (वृ० पा०) ।
[illegible] (वृ० पा०) ।

एगविसइम अज्झयण

समुद्दपालीयं

उक्खेव-पद

१–चम्पाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए ।
महावीरस्स भगवओ सीसे सो उ महप्पणो ॥

२–निग्गन्थे पावयणे सावए से विकोविए ।
पोएण ववहरन्ते पिहुण्ड नगरमागए ॥

३–पिहुण्डे ववहरन्तस्स वाणिओ देइ धूयर ।
त ससत्त पइगिज्झ सदेसमह पत्थिओ ॥

४–अह पालियस्स धरणी समुद्दमि पसवई ।
अह 'दारए तहिं'[1] जाए समुद्दपालि त्ति नामए ॥

५–खेमेण आगए चम्प सावए वाणिए घर ।
सवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए ॥

६–बावत्तरि कलाओ य सिक्खए[2] नीइकोविए ।
जोव्वणण य सपन्ने[3] सुरूवे पियदसणे ॥

७–तस्स रूववड भज्ज पिया आणेइ रूविणि ।
पासाए कीलए रम्मे देवो दोगुन्दओ जहा ॥

८–अह अन्नया कयाई पासायालोयणे ठिओ ।
वज्झमण्डणसोभाग वज्झ पासइ वज्झग ॥

१—वालए° (उ), दालए तम्मि (ऋ) ।
२—सिविखए (उ, ऋ, वृ०) , सिक्खए (वृ० पा०) ।
३—अप्फुण्णे (वृ०) , सम्पन्ने (वृ० पा०) ।

९–तं पासिऊण संविग्गो[1] समुद्दपालो इणमब्बवी ।
अहोऽसुभाण कम्माणं निज्जाणं पावगं इमं ॥

१०–संबुद्धो सो तहिं भगवं 'परं संवेगमागओ'[2] ।
आपुच्छऽम्मापियरो पव्वए[3] अणगारियं ॥

११–'जहित्तु संगं च'[4] महाकिलेसं
महन्तमोहं कसिणं भयावहं[5] ।
परियायधम्मं चऽभिरोयएज्जा
वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥

महव्वय-पदं

१२–अहिंस सच्चं च अतेणगं च
तत्तो य 'बम्भं अपरिग्गहं च'[6] ।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाणि
चरिज्ज धम्मं जिणदेसियं विऊ ॥

चरिया-पदं

१३–सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकम्पी[7]
खन्तिक्खमे संजयबम्भयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयन्तो
चरिज्ज भिक्खू सुसमाहिइन्दिए ॥

१—संवेगं (उ, ऋ, वृ०) ।
२—परम ० (उ) ।
३—पव्वइए (उ) ।
४—जहिज्ज सग्गंथ (वृ०) ; जहित्तु‿संगंथ (चू०) ; जहित्तु सग्गंथ ० (सु) ; जहित्तु संगं च, जहाय संगं च (वृ० पा०) ।
५—भयाणगं (वृ०, चू०) ।
६—अव्वंभ परिग्गहं च (वृ० पा०) ।
७—दयाणुकंपो (वृ० पा०) ।

१४–कालेण कालं विहरेज्ज रट्ठे[1]
वलावलं जाणिय अप्पणो य[2] ।
सीहो व सद्दे‍ण न संतसेज्जा
वयजोग सुच्चा न असब्भमाहु ॥

१५–उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा
पियमप्पियं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोयएज्जा
न यावि पूयं गरहं च संजए ॥

१६–अणेगछन्दाइह[3] माणवेहिं
जे भावओ संपगरेइ[4] भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइन्ति[5] भीमा
दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥

१७–परीसहा दुव्विसहा अणेगे
सीयन्ति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू
संगामसीसे इव नागराया ॥

१८–सीओसिणा दंसमसा य फासा
आयंका विविहा फुसन्ति देहं ।
अकुक्कुओ[6] तत्थऽहियासएज्जा
रयाइं[7] खेवेज्ज पुरेकडाइं ॥

१–रिट्ठे (ऋ) ।
२–उ (अ) ।
३–° छंदामिह (वृ०) ।
४–सोपगरेइ (वृ०) ।
५–उवेन्ति (वृ० पा०) ।
६–अक्ककरे (वृ० पा०, चू०) ।
७–रज्जाइ (उ) ।

१९–पहाय रागं च तहेव दोसं
मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएण अकम्पमाणो
परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥

२०–अणुन्नए नावणए महेसी
न यावि पूयं गरहं च संजए ।
स उज्जुभावं पडिवज्ज संजए
निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥

२१–अरइरइसहे पहीणसंथवे
विरए आयहिए पहाणवं ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई
छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥

२२–विवित्तलयणाइ भएज्ज ताई[1]
निरोवलेवाइ असंथडाइं ।
इसीहि चिण्णाइ महायसेहिं
काएण फासेज्ज परीसहाइं ॥

२३–सन्नाणनाणोवगए[2] महेसी
अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरेनाणधरे[3] जसंसी
ओभासई सूरिए वन्तलिक्खे[4] ॥

१—ताया (ऋ) ।
२—सन्नाईणं ० (ऋ) ; सन्नाण ० (वृ० पा०) ; सनाण ० (वृ०) ।
३—गुणुत्तरे ० (वृ० पा०) ।
४—वंतलिक्खं (अ) ।

निक्खेव-पद

२४—दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं
निरंगणे[1] सव्वओ विप्पमुक्के।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोघं
समुद्दपाले 'अपुणागमं गए'[2]॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—निरजणे (वृ०), निरगणे (वृ० पा०)।
२—°गइ गउ (अ, चू०, ऋ, सु)।

बाइसमं अज्झयणं

रहनेमिज्जं

उक्खेव-पदं

१—सोरियपुरंमि नयरे आसि राया महिड्ढिए ।
वसुदेवे त्ति नामेणं रायलक्खणसंजुए ॥

२—तस्स भज्जा दुवे आसी रोहिणी देवई तहा ।
तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता इट्ठा रामकेसवा ॥

३—सोरियपुरंमि नयरे आसी राया महिड्ढिए ।
समुद्दविजए नामं रायलक्खणसंजुए ॥

४—तस्स भज्जा सिवा नाम तीसे पुत्तो महायसो ।
भगवं अरिट्ठनेमि त्ति लोगनाहे दमीसरे ॥

५—सोऽरिट्ठनेमिनामो उ लक्खणस्सरसंजुओ[1] ।
अट्ठसहस्सलक्खणधरो गोयमो कालगच्छवी ॥

निज्जाण-पदं

६—वज्जरिसहसंघयणो समचउरंसो झसोयरो ।
तस्स राईमइं कन्नं भज्जं जायइ केसवो ॥

७—अह सा रायवरकन्ना सुसीला चारुपेहिणी ।
सव्वलक्खणसंपुन्ना[2] विज्जुसोयामणिप्पभा ॥

८—अहाह जणओ तीसे वासुदेवं महिड्ढियं ।
इहागच्छऊ कुमारो जा से कन्नं दलाम हं ॥

१—वंजणस्सर° (अ, वृ° पा°)।
२—°संपन्ना (उ, ऋ)।

९—सव्वोसहीहिं ण्हविओ कयकोउयमगलो ।
दिव्वजुयलपरिहिओ आभरणेहिं विभूसिओ[1]॥

१०—मत्त च गन्धहत्थिं[2] वासुदेवस्स जेट्ठग ।
आरूढो सोहए अहिय सिरे चूडामणी जहा ॥

११—'अह ऊसिएण'[3] छत्तेण चामराहि य सोहिए ।
दसारचक्केण य सो सव्वओ परिवारिओ ॥

१२—चउरगिणीए सेनाए रइयाए जहक्कम ।
तुरियाण सन्निनाएण दिव्वेण गगण फुसे ॥

१३—एयारिसीए इड्ढीए जुईए उत्तिमाए य ।
नियगाओ भवणाओ निज्जाओ वण्हिपुगवो ॥

१४—अह सो तत्थ निज्जन्तो दिस्स पाणे भयद्दुए ।
वाडेहिं पजरेहिं च सन्निरुद्धे[4] सुदुक्खिए ॥

सवेग-पद

१५—जीवियन्त तु सपत्ते मसट्ठा भक्खियव्वए ।
पासेत्ता से महापन्ने सारहिं इणमब्ववी ॥

१६—कस्स अट्ठा 'इमे पाणा'[5] एए सव्वे सुहेसिणो ।
वाडेहिं पजरेहिं च सन्निरुद्धा य अच्छहिं ? ॥

१७—अह सारही तओ भणइ एए भद्दा उ पाणिणो ।
तुज्झ विवाहकज्जमि भोयावेउ वहु जण ॥

१—विभूसई (ऋ) ।
२—°हत्थि च (अ, आ, इ उ) ।
३—रो ओसिएण (वृ० पा०) ।
४—बद्धरुद्धे (वृ० पा०) ।
५—बहुपाणे (वृ० पा०) ।

१८—सोऊण तस्स[1] वयणं बहुपाणिविणासणं[2] ।
चिन्तेइ से महापन्ने साणुक्कोसे जिएहि उ ॥

१९—जइ मज्झ कारणा एए 'हम्मिहिंति बहू'[3] जिया ।
न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥

२०—सो कुण्डलाण जुयलं
सुत्तगं च महायसो ।
आभरणाणि य सव्वाणि[4]
सारहिस्स पणामए ॥

अभिनिक्खमण-पदं

२१—मणपरिणामे य कए
देवा य जहोइयं समोइण्णा[5] ।
सव्वड्ढीए सपरिसा
निक्खमणं तस्स काउं जे ॥

२२—देवमणुस्सपरिवुडो
सीयारयणं[6] तओ समारूढो ।
निक्खमिय बारगाओ
रेवययंमि ट्ठिओ भगवं ॥

२३—उज्जाणं संपत्तो
ओइण्णो उत्तिमाओ सीयाओ[7] ।
साहस्सीए परिवुडो
अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥

१—तस्स सो (उ, ऋ) ।
२—बहुपाण° (वृ०) ।
३—हम्मंति सुबहू (उ, ऋ, वृ०) ; हम्मिहिंति सु बहू (वृ० पा०) ।
४—सेसाणि (उ, ऋ) ।
५—समोवडिया (वृ० पा०) ।
६, ७—सीइया° (ऋ) ।

२४—अह से सुगन्धगन्धिए[1] तुरियं मउयकुंचिए[2] ।
सयमेव लुचई केसे पंचमुट्ठीहिं[3] समाहिओ ॥

आसीवाय पद

२५—वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं ।
इच्छियमणोरहे तुरियं पावेसू[4] तं दमीसरा ! ॥
२६—नाणेणं दंसणेणं च चरित्तेण तहेव[5] य ।
खन्तीए मुत्तीए[6] वड्ढमाणो भवाहि य ॥
२७—एवं ते रामकेसवा दसारा य बहू जणा ।
अरिट्ठणेमिं वन्दित्ता अइगया बारगापुरिं ॥

राईमई-पद

२८—सोऊण रायकन्ना पव्वज्जं सा जिणस्स उ ।
नीहासा य निराणन्दा सोगेण उ समुत्थया[7] ॥
२९—राईमई विचिन्तेइ धिरत्थु मम जीवियं ।
जा हं तेण परिच्चत्ता 'सेयं पव्वइउं'[8] मम ॥
३०—अह सा भमरसन्निभे[9] कुच्चफणगपसाहिए[10] ।
सयमेव लुचई केसे धिइमन्ता ववस्सिया[11] ॥

१—सुगंधि० (ऋ, वृ०) ।
२—मओए० (अ) ।
३—पंचमुट्ठाहिं (वृ०) ।
४—पावसु (वृ०) ।
५—तवेण (सु) ।
६—मुत्तीए चेव (उ) ।
७—समुत्थिया (अ), समुच्छया (आ) ।
८—सेउं पव्वइउं (ऋ); से ओ पव्वइओ (उ), सेउं पव्वइयं (अ) ।
९—० संकासे (अ) ।
१०—० फलग० (अ) ।
११—वि सवस्सिया (अ) ।

३१–वासुदेवो य णं भणइ लुत्तकेसं जिइन्दियं।
संसारसागरं घोरं तर कन्ने! लहुं लहुं॥
३२–सा पव्वइया सन्ती पव्वावेसी[1] तहिं बहुं।
सयणं परियणं चेव सीलवन्ता बहुस्सुया॥
३३–गिरिं रेवययं[2] जन्ती वासेणुल्ला उ अन्तरा।
वासन्ते अन्धयारंमि अन्तो लयणस्स सा ठिया॥
३४–चीवराइं विसारन्ती जहा जाय त्ति पासिया।
रहनेमी भग्गचित्तो पच्छा दिट्ठो य तीइ वि॥
३५–भीया य सा तहिं दट्ठुं एगन्ते संजयं तयं।
बाहाहिं काउं संगोफं वेवमाणी निसीयई॥
३६–अह सो वि रायपुत्तो समुद्दविजयंगओ।
भीयं पवेवियं दट्ठुं इमं वक्कं उदाहरे॥
३७–रहनेमी अहं भद्दे! सुरूवे! चारुभासिणि!।
ममं[3] भयाहि सुयणू! न ते पीला भविस्सई॥
३८–एहि ता भुंजिमो भोए माणुस्सं खु सुदुल्लहं।
'भुत्तभोगा तओ'[4] पच्छा जिणमग्गं चरिस्सिमो॥
३९–दट्ठूण रहनेमिं तं भग्गुज्जोयपराइयं।
राईमई असम्भन्ता अप्पाणं संवरे तहिं॥
४०–अह सा रायवरकन्ना सुट्ठिया नियमव्वए।
जाई कुलं च सीलं च रक्खमाणी तयं वए॥
४१–जइ सि रूवेण वेसमणो ललिएण नलकूवरो।
तहा वि ते न इच्छामि जइ सि सक्खं पुरन्दरो॥

१—पव्वावेती (अ)।
२—रवेइयं (अ)।
३—मम (वृ० पा०)।
४—भुत्तभोगी तओ (उ, ऋ); भुत्तभोगा पुणो (वृ०)।

[पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं ।
नेच्छन्ति वंतयं भोत्तुं कुले जाया अगंधणे ॥][1]

४२–धिरत्थु ते जसोकामी! जो तं जीवियकारणा ।
वन्तं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥

४३–अहं च भोयरायस्स तं च सि अन्धगवण्हिणो ।
मा कुले गन्धणा होमो संजमं निहुओ चर ॥

४४–जइ तं काहिसि भावं जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥

४५–गोवालो भण्डवालो[2] वा
जहा तद्दव्वऽणिस्सरो ।
एवं अणिस्सरो तं पि
सामण्णस्स भविस्ससि ॥

[कोहं माणं निगिण्हित्ता मायं लोभं च सव्वसो ।
इन्दियाइं वसे काउं अप्पाणं उवसंहरे ॥][3]

४६–तीसे सो वयणं सोच्चा संजयाए सुभासियं ।
अंकुसेण जहा नागो धम्मे संपडिवाइओ ॥

४७–मणगुत्तो वयगुत्तो कायगुत्तो जिइन्दिओ ।
सामण्णं निच्चलं फासे जावज्जीवं दढव्वओ ॥

४८–उग्गं तवं चरित्ताणं जाया दोण्णि वि केवली ।
सव्वं कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥

१–यह श्लोक चूर्णि और बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।
२–दंडपाओ (वृ० पा०) ।
३–यह श्लोक चूर्णि और बृहद् वृत्ति में व्याख्यात नहीं है ।

निगमन-पदं

४९—एवं करेन्ति संबुद्धा पण्डिया पवियक्खणा ।
विणियट्टन्ति भोगेसु जहा सो पुरिसोत्तमो ॥

—त्ति बेमि ॥

*

तेविसइम अज्झयण

केसिगोयमिज्जं

उक्खेव-पद

१—जिणे पासे त्ति नामेण 'अरहा लोगपूइओ ।
सवुद्धप्पा य सव्वन्नू धम्मतित्थयरे जिणे'[1] ॥
२—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे ।
केसीकुमारसमणे विज्जाचरणपारगे ॥
३—ओहिनाणसुए बुद्धे सीससघसमाउले ।
गामाणुगाम रीयन्ते सावत्थि नगरिमागए ॥
४—तिन्दुय नाम उज्जाण तम्मी नगरमण्डले ।
फासुए सिज्जसथारे तत्थ वासमुवागए ॥
५—अह तेणेव कालेण धम्मतित्थयरे जिणे ।
भगव वद्धमाणो त्ति सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥
६—तस्स लोगपईवस्स आसि सीसे महायसे[2] ।
भगव गोयमे नाम विज्जाचरणपारगे ॥
७—वारसगविऊ बुद्धे सीससघसमाउले ।
गामाणुगाम रीयन्ते से वि सावत्थिमागए ॥
८—कोट्ठग नाम उज्जाण तम्मी नयरमण्डले ।
फासुए सिज्जसथारे तत्थ वासमुवागए ॥
९—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ वि तत्थ विहरिंसु अल्लीणा[3] सुसमाहिया ॥

१— अरिहा लोगविस्सुए ।
सव्वन्नू सव्वदस्सी य धम्मतित्थस्स देसए ॥ (वृ० पा०) ।
२—महिड्डिए (अ) ।
३—अलीणा (वृ० पा०) ।

१०—उभओ सीससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं ।
तत्थ चिन्ता समुप्पन्ना गुणवन्ताण ताइणं ॥

११—केरिसो वा इमो धम्मो ? इमो धम्मो व केरिसो ?।
आयारधम्मपणिही इमा वा सा व केरिसी ? ॥

१२—चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी ॥

१३—अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं ? ॥

१४—अह ते तत्थ सीसाणं विन्नाय पवितक्कियं ।
समागमे कयमई उभओ केसिगोयमा ॥

१५—गोयमे पडिरूवन्नू सीससंघसमाउले ।
जेट्ठं कुलमवेक्खन्तो तिन्दुयं वणमागओ ॥

१६—केसीकुमारसमणे गोयमं दिस्समागयं ।
पडिरूवं पडिवत्तिं सम्मं संपडिवज्जई ॥

१७—पलालं फासुयं तत्थ पंचमं कुसतणाणि य ।
गोयमस्स निसेज्जाए खिप्पं संपणामए ॥

१८—केसीकुमारसमणे गोयमे य महायसे ।
उभओ निसण्णा सोहन्ति चन्दसूरसमप्पभा ॥

१९—समागया बहू तत्थ पासण्डा 'कोउगा मिगा'[1] ।
गिहत्थाणं अणेगाओ साहस्सीओ समागया ॥

२०—देवदाणवगन्धव्वा जक्खरक्खसकिन्नरा ।
अदिस्साणं च भूयाणं आसी तत्थ समागमो ॥

२१—पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

१—कोउगासिया (वृ०) ; कोउगा मिगा (वृ० पा०) ।

२२–पुच्छ भन्ते! जहिच्छं ते केसिं गोयममब्बवी।
तओ केसी अणुन्नाए गोयमं इणमब्बवी॥

चाउज्जाम-पदं

२३–चाउज्जामो य जो धम्मो जो इमो पंचसिक्खिओ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महामुणी॥

२४–एगकज्जपवन्नाण विसेसे किं नु कारणं?।
धम्मे दुविहे मेहावि! कहं[1] विप्पचओ न ते?॥

२५–तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी।
पन्ना समिक्खए धम्मं तत्तं तत्तविणिच्छयं[2]॥

२६–पुरिमा उज्जुजडा[3] उ वंकजडा य पच्छिमा।
मज्झिमा 'उज्जुपन्ना य'[4] तेण धम्मे दुहा कए॥

२७–पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ
चरिमाणं दुरणुपालओ।
कप्पो मज्झिमगाणं तु
सुविसोज्झो सुपालओ॥

२८–साहु गोयम! 'पन्ना ते'[5]
छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं
तं मे कहसु गोयमा!॥

१–कहिं (अ)।
२–°विणिच्छियं (उ, ऋ)।
३–उज्जुकडा (अ)।
४–उज्जुपन्नाओ (उ, ऋ)।
५–पन्नाए (वृ० पा०)।

अचेलग-पदं

२९—अचेलगो य जो धम्मो जो इमो सन्तरुत्तरो ।
देसिओ वद्धमाणेण पासेण य महाजसा[1] ॥

३०—एगकज्जपवन्नाणं विसेसे किं नु कारणं? ।
लिंगे दुविहे मेहावि! कहं विप्पच्चओ न ते? ॥

३१—केसिमेवं बुवाणं तु गोयमो इणमब्बवी ।
विन्नाणेण समागम्म धम्मसाहणमिच्छियं ॥

३२—पच्चयत्थं च लोगस्स नाणाविहविगप्पणं ।
जत्तत्थं गहणत्थं च लोगे लिंगप्पओयणं ॥

३३—अह भवे पइन्ना उ मोक्खसब्भूयसाहणे[2] ।
नाणं च दंसणं चेव चरित्तं चेव निच्छए ॥

३४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

विजय-पदं

३५—अणेगाणं सहस्साणं मज्झे चिट्ठसि गोयमा! ।
ते य ते अहिगच्छन्ति कहं ते निज्जिया तुमे? ॥

३६—एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्ताणं सव्वसत्तू जिणामहं ॥

३७—सत्तू य इइ के वुत्ते? केसी गोयममब्बवी ।
तओ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

३८—एगप्पा अजिए सत्तू कसाया इन्दियाणि य ।
ते जिणित्तु[3] जहानायं विहरामि अहं मुणी! ॥

१—महामुणी (वृ०); महाजसा (वृ० पा०) ।
२—मुक्ख संभूय ° (उ, ऋ); मोक्खे सब्भूय ° (अ) ।
३—जहित्तु (अ) ।

३९–साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥
४०–दीसन्ति वहवे लोए पासवद्धा सरीरिणो।
मुक्कपासो लहुब्भूओ कहं तं विहरसी? मुणी! ॥

पास-पद

४१–ते पासे सव्वसो छित्ता निहन्तूण उवायओ।
मुक्कपासो लहुब्भूओ विहरामि अहं मुणी! ॥
४२–पासा य इइ के वुत्ता? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
४३–रागद्दोसादओ तिव्वा नेहपासा भयंकरा।
ते छिन्दित्तु जहानाय विहरामि जहक्कमं ॥
४४–साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो।
अन्नो वि ससओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

लया-पद

४५–अन्तोहियियसभूया लया चिट्ठइ गोयमा!।
फलेइ विसभक्खीणि[1] सा उ उद्धरिया कहं? ॥
४६–त लयं सव्वसो छित्ता उद्धरित्ता समूलियं।
विहरामि जहानाय मुक्को मि विसभक्खणं ॥
४७–लया य इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥
४८–भवतण्हा लया वुत्ता भीमा भीमफलोदया।
तमुद्धरित्तु[2] जहानाय विहरामि महामुणी! ॥

१–विसभक्खीणं (वृ०)।
२–तमुच्छित्त् (उ, ऋ); तमुद्धरित्ता (आ)।

४९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

अग्गी-पदं

५०—संपज्जलिया घोरा अग्गी चिट्ठइ गोयमा ! ।
जे डहन्ति सरीरत्था[1] कहं विज्झाविया तुमे ? ॥

५१—महामेहप्पसूयाओ गिज्झ वारि जलुत्तमं ।
'सिंचामि सययं देहं'[2] सित्ता नो व डहन्ति मे ॥

५२—अग्गी य इइ के वुत्ता केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

५३—कसाया अग्गिणो वुत्ता सुयसीलतवो जलं ।
सुयधाराभिहया सन्ता भिन्ना हु न डहन्ति मे ॥

५४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा ! ॥

दुट्ठस्स-पदं

५५—अयं साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।
जंसि गोयम ! आरूढो कहं तेण न हीरसि ? ॥

५६—पधावन्तं निगिण्हामि सुयरस्सीसमाहियं ।
न मे गच्छइ उम्मग्गं मग्गं च पडिवज्जई ॥

५७—अस्से य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं[3] बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

५८—मणो साहसिओ भीमो दुट्ठस्सो परिधावई ।
तं सम्मं निगिण्हामि धम्मसिक्खाए कन्थगं ॥

१—जा डहेति सरीरत्था (वृ० पा०) ।
२—सिंचामि सययं ते ओ (ते उ) (उ, ऋ, वृ) ; सिंचामि सययं देहा, सिंचामि सययं तं तु (वृ० पा०) ।
३—तओ केसिं (अ) ।

५९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो ।
अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहसु गोयमा ! ॥

कुप्पह-पद

६०—कुप्पहा वहवो लोए जेहिं नासन्ति जतवो ।
अद्धाणे कह वट्टन्ते त न नस्ससि ? गोयमा ! ॥

६१—जे य मग्गेण गच्छन्ति 'जे य उम्मग्गपट्ठिया'[1] ।
ते सव्वे विइया मज्झ तो न नस्सामह[2] मुणी ॥

६२—मग्गे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥

६३—कुप्पवयणपासण्डी सव्वे उम्मग्गपट्ठिया ।
सम्मग्ग तु जिणक्खाय एस मग्गे हि[3] उत्तमे ॥

६४—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो ।
अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहसु गोयमा ! ॥

दीव-पद

६५—महाउदगवेगेण वुज्झमाणाण पाणिण ।
सरण गई पइट्ठा य दीव 'क मन्नसी ?'[4] मुणी ! ॥

६६—अत्थि एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ ।
महाउदगवेगस्स गई तत्थ न विज्जई ॥

६७—दीवे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥

१—जे उम्मग्ग पइट्ठिया (अ) ।
२—नस्सामिहं (अ) ।
३—हे (अ) ।

६८—जरामरणवेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं ।
धम्मो दीवो 'पइट्ठा य'[1] गई सरणमुत्तमं ॥

६९—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

नावा-पदं

७०—अण्णवंसि महोहंसि नावा विपरिधावई ।
जंसि गोयममारूढो कहं पारं गमिस्ससि? ॥

७१—जा उ अस्साविणी[2] नावा
न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा
सा उ पारस्स गामिणी ॥

७२—नावा य इइ का वुत्ता? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेवं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥

७३—सरीरमाहु नाव त्ति जीवो वुच्चइ नाविओ ।
संसारो अण्णवो वुत्तो जं तरन्ति महेसिणो ॥

७४—साहु गोयम! पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोयमा! ॥

उज्जोय-पदं

७५—अन्धयारे तमे घोरे चिट्ठन्ति पाणिणो बहू ।
को करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं? ॥

७६—उग्गओ विमलो भाणू सव्वलोगप्पभंकरो ।
सो करिस्सइ उज्जोयं सव्वलोगंमि पाणिणं ॥

१—पत्तिट्ठा णं (अ) ।
२—सस्साविणी (वृ० पा०) ।

७७—भाणू य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥

७८—उग्गओ खीणससारो सव्वन्नू जिणभक्खरो ।
सो करिस्सइ उज्जोय सव्वलोयमि पाणिण ॥

७९—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो ।
अन्नो वि ससओ मज्झ त मे कहसु गोयमा ! ॥

ठाण-पद

८०—सारीरमाणसे दुक्खे वज्झमाणाण[1] पाणिण ।
खेम सिवमणावाह ठाण किं मन्नसी मुणी ? ॥

८१—अत्थि एग धुव ठाण लोगग्गमि दुरारुह ।
जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेयणा तहा ॥

८२—ठाणे य इइ के वुत्ते ? केसी गोयममब्बवी ।
केसिमेव बुवत तु गोयमो इणमब्बवी ॥

८३—निव्वाण ति अवाह ति सिद्धी लोगग्गमेव य ।
खेम सिव अणावाह ज चरन्ति महेसिणो ॥

८४—त ठाण सासयवास लोगग्गमि दुरारुह ।
ज सपत्ता न सोयन्ति भवोहन्तकरा मुणी ॥

८५—साहु गोयम ! पन्ना ते छिन्नो मे ससओ इमो ।
नमो ते ससयाईय ! सव्वसुत्तमहोयही ! ॥

८६—एव तु ससए छिन्ने केसी घोरपरक्कमे ।
'अभिवन्दित्ता सिरसा गोयम तु महायस'[2] ॥

१—पच्चमाणाण (वृ० पा०) ।
२—वंदित् पजलिउडो गोतम तु महामुणी (चू०) ।

८७—'पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ।
पुरिमस्स पच्छिमंमी[1] मग्गे तत्थ सुहावहे ॥'[2]

निक्खेव-पदं

८८—केसीगोयमओ निच्चं तम्मि आसि समागमे।
सुयसीलसमुक्करिसो महत्थऽत्थविणिच्छओ ॥

८९—तोसिया परिसा सव्वा 'सम्मग्गं [3]समुवट्ठिया'[4]।
'संथुया ते पसीयन्तु'[5] भयवं केसिगोयमे ॥

—त्ति बेमि ॥

१—पच्छिमस्सी (अ)।

२—पंच महव्वय जुत्तं भावतो पडिवज्जिया
धम्मं पुरिमस्स पच्छिमंमि मग्गे सुहावहे ॥ (चू०

३—पज्जुवट्ठिया (वृ० पा०)।

४—सम्मत्ते पज्जुवत्थिया (चू०)।

५—संजुता ते पदोसतु (चू०)।

९—'कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया[1] ।
हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव च ॥'[2]

१०—एयाइं अट्ठ ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ॥

११—'गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥'[3]

१२—उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयंमि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ॥

१३—ओहोवहोवग्गहियं भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तो य पउंजेज्ज इमं विहिं ॥

१४—चक्खुसा पडिलेहित्ता पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ॥

१५—उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं अन्नं वावि तहाविहं ॥

१६—अणावायमसंलोए अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए आवाए चेय संलोए ॥

१७—अणावायमसंलोए परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ॥

१८—वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने विलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ॥

१—उवउत्तओ (अ)।

२—कोहे य माणे य माया य लोभे य तहेव य ।
हास भय मोहरीए विकहा य तहेव य ॥ (वृ० पा०)।

३—गवेसणाए गहणेणं परिभोगेसणाणि य ।
आहारमुवहिं सेज्ज एए तिन्नि विसोहिय ॥ (वृ० पा०)।

चउविसइम अज्झयण

पवयण-माया

उक्खेव-पद

१–अट्ठ पवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य।
पचेव य समिईओ तओ गुत्तीओ आहिया॥
२–इरियाभासेसणादाणे उच्चारे समिई इय।
मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती य[1] अट्ठमा॥
३–एयाओ अट्ठ समिईओ समासेण वियाहिया।
दुवालसग जिणक्खाय माय जत्थ उ पवयण॥

समिइ पद

४–आलम्बणेण कालेण मग्गेण जयणाइ य।
चउकारणपरिसुद्ध सजए इरिय रिए॥
५–तत्थ आलबण नाण दसण चरण तहा।
काले य दिवसे वुत्ते मग्गे उप्पहवज्जिए[2]॥
६–दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा।
जयणा[3] चउव्विहा वुत्ता त मे कित्तयओ सुण॥
७–दव्वओ चक्खुसा पेहे जुगमित्त च खेत्तओ।
कालओ जाव रीएज्जा उवउत्ते य भावओ॥
८–इन्दियत्थे विवज्जित्ता सज्झाय चव पचहा।
तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे उवउत्ते इरिय[4] रिए॥

१—उ (अ)।
२—दुप्पह वज्जिए (अ)।
३—जायणा (ऋ)।
४—रियं (ऋ)।

९—'कोहे माणे य मायाए लोभे य उवउत्तया[1] ।
हासे भए मोहरिए विगहासु तहेव च ॥'[2]

१०—एयाइं अट्ठ ठाणाइं परिवज्जित्तु संजए ।
असावज्जं मियं काले भासं भासेज्ज पन्नवं ॥

११—'गवेसणाए गहणे य परिभोगेसणा य जा ।
आहारोवहिसेज्जाए एए तिन्नि विसोहए ॥'[3]

१२—उग्गमुप्पायणं पढमे बीए सोहेज्ज एसणं ।
परिभोयंमि चउक्कं विसोहेज्ज जयं जई ॥

१३—ओहोवहोवग्गहियं भण्डगं दुविहं मुणी ।
गिण्हन्तो निक्खिवन्तो य पउंजेज्ज इमं विहिं ॥

१४—चक्खुसा पडिलेहित्ता पमज्जेज्ज जयं जई ।
आइए निक्खिवेज्जा वा दुहओ वि समिए सया ॥

१५—उच्चारं पासवणं खेलं सिंघाणजल्लियं ।
आहारं उवहिं देहं अन्नं वावि तहाविहं ॥

१६—अणावायमसंलोए अणावाए चेव होइ संलोए ।
आवायमसंलोए आवाए चेय संलोए ॥

१७—अणावायमसंलोए परस्सऽणुवघाइए ।
समे अज्झुसिरे यावि अचिरकालकयंमि य ॥

१८—वित्थिण्णे दूरमोगाढे नासन्ने बिलवज्जिए ।
तसपाणबीयरहिए उच्चाराईणि वोसिरे ॥

१—उवउत्तओ (अ) ।
२—कोहे य माणे य माया य लोभे य तहेव य ।
हास भय मोहरीए विकहा य तहेव य ॥ (वृ० पा०) ।
३—गवेसणाए गहणेणं परिभोगेसणाणि य ।
आहारमुवहिं सेज्ज एए तिन्नि विसोहिय ॥ (वृ० पा०) ।

१९—एयाओ पंच समिईओ समासेण वियाहिया।
एत्तो य तओ गुत्तीओ वोच्छामि अणुपुव्वसो॥

गुत्ति पद

२०—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा मणगुत्ती चउव्विहा॥
२१—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य।
मणं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई॥
२२—सच्चा तहेव मोसा य सच्चामोसा तहेव य।
चउत्थी असच्चमोसा वइगुत्ती चउव्विहा॥
२३—संरम्भसमारम्भे आरम्भे य तहेव य।
वयं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई॥
२४—ठाणे निसीयणे चेव तहेव य तुयट्टणे।
उल्लंघणपल्लघणे इन्दियाण य जुंजणे॥
२५—संरम्भसमारम्भे आरम्भम्मि तहेव य।
कायं पवत्तमाणं तु नियत्तेज्ज जयं जई॥

निक्खेव पद

२६—एयाओ पंच समिईओ चरणस्स य पवत्तणे।
गुत्ती नियत्तणे वुत्ता असुभत्थेसु सव्वसो॥
२७—एया पवयणमाया जे सम्मं आयरे मुणी।
से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए॥
—त्ति बेमि॥

*

पंचविंसइमं अज्झयणं

जन्नइज्जं

अणेगभदं

१—माहणकुलसंभूओ आसि विप्पो महायसो ।
जायाई जमजन्नंमि जयघोसे त्ति नामओ ॥

२—इन्दियग्गामनिग्गाही मग्गगामी महामुणी ।
गामाणुगामं रीयन्ते पत्ते वाणारसिं पुरिं ॥

३—वाणारसीए[1] बहिया उज्जाणंमि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे तत्थ वासमुवागए ॥

४—अह तेणेव कालेणं पुरीए तत्थ माहणे ।
विजयघोसे त्ति नामेण जन्नं जयइ वेयवी ॥

५—अह से तत्थ अणगारे मासक्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जन्नंमि भिक्खमट्ठा[2] उवट्ठिए ॥

६—समुवट्ठियं तहिं सन्तं जायगो पडिसेहए ।
न हु दाहामि ते भिक्खं भिक्खू जायाहि अन्नओ ॥

७—जे य वेयविऊ विप्पा जन्नट्ठा य 'जे दिया'[3] ।
जोइसंगविऊ जे य जे य धम्माण पारगा ॥

८—जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
तेसिं अन्नमिणं देयं भो भिक्खू सव्वकामियं ॥

९—सो 'एवं तत्थ'[4] पडिसिद्धो जायगेण महामुणी ।
न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो उत्तमट्ठगवेसओ ॥

१—वाणारसीय (अ, वृ०) ।
२—भिक्खस्स अट्ठा (वृ० पा०) ।
३—जिइंदिया (आ) ।
४—तत्थ एव (वृ०) ।

१०—नऽन्नट्ठ पाणहेउ वा न वि निव्वाहणाय वा ।
तेसिं विमोक्खणट्ठाए इम वयणमब्बवी ॥

मुख-पद

११—नवि जाणसि वेयमुह नवि जन्नाण ज मुह ।
नक्खत्ताण मुह ज च ज च धम्माण वा मुह ।
१२—जे समत्था समुद्धत्तु पर अप्पाणमेव य ।
न ते तुम वियाणासि अह जाणासि तो भण ॥
१३—तस्सऽक्खेवपमोक्ख च अचयन्तो तहिं दिओ ।
सपरिसो पजली होउ पुच्छई त महामुणिं ॥
१४—वेयाण च मुह बूहि बूहि जन्नाण ज मुह ।
नक्खत्ताण मुह बूहि बूहि धम्माण वा मुह ॥
१५—जे समत्था समुद्धत्तु पर अप्पाणमेव य ।
एय मे ससय सव्व साहू कहय[1] पुच्छिओ ॥
१६—अग्गिहोत्तमुहा वेया जन्नट्ठी वेयसा मुह ।
नक्खत्ताण मुह चन्दो धम्माण कासवो मुह ॥
१७—'जहा चन्द गहाईया चिट्ठन्ती पजलीउडा ।
वन्दमाणा नमसन्ता उत्तम मणहारिणो ॥'[2]
१८—अजाणगा जन्नवाई विज्जामाहणसपया ।
गूढा[3] सज्झायतवसा भासच्छन्ना इवऽग्गिणो ॥

माहण-पद

१९—जो लोए बम्भणो वुत्तो अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसदिट्ठ त वय बूम माहण ॥

१—कहइ (अ) ।
२—जहा चन्दं गहाईये चिट्ठन्ती पंजलीउडा ।
णमसमाणा वंदंती उद्धत्तमणहारिणो [उद्धत्तमणगारिणो] ॥ (बृ० पा०) ।
३—मूढा (बृ०), गूढा (बृ० पा०) ।

२०—जो न सज्जइ आगन्तुं पव्वयन्तो न सोयई[1] ।
रमए अज्जवयणंमि तं वयं बूम माहणं ॥

२१—जायरूवं जहामट्ठं[2] निद्धन्तमलपावगं ।
रागद्दोसभयाईयं तं वयं बूम माहणं ॥

[तवस्सियं किसं दन्तं अवचियमंससोणियं ।
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं तं वयं बूम माहणं ॥][3]

२२—तसपाणे वियाणेत्ता संगहेण 'य थावरे'[4] ।
जो न हिंसइ तिविहेणं[5] तं वयं बूम माहणं ॥

२३—कोहा वा जइ वा हासा लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयई जो उ तं वयं बूम माहणं ॥

२४—चित्तमन्तमचित्तं वा अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गेण्हइ अदत्तं जो तं वयं बूम माहणं ॥

२५—दिव्वमाणुसतेरिच्छं जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा कायवक्केणं तं वयं बूम माहणं ॥

२६—जहा पोमं जले जायं नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तो[6] कामेहिं तं वयं बूम माहणं ॥

२७—अलोलुयं मुहाजीवी[7] अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु तं वयं बूम माहणं ॥

१—सुव्वइ (उ) ।
२—महामट्ठं (बृ०) ; जहामट्ठं (बृ० पा०) ।
३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति मे व्याख्यात नहीं है ।
४—सथावरे (बृ० पा०) ।
५—एयं तु (बृ०) ; विविहेण (बृ० पा०) ।
६—अलित्तं (आ, इ, सु) ।
७—मुहाजीविं (बृ० पा०) ।

[जहित्ता पुव्वसजोग नाइसगे[1] य बन्धवे।
जो न सज्जइ एएहिं[2] त वयं बूम माहण ॥][3]

२८—पसुबन्धा[4] सव्ववेया[5] जट्ठ च पावकम्मुणा।
न त तायन्ति दुस्सील कम्माणि बलवन्ति ह ॥

२९—न वि मुण्डिएण समणो न ओंकारेण बम्भणो।
न मुणी रण्णवासेण कुसचीरेण न तावसो ॥

३०—समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो।
नाणेण य मुणी होइ तवेण होइ तावसो ॥

३१—कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ।
वइस्सो कम्मुणा होइ[6] सुद्दो हवइ[6] कम्मुणा ॥

३२—एए 'पाउकरे बुद्धे'[7] जेहिं होइ सिणायओ।
सव्वकम्मविनिम्मुक्क त वय बूम माहण ॥

३३—एव गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा।
ते समत्था उ उद्धत्तु पर अप्पाणमेव य ॥

धुइ-पद

३४—एव तु ससए छिन्ने विजयघोसे य माहणे[8]।
'समुदाय तय[9] त तु'[10] जयघोस महामुणि ॥

१—नाइ संजोगे (ऋ)।
२—भोगेसु (ऋ), एएसु (उ)।
३—यह श्लोक वृहद वृत्ति में पाठान्तर रूप में स्वीकृत है।
४—पसुबद्धा (वृ० पा०)।
५—सव्व वेया य (अ)।
६—होइय (अ), हेइ उ (वृ०)।
७—पाउकराधम्मा (वृ० पा०)।
८—बंभणे (वृ०), माहणे (वृ० पा०)।
९—तओ (अ सु ऋ)।
१०—संजाणंतो तओ तं तु (वृ० पा०), समादाय तयं तं व (उ)।

३५—तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं ॥

३६—तुब्भे जइया जन्नाणं तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइसंगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा ॥

३७—तुब्भे समत्था उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
तमणुग्गहं करेहऽम्हं[1] भिक्खेणं[2] भिक्खुउत्तमा ॥

संबोहि-पदं

३८—न कज्जं मज्झ भिक्खेण खिप्पं निक्खमसू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्टे[3] घोरे[4] संसारसागरे ॥

३९—उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई ॥

४०—उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोतत्थ[5] लग्गई ॥

४१—एवं लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ ॥

निक्खेव-पदं

४२—एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए ।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं 'सोच्चा अणुत्तरं'[6] ॥

१—करे अम्मं (अ, इ) ।
२—भिक्खूणं (वृ०) ।
३—भवावत्ते (वृ० पा०) ।
४—दीहे (वृ० पा०) ।
५—सोऽत्थ (वृ०, ऋ) ।
६—सोच्चाण केवलं (वृ० पा०) ।

[जहित्ता पुव्वसजोग नाइसगे[1] य बन्धवे ।
जो न सज्जइ एएहिं[2] त वय बूम माहण ॥][3]
२८—पसुबन्धा[4] सव्ववेया[5] जट्ठ च पावकम्मुणा ।
न त तायन्ति दुस्सील कम्माणि बलवन्ति ह ॥
२९—न वि मुण्डिएण समणो न ओकारेण बम्भणो ।
न मुणी रण्णवासेण कुसचीरेण न तावसो ॥
३०—समयाए समणो होइ बम्भचेरेण बम्भणो ।
नाणेण य मुणी होइ तवेण होइ तावसो ॥
३१—कम्मुणा बम्भणो होइ कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
वइस्सो कम्मुणा होइ[6] सुद्दो हवइ[6] कम्मुणा ॥
३२—एए 'पाउकरे बुद्धे'[7] जेहिं होइ सिणायओ ।
सव्वकम्मविनिम्मुक्क त वय बूम माहण ॥
३३—एव गुणसमाउत्ता जे भवन्ति दिउत्तमा ।
ते समत्था उ उद्धत्तु पर अप्पाणमेव य ॥

धुइ-पद

३४—एव तु ससए छिन्ने विजयघोसे य माहणे[8] ।
'समुदाय तयं त तु'[10] जयघोस महामुणि ॥

१—नाइ संजोगे (ऋ) ।
२—भोगेसु (ऋ), एएसु (उ) ।
३—यह श्लोक बृहद् वृत्ति में पाठान्तर रूप में स्वीकृत है ।
४—पसुवद्धा (बृ० पा०) ।
५—सव्व वेया य (अ) ।
६—होइय (अ) हेइ उ (वृ०) ।
७—पाउकराधम्मा (वृ० पा०) ।
८—बभणे (वृ०), माहणे (वृ० पा०) ।
९—तओ (अ सु ऋ) ।
१०—संजाणंतो तओ तं तु (बृ० पा०), समादाय तयं तं व (उ) ।

३५—तुट्ठे य विजयघोसे इणमुदाहु कयंजली ।
माहणत्तं जहाभूयं सुट्ठु मे उवदंसियं ॥

३६—तुब्भे जइया जन्नाणं तुब्भे वेयविऊ विऊ ।
जोइसंगविऊ तुब्भे तुब्भे धम्माण पारगा ॥

३७—तुब्भे समत्था उद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य ।
तमणुग्गहं करेहऽम्हं[1] भिक्खेणं[2] भिक्खुउत्तमा ॥

संबोहि-पदं

३८—न कज्जं मज्झ भिक्खेण खिप्पं निक्खमसू दिया ।
मा भमिहिसि भयावट्टे[3] घोरे[4] संसारसागरे ॥

३९—उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई ।
भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चई ॥

४०—उल्लो सुक्को य दो छूढा गोलया मट्टियामया ।
दो वि आवडिया कुड्डे जो उल्लो सोतत्थ[5] लग्गई ॥

४१—एवं लग्गन्ति दुम्मेहा जे नरा कामलालसा ।
विरत्ता उ न लग्गन्ति जहा सुक्को उ गोलओ ॥

निक्खेव-पदं

४२—एवं से विजयघोसे जयघोसस्स अन्तिए ।
अणगारस्स निक्खन्तो धम्मं 'सोच्चा अणुत्तरं'[6] ॥

१—करे अम्मं (अ, इ) ।
२—भिक्खूणं (वृ०) ।
३—भवावत्ते (वृ० पा०) ।
४—दीहे (वृ० पा०) ।
५—सोऽत्थ (वृ०, ऋ) ।
६—सोच्चाण केवलं (वृ० पा०) ।

४३–खवित्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेण य।
जयघोसविजयघोसा सिद्धि पत्ता अणुत्तर॥
—त्ति वेमि॥

•

छब्बीसइमं अज्झयणं

सामायारी

सामायारी-पदं

१—सामायारिं पवक्खामि सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।
जं चरित्ताण निग्गंथा तिण्णा संसारसागरं ॥

२—पढमा आवस्सिया नाम बिइया य[1] निसीहिया ।
आपुच्छणा य तइया चउत्थी पडिपुच्छणा ॥

३—पंचमा छन्दणा नाम इच्छाकारो य छट्ठओ ।
सत्तमो मिच्छकारो य[2] तहक्कारो य अट्ठमो ॥

४—अब्भुट्ठाणं नवमं, दसमा उवसंपदा ।
एसा दसंगा साहूणं सामायारी पवेइया ॥

५—गमणे आवस्सियं कुज्जा ठाणे कुज्जा निसीहियं ।
आपुच्छणा सयंकरणे परकरणे पडिपुच्छणा ॥

६—छन्दणा दव्वजाएणं इच्छाकारो य सारणे ।
मिच्छाकारो य निन्दाए तहक्कारो य[3] पडिस्सुए ॥

७—अब्भुट्ठाणं गुरुपूया अच्छणे उवसंपदा ।
'एवं दुपंचसंजुत्ता'[4] सामायारी पवेइया ॥

चरिया-पदं

८—पुव्विल्लंमि चउब्भाए आइच्चंमि समुट्ठिए ।
भण्डयं पडिलेहित्ता वन्दित्ता य तओ गुरुं ॥

१—होइ (उ)।
२—उ (आ, इ)।
३—× (उ)।
४—एसा दसंगा साहूणं (वृ० पा०)।

९–पुच्छेज्जा पंजलिउडो किं कायव्वं मए इह ?।
इच्छं निओइउं भन्ते ! वेयावच्चे व सज्झाए ॥
१०–वेयावच्चे निउत्तेण कायव्वं अगिलायओ।
सज्झाए वा निउत्तेण सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥

दिवसचरिया-पद

११–दिवसस्स चउरो भागे कुज्जा भिक्खू वियक्खणो।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा दिणभागेसु चउसु वि ॥
१२–पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई।
तइयाए भिक्खायरियं पुणो चउत्थीए सज्झायं ॥
१३–आसाढे मासे दुपया पोसे मासे चउप्पया।
चित्तासोएसु मासेसु तिपया हवइ पोरिसी ॥
१४–अंगुलं सत्तरत्तेणं पक्खेणं य दुअंगुलं।
वड्ढए हायए वावी मासेणं चउरंगुलं ॥
१५–आसाढबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए य पोसे य।
फग्गुणवइसाहेसु य नायव्वा[1] ओमरत्ताओ ॥
१६–जट्ठामूले आसाढसावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा।
अट्ठहिं बीयतियंमी तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥

रत्तिचरिया-पद

१७–रत्तिं पि चउरो भागे भिक्खू कुज्जा वियक्खणो।
तओ उत्तरगुणे कुज्जा राइभाएसु चउसु वि ॥
१८–पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई।
तइयाए निद्दमोक्खं तु चउत्थी भुज्जो[2] वि सज्झायं ॥

१–बोद्धव्वा (आ)।
२–पुणो (अ)।

१९—जं नेइ जया रत्ति
नक्खत्तं तंमि नहचउब्भाए ।
संपत्ते विरमेज्जा
सज्झायं पओसकालम्मि ॥

पडिलेहण-पदं

२०—तम्मेव य नक्खत्ते
गयणचउब्भागसावसेसंमि ।
वेरत्तियं पि कालं
पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥

२१—पुव्विल्लंमि चउब्भाए पडिलेहित्ताण भण्डयं ।
गुरुं वन्दित्तु सज्झायं कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥

२२—पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
अपडिक्कमित्ता कालस्स भायणं पडिलेहए ॥

पडिलेहणविहि-पदं

२३—मुहपोत्तियं[1] पडिलेहित्ता पडिलेहिज्ज गोच्छगं ।
गोच्छगलइयंगुलिओ वत्थाइं पडिलेहए ॥

२४—उड्ढं थिरं अतुरियं पुव्वं वा वत्थमेव पडिलेहे ।
तो बिइयं पप्फोडे तइयं च पुणो पमज्जेज्जा ॥

२५—अणच्चावियं अवलियं
अणाणुबन्धि अमोसलिं[2] चेव ।
छप्पुरिमा नव खोडा
[3]पाणीपाणविसोहणं[4] ॥

१—मुहपत्तिं (आ, इ, उ, ऋ) ।
२—अमोसलं (अ) ; आमोसलिं (वृ०) ।
३—पाणीपाणि० (वृ०) ।
४—०पमज्जण (आ, वृ० पा०) ; ०पमज्जणया (ओघनिर्युक्ति ४२५)

२६—आरभडा सम्मद्दा
वज्जेयव्वा य मोसली तइया।
पप्फोडणा चउत्थी
विक्खित्ता वेइया छट्ठा॥

२७—पसिढिलपलम्बलोला
एगामोसा अणेगरूवधुणा[1]।
कुणइ पमाणि पमायं
संकिए गणणोवगं कुज्जा॥

२८—अणूणाइरित्तपडिलेहा
अविवच्चासा तहेव य।
पढमं पयं पसत्थं
सेसाणि उ अप्पसत्थाइं॥

२९—पडिलेहणं कुणन्तो
मिहोकहं कुणइ जणवयकहं वा।
देइ व पच्चक्खाणं
वाएइ सयं पडिच्छइ वा॥

३०—पुढवीआउक्काए
तेऊवाऊवणस्सइतसाणं।
पडिलेहणापमत्तो
छण्हं पि विराहओ होइ॥

आहार-पद

[पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं।
पडिलेहणआउत्तो छण्हं आराहओ होइ॥][2]

१—अणेगरूवधुया (वृ० पा०)।
२—यह गाथा केवल (अ) प्रति में ही है।

३१—तइयाए पोरिसीए भत्तं पाणं गवेसए।
छण्हं अन्नयरागम्मि कारणंमि समुट्ठिए॥

३२—वेयणवेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए।
तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए॥

अणाहार-पदं

३३—निग्गन्थो धिइमन्तो निग्गन्थी वि न करेज्ज छहिं चेव।
ठाणेहिं उ इमेहिं अणइक्कमणा य से होइ॥

३४—आयंके उवसग्गे[1] तितिक्खया बम्भचेरगुत्तीसु।
पाणिदया तवहेउं सरीरवोच्छेयणट्ठाए॥

विहार-पदं

३५—अवसेसं भण्डगं गिज्झा चक्खुसा पडिलेहए।
परमद्धजोयणाओ विहारं विहरए मुणी॥

३६—चउत्थीए पोरिसीए निक्खिवित्ताण भायणं।
सज्झायं तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं[2]॥

संझा-पदं

३७—पोरिसीए चउब्भाए वन्दित्ताण तओ गुरुं।
पडिक्कमित्ता कालस्स सेज्जं तु पडिलेहए॥

१—उमग्गे (उ)।
२—सव्वदुक्खविमोक्खणं (वृ० पा०)।

३८–पासवणुच्चारभूमिं च पडिलेहिज्ज जयं जई।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

पडिक्कमण-पदं

३९–देसियं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो।
नाणे[1] दंसणे चेव चरित्तम्मि तहेव य॥
४०–पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
देसियं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं॥
४१–पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥
४२–पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं।
'थुइमंगलं च काऊण'[2] कालं संपडिलेहए॥
४३–'पढमं पोरिसिं सज्झायं बीयं झाणं झियायई।
तइयाए निद्दमोक्खं तु सज्झायं तु चउत्थिए॥'[3]
४४–'पोरिसीए चउत्थीए कालं तु पडिलेहिया।
सज्झाय तओ कुज्जा अबोहेन्तो असंजए॥'[4]
४५–पोरिसीए चउब्भाए 'वन्दिऊण तओ गुरुं'[5]।
पडिक्कमित्तु कालस्स कालं तु पडिलेहए॥
४६–आगए कायवोस्सग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

१—नाणे य (आ) ; नाणमि (उ)।
२—सिद्धाण सथव किच्चा (वृ० पा०)।
३—पढमा पोरसि सज्झाय बीए झाण झियायति।
तत्तियाए निद्दमोक्खं च चउभाए चउत्थए॥ (वृ० पा०)।
४—काल तु पडिलेहित्ता अबोहितो असंजए।
कुज्जा मुणी य सज्झाय सव्वदुक्खविमोक्खण॥ (वृ० पा०)।
५—से से वंदित्तु ते गुरु (वृ० पा०)।

४७—राइयं च अईयारं चिन्तिज्ज अणुपुव्वसो ।
नाणंमि दंसणंमी य चरित्तंमि तवंमि य ॥

४८—पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
राइयं तु अईयारं आलोएज्ज जहक्कमं ॥

४९—पडिक्कमित्तु निस्सल्लो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
काउस्सग्गं तओ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥

५०—किं तवं पडिवज्जामि एवं तत्थ विचिन्तए ।
काउस्सग्गं तु पारित्ता वन्दई य तओ गुरुं ॥

५१—पारियकाउस्सग्गो वन्दित्ताण तओ गुरुं ।
तवं संपडिवज्जेत्ता[1] करेज्ज सिद्धाण संथवं ॥

निक्खेव-पदं

५२—एसा सामायारी समासेण वियाहिया ।
जं चरित्ता वहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—च पडिवज्जित्ता (अ) ।

सत्तावीसइमं अज्झयणं

खलुंकिज्जं

१—थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहिं पडिसंधए॥

२—वहणे वहमाणस्स[1] कन्तारं अइवत्तई।
जोए वहमाणस्स संसारो अइवत्तई॥

३—खलुंके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई[2]।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई॥

४—एगं डसइ पुच्छंमि एगं विन्धइऽभिक्खणं।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ॥

५—एगो पडइ पासेण निवेसइ निवज्जई।
उक्कुद्दइ उप्फिडई सढे बालगवी वए॥

६—माई मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं।
'मयलक्खेण चिट्ठई'[3] वेगेण य पहावई॥

७—छिन्नाले छिन्दइ सेल्लिं दुद्दन्तो भंजए जुगं।
से वि य सुस्सुयाइत्ता[4] उज्जाहित्ता[5] पलायए॥

८—खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुब्बला॥

१—वाहयमाणस्स (अ, सु), वहणमाणस्स (ऋ)।
२—किलामई (वृ०); किलिस्सई (वृ० पा०)।
३—पलयं (यलं) ते ण चिट्ठिया (वृ० पा०)।
४—सुस्सुयत्ता (अ)।
५—उज्जुहित्ता (आ, वृ०, सु)।

९—इड्ढीगारविए एगे एगेऽत्थ रसगारवे।
सायागारविए एगे एगे सुचिरकोहणे॥

१०—भिक्खालसिए एगे एगे ओमाणभीरुए थद्धे।
एगं च[1] अणुसासम्मी हेऊहिं कारणेहि य॥

११—सो वि अन्तरभासिल्लो दोसमेव पकुव्वई[2]।
आयरियाणं तं वयणं पडिकूलेइ अभिक्खणं॥

१२—न सा ममं वियाणाइ न वि[3] सा मज्झ दाहिई।
निग्गया होहिई मन्ने साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ॥

१३—पेसिया[4] पलिउंचन्ति ते परियन्ति समन्तओ।
रायवेट्ठिं[5] व मन्नन्ता करेन्ति भिउडिं मुहे॥

१४—वाइया संगहिया चेव 'भत्तपाणे य'[6] पोसिया।
जायपक्खा जहा हंसा पक्कमन्ति दिसोदिसिं॥

१५—अह सारही विचिन्तेइ[7] खलुंकेहिं समागओ।
किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं अप्पा मे अवसीयई॥

१६—जारिसा[8] मम सीसाउ तारिसा[9] गलिगद्दहा।
गलिगद्दहे चइत्ताणं[10] दढं परिगिण्हइ[11] तवं॥

१—× (अ)।
२—पभासए (वृ० पा०)।
३—य (उ)।
४—पोसिया (वृ० पा०)।
५—रायाविट्ठं (अ)।
६—भत्तपाणेण (अ, आ, इ)।
७—हि चिंतेइ (अ)।
८—तारिसा (अ)।
९—जारिसा (अ)।
१०—जहित्ताणं (आ)।
११—पगिण्हामि (वृ०); परिगिण्हई (वृ० पा०)।

सत्तावीसइमं अज्झयणं

खलुंकिज्जं

१—थेरे गणहरे गग्गे मुणी आसि विसारए ।
आइण्णे गणिभावम्मि समाहिं पडिसंधए ॥

२—वहणे वहमाणस्स[1] कन्तारं अइवत्तई ।
जोए वहमाणस्स संसारो अइवत्तई ॥

३—खलुंके जो उ जोएइ विहम्माणो किलिस्सई[2] ।
असमाहिं च वेएइ तोत्तओ य से भज्जई ॥

४—एगं डसइ पुच्छंमि एगं विन्धइऽभिक्खणं ।
एगो भंजइ समिलं एगो उप्पहपट्ठिओ ॥

५—एगो पडइ पासेणं निवेसइ निवज्जई ।
उक्कुद्दइ उप्फिडई सढे बालगवी वए ॥

६—माई मुद्धेण पडइ कुद्धे गच्छइ पडिप्पहं ।
'मयलक्खेण चिट्ठई'[3] वेगेण य पहावई ॥

७—छिन्नाले छिन्दइ सेल्लिं दुद्दन्तो भंजए जुगं ।
से वि य सुस्सुयाइत्ता[4] उज्जाहित्ता[5] पलायए ॥

८—खलुंका जारिसा जोज्जा दुस्सीसा वि हु तारिसा ।
जोइया धम्मजाणम्मि भज्जन्ति धिइदुब्बला ॥

१—वाहयमाणस्स (अ, सु) ; वहणमाणस्स (ऋ) ।
२—किलामई (वृ०) ; किलिस्सई (वृ० पा०) ।
३—पलयं (यलं) ते ण चिट्ठिया (वृ० पा०) ।
४—सुस्सुयत्ता (अ) ।
५—उज्जुहित्ता (आ, वृ०, सु) ।

अट्ठावीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गगई

१—मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥

मग्ग-पदं

२—नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एस[1] मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं[2] ॥

३—नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एयंमग्गमणुप्पत्ता[3] जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥

नाण-पदं

४—तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहीनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं ॥

५—एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहि देसियं ॥

दव्व-पदं

६—गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ[4] अस्सिया भवे ॥

७—धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गलजन्तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

१—एय (अ) ।
२—सव्वदंसिहिं (अ) ।
३—एव० (अ) ।
४—दुहओ (अ) ।

अट्ठावीसइमं अज्झयणं

मोक्खमग्गगई

१–मोक्खमग्गगइं तच्चं सुणेह जिणभासियं ।
चउकारणसंजुत्तं नाणदंसणलक्खणं ॥

मग्ग-पदं

२–नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एस[1] मग्गो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं[2] ॥
३–नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
एयंमग्गमणुप्पत्ता[3] जीवा गच्छन्ति सोग्गइं ॥

नाण-पदं

४–तत्थ पंचविहं नाणं सुयं आभिनिबोहियं ।
ओहीनाणं तु तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५–एयं पंचविहं नाणं दव्वाण य गुणाण य ।
पज्जवाणं च सव्वेसिं नाणं नाणीहि देसियं ॥

दव्व-पदं

६–गुणाणमासओ दव्वं एगदव्वस्सिया गुणा ।
लक्खणं पज्जवाणं तु उभओ[4] अस्सिया भवे ॥
७–धम्मो अहम्मो आगासं कालो पुग्गलजन्तवो ।
एस लोगो त्ति पन्नत्तो जिणेहिं वरदंसिहिं ॥

१—एय (अ) ।
२—सव्वदंसिहिं (अ) ।
३—एव० (अ) ।
४—दुहओ (अ) ।

८–धम्मो अहम्मो आगासं दव्वं इक्किक्कमाहियं ।
अणन्ताणि य दव्वाणि कालो पुग्गलजन्तवो ॥

९–गइलक्खणो उ[1] धम्मो अहम्मो ठाणलक्खणो ।
भायणं सव्वदव्वाण नहं ओगाहलक्खणं ॥

१०–वत्तणालक्खणो कालो जीवो उवओगलक्खणो ।
नाणेणं दंसणेणं च सुहेण य दुहेण य ॥

११–नाणं च दंसणं चेव चरित्तं च तवो तहा ।
वीरियं उवओगो य एयं जीवस्स लक्खणं ॥

१२–सद्दन्धयारउज्जोओ पहा 'छायातवे इ वा'[2] ।
वण्णरसगन्धफासा पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥

१३–एगत्तं च पुहत्तं[3] च संखा संठाणमेव य ।
संजोगा य विभागा य पज्जवाणं तु लक्खणं ॥

नवतहिय-पद

१४–जीवाजीवा य बन्धो य पुण्णं पावासवो तहा ।
संवरो निज्जरा मोक्खो सन्तेए तहिया नव ॥

सम्मत्तरुइ-पदं

१५–तहियाण तु भावाणं 'सब्भावे उवएसणं ।
भावेणं सद्दहन्तस्स सम्मत्तं त वियाहियं'[4] ॥

१—य (अ) ।
२—° तवेइ या (अ, ऋ) , ° तवुत्ति वा (वृ०) ।
३—दुहत्तं (उ) ।
४— सब्भावो (वेणो) वएसणे ।
भावेण उ सद्दहणा सम्मत्त होति आहियं ॥ (वृ० पा०) ।

१६–निसग्गुवएसरुई
आणारुई सुत्तबीयरुइमेव ।
अभिगमवित्थाररुई
किरियासंखेवधम्मरुई ॥

१७–भूयत्थेणाहिगया
जीवाजीवा य पुण्णपावं च ।
सहसम्मुइयासवसंवरो य[1]
रोएइ उ निसग्गो ॥

१८–जो जिणदिट्ठे भावे
चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव ।
एमेव[2] नऽन्नह त्ति य
निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥

१९–एए चेव उ[3] भावे
उवइट्ठे जो परेण सद्दहई ।
छउमत्थेण जिणेण व[4]
उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥

२०–रागो दोसो मोहो
अन्नाणं जस्स अवगयं होइ ।
आणाए रीयंतो
सो खलु आणारुई नाम ॥

१–उ (अ)।
२–एमेय (अ, उ, वृ०)।
३–हु (ऋ)।
४–य (ऋ)।

२१—जो सुत्तमहिज्जन्तो
सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं ।
अंगेण बाहिरेण व[1]
सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥

२२—एगेण अणेगाइं
पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं ।
उदए व्व तेल्लबिन्दू
सो बीयरुइ त्ति नायव्वो ॥

२३—सो होइ अभिगमरुई
सुयनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं ।
'एक्कारस अंगाइं'[2]
पइण्णगं[3] दिट्ठिवाओ य ॥

२४—दव्वाण सव्वभावा
सव्वपमाणेहि जस्स उवलद्धा ।
सव्वाहि नयविहीहि य
वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥

२५—दंसणनाणचरित्ते
तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु[4] ।
जो किरियाभावरुई
सो खलु किरियारुई नाम ॥

१—य (ऋ)।
२—इक्कारसमगाइ (उ, ऋ)।
३—पइण्णियं (अ)।
४—सव्व० (अ)।

२६—अणभिग्गहियकुदिट्ठी
संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो ।
अविसारओ पवयणे
अणभिग्गहिओ य सेसेसु ॥

२७—जो अत्थिकायधम्मं
सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च ।
सद्दहइ जिणाभिहियं
सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥

२८—परमत्थसंथवो वा
सुदिट्ठपरमत्थसेवणा वा वि ।
वावन्नकुदंसणवज्जणा
य सम्मत्तसद्दहणा ॥

२९—नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं
दंसणे उ भइयव्वं ।
सम्मत्तचरित्ताइं
जुगवं पुव्वं व[1] सम्मत्तं ॥

३०—नादंसणिस्स नाणं
नाणेण विणा न हुन्ति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो
नत्थि अमोक्खस्स निव्वाणं ॥

३१—निस्संकिय निक्कंखिय
निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी य ।
उववूह थिरीकरणे
वच्छल्ल पभावणे अट्ठ ॥

१—च (अ, उ, ऋ) ।

चारित्त-पद

३२—सामाइयत्थ[1] पढम छेओवट्ठावण भवे बीय ।
परिहारविसुद्धीय सुहुम तह सपराय च ॥
३३—अकसाय अहक्खाय छउमत्थस्स जिणस्स वा ।
एय चयरित्तकर चारित्त होइ आहिय ॥

तव-पद

३४—तवो य दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

निक्खेव-पद

३५—नाणेण जाणई भावे दसणेण य सद्दहे ।
चरित्तेण निगिण्हाइ[2] तवेण परिसुज्झई ॥
३६—खवेत्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेण य ।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१—सामाइयं च (उ, ऋ) ।
२—न गिण्हति (बृ० पा०) ।

एगूणतीसइमं अज्झयणं

सम्मत्तपरक्कमे

उक्खेव-पदं

सू० १—'सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्त-परक्कमे 'नाम अज्झयणे'[1] समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता[2] तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति। तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तं जहा—संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए[3] १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले[4] १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया[5] १९ पडिपुच्छणया २० परियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहाय-

---

१—नाम मज्झयणे (अ, ऋ); नामज्झयणे (स, उ)।
२—पालइत्ता, पूरइत्ता (अ)।
३—वंदणे (अ)।
४—थय थुइ मंगले (अ, ऋ); थण थुई मंगले (उ)।
५—वायणाए (ऋ); वायणा (उ)।

चारित्त-पद

३२—सामाइयत्थ[1] पढम छेओवट्ठावण भवे बीय।
परिहारविसुद्धीय सुहुम तह सपराय च ॥

३३—अकसाय अहक्खायं छउमत्थस्स जिणस्स वा।
एय चयरित्तकर चारित्त होइ आहिय ॥

तव-पद

३४—तवो य दुविहो वुत्तो वाहिरब्भन्तरो तहा।
वाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

निक्खेव-पद

३५—नाणण जाणई भावे दसणेण य सद्दहे।
चरित्तेण निगिण्हाइ[2] तवेण परिसुज्झई ॥

३६—खवेत्ता पुव्वकम्माइ सजमेण तवेण य।
सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा पक्कमन्ति महेसिणो ॥

—त्ति वेमि ॥

*

१—सामाइय च (उ, ऋ)।
२—न गिण्हति (वृ० पा०)।

एगूणतीसइमं अज्झयणं

सम्मत्तपरक्कमे

उक्खेव-पदं

सू० १–'सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं—इह खलु सम्मत्त-परक्कमे 'नाम अज्झयणे'[1] समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तियाइत्ता रोयइत्ता फासइत्ता पालइत्ता[2] तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झन्ति बुज्झन्ति मुच्चन्ति परिनिव्वायन्ति सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति। तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ तं जहा —संवेगे १ निव्वेए २ धम्मसद्धा ३ गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया ४ आलोयणया ५ निन्दणया ६ गरहणया ७ सामाइए ८ चउव्वीसत्थए ९ वन्दणए[3] १० पडिक्कमणे ११ काउस्सग्गे १२ पच्चक्खाणे १३ थवथुइमंगले[4] १४ कालपडिलेहणया १५ पायच्छित्तकरणे १६ खमावणया १७ सज्झाए १८ वायणया[5] १९ पडिपुच्छणया २० परियट्टणया २१ अणुप्पेहा २२ धम्मकहा २३ सुयस्स आराहणया २४ एगग्गमणसंनिवेसणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडिबद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणियट्टणया ३२ संभोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ कसायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहाय-

---

१—नाम मज्झयणे (अ, ऋ) ; नामज्झयणे (स, उ)।

२—पालइत्ता, पूरइत्ता (अ)।

३—वंदणे (अ)।

४—थय थुइ मगले (अ, ऋ) ; थण थुई मगले (उ)।

५—वायणाए (ऋ) ; वायणा (उ)।

पचक्खाणे ३९ भत्तपचक्खाणे ४० सब्भावपचक्खाणे ४१ पडिरूवया[1] ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसपण्णया[2] ४४ वीयरागया ४' खन्ती ४६ मुत्ती ४७ अज्जवे[3] ४८ मद्दवे[4] ४९ भावसच्चे ५० करण सच्चे ५१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ मणसमाधारणया ५६ वयसमाधारणया ५७ कायसमाधारणया ५८ नाणसपन्नया ५९ दसणसपन्नया ६० चरित्तसपन्नया ६१ सोइन्दियनिग्गहे ६२ चक्खिन्दियनिग्गहे ६३ घाणिन्दियनिग्गहे ६४ जिब्भिन्दियनिग्गहे ६५ फासिन्दियनिग्गहे ६६ कोहविजए ६७ माणविजए ६८ मायाविजए ६९ लोहविजए ७० पेज्जदोसमिच्छा-दसणविजए ७१ सेलेसी ७२ अकम्मया ७३ ॥

संवेग-पद

सू० २–सवेगेण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

सवेगेण अणुत्तर धम्मसद्ध जणयइ। अणुत्तराए धम्मसद्धाए सवेग हव्वमागच्छइ। अणन्ताणुवन्धिकोहमाणमायालोभे खवेइ। कम्म[5] न बन्धइ। तप्पच्चइय च ण मिच्छत्तविसोहिं काऊण दसणाराहए भवइ। दसणविसोहीए य ण विसुद्धाए अत्थेगइए तेणव भवग्गहणेण सिज्झइ। सोहीए य ण विसुद्धाए तच्च पुणो भवग्गहण नाइक्कमइ ॥

निव्वेय-पद

सू० ३–निव्वेएण भन्ते। जीवे किं जणयइ ?

निव्वेएण दिव्वमाणुसतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेय-हव्वमागच्छइ। सव्वविसएसु विरज्जइ सव्वविसएसु विरज्जमाणे

१—पडिरूवणया (क्र)।
२—० संपुण्णया (अ, आ इ वृ०)।
३—मद्दवे (अ, सु, वृ०)।
४—अज्जवे (अ, सु वृ०)।
५—नवं च कम्म (अ, आ, इ)।

आरम्भपरिच्चायं[1] करेइ। आरम्भपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिन्दइ सिद्धिमग्गे पडिवन्ने य भवइ ॥

धम्मसद्धा-पदं

सू० ४—धम्मसद्धाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ। अगारधम्मं च णं चयइ अणगारेए णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयण-संजोगाईणं वोच्छेयं करेइ अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ[2] ॥

सुस्सूसणा-पदं

सू० ५—गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

गुरुसाहम्मियसुस्सूसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ। 'विणय-पडिवन्ने य णं'[3] जीवे अणच्चासायणसीले नेरइयतिरिक्खजोणिय-मणुस्सदेवदोग्गईओ निरुम्भइ। वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवसोग्गईओ निबन्धइ सिद्धिं सोग्गइं च विसोहेइ। पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ। अन्ने य बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥

आलोयणा-पदं

सू० ६—आलोयणाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्ग-विग्घाणं अणन्तसंसारवद्धणाणं[4] उद्धरणं करेइ। उज्जुभावं च[5] जणयइ। उज्जुभावपडिवन्ने[6] य णं जीवे अमाई इत्थीवेयनपुंसगवेयं च न बन्धइ। पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ ॥

१—आरम्भपरिग्गह° (अ)।
२—निव्वित्ते (ऋ)।
३—°पडिवन्नएणं (ऋ)।
४—°वद्धमाणाणं (अ)।
५—च णं (उ, ऋ, स)।
६—°पडिवन्नएणं (ऋ)।

निंदण-पद

सू० ७—निन्दणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए ण पच्छाणुताव जणयइ। पच्छाणुतावेण विरज्जमाण करणगुणसेढि[1] पडिवज्जइ। करणगुणसेढिं 'पडिवन्ने य'[2] ण अणगारे मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ ॥

गरहण-पद

सू० ८—गरहणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए ण अपुरक्कार जणयइ। अपुरक्कारगए ण जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तइ[3] पसत्थजोगपडिवन्ने य ण अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥

सामाइय पद

सू० ९—सामाइएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइएण सावज्जजोगविरइ जणयइ ॥

चउव्वीसत्थव पद

सू० १०—चउव्वीसत्थएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थएण दसणविसोहिं जणयइ ॥

वन्दण पद

सू० ११—वन्दणएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएण नीयागोय कम्म खवेइ। उच्चागोय निबन्धइ। सोहग्ग च ण अप्पडिहय आणाफल निव्वत्तेइ दाहिणभाव च ण जणयइ ॥

१—°सेढीए (अ) °सेढी (वृ०)।
२—पडिवन्ने य (ऋ) पडिवन्ने (उ अ)।
३—नियत्तइ पसत्थे य पवत्तइ (उ ऋ)।

पडिक्कमण-पदं

सू० १२—पडिक्कमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वयछिद्दाइं पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते[1] सुप्पणिहिए[2] विहरइ।

काउस्सग-पदं

सू० १३—काउस्सग्गेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए 'ओहरियभारो व्व'[3] भारवहे पसत्थज्झाणोवगए[4] सुहंसुहेणं विहरइ।

पच्चक्खाण-पदं

सू० १४—पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुम्भइ[5]।

थवथुइ-पदं

सू० १५—थवथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

थवथुइमंगलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ। नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ।

कालपडिलेहण-पदं

सू० १६—कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

१—अपमत्ते (वृ० पा०)।

२—सुप्पणिहिंदिए (वृ० पा०) ; सुप्पिणिहिए (अ, उ, ऋ)।

३—० भरुव्व (उ, ऋ)।

४—० ज्झाणज्झाइ (वृ० पा०)।

५—निरुम्भइ। पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ। इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरइ। (इ, उ)।

निंदण-पद

सू० ७—निन्दणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए ण पच्छाणुताव जणयइ। पच्छाणुतावेण विरज्जमाणे करणगुणसेढिं[1] पडिवज्जइ। करणगुणसेढिं 'पडिवन्ने य'[2] ण अणगारे मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ ॥

गरहण-पद

सू० ८—गरहणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए ण अपुरक्कार जणयइ। अपुरक्कारगए ण जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तइ[3] पसत्थजोगपडिवन्ने य ण अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥

सामाइय-पद

सू० ९—सामाइएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइएण सावज्जजोगविरइ जणयइ ॥

चउव्वीसत्थव-पद

सू० १०—चउव्वीसत्थएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थएण दसणविसोहिं जणयइ ॥

वन्दण-पद

सू० ११—वन्दणएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएण नीयागोय कम्म खवेइ। उच्चागोय निबन्धइ। सोहग्ग च ण अप्पडिहय आणाफल निव्वत्तइ दाहिणभाव च ण जणयइ ॥

१—°सेढिं (अ) °सेढी (बृ०)।
२—पडिवन्ने य (ऋ) पडिवन्ने (उ अ)।
३—नियत्तइ पसत्थे य पवत्तइ (उ ऋ)।

पडिक्कमण-पदं

१२—पडिक्कमणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिक्कमणेणं वयछिद्दाइं पिहेइ। पिहियवयछिद्दे पुण जीवे द्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते[1] णिहिए[2] विहरइ।

काउस्सग-पदं

१३—काउस्सग्गेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

काउस्सग्गेणं तीयपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। सुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए 'ओहरियभारो व्व'[3] भारवहे त्थज्झाणोवगए[4] सुहंसुहेणं विहरइ।

पच्चक्खाण-पदं

०१४—पच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुम्भइ[5]।

थवथुइ-पदं

०१५—थवथुइमंगलेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

थवथुइमंगलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ। ाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्ने य णं जीवे अन्तकिरियं कप्पविमाणोववत्तिगं आराहणं आराहेइ।

कालपडिलेहण-पदं

सू० १६—कालपडिलेहणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

१—अपमत्ते (वृ० पा०)।

२—सुप्पणिहिंदिए (वृ० पा०); सुप्पणिहिए (अ, उ, ऋ)।

३—° भरुव्व (उ, ऋ)।

४—° ज्झाणज्झाइ (वृ० पा०)।

५—निरुम्भइ। पच्चक्खाणेणं इच्छानिरोहं जणयइ। इच्छानिरोहं गए य णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे सीइभूए विहरइ। (इ, उ)।

निंदण-पद

सू० ७—निन्दणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

निन्दणयाए ण पच्छाणुताव जणयइ। पच्छाणुतावेण विरज्जमाणे करणगुणसेढिं[1] पडिवज्जइ। करणगुणसेढिं 'पडिवन्ने य'[2] ण अणगारे मोहणिज्ज कम्म उग्घाएइ ॥

गरहण-पद

सू० ८—गरहणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए ण अपुरकार जणयइ। अपुरक्कारगए ण जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ[3] पसत्थजोगपडिवन्ने य ण अणगारे अणन्तघाइपज्जवे खवेइ ॥

सामाइय पद

सू० ९—सामाइएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सामाइएण सावज्जजोगविरइ जणयइ ॥

चउव्वीसत्थव-पद

सू० १०—चउव्वीसत्थएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

चउव्वीसत्थएण दसणविसोहिं जणयइ ॥

वन्दण पद

सू० ११—वन्दणएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वन्दणएण नीयागोय कम्म खवेइ। उच्चागोय निबन्धइ। सोहग्ग च ण अप्पडिहय आणाफल निव्वत्तेइ दाहिणभाव च ण जणयइ ॥

१—°सेढीए (अ) °सेढी (वृ०)।
२—पडिवन्ने य (ऋ), पडिवन्ने (उ अ)।
३—नियत्तेइ पसत्थे य पवत्तइ (उ ऋ)।

सू० २३—अणुप्पेहाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ। 'बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ'[1]। आउयं च णं कम्मं सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ। 'असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ'[2] अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ।

सू० २४—धम्मकहाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए णं 'निज्जरं जणयइ'[3]। 'धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ'[4]। पवयणपभावेणं जीवे आगमिसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ।

सुय-पदं

सू० २५—सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाएणं खवेइ न य संकिलिस्सइ।

एगग्गमण-पदं

सू० २६—एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ।

संजम-पदं

सू० २७—संजमेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ।

१—बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ (वृ० पा०)।
२—साया वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ (वृ० पा०)।
३—पवयण पभावेइ (वृ० पा०)।
४—× (वृ०)।

पायच्छित्त-पद

सू० १७—पायच्छित्तकरणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पायच्छित्तकरणेण पावकम्मविसोहिं जणयइ निरइय यावि भवइ। सम्म च ण पायच्छित्त पडिवज्जमाणे मग्ग च मग्गप च विसोहेइ आयार च आयारफल च आराहेइ।

खमावण-पद

सू० १८—खमावणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

खमावणयाए ण पल्हायणभाव[1] जणयइ। पल्हायणभावमुवग य सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावमुप्पाएइ। मित्तीभावमुवग यावि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ।

सज्झाय-पद

सू० १९—सज्झाएण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सज्झाएण नाणावरणिज्ज कम्म खवेइ।

सू० २०—वायणाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वायणाए ण निज्जर जणयइ। सुयस्स य 'अणासायणाए वट्टए'[2]। सुयस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्म अवलम्बइ तित्थधम्म अवलम्बमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।

सू० २१—पडिपुच्छणयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

पडिपुच्छणयाए ण सुत्तत्थतदुभयाइ विसोहेइ। कखामोहणिज्ज कम्म वोच्छिन्दइ।

सू० २२—परियट्टणाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

परियट्टणाए ण वजणाइ जणयइ वजणलद्धि च उप्पाएइ।

१—पल्हपणत भाव (वृ०), पण्हायणभाव (वृ० पा०)।
२—अणुसज्जणए वट्टइ (वृ० पा०)।

सू० २३–अणुप्पेहाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

अणुप्पेहाए णं आउयवज्जाओ सत्तकम्मप्पगडीओ धणियबन्धणबद्धाओ सिढिलबन्धणबद्धाओ पकरेइ। दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ। तिव्वाणुभावाओ मन्दाणुभावाओ पकरेइ। 'बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ'[1]। आउयं च णं कम्मं सिय बन्धइ सिय नो बन्धइ। 'असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ'[2] अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरन्तं संसारकन्तारं खिप्पामेव वीइवयइ।

सू० २४–धम्मकहाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

धम्मकहाए णं 'निज्जरं जणयइ'[3]। 'धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ'[4]। पवयणपभावेणं जीवे आगमिसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबन्धइ।

सुय-पदं

सू० २५–सुयस्स आराहणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सुयस्स आराहणयाएणं खवेइ न य संकिलिस्सइ।

एगग्गमण-पदं

सू० २६–एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

एगग्गमणसंनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ।

संजम-पदं

सू० २७–संजमेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ।

१—बहुपएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ (वृ० पा०)।
२—साया वेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ (वृ० पा०)।
३—पवयणं पभावेइ (वृ० पा०)।
४—× (वृ०)।

तव-पदं

०२८—तवेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

तवेणं वोदाणं जणयइ ।

वोदाण-पदं

०२९—वोदाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वोदाणेणं अकिरियं जणयइ । अकिरियाए भवित्ता तओ छा सिज्झइ वुज्झइ मुचइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं रेइ ।

सुहसाय-पद

०३०—सुहसाएणं[1] भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सुहसाएणं अणुस्सुयत्तं जणयइ । अणुस्सुयाए णं जीवे णुकम्पए अणुब्भडे विगयसोगे चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ।

अपडिबद्ध-पद

०३१—अप्पडिबद्धयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं[2] जीवे गे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि हरइ ।

विवित्त-पद

०३२—विवित्तसयणासणयाए[3] ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ । चरित्तगुत्ते ण जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगन्तरए मोक्खभावपडिवन्ने ट्ठविहकम्मगण्ठिं निज्जरेइ ।

१—सुहसाइयाएण (वृ०); सुहसायाएणं, सुहसाएणं (वृ० पा०); सुहसायाएणं (अ, आ, इ, उ, ऋ) ।

२—निस्संगत्त गएणं (उ, ऋ) ।

३—० सयणासणसेवणयाए (आ, इ) ।

विनियट्टण-पदं

सू० ३३—विणियट्टणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

विणियट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ। पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरन्तं संसारकन्तारं वीइवयइ।

पच्चक्खाण-पदं

सू० ३४—संभोगपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

संभोगपच्चक्खाणेणं आलम्बणाइं खवेइ। निरालम्बणस्स य आययट्ठिया जोगा भवन्ति। सएणं लाभेणं संतुस्सइ[1], परलाभं 'नो आसाएइ'[2] नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ। परलाभं अणासायमाणे[3] अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ।

सू० ३५—उवहिपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमन्थं जणयइ। निरुवहिए णं जीवे निक्कंखे[4] उवहिमन्तरेण य न संकिलिस्सई।

सू० ३६—आहारपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

आहारपच्चक्खाणेणं 'जीवियासंसप्पओगं'[5] वोच्छिन्दइ[6]। जीवियासंसप्पओगं वोच्छिन्दित्ता जीवे आहारमन्तरेणं न संकिलिस्सइ।

१—तुस्सइ (उ, ऋ)।
२—'नो आसाएइ' व्याख्यात नहीं है (वृ०)।
३—अणस्सायमाणे (वृ०)।
४—'निक्कंखे' एतच्च पदं क्वचिदेव दृश्यते (वृ०)।
५—जीवियास विप्पओगं (वृ० पा०)।
६—वोच्छिंदिय (वृ० पा०)।

सू० ३७—कसायपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

कसायपच्चक्खाणेण वीयरागभावं जणयइ वीयरागभावपडिवन्ने वि य णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ।

सू० ३८—जोगपच्चक्खाणेण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

जोगपच्चक्खाणेणं अजोगत्तं जणयइ। अजोगी[1] णं जीवे नव कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं निज्जरेइ ।

सू० ३९—सरीरपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तणं[2] निव्वत्तेइ सिद्धाइसयगुणसंपन्ने य णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ।

सू० ४०—सहायपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ। एगीभावभूए वि[3] य णं[4] जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पसद्दे[5] अप्पझंझे अप्पकलहे अप्पकसाए अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए यावि भवइ।

सू० ४१—भत्तपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुम्भइ।

सू० ४२—सब्भावपच्चक्खाणेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

सब्भावपच्चक्खाणेणं अनियट्टिं[6] जणयइ। अनियट्टिपडिवन्ने[7] य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेयणिज्जं आउयं

१—अजोगीय (ऋ)।
२—°सयगुणत्त (उ ऋ)।
३—× (उ ऋ)।
४—× (उ ऋ)।
५—× (बृ०)।
६—नियट्टिं (बृ० पा०)।
७—नियट्टि० (बृ० पा०)।

नामं गोयं। तओ[1] पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ।

पडिरूव-पदं

सू० ४३—पडिरूवयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

पडिरूवयाए णं लाघवियं जणयइ। लहुभूए णं[2] जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे[3] जिइन्दिए विउलतवसमिइसमन्नागए यावि भवइ।

वेयावच्च-पदं

सू० ४४—वेयावच्चेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

वेयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबन्धइ।

सव्वगुणसंपन्न-पदं

सू० ४५—सव्वगुणसंपन्नयाए[4] णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ। अपुणरावत्तिं पत्तए य[5] णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ।

वीयराग-पदं

सू० ४६—वीयरागयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

वीयरागयाएणं 'नेहाणुबन्धणाणि तण्हाणुबन्धणाणि'[6] य वोच्छिन्दइ मणुन्नेसु[7] सद्दफरिसरसरूवगन्धेसु चेव विरज्जइ।

१—× (उ, ऋ)।
२—य णं (उ, ऋ)।
३—अप्पपडिलेहे (बृ० पा०)।
४—० संपुण्णयाए (अ, आ)।
५—× (उ, ऋ)।
६—० बंधणाणि तण्हा बंधणाणि (बृ०); नेहाणु वन्धाणि, तण्हाणु वन्धणाणि (बृ० पा०)।
७—मणुन्नामणुन्नेसु (अ)।

खंति-पदं

सू० ४७—खन्तीए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

खन्तीए णं परीसहे जिणइ ।

मुत्ति-पदं

सू० ४८—मुत्तीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ। अकिंचणे य जीवे अत्थलोलाण[1] अपत्थणिज्जो भवइ ॥

अज्जव-पदं

सू० ४९—अज्जवयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

अज्जवयाए णं काउज्जुययं भावुज्जुययं भासुज्जुययं अविसंवायणं जणयइ। अविसंवायणसंपन्नयाए णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ।

मद्दव-पदं

सू० ५०—मद्दवयाए ण भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

मद्दवयाए णं 'अणुस्सियत्तं जणयइ। अणुस्सियत्ते ण जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठ मयट्ठाणाइं निट्ठवेइ'[2] ।

सच्च-पद

सू० ५१—भावसच्चेणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ। भावविसोहीए वट्टमाणे जीवे अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ।

१—अत्थलोलाण पुरिसाण (आ, इ, उ, ऋ, स)।

२—अणुस्सुअत्त जणइ। अणुस्सुअपत्तेण जीवे मद्दवयाएण मिउ० (अ); मद्दवयाए णं मिउ० (उ. वृ०, ऋ), मद्द० अणुस्सियत्तं जणेति, अणुस्सियत्ते णं जीवे मिउ० (वृ० पा०)।

अरहन्तपन्नत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए[1] अब्भुट्ठित्ता परलोगधम्मस्स[2] आराहए हवइ।

सू० ५२–करणसच्चेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ। करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ।

सू० ५३–जोगसच्चेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

जोगसच्चेणं जोगं विसोहेइ।

सू० ५४–मणगुत्तयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ।

गुत्ति-पदं

सू० ५५–वयगुत्तयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

वयगुत्तयाए णं निव्वियारं[3] जणयइ। 'निव्वियारेणं जीवे'[4] वइगुत्ते अज्झप्पजोग'ज्झाणगुत्ते'[5] यावि भवइ।

सू० ५६–कायगुत्तयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ। संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ।

समाहारण-पदं

सू० ५७–मणसमाहारणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ। नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेइ।

१—आराहणयाए णं (ऋ)।
२—परलोगाराहए (वृ० पा०)।
३—निव्वियारत्तं (अ, स)।
४—निव्वियारे णं जीवे वयगुत्तयं जणयइ (वृ० पा०)।
५—० साहणजुत्ते (उ, ऋ, वृ०)।

सू० ५८–वयसमाहारणयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

वयसमाहारणयाए ण वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ वयसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेत्ता सुलहवोहियत्तं निव्वत्ते दुल्लहवोहियत्तं निज्जरेइ।

सू० ५९–कायसमाहारणयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

कायसमाहारणयाए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ। चरित्तपज्जवे विसोहेत्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ। अहक्खायचरित्तं विसोहेत्त चत्तारि केवलिकम्मसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुचइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ।

सपन्नया-पद

सू० ६०–नाणसंपन्नयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

नाणसंपन्नायाए णं जोवे सव्वभावाहिगमं जणयइ। नाणसंपन्ने णं जीवे चाउरन्ते संसारकन्तारे न विणुस्सइ।

जहा सूई ससुत्ता
पडिया वि न विणस्सइ।
तहा जीवे ससुत्ते
संसारे न विणस्सइ॥

नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ ससमयपरसमय[1] संघायणिज्जे ,भवइ।

सू० ६१–दंसणसंपन्नयाए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ?

दसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तछेयणं करेइ परं न विज्झायइ[2]। 'अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ'[3]।

१—° समय विसारए य (अ)।
२—विज्झाइ (ऋ); वज्झाइ। परं आणाज्झायमाणे (अ)।
३—अप्पाणं संजोएमाणे सम्म भावेमाणे अणुत्तरेण नाणदंसणेणं विहरइ (अ); अनुत्तरेणं नाणदंसणेणं विहरइ (वृ० पा०)।

सू० ६२—चरित्तसंपन्नयाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ। 'सेलेसिं पडिवन्ने य अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ'[1]।

इन्दियनिग्गह-पदं

सू० ६३—सोइन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

सोइन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६४—चक्खिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

चक्खिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु[2] रागदोस-निग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६५—घाणिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

घाणिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गन्धेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६६—जिब्भिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

जिब्भिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६७—फासिन्दियनिग्गहेणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

फासिन्दियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

१—सेलेसी पडिवन्ने विहरइ (वृ०); सेलेसिं पडिवन्ते अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेति, ततो पच्छा सिज्झति······ (वृ० पा०)।

२—चक्खिदिएसु (अ)।

कसायविजय-पदं

सू० ६८–कोहविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

कोहविजएणं खन्ति जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्मं न बन्ध पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ६९–माणविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

माणविजएणं मद्दवं जणयइ माणवेयणिज्जं कम्मं न बन्ध पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ७०–मायाविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

मायाविजएणं उज्जुभावं जणयइ मायावेयणिज्जं कम्मं बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

सू० ७१–लोभविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ लोभवेयणिज्जं कम्मं न बन्धइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।

खवणा-पद

सू० ७२–पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भन्ते! जीवे किं जणयइ ?

पेज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ। 'अट्ठविहस्स कम्मस्स कम्मगण्ठिविमोयणयाए'[1] तप्पढमयाए जहाणुपुव्वि अट्ठवीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं[2] पंचविहं अन्तरायं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ। तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुण्णं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावगं[3] केवल-

---

१–अट्ठविहकम्म विमोयणाए (बृ० पा०)
२–दंसणावरणं (उ, ऋ)।
३–लोगालोगसभावं (बृ० पा०)।

वरनाणदंसणं समुप्पाडेइ । जाव सजोगी भवइ ताव य इरियावहि
कम्मं बन्धइ सुहफरिसं दुसमयठिइयं । तं पढमसमए बद्धं विइयस
वेइयं तइयसमए निज्जिण्णं[1] तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं वेइयं निज्जि
सेयाले य अकम्मं चावि भवइ ।

सू० ७३–अहाउयं पालइत्ता अन्तोमुहुत्तद्धावसेसाउए[2] जोगनि
करेमाणे सुहुमकिरियं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झायम
तप्पढमयाए 'मणजोगं निरुम्भइ २ त्ता वइजोगं निरुम्भइ २
आणापाणुनिरोहं'[3] करेइ २ त्ता ईसि पंचरहस्सक्खरुच्चारद्धाए य
अणगारे समुच्छिन्नकिरियं अनियट्टिसुक्कज्झाणं झियायम
वेयणिज्जं आउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि[4] कम
जुगवं[5] खवेइ ।

निक्खेव-पदं

सू० ७४–तओ ओरालियकम्माइं च सव्वाहिं विप्पजहण
विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसम
अविग्गहेणं तत्थ गन्ता सागारोवउत्ते सिज्झइ बुज्झइ मुच
परिनिव्वाएइ सव्वदुक्खाणमन्तं करेइ[6] ।

१—निविण्णं (अ) ।

२—अंतोमुहुत्तअद्धावसेसाए (वृ० पा०) ; अंतोमुहुत्तावसेसाउए । (उ, ऋ, वृ० प

३—मणजोगं निरुम्भइ वइजोगं निरुम्भइ आणापाणुनिरोहं करेइ (वृ०) ; म
निरुम्भइ, वइजोगं निरुम्भइ, कायजोगं निरुम्भइ आणापाण ० (आ, इ) ।

४—× (उ, ऋ) ।

५—× (उ, ऋ) ।

६—(क) इह च चूर्णिकृता—"सेलेसीए णं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अ
जणति, अकम्मयाए जीवा सिज्झंति" इति पाठः, पूर्वत्र च क्वचित्किञ्चि
भेदेनाल्पा एव प्रश्ना आश्रिताः, अस्माभिस्तु भूयसीपु
यथाव्याख्यातपाठदर्शनादित्थमुन्नीतमिति (वृ० पा०) ।

(ख) सेलेसीएणं भन्ते ! जीवे किं जणयइ ? अकम्मयं जणति अकम्मयाए
सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति (चू

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए पन्नविए परूविए दंसिए[1] उवदंसिए।

—त्ति बेमि ॥

*

१—दंसिए निदंसिए (बृ)।

तीसइमं अज्झयणं

तवमग्गगई

उक्खेव-पदं

१—जहा उ पावगं कम्मं रागदोससमज्जियं ।
खवेइ तवसा भिक्खू तमेगग्गमणो सुण ॥

२—पाणवहमुसावाया[1]
अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ ।
राईभोयणविरओ
जीवो भवइ अणासवो ॥

३—पंचसमिओ तिगुत्तो अकसाओ जिइन्दिओ ।
अगारवो य निस्सल्लो जीवो होइ अणासवो ॥

४—एएसिं तु विवच्चासे[2] रागद्दोससमज्जियं ।
'जहा खवयइ भिक्खू'[3] 'तं मे एगमणो'[4] सुण ॥

५—जहा महातलायस्स सन्निरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए कमेणं सोसणा भवे ॥

६—'एवं तु'[5] संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ ॥

तव-पदं

७—सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भन्तरो तहा ।
बाहिरो छव्विहो वुत्तो एवमब्भन्तरो तवो ॥

१—पाणिवह मुसावाए (उ, ऋ) ।
२—विवज्जासे (बृ९) ।
३—खवेइ जं जहा कम्मं (उ, ऋ) ; खवेइ तं जहा भिक्खू (बृ०) ।
४—तं मे एगमणा (स) ; तमेगग्गमणो (सु) ।
५—एमेव (अ) ।

बाहिरगतव-पद

८–अणसणमूणोयरिया
भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ।
कायकिलेसो संलीणया य
बज्झो तवो होइ॥

९–इत्तिरिया मरणकाले[1] 'दुविहा अणसणा'[2] भवे।
इत्तिरिया सावकंखा निरवकंखा[3] विइज्जिया॥

१०–जो सो इत्तरियतवो
सो समासेण छव्विहो।
सेढितवो पयरतवो
घणो य 'तह होइ वग्गो य'[4]॥

११–तत्तो य वग्गवग्गो उ पंचमो छट्ठओ पइण्णतवो।
मणइच्छियचित्तत्थो नायव्वो होइ इत्तरिओ॥

१२–जा सा अणसणा मरणे दुविहा सा वियाहिया।
सवियारअवियारा[5] कायचिट्ठं पई भवे॥

१३–अहवा 'सपरिकम्मा अपरिकम्मा'[6] य आहिया।
नीहारिमणीहारी आहारच्छेओ य दोसु वि॥

१४–ओमोयरियं[7] पंचहा समासेण वियाहियं।
'दव्वओ खेत्तकालेणं'[8] भावेणं[9] पज्जवेहि य॥

१–°कालाय (उ ऋ)।
२–अणसणा दुविहा (उ ऋ, वृ०)।
३–निरकंखा उ (वृ०) निरवकखा उ (सु), निरवकंखा (वृ० पा०)।
४–वग्गो चउत्थोउ (अ)।
५–सवियारमवियारा (उ ऋ वृ० सु)।
६–सपडिकम्मा अपडिकम्मा (अ)।
७–ओमोयरणं (अ वृ० पा० ऋ)।
८–खित्तओ काले (ऋ) खत्त काले य (अ)।
९–भावओ (अ)।

१५—जो जस्स उ आहारो तत्तो ओमं[1] तु जो करे ।
जहन्नेणेगसित्थाई एवं दव्वेण ऊ भवे ॥

१६—गामे नगरे तह रायहाणि- निगमे य आगरे पल्ली ।
खेडे कव्बडदोणमुह- पट्टणमडम्बसंबाहे ॥

१७—आसमपए विहारे सन्निवेसे समायघोसे य ॥
थलिसेणाखन्धारे सत्थे संवट्टकोट्टे य ॥

१८—वाडेसु व रच्छासु व घरेसु वा एवमित्तियं खेत्तं ।
कप्पइ उ एवमाई एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥

१९—पेडा य अद्धपेडा
गोमुत्तिपयंगवीहिया चेव ।
सम्बुक्कावट्टाऽऽययगन्तुं
पच्चागया छट्ठा ॥

२०—दिवसस्स पोरुसीणं
चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो ।
एवं चरमाणो खलु
कालोमाणं मुणेयव्वो[2] ॥

२१—अहवा तइयाए पोरिसीए
ऊणाइ घासमेसन्तो ।
चउभागूणाए वा
एवं कालेण ऊ भवे ॥

२२—इत्थी वा पुरिसो वा
अलंकिओ वाऽणलंकिओ वा वि ।
अन्नयरवयत्थो वा
अन्नयरेणं व वत्थेणं ॥

१—ऊणं (अ) ।
२—मुणेयव्वं (उ, ऋ) ।

२३—अन्नेण विसेसेण
वण्णेण भावमणुमुयन्ते उ।
एव चरमाणो खलु
भावोमाण मुणेयव्वो[1] ॥
२४—दव्वे खेत्ते काले
भावम्मि य आहिया उ जे भावा।
एएहि ओमचरओ
पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥
२५—अट्ठविहगोयरग्ग तु तहा सत्तेव एसणा।
अभिग्गहा य जे अन्ने भिक्खायरियमाहिया ॥
२६—खीरदहिसप्पिमाई पणीय पाणभोयण।
परिवज्जण रसाण तु भणिय रसविवज्जण ॥
२७—ठाणा वीरासणाईया जीवस्स उ सुहावहा।
उग्गा जहा धरिज्जन्ति कायकिलेस तमाहिय ॥
२८—एगन्तमणावाए इत्थीपसुविवज्जिए।
सयणासणसेवणया विवित्तसयणासण ॥
२९—एसो वाहिरगतवो समासेण वियाहिओ।
अब्भिन्तर 'तव एत्तो'[2] वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

अब्भिंतरतव-पद

३०—पायच्छित्त विणओ
वेयावच्च तहेव सज्झाओ।
'झाण च विउस्सग्गो'[3]
'एसो अब्भिन्तरो तवो'[4] ॥

१—मुणेयव्व (उ, ऋ)।
२—तवो इत्तो (उ, ऋ)।
३—झाण उस्सग्गो वि य (उ ऋ, स)।
४—अब्भिन्तरओ तवो होइ (उ, ऋ, स)।

३१—आलोयणारिहाईयं पायच्छित्तं तु दसविहं ।
जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ॥

३२—अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदायणं ।
गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणओ एस वियाहिओ ॥

३३—आयरियमाइयम्मि[1] य वेयावच्चम्मि दसविहे ।
आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ॥

३४—वायणा पुच्छणा चेव तहेव परियट्टणा ।
अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाओ पंचहा भवे ॥

३५—अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता झाएज्जा सुसमाहिए ।
धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए ॥

३६—सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे ।
कायस्स विउस्सग्गो छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥

निक्खेव-पदं

३७—एवं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी ।
'से खिप्पं सव्वसंसारा विप्पमुच्चइ पण्डिए'[2] ॥

—त्ति बेमि ॥

*

१—आयरिमाईए (उ, ऋ) ।
२—सो खवेत्तु रयं अरओ नीरयं तु गइं गए (वृ० पा०) ।

एगतीसइमं अज्झयणं

चरणविही

१—चरणविहिं पवक्खामि जीवस्स उ सुहावहं ।
जं चरित्ता बहू जीवा तिण्णा संसारसागरं ॥

२—एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं ॥

३—रागद्दोसे य दो पावे पावकम्मपवत्तणे ।
जे भिक्खू रुम्भई निच्चं से न अच्छइ[1] मण्डले ॥

४—दण्डाणं गारवाणं च सल्लाणं च तियं तियं ।
जे भिक्खू चयई निच्चं से न अच्छइ[2] मण्डले ॥

५—दिव्वे य जे[3] उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई निच्चं से न अच्छइ[4] मण्डले ॥

६—विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं से न अच्छइ[5] मण्डले ॥

७—वएसु इन्दियत्थेसु 'समिईसु किरियासु य'[6] ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

८—लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

९—पिण्डोग्गहपडिमासु भयट्ठाणेसु सत्तसु ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१, २—गच्छइ (अ, बृ० पा०) ।
३—× (उ, ऋ) ।
४, ५—गच्छइ (अ, बृ० पा०) ।
६—समीतीसु य तहेव य (बृ० पा०) ।

१०—मयेसु बम्भगुत्तीसु भिक्खुधम्मंमि दसविहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
११—उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
१२—किरियासु भूयगामेसु परमाहम्मिएसु य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
१३—गाहासोलसएहिं तहा अस्संजमम्मि य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
१४—बम्भम्मि नायज्झयणेसु ठाणेसु यऽ समाहिए ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
१५—एगवीसाए सवलेसु बावीसाए परीसहे ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
१६—तेवीसइ सूयगडे रूवाहिएसु सुरेसु[1] अ ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
१७—पणवीसणावणाहिं[2] उद्देसेसु दसाइणं ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
१८—अणगारगुणेहिं च पकप्पम्मि तहेव य[3] ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
१९—पावसुयपसंगेसु मोहट्ठाणेसु चेव य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥
२०—सिद्धाइगुणजोगेसु तेत्तीसासायणासु[4] य ।
जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मण्डले ॥

१—देवेसु (वृ० पा०) ।
२—पणु० (अ) ।
३—उ (उ, ऋ, वृ) ।
४—०णाणि (अ) ।

२१–इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया ।
खिप्पं से सव्वससारा विप्पमुच्चइ पण्डिओ ॥
—त्ति बेमि ॥

*

बत्तीसइमं अज्झयणं

पमायट्ठाणं

उक्खेव-पदं

१—अच्चन्तकालस्स समूलगस्स
सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।
तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता
सुणेह एगग्गहियं[1] हियत्थं ॥

२—नाणस्स सव्वस्स[2] पगासणाए
अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं
एगन्तसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥

३—तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा
विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
'सज्झायएगन्तनिसेवणा य'[3]
सुत्तत्थसंचिन्तणया धिई य ॥

४—आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं
सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धिं[4] ।
निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं
समाहिकामे समणे तवस्सी ॥

१—एगन्त° (वृ० पा०, सु) ।
२—सच्चस्स (वृ० पा०, सु, पा) ।
३— ° निसेवणाए (वृ० पा०) ; ° निवेसणा य (वृ०) ।
४—निउणेह° (वृ० पा०) ।

५—न वा लभेज्जा निउण सहाय
गुणाहिय वा गुणओ सम वा ।
एक्को वि पावाइ विवज्जयन्तो[1]
विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥

तण्हा-पद

६—जहा य अण्डप्पभवा वलागा
अण्ड बलागप्पभव जहा य ।
एमेव मोहाययण खु तण्ह[2]
मोह च तण्हाययण वयन्ति ॥

७—रागो य दोसो वि य कम्मबीय
कम्म च मोहप्पभव वयन्ति ।
कम्म च जाईमरणस्स मूल
दुक्ख च जाईमरण वयन्ति ॥

८—दुक्ख हय जस्स न होइ मोहो
मोहो हओ जस्स न हाइ तण्हा ।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो
लोहो हओ जस्स न किंचणाइ[3] ॥

उवाय-पद

९—राग च दास च तहेव मोह
उद्धत्तुकामेण समूलजाल ।
ज ज 'उवाया पडिवज्जियव्वा'[4]
ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्वि ॥

१—अणायरन्तो (वृ० पा०) ।
२—तण्हा (अ) ।
३—किंचनत्थि (वृ० पा०) ।
४—अपाया परि० (वृ० पा०) ।

०—रसा पगामं न निसेवियव्वा
पायं रसा दित्तिकरा[1] नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्दवन्ति
दुमं जहा साउफलं व पक्खी ॥

१—जहा दवग्गी पउरिन्धणे वणे
समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविन्दियग्गी वि पगामभोइणो
न बम्भयारिस्स हियाय कस्सई ॥

२—विवित्तसेज्जासणजन्तियाणं
ओमासणाणं[2] दमिइन्दियाणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं
पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥

३—जहा बिरालावसहस्स मूले
न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे
न बम्भयारिस्स खमो निवासो ॥

४—न रूवलावण्णविलासहासं
न जंपियं इंगियपेहियं[3] वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता
दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥

—दित्तकरा (वृ० पा०) ।
—ओमासणाए, ओमासणाई (वृ०, पा०) ।
— ० वीहियं (वृ०, सु) ।

१५—अदंसणं चेव अपत्थणं च
अचिन्तणं चेव अकित्तणं च।
इत्थीजणस्सारियझाणजोग्गं
हियं सया बम्भवए[1] रयाणं॥

१६—कामं तु देवीहि विभूसियाहिं
न चाइया खोभइउं तिगुत्ता।
तहा वि एगन्तहियं ति नच्चा
विवित्तवासो[2] मुणिणं[3] पसत्थो॥

१७—मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स
संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे।
नेयारिसं[4] दुत्तरमत्थि लोए
जहित्थिओ बालमणोहराओ॥

१८—एए य संगे समइक्कमित्ता
सुहुत्तरा चेव भवन्ति सेसा।
जहा महासागरमुत्तरित्ता
नई भवे अवि गंगासमाणा॥

दुक्ख-पद

१९—कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं
सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स।
जं काइयं माणसियं च किंचि
तस्सऽन्तगं गच्छइ वीयरागो॥

१—बंभचेरे (उ, बृ० पा०, ऋ)।
२—°भावो (उ, ऋ)।
३—मुणिणो (अ)।
४—न तारिसं (आ, इ, उ, ऋ)।

२०—जहा य किंपागफला मणोरमा
रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा।
'ते खुड्डए जीविय'[1] पच्चमाणा
एओवमा कामगुणा विवागे॥

२१—जे इन्दियाणं विसया मणुन्ना
न तेसु[2] भावं निसिरे कयाइ।
न याऽमणुन्नेसु मणं पि[3] कुज्जा
समाहिकामे समणे तवस्सी॥

२२—चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो॥

रूव-पदं

२३—रूवस्स चक्खुं गहणं वयन्ति
चक्खुस्स रूवं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु[4]
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु[5]॥

२४—रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[6]
अकालियं पावइ से विणासं[7]।
रागाउरे से जह वा पयंगे
आलोयलोले समुवेइ मच्चुं॥

१—ते जीवियं खुद्दए (अ); ते जीवियं खुंदति (वृ० पा०); ते खुद्दए जीवियं (सु)।
२—तेसि (अ)। ३—तु (अ)।
४—तमणुण्णमाहु (वृ० पा०)। ५—तऽमणुण्णमाहु (वृ० पा०)।
६—निच्चं (अ)। ७—किलेसं (वृ० पा०)।

२५–जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[1]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं[2]।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥

२६–एगन्तरत्ते[3] रुइरंसि रूवे
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

२७–रूवाणुगासाणुगए[4] य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

२८–रूवाणुवाएण[5] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे[6]।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[7] ॥

२९–रूवे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१–निच्च (वृ०, अ)।
२–समुवेति सव्व (वृ० पा०)।
३–° रत्तो (अ)।
४–° वायाणुगए (वृ० पा०)।
५–° वाए य (अ)। ° रागेण (वृ० पा०), ° वाए ण (सु)।
६–° तन्निओगे (उ)।
७–अतित्त ° (वृ०), अतित्ति ° (वृ० पा०)।

३०—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थाऽवि दुक्खा न विमुच्चई से ॥
३१—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥
३२—रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥
३३—एमेव रूवम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥
३४—रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

सद्द-पदं

३५—सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

१—उ (अ)।

३६—सद्दस्स सोयं गहणं वयन्ति
सोयस्स सद्दं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु॥

३७—सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[1]
अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे हरिणमिगे व[2] मुद्धे[3]
सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं॥

३८—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[4]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि सद्दं अवरज्झई से॥

३९—एगन्तरत्ते रुइरंसि सद्दे
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो॥

४०—सद्दाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परियावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे॥

१—निच्चं (अ)।
२—व्व (उ, ऋ)।
३—वुद्धे (अ)।
४—निच्चं (अ वृ०)।

४१—सद्दाणुवाएण[1]   परिग्गहेण
उप्पायणे   रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[2] ॥

४२—सद्दे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण   दुही   परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

४३—तण्हाभिभूयस्स   अदत्तहारिणो
सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

४४—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि   समाययन्तो
सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

४५—सद्दाणुरत्तस्स   नरस्स   एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे   वि   किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—०वाए य (अ) ; रागेण (वृ० पा०) ; वाए ण (सु) ।
२—अतित्त (बृ) ; अतित्ति (वृ० पा०) ।

४६—एमेव सद्दम्मि गओ पओस
उवेइ दुक्खोहपरपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्म
ज से पुणो होइ दुह विवागे ॥

४७—सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो[2]
एएण दुक्खोहपरपरेण ।
न लिप्पए भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलास ॥

गन्ध-पद

४८—घाणस्स गन्ध गहण वयन्ति
त रागहेउ तु मणुन्नमाहु ।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

४९—गन्धस्स घाण गहण वयन्ति
घाणस्स गन्ध गहण वयन्ति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥

५०—गन्धेसु[3] जो गिद्धिमुवेइ तिव्व[4]
अकालिय पावइ से विणास ।
रागाउरे ओसहिगन्धगिद्धे
सप्पे विलाओ विव निक्खमन्ते ॥

१—उ (अ) ।
२—असोगो (अ) ।
३—गंधस्स (अ ऋ) ।
४—निच्चं (अ) ।

५१—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[1]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि गन्धं अवरज्झई से ॥

५२—एगन्तरत्ते रुइरंसि गन्धे
अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ वाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

५३—गन्धाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

५४—गन्धाणुवाएण[2] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[3] ॥

५५—गन्धे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

१—निच्चं (वृ०, अ) ।
२—°वाए य (अ) ; °रागेण (वृ० पा०) ; °वाए ण (सु) ।
३—अतित्त° (वृ०) ; अतित्ति° (वृ० पा०) ।

५६—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से॥

५७—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥

५८—गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं॥

५९—एमेव गन्धम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे॥

६०—गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं॥

रस-पद

६१—जिहाए रसं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो॥

१—उ (अ)।

६२—रसस्स जिब्भं[1] गहणं वयन्ति
जिब्भाए रसं गहणं वयन्ति।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु॥

६३—रसेसु[2] जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[3]
अकालियं पावइ से विणासं।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए
मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे[4]॥

६४—जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं[5]
तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
'रसं न किंचि'[6] अवरज्झई से॥

६५—एगन्तरत्ते रुइरे रसम्मि
अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो॥

६६—रसाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे॥

१—जीहा (उ, ऋ)।
२—रसस्स (अ, ऋ)।
३—निच्चं (अ)।
४—० लोभगिद्धे (अ)।
५—निच्चं (वृ०, अ)।
६—न किंचि रस्सं (अ)।

५६—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
गन्धे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

५७—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
गन्धे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

५८—गन्धाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

५९—एमेव गन्धम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

६०—गन्धे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

रस-पद

६१—जिहाए रस गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु।
त दोसहेउ अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

१—उ (अ)।

६७–रसाणुवाएण[1] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे।
वए विओगे य कहिं सुहं से?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[2] ॥

६८–रसे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं॥

६९–तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
रसे अतित्तस्स परिग्गहे य।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से॥

७०–मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो॥

७१–रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि?।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं?॥

१—°वाए य (अ); °रागेण (वृ० पा०); °वाए ण (सु)।
२—अतित्त° (वृ०); अतित्ति° (वृ० पा०)।

७२—एमेव रसम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

७३—रसे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

फास-पदं

७४—कायस्स फासं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

७५—फासस्स कायं गहणं वयन्ति
कायस्स फासं गहणं वयन्ति ।
'रागस्स हेउं समणुन्नमाहु'[2]
'दोसस्स हेउं'[3] अमणुन्नमाहु ॥

७६—फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं[4]
अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीयजलावसन्ने
गाहग्गहीए महिसे व ऽरन्ने ॥

१—उ (अ) ।
२—तं राग हेउं तु मणुन्नमाहु (अ) ।
३—तं दोस हेउस्स (अ) ।
४—निच्चं (अ) ।

७७–जे यावि दोस समुवेइ तिव्व[1]
तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि फास अवरज्झई से ॥

७८–एगन्तरत्ते रुइरसि फासे
अतालिसे से कुणई पओस ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ वाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

७९–फासाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ वाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

८०–फासाणुवाएण[2] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुह से ?
सभोगकाले य अतित्तिलाभे[3] ॥

८१–फासे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्त ॥

१—निच्च (वृ० अ) ।
२—°वाए य (अ), °रागेण (वृ० पा०), °वाए ण (सु) ।
३—अतित्त° (वृ०), अतित्ति° (वृ० पा०) ।

८२—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
फासे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

८३—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

८४—फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

८५—एमेव फासम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

८६—फासे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

भाव-पदं

८७—मणस्स भावं गहणं वयन्ति
तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु
समो य जो तेसु स वीयरागो ॥

१—उ (अ) ।

८८—भावस्स मण गहण वयन्ति
मणस्स भाव गहण वयन्ति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥

८९—भावेसु[1] जो गिद्धिमुवेइ तिव्व[2]
अकालिय पावइ से विणास ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे
करेणुमग्गावहिए 'व नागे'[3] ॥

९०—जे यावि दोस समुवेइ तिव्व[4]
तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि भाव अवरज्झई से ॥

९१—एगन्तरत्ते रुइरसि भावे
अतालिसे से कुणई पओस ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ बाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

९२—भावाणुगासाणुगए य जीवे
चराचरे हिंसइ ऽणेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

१—मणेण (अ) , भावस्स (ऋ) ।
२—निच्चं (अ) ।
३—गए व्व (अ) ।
४—निच्चं (वृ०, अ) ।

९३—भावाणुवाएण[1] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[2] ॥

९४—भावे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

९५—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

९६—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

९७—भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—°वाए य (अ); °रागेण (वृ० पा०); °वाए ण (सु)।
२—अतित्त° (वृ०); अतित्ति° (वृ० पा०)।

८८–भावस्स मण गहण वयन्ति
मणस्स भाव गहण वयन्ति ।
रागस्स हेउ समणुन्नमाहु
दोसस्स हेउ अमणुन्नमाहु ॥

८९–भावेसु[1] जो गिद्धिमुवेइ तिव्व[2]
अकालिय पावइ से विणास ।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे
करेणुमग्गावहिए 'व नागे'[3] ॥

९०–जे यावि दोस समुवेइ तिव्व[4]
तसि क्खणे से उ उवेइ दुक्ख ।
दुद्दन्तदोसेण सएण जन्तू
न किंचि भाव अवरज्झई से ॥

९१–एगन्तरत्ते रुइरसि भावे
अतालिसे से कुणई पओस ।
दुक्खस्स सपीलमुवेइ वाले
न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥

९२–भावाणुगासाणुगए य जोवे
चराचरे हिंसइ ऽणगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ वाले
पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥

१—मणेण (अ), भावस्स (ऋ) ।
२—निच्चं (अ) ।
३—गए व्व (अ) ।
४—निच्चं (वृ०, अ) ।

९३—भावाणुवाएण[1] परिग्गहेण
उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे य कहिं सुहं से ?
संभोगकाले य अतित्तिलाभे[2] ॥

९४—भावे अतित्ते य परिग्गहे य
सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स
लोभाविले आययई अदत्तं ॥

९५—तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो
भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा
तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥

९६—मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य
पओगकाले य दुही दुरन्ते ।
एवं अदत्ताणि समाययन्तो
भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥

९७—भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं
कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ? ।
तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं
निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥

१—°वाए य (अ); °रागेण (वृ० पा०); °वाए ण (सु)।
२—अतित्त° (पृ०); अतित्ति° (वृ० पा०)।

९८–एमेव भावम्मि गओ पओसं
उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो य[1] चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥

९९–भावे विरत्तो मणुओ विसोगो
एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झे वि सन्तो
जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥

निक्खेव-पदं

१००–एविन्दियत्था य मणस्स अत्था
दुक्खस्स हेउं मणुयस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं
न वीयरागस्स करेन्ति किंचि ॥

१०१–न कामभोगा समयं उवेन्ति
न यावि भोगा विगइं उवेन्ति ।
जे तप्पओसी य परिग्गही य
सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥

१०२–कोहं च माणं च तहेव मायं
लोहं दुगुंछं अरइं रइं च ।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं
नपुसवेयं विविहे य भावे ॥

१०३–आवज्जई एवमणेगरूवे
एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
अन्ने य एयप्पभवे विसेसे
कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥

१–उ (अ)।

१०४–कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू
पच्छाणुतावेय[1] तवप्पभावं।
एवं वियारे अमियप्पयारे
आवज्जई इन्दियचोरवस्से॥

१०५–तओ से जायन्ति पओयणाइं
निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि।
सुहेसिणो दुक्खविणोयणट्ठा[2]
तप्पच्चयं[3] उज्जमए य रागी॥

१०६–विरज्जमाणस्स य इन्दियत्था
सद्दाइया[4] तावइयप्पगारा।
न तस्स सव्वे वि मणुन्नयं वा
निव्वत्तयन्ती अमणुन्नयं वा॥

१०७–एवं ससंकप्पविकप्पणासुं[5]
संजायई समयमुवट्ठियस्स।
'अत्थे य संकप्पयओ'[6] तओ से
पहीयए कामगुणेसु तण्हा॥

१०८–स वीयरागो कयसव्वकिच्चो
खवेइ नाणावरणं खणेणं।
तहेव जं दंसणमावरेइ
जं चऽन्तरायं पकरेइ कम्मं॥

१—पच्छाणुतावेण (सु)।
२—दुक्ख विमोयणाय (वृ० पा०)।
३—तप्पचया (वृ० पा०)।
४—वण्णाइया (वृ० पा०)।
५—० विकप्पणासो (वृ० पा०)।
६—अत्थे असंकप्पयतो (वृ० पा०)।

१०९–सव्वं तओ जाणइ पासए य
अमोहणे होइ निरन्तराए।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते
आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे॥

११०–सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को
जं बाहई सययं जन्तुमेयं।
दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो
तो होइ अच्चन्तसुही कयत्थो॥

१११–अणाइकालप्पभवस्स एसो
'सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो'[1]।
वियाहिओ जं समुविच्च सत्ता
कमेण अच्चन्तसुही भवन्ति॥
—त्ति बेमि॥

*

१—संसार चक्कस्स विमोक्खमग्गे (वृ० पा०)

तेतीसइमं अज्झयणं

कम्मपयडी

उक्खेव-पदं

१—अट्ठ कम्माइं वोच्छामि आणुपुव्विं जहक्कमं[1] ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो संसारे परिवत्तए[2] ॥

कम्म-पदं

२—नाणस्सावरणिज्जं दंसणावरणं तहा ।
वेयणिज्जं तहा मोहं आउकम्मं तहेव य ॥
३—नामकम्मं च गोयं च अन्तरायं तहेव य ।
एवमेयाइ कम्माइं अट्ठेव उ समासओ ॥

पयडि-पदं

४—नाणावरणं पंचविहं सुयं आभिणिबोहियं ।
ओहिनाणं तइयं मणनाणं च केवलं ॥
५—निद्दा तहेव पयला
निद्दानिद्दा य पयलपयला य ।
तत्तो य थीणगिद्धी उ
पंचमा होइ नायव्वा ॥
६—चक्खुमचक्खुओहिस्स
दंसणे केवले य आवरणे ।
एवं[3] तु नवविगप्पं
नायव्वं दंसणावरणं ॥

१—सुणेह मे (बृ० पा०) ।
२—परिभम्मए (बृ० पा०) ।
३—एयं (अ) ।

७—वेयणीय पि य[1] दुविह
सायमसाय च आहिय।
सायस्स उ वहू भेया
एमेव असायस्स वि ॥

८—मोहणिज्ज पि दुविह दसण चरणे तहा।
दसणे तिविह वुत्त चरणे दुविह भवे ॥

९—सम्मत्त चेव मिच्छत्त सम्मामिच्छत्तमेव य।
एयाओ तिन्नि पयडीओ मोहणिज्जस्स दसणे ॥

१०—'चरित्तमोहण कम्म दुविह तु वियाहिय'[2]।
कसायमोहणिज्ज'[3] तु नोकसाय तहेव य ॥

११—सोलसविहभेएण कम्म तु कसायज।
सत्तविह नवविह वा कम्म नोकसायज ॥

१२—नेरइयतिरिक्खाउ मणुस्साउ तहेव य।
देवाउय चउत्थ तु[4] आउकम्म चउव्विह ॥

१३—नाम कम्म तु[5] दुविह सुहमसुह 'च आहिय'[6]।
सुहस्स उ[7] वहू भेया एमेव असुहस्स वि ॥

१४—गोय कम्म दुविह उच्च नीय च आहिय।
उच्च अट्ठविह होइ एव नीय पि आहिय ॥

१५—दाणे लाभे य भोग य उवभोगे वीरिए तहा।
पचविहमन्तराय समासेण वियाहिय ॥

१—हु (ऋ)।
२—चरित्त मोहणिज्ज दुविह वोच्छामि अणुपुव्वसो (वृ० पा०)।
३—० वेयणिज्ज य (वृ०)।
४ ५—× (उ ऋ)।
६—वियाहियं (उ ऋ)।
७—[illegible]

१६–एयाओ मूलपयडीओ उत्तराओ य आहिया।
पएसग्गं खेत्तकाले य भावं चादुत्तरं सुण॥

पएस-पदं

१७–सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्गमणन्तगं।
गण्ठियसत्ताईयं[1] अन्तो सिद्धाण आहियं॥

१८–सव्वजीवाण कम्मं तु संगहे छद्दिसागयं।
सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण बद्धगं॥

ठिइय-पदं

१९–उदहीसरिनामाणं तीसई कोडिकोडिओ।
उक्कोसिया ठिई होइ अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

२०–आवरणिज्जाण दुण्हं पि वेयणिज्जे तहेव य।
अन्तराए य कम्मम्मि ठिई एसा वियाहिया॥

२१–उदहीसरिनामाणं सत्तरिं कोडिकोडिओ।
मोहणिज्जस्स उक्कोसा अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

२२–तेत्तीस सागरोवमा उक्कोसेण वियाहिया।
ठिई उ आउकम्मस्स अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

२३–उदहीसरिनामाणं वीसई कोडिकोडिओ।
नामगोत्ताणं उक्कोसा अट्ठ मुहुत्ता जहन्निया॥

अणुभाग-पदं

२४–सिद्धाणऽणन्तभागो य[2] अणुभागा हवन्ति उ।
सव्वेसु वि पएसग्गं सव्वजीवेसु ऽइच्छियं[3]॥

१—गण्ठि सत्ताणाइ (वृ० पा०)।
२—× (उ, ऋ)।
३—स इच्छियं (उ, सु) ; अहिच्छियं (स)।

निक्खेव-पद

२५–तम्हा एएसि कम्माण अणुभागे वियाणिया।
एएसिं संवरे चेव खवणे य जए बुहे॥
—त्ति बेमि॥

*

चउतीसइमं अज्झयणं

लेसज्झयणं

उक्खेव-पदं

१–लेसज्झयणं पवक्खामि आणुपुव्विं जहक्कमं ।
छण्हं पि कम्मलेसाणं अणुभावे सुणेह मे ॥

२–नामाइं वण्णरसगन्ध- फासपरिणामलक्खणं ।
ठाणं ठिइं गइं चाउं लेसाणं तु सुणेह मे ॥

लेसा-पदं

३–किण्हा नीला य काऊ य तेऊ पम्हा तहेव य ।
सुक्कलेसा य छट्ठा उ[1] नामाइं तु जहक्कमं ॥

वण्ण-पदं

४–जीमूयनिद्धसंकासा गवलरिट्ठगसन्निभा ।
खंजणंजणनयणनिभा किण्हलेसा उ वण्णओ ॥

५–नीलाऽसोगसंकासा चासपिच्छसमप्पभा ।
वेरुलियनिद्धसंकासा नीललेसा उ वण्णओ ॥

६–अयसीपुप्फसंकासा कोइलच्छदसन्निभा ।
पारेवयगीवनिभा काउलेसा उ वण्णओ ॥

७–हिंगुलुयधाउसंकासा तरुणाइच्चसन्निभा[2] ।
सुयतुण्डपईवनिभा[3] तेउलेसा उ वण्णओ ॥

८–हरियालभेयसंकासा हलिद्दाभेयसंनिभा[4] ।
सणासणकुसुमनिभा पम्हलेसा उ[5] वण्णओ ॥

१–य (उ, ऋ) ।
२–°च्छावि° (वृ० पा०) ।
३–सुयतुंडगसंकासा, सुयतुण्डालत्तदीवाभा (वृ० पा०) ।
४–°सप्पभा (अ, आ, इ) ।
५–य (ऋ) ।

९—संखककुन्दसंकासा खीरपूरसमप्पभा[1] ।
रययहारसंकासा सुक्कलेसा उ[2] वण्णओ ॥

रस-पद

१०—जह कडुयतुम्बगरसो
निम्बरसो कडुयरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[3] किण्हाए नायव्वो ॥

११—जह तिगडुयस्स य रसो
तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ नीलाए नायव्वो ॥

१२—जह तरुणअम्बगरसो
तुवरकविट्ठस्स[4] वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ काऊए नायव्वो ॥

१३—जहपरिणयम्बगरसो
पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[5] तेऊए नायव्वो ॥

१—खीरतूल° (वृ०), खीरधार°, खीरपूर° (वृ० पा०) ।
२, ३—य (ऋ) ।
४—तुबर° (अ), तुवरु° (उ), अट्ट° (वृ० पा०) ।
५—य (ऋ) ।

१४—वरवारुणीए व रसो
विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
'महुमेरगस्स व रसो
एत्तो पम्हाए[1] परएणं'[2] ॥

१५—खज्जूरमुद्दियरसो
खीररसो खण्डसक्कररसो वा ।
एत्तो वि अणन्तगुणो
रसो उ[3] सुक्काए नायव्वो ॥

गन्ध-पदं

१६—जह गोमडस्स गन्धो
सुणगमडगस्स[4] व जहा अहिमडस्स ।
'एत्तो वि'[5] अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥

१७—जह सुरहिकुसुमगन्धो
गन्धवासाण[6] पिस्समाणाणं[7] ।
'एत्तो वि'[8] अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥

१—पम्हाउ (अ) ।
२—एत्तो वि अणंत गुणो रसो उ पम्हाए नायव्वो (वृ० पा०) ।
३—य (ऋ) ।
४—० मडस्स (उ, ऋ) ।
५—एत्तोउ (अ) ; इत्तो वि (उ, ऋ) ।
६—गंधाण य (वृ० पा०) ।
७—पिस्समाणेणं (अ) ।
८—एत्तोउ (अ) ; इत्तो वि (उ, ऋ) ।

फास-पदं

१८—जह करगयस्स फासो
गोजिब्भाए व सागपत्ताणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो
लेसाणं अप्पसत्थाणं॥

१९—जह बूरस्स व फासो
नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं।
एत्तो वि अणन्तगुणो
पसत्थलेसाण तिण्हं पि॥

परिणाम-पद

२०—तिविहो व नवविहो वा
सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा।
दुसओ तेयालो वा
लेसाण होइ परिणामो॥

२१—पचासवप्पवत्तो[1]
तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ य।
'तिव्वारम्भपरिणओ
खुद्दो साहसिओ नरो'[3]॥

२२—'निद्धन्धसपरिणामो निस्संसो अजिइन्दिओ'[2]।
एयजोगसमाउत्तो किण्हलेसं तु परिणमे॥

१—°प्पमत्तो (बृ), °प्पवत्तो (बृ० पा०)।
२—निद्धन्धसपरिणामो निस्ससो अजिइन्दिओ। (बृ० पा०)।
३—तिव्वारम परिणओ खुद्दो साहसिओ नरो॥ (बृ० पा०)।

२३—इस्साअमरिसअतवो अविज्जमाया 'अहीरिया य'[1]।
गेद्धी पओसे य सढे पमत्ते[2] रसलोलुए सायगवेसए य ॥

२४—आरम्भाओ[3] अविरओ खुद्दो साहस्सिओ नरो।
एयजोगसमाउत्तो नीललेसं तु परिणमे ॥

२५—वंके वंकसमायारे नियडिल्ले अणुज्जुए।
पलिउंचग ओवहिए मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥

२६—उप्फालगदुट्ठवाई[4] य तेणे यावि य मच्छरी।
एयजोगसमाउत्तो काउलेसं तु परिणमे ॥

२७—नीयावित्ती अचवले अमाई अकुऊहले।
विणीयविणए दन्ते जोगवं उवहाणवं ॥

२८—पियधम्मे दढधम्मे वज्जभीरू हिएसए[5]।
एयजोगसमाउत्तो तेउलेसं तु परिणमे ॥

२९—पयणुकोहमाणे य मायालोभे य पयणुए।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा जोगवं उवहाणवं ॥

३०—तहा पयणुवाई[6] य उवसन्ते जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो पम्हलेसं तु परिणमे ॥

३१—अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता धम्मसुक्काणि झायए[7]।
पसन्तचित्ते दन्तप्पा समिए गुत्ते य गुत्तिहिं ॥

१—अहीरियगयाय (अ)।
२—य मत्ते (वृ० पा०)।
३—आरम्भओ (अ); आरम्भा (उ, ऋ)।
४—उफालदुट्ठवाई (अ); उप्फासग ० (उ); उप्फाडग ० (ऋ)।
५—हियासए, अणासए (वृ० पा०)।
६—० याइ (अ)।
७—साहए (वृ०, सु); झायए (वृ० पा०)।

३२—सरागे वीयरागे वा[1] उवसन्ते[2] जिइन्दिए।
एयजोगसमाउत्तो　　सुक्कलेसं तु परिणमे॥

ठाण-पद

३३—असंखिज्जाणोसप्पिणीण[3]
उस्सप्पिणीण जे समया।
संखाईया[4] लोगा
लेसाण हुन्ति ठाणाइं॥

ठिइ-पद

३४—'मुहुत्तद्धं तु'[5] जहन्ना
तेत्तीसं सागरा मुहुत्तऽहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा किण्हलेसाए॥

३५—'मुहुत्तद्धं तु'[6] जहन्ना
दस उदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा नीललेसाए॥

३६—'मुहुत्तद्धं तु'[7] जहन्ना
तिण्णुदही पलियमसंखभागमब्भहिया।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा काउलेसाए॥

१—य (अ)।
२—सुद्धजोगे (वृ० पा०)।
३—असंखेज्जाणओ उसप्पिणीण (अ)।
४—असखेया (वृ० पा०)।
५—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०)।
६—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०)।
७—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०)।

३७–'मुहुत्तद्धं तु'[1] जहन्ना
दोउदही पलियमसंखभागमब्भहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा तेउलेसाए ॥

३८–'मुहुत्तद्धं तु'[2] जहन्ना
दस 'होन्ति सागरा मुहुत्ताहिया'[3]।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा पम्हलेसाए ॥

३९–'मुहुत्तद्धं तु'[4] जहन्ना
तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया ।
उक्कोसा होइ ठिई
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥

४०–एसा खलु लेसाणं
ओहेण ठिई उ वण्णिया होइ ।
चउसु वि गईसु एत्तो
लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ॥

४१–दस वाससहस्साइं
काऊए ठिई जहन्निया होइ ।
'तिण्णुदही 'पलिओवम
असंखभागं'[5] च उक्कोसा'[6] ॥

१—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
२—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
३—उदही हुंति मुहुत्तमब्भहिया (उ, ऋ) ।
४—मुहुत्तद्धा उ (वृ० पा०) ।
५—पलियमसंख भागं (सु) ; पलियमसंखेज्ज भागं (वृ०) ।
६—उक्कोसा तिन्नुदही पलियमसंखेज्जभागऽहिय (वृ० पा०) ।

४२–तिण्णुदही पलिय-
मसंखभागा जहन्नेण नीलठिई ।
दस उदही 'पलिओवम
असंखभागं'[1] च उक्कोसा ॥

४३–'दस उदही 'पलिय-
मसंखभागं'[2] जहन्निया होइ ।
तेत्तीससागराइं उक्कोसा
होइ किण्हाए ॥'[3]

४४–एसा नेरइयाणं
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
तिरियमणुस्साण देवाणं ॥

४५–अन्तोमुहुत्तमद्धं
लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ ।
तिरियाण नराणं वा[4]
वज्जित्ता केवलं लेसं ॥

४६–मुहुत्तद्धं तु जहन्ना
उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ ।
नवहि वरिसेहि ऊणा
नायव्वा सुक्कलेसाए ॥

१—पलिअ असक्खभाग (उ, ऋ) ।
२—पलियमसख भाग च (उ) ।
३—दस उदही पलियमसख भाग च जहन्नेण कण्ह लेसाए ।
तेत्तीस सागराइ मुहुत्त अहिया उ उक्कोसा ॥ (अ) ॥
४—तु (वृ०) , च (उ, ऋ) ।

४७—एसा तिरियनराणं
लेसाण ठिई उ वण्णिया होइ ।
तेण परं वोच्छामि
लेसाण ठिई उ देवाणं ॥

४८—दस वाससहस्साइं
किण्हाए ठिई जहन्निया होइ ।
पलियमसंखिज्जइमो
उक्कोसा होइ किण्हाए ॥

४९—जा किण्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं नीलाए
'पलियमसंखं तु'[1] उक्कोसा ॥

५०—जा नीलाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं काऊए
पलियमसंखं च उक्कोसा ॥

५१—तेण परं वोच्छामि
तेउलेसा जहा सुरगणाणं ।
भवणवइवाणमन्तर-
जोइसवेमाणियाणं च ॥

१—पलियमसंखं च (उ, ऋ) ; पलियमसंखिज्ज (वृ०) ।

५२—पलिओवमं[1] जहन्ना
उक्कोसा सागरा उ दुण्हऽहिया[2] ।
पलियमसंखेज्जेणं
होई भागेण[3] तेऊए ॥
५३—दस वाससहस्साइं
तेऊए ठिई जहन्निया होइ ।
दुण्णुदही पलिओवम
असंखभागं च उक्कोसा ॥
५४—जा तेऊए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं पम्हाए दसउ
मुहुत्तऽहियाइं च उक्कोसा ॥
५५—जा पम्हाए ठिई खलु
उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं सुक्काए
तेत्तीसमुहुत्तमब्भहिया ॥

अहम्मलेसा-पद

५६—किण्हा नीला काऊ
तिन्नि वि एयाओ अहम्मलेसाओ[4]।
एयाहि तिहि वि जीवो
दुग्गइं उववज्जई बहुसो[5] ॥

१—पलिओवमं च (अ) ।
२—दुन्निहिया (उ, ऋ) ।
३—तिभागेण (अ) ।
४—अहम° (अ, वृ० पा०) ।

धम्मलेसा-पदं

५७—तेऊ पम्हा सुक्का
तिन्नि वि एयाओ धम्मलेसाओ।
एयाहि तिहि वि जीवो
सुग्गइं उववज्जई बहुसो[1] ॥

उववात-पदं

५८—लेसाहिं सव्वाहिं
पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
'न वि कस्सवि उववाओ'[2]
परे भवे अत्थि[3] जीवस्स ॥

५९—लेसाहिं सव्वाहिं
चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु।
'न वि कस्सवि उववाओ'[4]
परे भवे अत्थि[5] जीवस्स ॥

६०—अन्तमुहुत्तम्मि गए
अन्तमुहुत्तम्मि सेसए चेव।
लेसाहिं परिणयाहिं
जीवा गच्छन्ति परलोयं ॥

१—× (उ, ऋ)।
२—न हु कस्सवि उववत्ति (वृ०)।
न वि० ....(वृ० पा०); न हु० .... (उ, ऋ, सु)।
३—भवइ (वृ०, सु)।
४—न हु कस्सवि उववत्ति (वृ०)।
५—भवइ (वृ०, सु)।

निक्खेव-पद

६१—तम्हा एयाण[1] लेसाण
अणुभागे वियाणिया ।
अप्पसत्थाओ वज्जित्ता
पसत्थाओ अहिट्ठेज्जासि[2] ॥
—त्ति बेमि ॥

१—एयासि (उ ऋ)।
२—अहिट्ठिए (उ, ऋ)।

पणतीसइमं अज्झयणं

अणगारमग्गगई

१—सुणेह 'मे एगग्गमणा'[1] मग्गं बुद्धेहि देसियं।
जमायरन्तो भिक्खू दुक्खाणन्तकरो भवे॥

२—गिहवासं परिच्चज्ज पवज्जंअस्सिओ[2] मुणी।
इमे संगे वियाणिज्जा[3] जेहिं सज्जन्ति माणवा॥

३—तहेव हिंसं अलियं चोज्जं अबम्भसेवणं।
इच्छाकामं च लोभं च संजओ परिवज्जए॥

४—मणोहरं चित्तहरं मल्लधूवेण वासियं।
सकवाडं पण्डुरुल्लोयं मणसा वि न पत्थए॥

५—इन्दियाणि उ भिक्खुस्स तारिसम्मि उवस्सए।
दुक्कराइं निवारेउं[4] कामरागविवड्ढणे॥

६—सुसाणे सुन्नगारे वा रुक्खमूले व एक्कओ[5]।
पइरिक्के[6] परकडे वा वासं तत्थऽभिरोयए॥

७—फासुयम्मि अणाबाहे इत्थीहिं अणभिद्दुए।
तत्थ संकप्पए वासं भिक्खू परमसंजए॥

८—न सयं गिहाइं कुज्जा णेव अन्नेहिं कारए।
गिहकम्मसमारम्भे भूयाणं दीसई वहो॥

१—मे एगग्गमणा (उ, ऋ)।
२—पवज्जामस्सिए (उ, ऋ)।
३—वियाणेत्ता (अ)।
४—उ धारेउं (वृ०); निवारेउं (वृ० पा०)।
५—एगओ (उ, ऋ); एगया (वृ०); एक्कतो (वृ० पा०)।
६—परक्के (वृ०); पइरिक्के (वृ० पा०)।

१९—सुक्कझाणं झियाएज्जा अणियाणे अकिंचणे ।
वोसट्ठकाए विहरेज्जा जाव कालस्स पज्जओ ॥

२०—निज्जूहिऊण आहारं कालधम्मे उवट्ठिए ।
जहिऊण[1] माणुसं बोन्दि पहू दुक्खे विमुच्चई ॥

२१—निम्ममो निरहंकारो वीयरागो अणासवो[2] ।
संपत्तो केवलं नाणं सासयं परिणिव्वुए ॥

——त्ति बेमि ॥

*

१—चइऊण (उ, ऋ) ।
२—निरासवे (चू०) ।

९–तसाणं थावराणं च सुहुमाणं वायराण य ।
तम्हा गिहसमारम्भं संजओ परिवज्जए ॥
१०–तहेव भत्तपाणेसु पयण[1] पयावणेसु य ।
पाणभूयदयट्ठाए न पये न पयावए ॥
११–जलधन्ननिस्सिया जीवा[2] पुढवीकट्ठनिस्सिया[3] ।
हम्मन्ति भत्तपाणेसु तम्हा भिक्खू न पायए ॥
१२–विसप्पे सव्वओधारे वहुपाणविणासणे ।
नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए ॥
१३–हिरण्णं जायरूवं च मणसा वि न पत्थए ।
समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥
१४–किणन्तो कइओ होइ विक्किणन्तो य वाणिओ ।
कयविक्कयम्मि वट्टन्तो भिक्खू न भवइ तारिसो ॥
१५–भिक्खियव्वं न केयव्वं भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा ।
कयविक्कओ महादोसो भिक्खावत्ती[4] सुहावहा ॥
१६–समुयाणं उञ्छमेसिज्जा जहासुत्तमणिन्दियं ।
लाभालाभम्मि संतुट्ठे पिण्डवायं 'चरे मुणी'[5] ॥
१७–अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादन्ते अमुच्छिए ।
न रसट्ठाए भुंजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी ॥
१८–अच्चणं रयणं चेव वन्दणं पूयणं तहा ।
इड्ढीसक्कारसम्माणं मणसा वि न पत्थए ॥

१–पयणेसु (ऋ) ; पयणे य (अ) ।
२–पाणा (अ) ।
३–°काय° (उ) ।
४–भिक्खू वित्ती (उ, ऋ) ।
५–गवेसए (वृ० पा०) ।

९—'समए वि सन्तइं पप्प एवमेव'[1] वियाहिए।
आएसं पप्प साईए सपज्जवसिए वि य॥

रूवि अजीव-पदं

१०—खन्धा य खन्धदेसा य तप्पएसा तहेव य।
परमाणुणो य बोद्धव्वा रूविणो य चउव्विहा॥
११—एगत्तेण पुहत्तेण खन्धा य परमाणुणो।
लोएगदेसे लोए य भइयव्वा ते उ खेत्तओ॥
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं॥
१२—संतइं पप्प तेऽणाई अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
१३—असंखकालमुक्कोसं 'एगं समयं जहन्निया'[2]।
अजीवाण[3] य रूवीणं ठिई एसा वियाहिया॥
१४—अणन्तकालमुक्कोसं एगं समयं जहन्नयं।
अजीवाण[3] य रूवीण अन्तरेयं वियाहियं॥
१५—वण्णओ गन्धओ चेव रसओ फासओ तहा।
संठाणओ य विन्नेओ परिणामो तेसि पंचहा॥
१६—वण्णओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया।
किण्हा नीला य लोहिया हालिद्दा सुक्किला तहा॥
१७—गन्धओ परिणया जे उ दुविहा ते वियाहिया।
सुब्भिगन्धपरिणामा दुब्भिगन्धा तहेव य॥
१८—रसओ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया।
तित्तकडुयकसाया अम्बिला महुरा तहा॥

१—एमेव संतइं पप्प समए वि (बृ० पा०)।
२—एगो समओ जहन्नयं (ऋ); इक्को समओ जहन्निया (उ)।
३—अजीवाणं (उ)।

छत्तीसइमं अज्झयणं

जीवाजीवविभत्ती

उक्खेव-पद

१—जीवाजीवविभत्तिं 'सुणेह मे'[1] एगमणा इओ।
जं जाणिऊण समणे[2] सम्मं जयइ संजमे॥

लोकालोक-पद

२—जीवा चेव अजीवा य एस लोए वियाहिए।
अजीवदेसमागासे अलोए से वियाहिए॥

३—दव्वओ खेत्तओ चेव कालओ भावओ तहा।
परूवणा तेसि भवे जीवाणमजीवाण य॥

४—रूविणो चेवऽरूवी य अजीवा दुविहा भवे।
अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्विहा॥

अरूवि-अजीव-पद

५—धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए।
अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए॥

६—आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए।
अद्धासमए चेव अरूवी दसहा भवे॥

७—धम्माधम्मे य दोऽवेए[3] लोगमित्ता वियाहिया।
लोगालोगे य आगासे समए समयखेत्तिए॥

८—धम्माधम्मागासा तिन्नि वि एए अणाइया।
अपज्जवसिया चेव सव्वद्धं तु वियाहिया॥

१—मे सुणेह (वृ०)।
२—भिक्खू (उ, ऋ, वृ०), समणे (वृ० पा०)।
३—दोएए (उ), दोवे य (ऋ)।

३०—रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३१—रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३२—रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३३—रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३४—फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३५—फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३६—फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३७—फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३८—फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३९—फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

४०—फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

४१—फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

१९—फासओ परिणया जे उ अट्ठहा ते पकित्तिया ।
कक्खडा मउया चेव गरुया लहुया तहा ॥

२०—सीया उण्हा य निद्धा य तहा लुक्खा य आहिया ।
इइ फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिया ॥

२१—सठाणपरिणया जे उ पचहा ते पकित्तिया ।
परिमण्डला 'य वट्टा'[1] तसा चउरसमायया ॥

२२—वण्णओ जे भवे किण्हे भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२३—वण्णओ जे भवे नीले भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२४—वण्णओ लोहिए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२५—वण्णओ पीयए जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२६—वण्णओ सुक्किले जे उ भइए से उ गन्धओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२७—गन्धओ जे भवे सुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२८—गन्धओ जे भवे दुब्भी भइए से उ वण्णओ ।
रसओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

२९—रसओ तित्तए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए सठाणओ वि य ॥

१—वट्टा य (ऋ) ।

३०—रसओ कडुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३१—रसओ कसाए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३२—रसओ अम्बिले जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३३—रसओ महुरए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ फासओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३४—फासओ कक्खडे जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३५—फासओ मउए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३६—फासओ गुरुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३७—फासओ लहुए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३८—फासओ सीयए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

३९—फासओ उण्हए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

४०—फासओ निद्धए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

४१—फासओ लुक्खए जे उ भइए से उ वण्णओ ।
गन्धओ रसओ चेव भइए संठाणओ वि य ॥

४२–परिमण्डलसठाणे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥
४३–सठाणओ भवे वट्टे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासओ वि य॥
४४–सठाणओ भवे तसे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासआ वि य॥
४५–सठाणओ य चउरसे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चेव भइए फासआ वि य॥
४६–जे आययसठाणे भइए से उ वण्णओ।
गन्धओ रसओ चव भइए फासआ वि य॥
४७–एसा अजीवविभत्ती समासेण वियाहिया।
इत्तो जीवविभत्ति वुच्छामि अणुपुव्वसो॥

जीव पद

४८–ससारत्था य सिद्धा य दुविहा जीवा वियाहिया[1]।
'सिद्धा णेगविहा वुत्ता'[2] त मे कित्तयओ सुण॥

सिद्धजीव-पद

४९–इत्थी पुरिससिद्धा य तहेव य नपुसगा।
सलिंगे अन्नलिंगे य गिहिलिंगे तहेव य॥
५०–उक्कोसोगाहणाए य जहन्नमज्झिमाइ य।
उड्ढ अहे य तिरिय च समुद्दम्मि जलम्मि य॥
५१–दस 'चव नपुसेसु'[3] वीस इत्थियासु य।
पुरिसेसु य अट्ठसय समएणगेण सिज्झई॥

१–भव त्ति ते (वृ० प ०)।
२–तत्थाणेगविहा सिद्धा (वृ० पा०)।
३–य नपुसएसु (वृ०)।

५२—चत्तारि य गिहिलिंगे अन्नलिंगे दसेव य।
सलिंगेण य अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई॥
५३—उक्कोसोगाहणाए य सिज्झन्ते जुगवं दुवे।
चत्तारि जहन्नाए जवमज्झऽट्ठुत्तरं[1] सयं॥
५४—'चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे
तओ जले वीसमहे तहेव[2]।
सयं च अट्ठुत्तर तिरियलोए
समएणेगेण उ 'सिज्झई उ'[3]॥'[4]
५५—कहिं पडिहया सिद्धा? कहिं सिद्धा पइट्ठिया?।
कहिं बोन्दि चइत्ताणं? कत्थ गन्तूण सिज्झई?॥
५६—अलोए पडिहया सिद्धा लोयग्गे य पइट्ठिया।
इहं बोन्दि चइत्ताणं तत्थ गन्तूण सिज्झई॥
५७—बारसहिं जोयणेहिं सव्वट्ठस्सुवरिं भवे।
ईसीपब्भारनामा उ[5] पुढवी छत्तसंठिया॥
५८—पणयालसयसहस्सा जोयणाणं तु आयया।
तावइयं चेव वित्थिण्णा 'तिगुणो तस्सेव परिरओ'[6]॥
५९—अट्ठजोयणबाहल्ला सा मज्झम्मि वियाहिया।
परिहायन्ती चरिमन्ते मच्छियपत्ता तणुयरी॥

१—मज्झे अट्ठुत्तरं (अ)।
२—तहेव य (अ)।
३—सिज्झइ ध्रुवं (उ, ऋ)।
४—चउरो उड्ढलोगंमि वीसपहुत्तं अहे भवे।
सयं अट्ठोत्तरं तिरिए एग समएण सिज्झइ॥
दुवे समुद्दे सिज्झंति सेस जलेसु तओ जणा।
एसा हु सिज्झणा भणिया पुव्वभावं पडुच्च उ॥ (वृ० पा०)।
५—× (उ, ऋ)।
६—तिउण साहिय परिरयं (वृ० पा०)।

६०–अज्जुणसुवण्णगमई
सा पुढवी निम्मला सहावेणं ।
उत्ताणगछत्तगसठिया य
भणिया जिणवरेहिं ॥
६१–संखंककुन्दसंकासा पण्डुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥
६२–जोयणस्स उ जो तस्स[1] कोसो उवरिमो भवे ।
'तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे'[2] ॥
६३–तत्थ सिद्धा महाभागा लोयग्गम्मि पइट्ठिया[3] ।
भवप्पवच उम्मुक्का सिद्धिं वरगइं गया ॥
६४–उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ[4] ।
तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे ॥
६५–एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य ।
पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य ॥
६६–अरूविणो जीवघणा नाणदंसणसन्निया ।
अउलं सुहं सपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥
६७–लोएगदेसे[5] ते सव्वे नाणदंसणसन्निया ।
ससारपारनिच्छिन्ना सिद्धिं वरगइं गया ॥

ससारत्थजीव-पद

६८–ससारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया ।
तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं ॥

१—तत्थ (वृ०) ; तस्स (वृ० पा०) ।
२—कोसस्सवि य जो तत्थ छब्भागो उवरिमो भवे (वृ० पा०) ।
३—य संट्ठिया (अ) ।
४—य (ऋ) ।
५—लोगग्ग० (वृ० पा०) ।

६९—पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई ।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥

पुढवि-पदं

७०—दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा वायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए[1] दुहा पुणो ॥

७१—वायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया ।
सण्हा खरा य वोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तहिं ॥

७२—किण्हा नीला य रुहिरा य[2]
हालिद्दा सुक्किला तहा ।
पण्डुपणगमट्टिया
खरा छत्तीसईविहा ॥

७३—पुढवी य सक्करा वालुया य
उवले सिला य लोणूसे ।
'अयतम्बतउय'[3]-सीसग-
रुप्पसुवण्णे य वइरे य ॥

७४—हरियाले हिंगुलुए
मणोसिला सासगंजणपवाले ।
अब्भपडलऽब्भवालुय
वायरकाए मणिविहाणा ॥

१—एगमेगे (वृ० पा०) ।
२—× (अ) ।
३—अयंव तओ य (अ) ; अय तउय तम्व (उ, ऋ) ।

६०-अज्जुणसुवण्णगमई
सा पुढवी निम्मला सहावेण ।
उत्ताणगछत्तगसठिया य
भणिया जिणवरेहिं ॥

६१-ससकुन्दसकासा पण्डुरा निम्मला सुहा ।
सीयाए जोयणे तत्तो लोयन्तो उ वियाहिओ ॥

६२-जोयणस्स उ जो तस्स[1] कोसो उवरिमो भवे ।
'तस्स कोसस्स छब्भाए सिद्धाणोगाहणा भवे'[2] ॥

६३-तत्थ सिद्धा महाभागा लोयग्गम्मि पइट्ठिया[3] ।
भवप्पवच उम्मुक्का सिद्धिं वरगइ गया ॥

६४-उस्सेहो जस्स जो होइ भवम्मि चरिमम्मि उ[4] ।
तिभागहीणा तत्तो य सिद्धाणोगाहणा भवे ॥

६५-एगत्तेण साईया अपज्जवसिया वि य ।
पुहुत्तेण अणाईया अपज्जवसिया वि य ॥

६६-अरूविणो जीवघणा नाणदसणसन्निया ।
अउल सुह सपत्ता उवमा जस्स नत्थि उ ॥

६७-लोएगदेसे[5] ते सव्वे नाणदसणसन्निया ।
ससारपारनिच्छिन्ना सिद्धिं वरगइ गया ॥

ससारत्थजीव-पद

६८-ससारत्था उ जे जीवा दुविहा ते वियाहिया ।
तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं ॥

१—तत्थ (वृ०), तस्स (वृ० पा०) ।
२—कोसस्सवि य जो तत्थ छब्भागो उवरिमो भवे (वृ० पा०) ।
३—य संट्ठिया (अ) ।
४—य (ऋ) ।
५—लोयग्ग० (वृ० पा०) ।

—पुढवी आउजीवा य तहेव य वणस्सई।
इच्चेए थावरा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे॥

पुढवि-पदं

०—दुविहा पुढवीजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए[1] दुहा पुणो॥

१—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया।
सण्हा खरा य बोद्धव्वा सण्हा सत्तविहा तहिं॥

७२—किण्हा नीला य रुहिरा य[2]
हालिद्दा सुक्किला तहा।
पण्डुपणगमट्टिया
खरा छत्तीसईविहा॥

७३—पुढवी य सक्करा वालुया य
उवले सिला य लोणूसे।
'अयतम्बतउय'[3]-सीसग-
रुप्पसुवण्णे य वइरे य॥

७४—हरियाले हिंगुलुए
मणोसिला सासगंजणपवाले।
अब्भपडलऽब्भवालुय
बायरकाए मणिविहाणा॥

१—एगमेगे (वृ० पा०)।
२—× (अ)।
३—अयंव तओ य (अ); अय तउय तम्ब (उ, ऋ)।

७५—गोमेज्जए य रुयगे
अके फलिहे य लोहियक्खे य।
मरगयमसारगल्ले
भुयमोयगइन्दनीले य॥

७६—चन्दणगेरुयहसगब्भ
पुलए सोगन्धिए य वोद्धव्वे।
चन्दप्पहवेरुलिए
जलकन्ते सूरकन्ते य॥

७७—एए खरपुढवीए भेया छत्तीसमाहिया।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया॥

७८—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य वायरा।
इत्तो कालविभाग तु तेसिं वुच्छ चउव्विह॥

७९—सतइ पप्पऽणाईया[1] अपज्जवसिया वि य।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

८०—वावीससहस्साइ वासाणुक्कोसिया भवे।
आउठिई पुढवीण अन्तोमुहुत्त जहन्निया[2]॥

८१—असखकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय।
कायठिई पुढवीण त काय तु अमुचओ॥

८२—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय।
विजढमि सए काए पुढवीजीवाण अन्तर॥

८३—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो॥

१—° तेणाई (अ)।
२—जहन्नग (अ)।

आउ-पदं

८४—दुविहा आउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥

८५—बायरा जे उ पज्जत्ता पंचहा ते पकित्तिया।
सुद्धोदए य उस्से हरतणू महिया हिमे ॥

८६—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥

८७—सन्तइं पप्पऽणाईया[1] अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

८८—सत्तेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे।
आउट्ठिई आऊणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया[2] ॥

८९—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया।
कायट्ठिई आऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

९०—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए आऊजीवाण अन्तरं ॥

९१—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

वणस्सई-पदं

९२—दुविहा वणस्सईजीवा सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए[3] दुहा पुणो ॥

९३—बायरा जे उ पज्जत्ता दुविहा ते वियाहिया।
साहारणसरीरा य पत्तेगा य तहेव य ॥

१—०तेणाई (अ)।
२—जहन्नगं (अ)।
३—एवमेव (अ)।

९४—'पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया'[1]।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य लया वल्ली तणा तहा॥

९५—लयावलया[2] पव्वगा[3] कुहुणा
जलरुहा ओसहीतिणा[4]।
हरियकाया य बोद्धव्वा
पत्तेया इति आहिया॥

९६—साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया।
आलुए मूलए चेव सिंगवेरे तहेव य॥

९७—हिरिली सिरिली सिस्सिरिली
जावई केदकन्दली[5]।
पलदूलसणकन्दे य
कन्दली य कुडुवए[6]॥

९८—लोहि णीहू य थिहू य कुहगा य तहेव य।
कण्हे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए[7] तहा॥

९९—अस्सकण्णी य बोद्धव्वा सीहकण्णी तहेव य।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य ऽणेगहा एवमायओ॥

१००—एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा॥

१—बारसविह भेएणं पत्तेया उ वियाहिय (बृ० पा०)।
२—वलया य (अ)।
३—पव्वया (बृ०), पव्वगा (बृ० पा०)।
४—°तहा (अ, आ, इ, उ, सु)।
५—केलि° (उ)।
६—कुडुव्वए (उ, ऋ), कुहव्वए (स)।
७—पुसूरणे (उ)।

१०१—संतइं पप्पऽणाईया[1] अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१०२—दस चेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिया भवे ।
वणप्फईण[2] आउं तु अन्तोमुहुत्तं जहन्नगं ॥

१०३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायठिई पणगाणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१०४—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए पणगजीवाण अन्तरं ॥

१०५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१०६—इच्चेए थावरा तिविहा समासेण वियाहिया ।
इत्तो उ तसे तिविहे वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥

१०७—तेऊ वाऊ य बोद्धव्वा उराला य तसा तहा ।
इच्चेए तसा तिविहा तेसिं भेए सुणेह मे ॥

तेउ-पदं

१०८—दुविहा तेउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा ।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥

१०९—बायरा जे उ पज्जत्ता णेगहा ते वियाहिया ।
इंगाले मुम्मुरे अगणी अच्चि जाला तहेव य ॥

११०—उक्का विज्जू य बोद्धव्वा णेगहा एवमायओ ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया ॥

१११—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे[3] य बायरा ।
इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥

१—० तेणाइ (अ) ।
२—वणस्सईण (उ, ऋ, वृ०) ; वण्णप्फईण (वृ० पा०) ।
३—एगदेसे (अ) ।

९४–'पत्तेगसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया'[1] ।
रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य लया वल्ली तणा तहा ॥

९५–लयावलया[2] पव्वगा[3] कुहुणा जलरुहा ओसहीतिणा[4] ।
हरियकाया य बोद्धव्वा पत्तेया इति आहिया ॥

९६–साहारणसरीरा उ णेगहा ते पकित्तिया ।
आलुए मूलए चेव सिंगबेरे तहेव य ॥

९७–हिरिली सिरिली सिस्सिरिली जावई केदकन्दली[5] ।
पलदूलसणकन्दे य कन्दली य कुडुबए[6] ॥

९८–लोहि णीहू य थिहू य कुहगा य तहेव य ।
कण्हे य वज्जकन्दे य कन्दे सूरणए[7] तहा ॥

९९–अस्सकण्णी य बोद्धव्वा सीहकण्णी तहेव य ।
मुसुण्ढी य हलिद्दा य ऽणेगहा एवमायओ ॥

१००–एगविहमणाणत्ता सुहुमा तत्थ वियाहिया ।
सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे य बायरा ॥

१—बारसविह भेएणं पत्तेया उ वियाहिय (बृ० पा०) ।
२—वलया य (अ) ।
३—पव्वया (बृ०), पव्वगा (बृ० पा०) ।
४—°तहा (अ, आ इ, उ, सु) ।
५—केलि° (उ) ।
६—कुडुव्वए (उ, ऋ), कुहव्वए (स) ।
७—पुसूरणे (उ) ।

१२३—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
कायट्ठिई वाऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१२४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए वाउजीवाण अन्तरं ॥

१२५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१२६—ओराला तसा जे उ चउहा[1] ते पकित्तिया।
वेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपंचिन्दिया चेव ॥

वेइन्दिय-पदं

१२७—वेइन्दिया उ[2] जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१२८—किमिणो सोमंगला चेव अलसा माइवाहया।
वासीमुहा य सिप्पीया[3] संखा संखणगा[4] तहा ॥

१२९—पल्लोयाणुल्लया[5] चेव, तहेव य वराडगा।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इइ वेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥[6]

१३१—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउव्विहा (ऋ)।
२—य (अ, ऋ)।
३—सप्पीया (आ, इ, ऋ)।
४—संखलगा (अ); संखाणगा (उ)।
५—गल्लोया° (आ); अल्लोया° (ऋ)।
६—इस श्लोक के वाद इतना और है :—
एत्तो काल विभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ (उ)।

११२—सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
११३—तिण्णेव अहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई तेऊण अन्तोमुहुत्त जहन्निया॥
११४—असखकालमुकोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय।
कायट्ठिई तेऊण त काय तु अमुचओ॥
११५—अणन्तकालमुकोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय।
विजढमि सए काए तेउजीवाण अन्तर॥
११६—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइ सहस्ससो॥

वाऊ-पद

११७—दुविहा वाउजीवा उ सुहुमा बायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो॥
११८—बायरा जे उ पज्जत्ता पचहा ते पकित्तिया।
उक्कलियामण्डलिया- घणगुजा सुद्धवाया य॥
११९—सवट्टगवाते य ऽणगविहा[1] एवमायओ।
एगविहमणाणत्ता सुहुमा ते वियाहिया॥
१२०—सुहुमा सव्वलोगम्मि लोगदेसे[2] य बायरा।
इत्तो कालविभाग तु तेसिं वुच्छ चउव्विह॥
१२१—सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
१२२—तिण्णव सहस्साइ वासाणुक्कोसिया भवे।
आउट्ठिई वाऊण अन्तोमुहुत्त जहन्निया॥

१—ऽणेगहा (उ ऋ)।
२—एगदेसे (अ)।

१२३—असंखकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
कायट्ठिई वाऊणं तं कायं तु अमुंचओ ॥

१२४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
विजढंमि सए काए वाउजीवाण अन्तरं ॥

१२५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१२६—ओराला तसा जे उ चउहा[1] ते पकित्तिया ।
बेइन्दियतेइन्दिय- चउरोपंचिन्दिया चेव ॥

बेइन्दिय-पदं

१२७—बेइन्दिया उ[2] जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१२८—किमिणो सोमंगला चेव अलसा माइवाहया ।
वासीमुहा य सिप्पीया[3] संखा संखणगा[4] तहा ॥

१२९—पल्लोयाणुल्लया[5] चेव तहेव य वराडगा ।
जलूगा जालगा चेव चन्दणा य तहेव य ॥

१३०—इइ बेइन्दिया एए णेगहा एवमायओ ।
लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥

१३१—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१—चउव्विहा (ऋ)।
२—य (अ, ऋ)।
३—सप्पीया (आ, इ, ऋ)।
४—संखलगा (अ); संखाणगा (उ)।
५—गल्लोया° (आ); अल्लोया° (ऋ)।
६—इस श्लोक के बाद इतना और है :—
एत्तो काल विभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ (उ)।

१३२—वासाइं बारसे व उ उक्कोसेण वियाहिया ।
वेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१३३—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं[1] ।
वेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥

१३४—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ।
वेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं[2] वियाहियं ॥

१३५—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

तेइन्दिय-पद

१३६—तेइन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया ।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१३७—कुन्थुपिवीलिउड्डसा उक्कलुद्देहिया तहा ।
तणहारकट्ठहारा मालुगा पत्तहारगा ॥

१३८—कप्पासऽट्ठिमिंजा य तिंदुगा तउसमिंजगा ।
सदावरी य गुम्मी य बोद्धव्वा इन्दकाइया ॥

१३९—इन्दगोवगमाईया णेगहा एवमायओ ।
लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥

१४०—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१४१—एगूणपण्णऽहोरत्ता[3] उक्कोसेण वियाहिया ।
तेइन्दियआउठिई अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१—जहन्निया (अ) ।
२—°णं (अ) ।
३—एगूणवण्ण° (उ, ऋ) ।

१४२—संखिज्जकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं[1]।
तेइन्दियकायठिई तं कायं तु अमुंचओ ॥

१४३—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
तेइन्दियजीवाणं अन्तरेयं वियाहियं ॥

१४४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

चउरिन्दिय-पदं

१४५—चउरिन्दिया उ जे जीवा दुविहा ते पकित्तिया।
पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भेए सुणेह मे ॥

१४६—अन्धिया पोत्तिया चेव मच्छिया मसगा तहा।
भमरे कीडपयंगे य ढिंकुणे कुंकुणे तहा ॥

१४७—कुक्कुडे सिंगिरीडी य नन्दावत्ते य विंछिए।
डोले भिंगारी[2] य विरली अच्छिवेहए ॥

१४८—अच्छिले माहए[3] अच्छि-
रोडए विचित्ते चित्तपत्तए।
ओहिंजलिया जलकारी य
नीया तन्तवगाविय[4] ॥

१४९—इइ चउरिन्दिया एए ऽणेगहा एवमायओ।
लोगस्स एग देसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ॥[5]

१—जहन्निया (अ)।
२—भिंगिरीडी (उ, ऋ, स)।
३—साहिए (अ)।
४—तंवगाइया (उ, ऋ)।
५—इस श्लोक के पश्चात् इतना और है :—
एत्तो काल विभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥ (उ)।

१५०—सतइ पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइ पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥
१५१—छच्चेव य[1] मासा उ उक्कोसेण वियाहिया।
चउरिन्दियआउठिई[2] अन्तोमुहुत्त जहन्निया॥
१५२—सखिज्जकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय[3]।
चउरिन्दियकायठिई त काय तु अमुचओ॥
१५३—अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्त जहन्नय[4]।
विजढमि सए काए[5] अन्तरेय वियाहिय॥
१५४—एएसि वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
सठाणादेसओ वावि[6] विहाणाइ सहस्ससो॥

पचिन्दिय पद

१५५—पचिन्दिया उ जे जीवा चउव्विहा ते वियाहिया।
नेरइयतिरिक्खा य मणुया देवा य आहिया॥

नेरइय-पद

१५६—नेरइया सत्तविहा पुढवीसु सत्तसू भवे।
रयणाभ सक्कराभा वालुयाभा य आहिया॥
१५७—पकाभा धूमाभा तमा तमतमा तहा।
इइ नेरइया एए सत्तहा परिकित्तिया॥
१५८—लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे उ वियाहिया।
एत्तो कालविभाग तु वुच्छ तेसि चउव्विह॥

१—छच्चविउ (अ)
२—चउरिंदिया य आउठिई (अ)
३—जहन्निया (अ)
४—जहन्निया (अ)।
५—चउरिन्दियजीवाण (उ)
६—सठाण भेयओ या वि (अ)।

१५९—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१६०—सागरोवममेगं तु उक्कोसेण वियाहिया।
पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिया॥

१६१—तिण्णेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमं॥

१६२—सत्तेव सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
तइयाए जहन्नेणं तिण्णेव उ सागरोवमा॥

१६३—दस सागरोवमा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
चउत्थीए जहन्नेणं सत्तेव उ सागरोवमा॥

१६४—सत्तरस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
पंचमाए जहन्नेणं दस चेव उ सागरोवमा॥

१६५—बावीस सागरा ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा॥

१६६—तेत्तीस सागरा[१] ऊ उक्कोसेण वियाहिया।
सत्तमाए जहन्नेणं बावीसं सागरोवमा॥

१६७—जा चेव उ आउठिई नेरइयाणं वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया भवे॥

१६८—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए नेरइयाणं तु अन्तरं॥

१६९—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
'संठाणादेसओ वावि'[२] विहाणाइं सहस्ससो॥

१—सागराइं (ऋ)।
२—संठाण भेयओ या वि (अ)।

तिरिक्खजाणिय-पद

१७०–पचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ[1]गब्भवकन्तिया तहा॥

१७१–दुविहावि ते भवे तिविहा
जलयरा थलयरा तहा।
खहयरा य बोद्धव्वा
तेसिं भेए सुणेह मे॥

१७२–मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा।
सुसुमारा य बोद्धव्वा पंचहा[2] जलयराहिया॥

१७३–लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं॥

१७४–संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१७५–एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१७६–पुव्वकोडीपुहत्त तु उक्कोसेण वियाहिया।
कायट्ठिई जलयराण अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१७७–अणन्तकालमुक्कोस अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए जलयराणं तु अन्तर॥

१७८–'एएसिं वण्णओ चेव गधओ रसफासओ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥'[3]

१–° तिरिक्खा य (उ)।
२–पचविहा (अ)।
३–× (अ, ऋ)।

१७९—चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ सुण ॥

१८०—एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्पया ।
हयमाइगोणमाइ- गयमाइसीहमाइणो ॥

१८१—भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे।
गोहाई अहिमाई य एक्केका णेगहा भवे ॥

१८२—लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥

१८३—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१८४—पलिओवमाउ[1] तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई थलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१८५—पलिओवमाउ तिण्णि उ[2] उक्कोसेण तु साहिया।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१८६—कायट्ठिई थलयराणं अन्तरं तेसिमं भवे।
कालमणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥

१८७—एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो ॥

१८८—चम्मे उ लोमपक्खी य तइया समुग्गपक्खिया।
विययपक्खी य बोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ॥

१—°इं (उ)।
२—य (अ)।

तिरिक्खजोणिय-पदं

१७०–पंचिन्दियतिरिक्खाओ दुविहा ते वियाहिया।
सम्मुच्छिमतिरिक्खाओ[1]गब्भवक्कन्तिया तहा॥

१७१–दुविहावि ते भवे तिविहा
जलयरा थलयरा तहा।
खहयरा य बोद्धव्वा
तेसिं भेए सुणेह मे॥

१७२–मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा।
सुसुमारा य बोद्धव्वा पंचहा[2] जलयराहिया॥

१७३–लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं॥

१७४–संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१७५–एगा य पुव्वकोडीओ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१७६–पुव्वकोडीपुहत्तं तु उक्कोसेण वियाहिया।
कायट्ठिई जलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१७७–अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए जलयराणं तु अन्तरं॥

१७८–'एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ।
सठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥'[3]

१–° तिरिक्खा य (उ)।
२–पंचविहा (अ)।
३–× (अ, ऋ)।

१७९—चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे।
चउप्पया चउविहा ते मे कित्तयओ सुण॥

१८०—एगखुरा दुखुरा चेव गण्डीपयसणप्फया।
हयमाइगोणमाइ- गयमाइसीहमाइणो॥

१८१—भुओरगपरिसप्पा य परिसप्पा दुविहा भवे।
गोहाई अहिमाई य एक्केक्का णेगहा भवे॥

१८२—लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं॥

१८३—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

१८४—पलिओवमाउ[1] तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई थलयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१८५—पलिओवमाउ तिण्णि उ[2] उक्कोसेण तु साहिया।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

१८६—कायट्ठिई थलयराणं अन्तरं तेसिमं भवे।
कालमणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं॥

१८७—एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि विहाणाइं सहस्ससो॥

१८८—चम्मे उ लोमपक्खी य तइया समुग्गपक्खिया।
विययपक्खी य बोद्धव्वा पक्खिणो य चउव्विहा॥

१—०इ (उ)।
२—य (अ)।

१८९—लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥[1]

१९०—संतइं पप्पऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

१९१—पलिओवमस्स भागो असंखेज्जइमो भवे ।
आउट्ठिई खहयराणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१९२—असंखभागो पलियस्स उक्कोसेण उ साहिओ ।
पुव्वकोडीपुहत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया ॥

१९३—कायठिई खहयराणं अन्तरं तेसिमं भवे ।
कालं अणन्तमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं ॥

१९४—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ ।
'संठाणादेसओ वावि'[2] विहाणाइं सहस्ससो ॥

मनुष्य-पद

१९५—मणुया दुविहभेया उ ते मे कित्तयओ सुण ।
संमुच्छिमा य मणुया गब्भवक्कन्तिया तहा ॥

1—श्लोक क्रमांक १८७ से १९२ के स्थान पर निम्न श्लोक हैं —
जिउइ त्ति सए कए धणुराग तु अंतरं ।
चम्मेय लोम पक्खेय तइया समुग्ग पक्खिया ॥
वितयपक्खी उ (य) बोधव्वा पक्खिणो उ चउव्विहा ।
लोएग देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (अ ऋ) ।
जिउइ त्ति सए कए धणुराग तु अंतरं ।
एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ ॥
संठाण देसओ वावि विहाणाइं सहस्सओ ।
चम्मे उ लोम पक्खाअ तइया समुग्ग पक्खिया ॥
वियपक्खी य बोधव्वा पक्खिणो य चउव्विहा ।
लोएग देसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया ॥ (उ) ।
2—संठाण भेदओ वा वि (अ) ।

१९६—गब्भवक्कन्तिया जे उ तिविहा ते वियाहिया।
अकम्मकम्मभूमा य अन्तरद्दीवया तहा॥

१९७—'पन्नरस तीसइ विहा'[1] भेया अट्ठवीसइं।
संखा उ कमसो तेसिं इइ एसा वियाहिया॥

१९८—संमुच्छिमाण एसेव भेओ होइ आहिओ।
लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे वि[2] वियाहिया॥

१९९—संतइं पप्पणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥

२००—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया।
आउट्ठिई मणुयाणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया॥

२०१—पलिओवमाइं तिण्णि उ उक्कोसेण वियाहिया[3]।
पुव्वकोडीपुहुत्तेणं अन्तोमुहुत्तं जहन्निया[4]॥

२०२—कायट्ठिई मणुयाणं अन्तरं तेसिमं भवे।
अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं॥

२०३—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
'संठाणादेसओ वावि'[5] विहाणाइं सहस्ससो॥

देव-पदं

२०४—देवा चउव्विहा वुत्ता ते मे कित्तयओ सुण।
भोमिज्जवाणमन्तर- जोइसवेमाणिया तहा॥

२०५—दसहा उ भवणवासी अट्ठहा वणचारिणो।
पंचविहा जोइसिया दुविहा वेमाणिया तहा॥

१—तीसं पन्नरस विहा (वृ० पा०)।
२—य (अ); × (उ)।
३—तु साहिया (ऋ)।
४—जहन्नगं (अ)।
५—संठाण भेयओ या वि (अ)।

२०६–असुरा नागसुवण्णा विज्जू अग्गी य आहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥

२०७–पिसायभूय जक्खा य
रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
महोरगा य गन्धव्वा
अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥

२०८–चन्दा सूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।
दिसाविचारिणो[1] चेव पंचहा[2] जोइसालया ॥

२०९–वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥

२१०–कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणंकुमारमाहिन्दा बम्भलोगा य लन्तगा ॥

२११–महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥

२१२–कप्पाईया उ[3] जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहिं[4] ॥

२१३–हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥

२१४–मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥

१—ठिया० (आ, उ, ऋ) ।
२—पचविहा (अ) ।
३—य (ऋ) ।
४—तहा (ऋ) ।

२१५–उवरिमाउवरिमा चेव इय गेविज्जगा सुरा।
विजया वेजयन्ता य[1] जयन्ता अपराजिया ॥

२१६–सव्वट्ठसिद्धगा[2] चेव पंचहाऽणुत्तरा सुरा।
इइ वेमाणिया देवा[3] णेगहा एवमायओ ॥

२१७–लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥

२१८–संतइं पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

२१९–साहियं सागरं एक्कं उक्कोसेण ठिई भवे।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥

२२०–पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
वन्तराणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥

२२१–पलिओवमं एगं तु वासलक्खेण साहियं।
पलिओवमऽट्ठभागो जोइसेसु जहन्निया ॥

२२२–दो चेव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया[4]।
सोहम्मंमि जहन्नेणं एगं च पलिओवमं ॥

२२३–सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया[5]।
ईसाणम्मि जहन्नेणं साहियं पलिओवमं ॥

२२४–सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे।
सणंकुमारे जहन्नेणं दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥

१—× (अ)।
२—° सिद्धिगा (अ)।
३—एए (उ, ऋ)।
४—ठिई भवे (आ, स)।
५—ठिई भवे (आ, स)।

२०६–असुरा नागसुवण्णा विज्जू अग्गी य आहिया ।
दीवोदहिदिसा वाया थणिया भवणवासिणो ॥

२०७–पिसायभूय जक्खा य
रक्खसा किन्नरा य किंपुरिसा ।
महारगा य गन्धव्वा
अट्ठविहा वाणमन्तरा ॥

२०८–चन्दा सूरा य नक्खत्ता गहा तारागणा तहा ।
दिसाविचारिणो[1] चेव पचहा[2] जोइसालया ॥

२०९–वेमाणिया उ जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
कप्पोवगा य बोद्धव्वा कप्पाईया तहेव य ॥

२१०–कप्पोवगा बारसहा सोहम्मीसाणगा तहा ।
सणकुमारमाहिन्दा बम्भलोगा य लन्तगा ॥

२११–महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया तहा ।
आरणा अच्चुया चेव इइ कप्पोवगा सुरा ॥

२१२–कप्पाईया उ[3] जे देवा दुविहा ते वियाहिया ।
गेविज्जाऽणुत्तरा चेव गेविज्जा नवविहा तहिं[4] ॥

२१३–हेट्ठिमाहेट्ठिमा चेव हेट्ठिमामज्झिमा तहा ।
हेट्ठिमा उवरिमा चेव मज्झिमाहेट्ठिमा तहा ॥

२१४–मज्झिमामज्झिमा चेव मज्झिमाउवरिमा तहा ।
उवरिमाहेट्ठिमा चेव उवरिमामज्झिमा तहा ॥

१—ठिया° (आ, उ ऋ) ।
२—पंच वेहा (अ) ।
३—य (ऋ) ।
४—तहा (ऋ) ।

२१५-उवरिमाउवरिमा चेव इय गेविज्जगा सुरा ।
विजया वेजयन्ता य[1] जयन्ता अपराजिया ॥

२१६-सव्वट्ठसिद्धगा[2] चेव पंचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिया देवा[3] णेगहा एवमायओ ॥

२१७-लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे परिकित्तिया ।
इत्तो कालविभागं तु वुच्छं तेसिं चउव्विहं ॥

२१८-संतइं पप्पाऽणाईया अपज्जवसिया वि य ।
ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य ॥

२१९-साहियं सागरं एक्कं उक्कोसेण ठिई भवे ।
भोमेज्जाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥

२२०-पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे ।
वन्तराणं जहन्नेणं दसवाससहस्सिया ॥

२२१-पलिओवमं एगं तु वासलक्खेण साहियं ।
पलिओवमऽट्ठभागो जोइसेसु जहन्निया ॥

२२२-दो चेव सागराइं उक्कोसेण वियाहिया[4] ।
सोहम्मंमि जहन्नेणं एगं च पलिओवमं ॥

२२३-सागरा साहिया दुन्नि उक्कोसेण वियाहिया[5] ।
ईसाणम्मि जहन्नेणं साहियं पलिओवमं ॥

२२४-सागराणि य सत्तेव उक्कोसेण ठिई भवे ।
सणंकुमारे जहन्नेणं दुन्नि ऊ सागरोवमा ॥

१—× (अ) ।
२—° सिद्धिगा (अ) ।
३—एए (उ, ऋ) ।
४—ठिई भवे (आ, स) ।
५—ठिई भवे (आ, स) ।

२२५–साहिया सागरा सत्त उक्कोसेण ठिई भवे।
माहिन्दम्मि जहन्नेण साहिया दुन्नि सागरा ॥
२२६–दस चेव सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
बम्भलोए जहन्नेण सत्त ऊ सागरोवमा ॥
२२७–चउद्दस[1] सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
लन्तगम्मि जहन्नेण दस ऊ सागरोवमा ॥
२२८–सत्तरस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
महासुक्के जहन्नेण चउद्दस सागरोवमा ॥
२२९–अट्ठारस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
सहस्सारे जहन्नेण सत्तरस सागरोवमा ॥
२३०–सागरा अउणवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आणयम्मि जहन्नेण अट्ठारस सागरोवमा ॥
२३१–वीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
पाणयम्मि जहन्नेण सागरा अउणवीसई ॥
२३२–सागरा इक्कवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
आरणम्मि जहन्नेण वीसई सागरोवमा ॥
२३३–बावीसं सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
अच्चुयम्मि जहन्नेण सागरा इक्कवीसई ॥
२३४–तेवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
पढमम्मि जहन्नेण बावीसं सागरोवमा ॥
२३५–चउवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
बिइयम्मि जहन्नेण तेवीसं सागरोवमा ॥
२३६–पणवीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
तइयम्मि जहन्नेण चउवीसं सागरोवमा ॥

१–चोद्दसओ (अ)।

२३७—छव्वीस सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
चउत्थम्मि जहन्नेणं सागरा पणुवीसई ॥
२३८—सागरा सत्तवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
पंचमम्मि जहन्नेणं सागरा उ छवीसई ॥
२३९—सागरा अट्ठवीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
छट्ठम्मि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई ॥
२४०—सागरा अउणतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
सत्तमम्मि जहन्नेणं सागरा अट्ठवीसई ॥
२४१—तीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे।
अट्ठमम्मि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई ॥
२४२—सागरा इक्कतीसं तु उक्कोसेण ठिई भवे।
नवमम्मि जहन्नेणं तीसई सागरोवमा ॥
२४३—तेत्तीस सागराउ उक्कोसेण ठिई भवे।
चउसु पि विजयाईसु जहन्नेणेक्कतीसई[1] ॥
२४४—अजहन्नमणुक्कोसा[2] तेत्तीसं सागरोवमा।
महाविमाण सव्वट्ठे ठिई एसा वियाहिया ॥
२४५—जा चेव उ[3] आउठिई देवाणं तु वियाहिया।
सा तेसिं कायठिई जहन्नुक्कोसिया[4] भवे ॥
२४६—अणन्तकालमुक्कोसं अन्तोमुहुत्तं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए देवाणं हुज्ज अन्तरं ॥[5]

१—जहन्ना इक्कतीसई (उ, ऋ)। २—०मणुक्कोसं (अ, ऋ)।
३—य (अ)। ४—जहन्नमु० (ऋ, वृ०)।
५—इस श्लोक के बाद दो श्लोक और हैं :—
अणंतकालमुक्कोसं वासपुहत्तं जहन्नगं।
आणयादीण-कप्पाणं गेविज्जाणं तु अंतरं ॥
संखिज्जसागरुक्कोसं वासपुहत्तं जहन्नगं।
अणुत्तराण देवाणं अंतरं तु वियाहियं ॥ (उ)।

२४७—एएसिं वण्णओ चेव गन्धओ रसफासओ।
'संठाणादेसओ वावि'[1] विहाणाइं सहस्सओ॥

२४८—संसारत्था य सिद्धा य इइ जीवा वियाहिया।
रूविणो चेव ऽरूवी य अजीवा दुविहा वि य॥

२४९—इइ जीवमजीवे य सोच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वनयाण अणुमए रमेज्जा संजमे मुणी॥[2]

संलेहणा-पद

२५०—तओ बहूणि वासाणि सामण्णमणुपालिया।
इमेण कमजोगेण अप्पाणं संलिहे मुणी॥

२५१—बारसेव उ वासाइं संलेहुक्कोसिया[3] भवे।
संवच्छरं मज्झिमिया[4] छम्मासा[5] य जहन्निया[6]॥

२५२—पढमे वासचउक्कम्मि विगईनिज्जूहणं[7] करे।
बिइए वासचउक्कम्मि विचित्तं तु तवं चरे॥

२५३—एगन्तरमायामं कट्टु संवच्छरे दुवे।
तओ संवच्छरद्धं तु नाइविगिट्ठं तवं चरे॥

१—संठाण भेयओ या वि (अ)।
२—श्लोक क्रमांक २४८ २४९ के स्थान पर चूर्णि में निम्न दो श्लोक हैं —
जीवमजीवे एते णच्चा सद्दहिऊण य।
सव्वन्नूसमतमी जएज्जा संजमे विदू॥
पसत्थसज्झाणोवगए कालं किच्चा ण संजए।
सिद्धे वा सासए भवति देवे वावि महड्ढिए॥
३—संलेहुक्कोसतो (बृ० पा०)।
४—मज्झिमतो (बृ० पा०), मज्झमिया (ऋ)।
५—छम्मासे (अ)।
६—जहन्नतो (बृ० पा०)।
७—वित्ति° (बृ०); विगई° (बृ० पा०)।

२५४—'तओ संवच्छरद्धं तु विगिट्ठं तु तवं चरे।
परिमियं चेव आयामं तंमि संवच्छरे करे॥'[1]

२५५—कोडीसहियमायामं कट्टु संवच्छरे मुणी।
मासद्धमासिएणं तु आहारेण[2] तवं चरे॥

२५६—कन्दप्पमाभिओगं[3]
किव्विसियं मोहमासुरत्तं च।
एयाओ दुग्गईओ
मरणम्मि विराहिया होन्ति॥

भावणा-पदं

२५७—मिच्छादंसणरत्ता सनियाणा हु हिंसगा।
इय जे मरन्ति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही॥

२५८—सम्मद्दंसणरत्ता
अनियाणा सुक्कलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा
सुलहा तेसिं भवे बोही॥

२५९—मिच्छादंसणरत्ता
सनियाणा कण्हलेसमोगाढा।
इय जे मरन्ति जीवा
तेसिं पुण दुल्लहा बोही॥

१—परिमियं चेव आयामं गुणुक्कस्सं मुणी चरे।
तत्तो संवच्छरद्धऽण्णं विगिट्ठं तु तवं चरे॥ (वृ० पा०)।
२—खमणेणं (वृ० पा०)।
३—कंदप्पमाभिओगं च (अ)।

२६०—जिणवयणे अणुरत्ता
जिणवयण जे करेन्ति भावेण ।
अमला असकिलिट्ठा
ते होन्ति परित्तससारी ॥

२६१—बालमरणाणि बहुसो
अकाममरणाणि चेव य बहूणि[1]।
मरिहिन्ति[2] ते वराया
जिणवयण जे न जाणन्ति ॥

२६२—बहुआगमविन्नाणा
समाहिउप्पायगा[3] य गुणगाही ।
एएण कारणेण
अरिहा आलोयण सोउ ॥

२६३—कन्दप्पकोक्कुइयाइ[4] तह
सीलसहावहासविगहाहिं[5] ।
विम्हावेन्तो य पर
कन्दप्प भावण कुणइ ॥

२६४—मन्ताजोग[6] काउं
भूईकम्म च जे पउजन्ति ।
सायरसइड्ढिहेउ
अभिओग भावण कुणइ ॥

१—बहुयाणि (इ, उ, ऋ, स)।
२—मरहंति (उ), मरिहंति (ऋ)।
३—°मुपायगा (अ)।
४—°कोक्कुयाई (बृ०, सु)।
५—°हसण° (बृ०, सु)।
६—मंत° (अ)।

२६५—नाणस्स केवलीणं
धम्मायरियस्स संघसाहूणं ।
माई अवण्णवाई
किव्विसियं भावणं कुणइ ॥

२६६—अणुबद्धरोसपसरो
तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवि ।
एएहि कारणेहि
आसुरियं भावणं कुणइ ॥

२६७—सत्थग्गहणं विसभक्खणं च
जलणं च जलप्पवेसो य ।
अणायारभण्डसेवा
जम्मणमरणाणि बन्धन्ति ॥

निक्खेव-पदं

२६८—इइ पाउकरे बुद्धे नायए परिनिव्वुए ।
छत्तीसं उत्तरज्झाए भवसिद्धीयसंमए[1] ॥
—त्ति बेमि ॥

*

१— ० संवुडे (बृ० पा०) ।

परिशिष्ट-१

दसवेआलिय शब्दसूची

दसवेआलिय शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्रायः एक बार किया गया है।

२—रूपान्तरों को एक साथ लिया है। जैसे—लोअ(ग, य), चंद(न्द)।

३—तारांकित शब्द धातुएँ हैं। उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (डैश) के बाद हैं।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है।]

१—शब्द के सामने दी हुई पहली संख्या अध्ययन और अध्ययन-संख्या के बाद कोष्ठगत संख्या उद्देश्य का द्योतन करती है। बाद की संख्या श्लोक की द्योतक है। 'सू०' सूत्र के लिए प्रयुक्त है। 'चू०' चूलिका का संकेत है।

४

अलाभ ५(२) ६
 ८ २२
अलाय ४ सू० २०
 ८ ८
अलोग ४ २२,२३
अलोल १० १७
अलोलुअ ९(३) १०
अल्लीण ८ ४०,४४
अवंदिम १ चू० ३
अवक्कम *
(अव+क्रम)
-अवक्कमे ५(१) ८५
अवक्कम *
(अप+क्रम)
-अवक्कमेज्जा ९(१) ६
अवक्कमित्ता ५(१) ८१,८६
 ५(२) ११
अवगम ८ ६३
अवगय ७ ५७
 ८ ६३
 ९(३) १४
 १० १६
अवणय ५(१) १३
अवणी *
-अवणेज्जा ४ सू० २३
अवण्णवाय ९(३) ९
अवत्तव्व ७ २,४३

अवपंगुर *
-अवपंगुरे ५(१) १८
अवरज्झ *
-अवरज्झई ६ ७
अवररत्त २ चू० १२
अवराह ९(२) १८
अवलंबिया ५(२) ९
अवलोय *
-अवलोयए ५(१) २३
अवह ६ ५७
अवाउड ३ १२
अवि १ १
अविक्किय ७ ४३
अविणीय ९(२) ३,५,७,१०,२१
अविस्सास ६ १२
अविहेडअ १० १०
अवे *
-अवेस्सइ १ चू० १६
-अविस्सइ १ चू० १६
अवेयइत्ता १ चू० सू० १
अव्वक्खित्त ५(१) २,९०
अव्वहिय ८ २७
अस *
-संति १ ३
 ६ २३,६१
-होमो २ ८

उ

उत्तिंग	५(१)	५९
	८	११,१५
उद+उल्ल	६	२४
	८	७
उदओल्ल	४	सू० १९
	५(१)	३३
उदग	४	सू० १९
	५(१)	३०,५८,७५
	८	११
उदगदोणी	७	२७
उदर	४	सू० २३
उदाहर *		
-उदाहरिस्सामि	८	१
उद्देसिय	३	२
	५(१)	५५
	६	४८,४९
	८	२३
	१०	४
उन्नय	७	५२
उप्पज्ज *		
-उप्पज्जए	२ चू०	१
उप्पण्ण	५(१)	९९
	५(२)	३
	१ चू०	सू० १
उप्पल	५(२)	१४,१६,१८
उप्पिलाव *		
-उप्पिलावए	६	६१

उप्पिलोदगा	७	३९
उप्फेत्ति	१ चू०	सू० १
उप्फुल्ल	५(१)	२३
उब्भिंदिया	५(१)	४६
उब्भिय	४	सू० ९
उब्भेइम	६	१७
उभय	४	११
	५(२)	१२
उम्मीस	५(१)	५७
उयर	८	२९
उल्ल	५(१)	२१,९८
उल्लंघिया	५(१)	२२
उवइट्ठ	९(३)	२
उवगय	९(१)	११
उवगरण	४	सू० २३
उवघाइणी	७	११,२९,५४
उवचिट्ठ *		
-उवचिट्ठएज्जा	९(१)	११
उवचिय	७	२३
उवज्झाय	९(२)	१२
उवट्ठाइ	१ चू०	सू० १
उवट्ठिय	४	सू० ११ से १६
	९(२)	५,१०
उवणीय	१ चू०	१५
उवन्नत्थ	५(१)	३९
उवभोग	९(२)	१३

ट

टाल (दे०)	७	३२

ठ

ठविय	५(१)	६५
ठाण	५(१)	१६
	६	७,८,५८
	९(२)	१७
	९(४)	सू० १ से ३
	१ चू०	सू० १
	१ चू०	३
ठावय *		
-ठावयई	९(४)	३
ठिअ	९(४)	३
	१०	२०
ठियप्प	६	४९
	१०	१७,२१

ड

डह *		
-डहेज्जा	९(१)	७
डहर	५(२)	२९
	९(१)	२ से ४
	९(३)	३,१२

ण

ण	५(२)	२
णं	५(२)	२९
णु	७	५१
णो	६	९
	७	६

त

त (तत्)	१	२
त (त्वत्)	२	८,९
तउज्जुय	५(२)	७
तओ	४	सू० २३
	४	१०
	५(१)	९६
	५(२)	३,१३
	९(२)	१
	९(३)	७
तंजहा	४	सू० ३
तच्च	४	सू० १३
तज्जणा	१०	११
तज्जायसंसट्ठ	२	६
तण	४	सू० ८
	५(१)	८४
	८	२,१०
	१०	४
तणग	५(२)	१९
तण्हा	५(१)	७८,७९

शब्द	अध्याय	गाथा/सूत्र
वोसट्ठचत्तदेह	१०	१३
वोसिर *		
-वोसिरामि	४	सू० १० से १६,
		सू० १८ से २२
-वोसिरे	५(१)	९३
व्व	२	६
	८	४०
	१ चू०	५,६

स

शब्द	अध्याय	गाथा/सूत्र
स	४	सू० ८
	४	१७,१८
	५(१)	८७
	६	६
	८	२
	२ चू०	१
सअ	५(१)	६
सआ	६	६८
सइं	५(२)	२०
सइकाल	५(२)	६
सइत्तु	६	५३
संकट्ठाण	५(१)	१५
संकण	६	५८
संकप्प	२	१
	१ चू०	सू० १
संकम	५(१)	४,६५
संका	७	६
संकिय	५(१)	४४,७७
	७	७
संकिलेस	५(१)	१६
संकुचिय	४	सू० ६
संखडि	७	३६,३७
संग	१०	१६
संघट्ट *		
-संघएट्ट	८	७
संघट्टइत्ता	६(२)	१८
संघट्टिया	५(१)	६१
संघाय	४	सू० २३
संजइंदिय	१०	१५
संजम	१	१
	२	८
	३	१,१०
	४	१२,१३,२७
	६	१,८,१६,
		४६,६०,६७
	७	४६
	८	४०,६१
	६(१)	१३
	१०	७,१०
	१ चू०	सू० १

*

परिशिष्ट-२

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

*

उत्तरज्झयण शब्द-सूची

[१—अव्यय और सर्वनाम के साक्ष्य-स्थल का निर्देश प्राय: एक बार किया गया है।

२—रूपान्तरों को एक साथ किया है। जैसे—लोअ(ग, य), चंद(न्द)।

३—तारांकित शब्द धातुएँ हैं। उनके रूप उनके नीचे निर्देशचिह्न (डैश) के बाद हैं।

४—संस्कृत छाया केवल समान शब्दों की ही दी गई है।]

अ

१—इस कोष्ठक की संख्याएँ अध्ययन की सूचक हैं।
२—इस कोष्ठक की संख्याएँ श्लोक अथवा 'सू०' सूत्र की सूचक हैं।

अभिसमे *		
-अभिसमेइ	१३	३०
-अभिसमेम	२०	६
अभिहण *		
-अभिहणे	२	१०
अभिहय	२३	५३
अभिहिय	२८	२७
अभोगि	२५	३६
अभइ	४	२
अमणुन्न	२६	सू॰ ६३ से ६७
	३२	२१ से २३, ३५,३६,४८, ४६,६१,६२, ७४,७५,८७, ८८
अमणुन्नया	३२	१०६
अमम	२१	२१
अमय	१७	२१
अमरिस	३४	२३
अमल	३६	२६०
अमहग्घय	२०	४२
अमाइ	११	१०
	२६	सू॰ ५
	३४	२७
अमाणुस	३	६

अमित्त	१५	१६
	२०	३७
अमिय	३२	१०४
अमुंच	३६	८१,८६; १०३,११४, १२३,१३३, १४२,१५२
अमुच्छिय	३५	१७
अमुत्त	१४	१६
अमुहरि	१	८
अमूढदिट्ठि	२८	३१
अमोक्ख	२८	३०
अमोसली	२६	२५
अमोह	१४	२१ से २३
अमोहण	३२	१०६
अम्बग	७	११
	३४	१२,१३
अम्बिल	३६	१८,३२
अम्मा	१६	२,६,१०, ११,२४,४४, ७५,७६,८४ से ८६
	२१	१०
अम्हे	१	१
अम्हारिस	१३	२७
अय (अज)	७	७,६

ख

च		
	[illegible]	
	[illegible]	७
-चरे	६	१६
	९	४६
	१०	३६
	१२	४०
	१४	४७
	१५	३
	१६	१५
	१८	१५,३१,३७, ४१,४३,४७, ५१
	३५	१६
	३६	२५२,२५३, २५५
-चरेज्ज	२	१७
	१५	२
चरत	२	६
	४	११
चरण	१८	२२,२४
	१९	६४
	२३	२६
	२४	५,२६
	२८	३०
	३३	८
चरणविहि	३१	
	३१	१
चरम	३४	५६
चरमाण	३०	२०,२३
चराचर	३२	२७,४७,५३, ६६,७६,९२
चरिउ (चरितुम्)	१९	३७
चरिउ (चरित्वा)	२१	२३
चरित्त	१९	३८
	२०	५२
	२२	२६
	२३	३३
	२६	३९,४७
	२८	२,३,११, २५,२९,३५
	२९	सू० १,१२,१५, ३२,५६,६०, ६२,७२
चरित्तगुत्त	२९	सू० ३२
चरित्तगुत्ति	२९	सू० ३२
चरित्तधम्म	२८	२७
चरित्तमाहण	३३	१०
चरित्तमाहणिज्ज	२९	सू० ३०
चरित्ता	१८	२५
	२६	५२
	३१	१

जहिऊण	३५	२०
जहि	१२	१३
जहिच्छ	२३	२२
जहित्ताणं	१८	४०
जहित्तु	२१	११
जहोइय	२२	२१
जा * (जन्)		
-जायइ	१९	७८
-जायए	१	४५
-जायंति	३२	१०५
जा * (या)		
-जाइ	३	१२
-जंति	७	२१
	९	५३
	१४	२४,२५
	२२	३२
जाअ	१३	२,१२
	२०	३५
जाइ	३	२
	८	१,२
	१२	५,१३,१४,३७
	१३	१,७,१८,१९
	१४	४,५
	१९	८
जाइ	२२	४०
	३२	७
जाइपह	६	२
जाइय	२	२८
जाईसरण	१९	७,८
जाण *		
-जाणइ	५	६
	२८	३५
	३२	१०९
-जाणामि	१३	२७
	१७	२
	१८	२७
-जाणासि	२५	११,१२
-जाणाह	१२	१५
-जाणाहि	१२	१०
	१३	११
-जाणे	१४	२७
	१८	२९
	२०	१६
-जाणंति	३६	२६१
जाण (जाणत्)	५	१४
जाण (यान)	७	८
जाणमाण	१३	२९
जाणय	२०	४२
जाणिऊण	३६	१
जाणित्ता	१	३४

पिय (पितृ)	६	३
	१३	२२
	२०	१८,२४
	२१	७
ङ्कर	११	१४
पियवाइ	११	१४
पियदसण	२१	६
पियधम्म	३४	२८
पियर	१८	१५
	१९	९,२४,४४, ७५,७६,८६
	२१	१०
पियायए	६	६
पिव	१९	६७
पिवासा	२	सू० ३
	२	४
पित्रोलि	३६	१३७
पिदोलिया	३	४
पिसाय	१२	६,७
	३६	२०७
पिसुण	५	९
पित्समाण	३४	१७
पिहिय	१९	९३
	२९	सू० १२
पिहुंड	२१	२,३

पिहे *		
-पिहेइ	२९	सू० १२
पोड *		
-पोडई	२०	२१
पोडिअ	१९	१८,१९
पोढ	१७	७
पीणिअ	७	२
पीय	२०	४४
पीयअ	३६	२५
पील *		
-पीलेइ	३२	२७,४८,५३, ६६,७९,९२
पीला	२२	३७
पीलिय	१९	५३
पोह *		
-पोहए	२	३८
-पोहेइ	२९	सू० ३४
पुंगव	२२	१३
पुग्गल	२८	७,८,१२
	३६	२०
पुच्छ	२७	४
पुच्छ *		
-पुच्छ	२३	२२
-पुच्छई	१९	७९
	२५	१३
-पुच्छसो	१८	३२

भय	२२	१४
	२४	६
	२५	२१,२३,३८
	३२	१०२
भय *		
-भएज्ज	२१	२२
-भयइ	११	११
-भयाहि	२२	३७
भयंकर	२३	४३
भयंत	२०	११
भयद्दाण	३१	९
भयव	९	२,४,१२
	२३	८९
भयाईय	२५	२१
भयावह	१९	९८
	२१	११
भरह	१८	३४,४०
भरहवास	१८	३५
भरेउं	१९	४०
भल्ली	१९	५५
भव (भवत्)	२	१
	१२	१०,४५
भव *		
-भवइ	२०	१५ से १७
	२९	सू० २,३,५,
		सू० १७,१८,२०,
-भवइ	२९	सू० ३७,३९,४३;
		सू० ४५,४८,४९,
		सू० ५४,५५,६०,
		सू० ७२
	३०	२
	३५	१४
-भवंति	१३	२२
	१४	१२
	१५	१४
	२९	सू० ३४
	३२	१११
-भवामो	१४	२८
-भवाहि	९	४२
	१८	११
	२२	२६
-भविस्सई	२	४५
	२२	१९,३७
-भविस्ससि	६	५
	२०	१२
	२२	४४,४५
-भविस्सामु	१४	१७
-भविस्सामो	१४	४५
-भवे	५	३
	७	१६,२६
	९	४८
	१४	३९
	२२	४२

शब्द	अध्ययन	गाथा
भय	२२	१४
	२४	६
	२५	२१,२३,३८
	३२	१०२
भय *		
-भएज्ज	२१	२२
-भयइ	११	११
-भयाहि	२२	३७
भयंकर	२३	४३
भयंत	२०	११
भयट्ठाण	३१	६
भयव	६	२,४,१२
	२३	८६
भयाईय	२५	२१
भयावह	१६	६८
	२१	११
भरह	१८	३४,४०
भरहवास	१८	३५
भरेउं	१६	४०
भल्ली	१६	५५
भव (भवत्)	२	१
	१२	१०,४५
भव *		
-भवइ	२०	१५ से १७
	२६	सू० २,३,५,
		सू० १७,१८,२०,
-भवइ	२६	सू० ३७,३६,४३,
		सू० ४५,४८,४६,
		सू० ५४,५५,६०,
		सू० ७२
	३०	२
	३५	१४
-भवंति	१३	२२
	१४	१२
	१५	१४
	२६	सू० ३४
	३२	१११
-भवामो	१४	२८
-भवाहि	६	४२
	१८	११
	२२	२६
-भविस्सई	२	४५
	२२	१६,३७
-भविस्ससि	६	५
	२०	१२
	२२	४४,४५
-भविस्सामु	१४	१७
-भविस्सामो	१४	४५
-भवे	५	३
	७	१६,२६
	६	४८
	१४	३६
	२२	४२

ल

परिशिष्ट-२

नामानुक्रम

व्यक्तियों के नाम

१–इस कोष्ठक की संख्याएँ अध्ययन की सूचक हैं।

२–इस कोष्ठक की संख्याएँ श्लोक अथवा सूत्र (सू०) की सूचक हैं।

देशों व नगरों के नाम

पर्वतों के नाम

समुद्रों के नाम

धातु और रत्न

वनस्पति

प्राणि

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
१४२	१५।१	भावधरा	भारधरा
१४२	१६।४	दहामु	दाहामु
१५२	२३।४	° मेव	° मेवं
१५८	१८।२	तेल्लामहा निलेमु	तेल्ल महानिलेमु
१७०	५ ८	कुडुन्तमि	कुडुन्तरमि
१७३	१३।१	गत °	गत्त °
१७५	१।२	मुणिता	मुणिता
१७६	१०।१	अहम्मीति	अहमस्सीति
१८२	४०।२	भरह	भरहं
१८३	४७।१	मवीर °	सोवीर °
१८६	४१।३	निहुय	निहुयं
१९०	५०।२	° बालुए	° बालुए
१९३	७७।२	मिगे	मिगो
२०६	४।१	धरणी	धरणी
२३२	१३।४	महानुणि	महामुणि
२३४	३४।३	लय	तय
२३८	१०।३	निउत्तेण	निउत्तेण
२३९	२४।२	वा	ता
२४३	४७।३	य	×
२४४	७।४	उज्जाहित्ता	उज्जहित्ता
२४७	४।३	तु	×
२४९	२०।३	रीयतो	रीयन्तो
२५५	पं ६	अणगारेए	अणगारे
२५६	सू०२४	पभावेण	पभावेणं
२५६	सू०२५	खवेइ	अन्नाणं खवेइ
२६६	सू०६०	विणुस्सइ	विणस्सइ
२६९	सू०७४	कम्माइ	कम्माइं
२७५	३७।१	एव	एवं
२७७	१७।१	° णावणाहि	° भावणाहिं
३०५	४।३	खजणण °	खजणअण °

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
३०९	१०।१	कडुय	कड्डय
३१७	१	'मे एगगमणा'	मेगग्गमणा
३३०	६५।१	लयावलया	लयावलय
३४६	२६६।२	कारणेहि	कारणेहिं

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

पाठान्तर

दशवैकालिक

पृष्ठ	श्लोक	अशुद्ध	शुद्ध
२	पा० १	कइण्ह	कइर्ण्ह
३	पा० ६	मपन्ना (अ ज)	सपन्ना (अ,ज), सबुद्धा (आ)
४	पा० १	(अ)	(आ)
५	पा० ८	(क,ख, ··)	(क,ग ·)
७	पा० ४	(जिचू पा०, जिचू पा०)	(अचू पा० जिचू पा०)
७	सू० ६	एसो[1] खलु	एसो खलु[1]
८	पा० १	(अचू)	(अचू सू० १०-२२)
१०	सू० १५	'गामे वा'[1] नगरे वा	'गामे वा नगरे वा
		रण्णे[2] वा	रण्णे[1] वा'[2]
१०	पा० १	×(क,ख,ग,घ, हाटी०)	अरण्णे (अचू)
१०	पा० २	अरण्णे (अचू)	×(क,ख,ग घ, हाटी०)
११	सू० १८	सलागाए वा'[3]	सलागाए वा सलागहत्थेण वा'[3]
१२	पा० ३	उज्जावेज्जा	उज्जालावेज्जा
१४	पा० १	इडगसि वा	इडगसि वा
१८	पा० ६	कट्ठ	कट्ठं
२१	पा० ४	६—हारताल °	६—हरिताल °
		७—हिगोलए °	७—हिंगोलुय °
		१४—सोरट्ठिय °	१४—सोरट्ठिय °
२३	पा०२	(अ,ज)	(अ)
२७	८४।३	वा वि	वा वि'[1]
२७	८४।४	'वा वि'[1]	वा वि
३१	पा०२	(आ,जा ह)	(आ,जा हा)
३६	पा०२	(आ,ज)	(अ,ज)

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
३७	१८।१	लोभस्सेसो अणुफासो	'लोभस्सेसो अणुफासो'[२]
३७	१८।३	सन्निहीकामे	सन्निहीकामे[3]
३७	२२।३	य[२]	य[४]
३७	पा० २	२—व (अ)	२—लोभस्सेसणुफासे (क,घ) ; लोभस्से सणुफासे (ख) ; लोभस्सेसणफासो (ग) ३—सन्निहिं कामे (हाटी०) ४—व (अ)
३८	पा०३	ना	नो
४०	पा०३	जिनदास···व्याख्यात नहीं है	×
४४	पा०२ गा०८,९	तहेवऽ °	तहेवाऽ °
		व धारिय···अइयंमि	वधारियं···अईयंमि
४८	५४।३	भयसा[२]	'भयसा व'[२]
४९	पा०१	सुव्वक्क ° (ख,ग)	सुवक्क (ख,ग)
५१	१९।४	ण[५]	'ण य'[५]
५२	पा०३	(क,ख,घ)	(क,ग,घ)
५५	पा०२	पणीयं रसं	पणीयं
५६	६३।३	कम्मघणम्मि[४]	'कम्मघणम्मि अवगए'[४]
५६	पा०	२—	१—
		३—	२—
		१—	३—
		२—	४—
५६	पा०२	पुव्व °	४—पुव्व °
५७	५।२	° नासाओ[२]	° नासाओ[3]
६२	पा०२	समणेंति	समाणेंति
	४।४	'वि पए'[८]	'नो वि पए'[८]
७६	सू०१ पं०२०	खलु[४]	'खलु भो'[४]
७६	पा०४	(आ, जा)	(अ, ज)
८४	पा०२	° वहं (जा,आ)	° वहं (आ,ज); ° पहं (जा)

उत्तराध्ययन

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
८७	पा०२	जाहित्ताण (बृ० चू०)	जहित्ताण (बृ० चू०) चइत्ताण (बृ०पा०)
८८	पा०७	(बृ० चू०)।	(बृ० चू०) अप्पाचव दमेयव्वो (बृ०पा०)।
८९	पा०१	(अ उ म)	(अ उ ऋ)
९४	पा०१ २	(चू०पा०)	(चू०)
९२	पा०३	(अ उ ऋ) कित्ती ति(ऋ)।	(अ उ) कित्ती य(बृ०)।
१०३	पा०२	(बृ०पा० चू०पा०)।	(ऋ बृ०पा० चू०पा०)
१०३	पा०७	पीहाति	पीहति
१०९	पा०२	आधा °	आघा °
११०	पा०२	(चू० बृ०पा०)	(चू०पा० बृ०)
१११	पा०१	(सु)	(स(
११६	पा०१ प०४	(चू०)	(चू०पा०)
११९	पा०२	सेबाए णिसेबाए	सेवाए णिसेवाए
१३२	पा०३	(उ म बृ०)	(उ ऋ बृ०)
१३६	अ०११	बहुस्सुयपुज्जा	बहुस्सुयपुज्ज
१३७	१५।२	निहिय दुहओ [२]	निहिय दुहओ वि [२]
१४७	पा०२	सुसवुडा	सुसंवुडा
१४७	पा०४	बोमट्ठ °	वोसट्ठ °
१५०	पा०५	वित्तधण °	चित्तधण °
१८२	पा०८		× (आ इ स)
१८३	४७।२	चेच्चा [3]	चेच्चा रज्जं [3]
१८५	पा०३		× (आ इ सु चू०)
१८८	३४।४	° पालिउ	° पालिउ[3]
१८८	३७।१	वालुयाकवले[3]	वालुयाकवल[४]
१८८	३७।२	उ[४]	उ[५]
			३—पालिया (अ आ इ उ सु)
१८८	पा०	३—	४—
१८८	पा०	४—	५—
१९९	पा०१२	पा० टि० ७	पा० टि० ८

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२००	पा०४	अणुत्तरमणुव्वया (उ, ऋ,वृ०पा०)	अणुत्तरमणुव्वया(उ,ऋ); अणुत्तरमणुव्वया (वृ० पा०)
२०७	पा०४	अहिज्ज मगांध(चू०);	अहिज्जु मगांध (चू०);
		अहित्तुगंभांथ (चू०);	अहित्तुगगांथ (चू०);
		अहित्तु मगांथ ° (मु)	अहित्तु मगांथ (मु)
२१४	पा०८	मे ओ	मेओ
२१६	पा०१,३		× (अ,उ,ऋ,ग,मु)
२४२	पा०५	मे मे…गृक'	मेसे…गृग'
२४८	पा०२	° नेड या	तवे उ या
२५५	सू०६ पं०४	उज्जुभावपडिवन्ने[६]	'उज्जुभाव पडिवन्ने य णं'[१]
२५६	सू०७ पं०३	'पडिवन्ने य'[२]	'पडिवन्ने य णं'[२]
२६१	सू०३४ पं०५	अणासायमाणे[३]	अणासायमाणे
२६१	सू०३५ पं०३	निक्कसे[४]	निक्कसे[३]
२६१	सू०३६ पं०२	जीवियासंसणओगं[५]	जीवियासंसप्पओगं[४]
२६१	सू०३६ पं०२	वोच्छिन्दइ[६]	वोच्छिन्दइ
२६१	सू०३६ पं०३	वोच्छिन्दित्ता	वोच्छिन्दित्ता[५]
२६१	पा०	२—'नो आभाएइ'…(वृ०)	२–× (उ,ऋ,वृ०)
		३—	×
		४—	३—
		५—	४—
		६—	५—
२६३	पा०६	वन्धाणि	वन्धणाणि
२६५	सू०५१ पं०५	परलोगधम्मस्स[२]	'परलोगधम्मस्स आराहए'[२]
२६५	सू०५५ पं०२	'निव्वियारेणं जीवे'[४]	'निव्वियारे…[४]ज्झाणगुत्ते'[५]
	पा०	४—	५—
	पा०	५—	४—
२६६	पा०६	(वृ० पा०)	(वृ०)
२७२	१४।३	'दव्वओ खेत्तकालेणं'[८]	खेत्तकालेणं[८]
२७२	पा०१	° कालाय	° काला य
२७२	पा०४	चउत्थोउ	चउत्थो उ

शुद्धि और आपूरक पत्र-२

उत्तराध्ययन शब्द-सूची

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
९३		अइमत्त	अइमन्त
९४	अंत	२८।४१,५८,६१,७३, २९।सू०१	२९।सू०१,२८,४१, ५८,६१,७३
९५		अंतरमासिल्ल	अंतरभासिल्ल
९६	अकिंचण	१४।१५	×
९६			अकिंच १४।१५
९७	अगारि	२७।२२	७।२२
९७		अग्ग *	अग्घ *
९८		अजाणमाग	अजाणमाण
१०४	अणुभाग	३४।१	३४।६१
१०४		अणुरत्त	अणूरत्त
१०६		अतिति	अतित्ति
१०६	अत्थ (अर्थ)	२९।सू०२,४८	२९।सू०२१,४८
१०७	अदत्त	३२।४२ से ४४,	३२।४२,४४
१०९	अप्प(आत्मन्)	१४।४९	१४।४८
१११		अवंभचरि	अवंभचारि
१११		अब्भाइय	अब्भाहय
१११		-अब्भट्ठेइ	-अब्भुट्ठेइ
१११		अब्भुट्ठिच्चा	अब्भुट्ठित्ता
११२		अभिगमरूइ	अभिगमरुइ
११२	अभिभूय (अभिभूय)	१५।३	१५।२
११४		अलित	अलित्त
११७	असण (अशन)	२।३०	२।३
११८	असायावेयणिज्ज	२०।४२	×
११८			असार १९।१४,२२ ; २०।४२
११८		अस्सविली	अस्साविणी
११९		अहिंसया	अहिंसया

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
१२०		अहुणववन्न	अहुणोववन्न
१२०	आइ	(दे०)	(दि)
		२९।सू०३	२९।सू०४
१२१	आउकम्म	३२।२,	३३।२
१२१	आउट्टिइ	३६।१३२ से १४१	३६।१३२,१४१
१२१		आगन्तु	आगन्तु
१२३		-आमन्त्यामो	-आमन्तयामो
१२३		आमीस	आमोस
१२३	आयय *		-आययन्ति ३।७
१२३	-आयरे	२४।७	२४।२७
१२३	आयहिअ	२१।१२	२१।२१
१२४	आराहणया	२९।सू०४९	२९।सू०५१
१२४		आरुह *	- आरुह *
१२४		-आरुहइ	-आरुहइ
१२७		-अहारेज्जा	आहारेज्जा
१२८		इक्कत्तीसइ	इक्कतीसइ
१२९	ईसाणग	३६।२१	३६।२१०
१३०	उक्कोस	३४।४९ से ५०	३४।४६,४८ से ५०
१३०	उग्ग	१८।५०	१५।९,१८।५०
१३१	उज्जाण	१८।३४	१८।३४
१३१			उज्जुपन्न २३।५६
१३१	उज्जुभाव	२९।सू०६,	२९।सू०१,
१३१		उज्जेय (उद्योत)	उज्जोय (उद्योत)
१३२	उत्तम	१८।४१	१८।४०
१३२	उदग(क,अ)	८।८	८।९
१३२	उदहि		३६।२०६
१३३		उद्धतुकाम	उद्धत्तुकाम
१३३	उरग	१४।४७,३६,१८१	१४।४७,३६।१८१
१३४		उल्लघन	उल्लंघण
१३४	उवट्ठिअ(य)	२०।२२	२०।८,२२
१३५	-उवलिप्पई	२५।३९	२५।२६,३९

पृष्ठ	स्थल	अशुद्ध	शुद्ध
२०६		निद्दे *	निद्द *
२१६	-पगरेह	१२।३८	x
२२०		पडिगविगा *	पडिसविस
२२२		पमवय	पन्नव
२४१		-फ गे	-पाग
२४६		-अन्वरी	-अन्वि
२५३		भुज	भुज *
२५३	-भुजिज्जा	३५।१५	३५।१
२५८		जभुयि	भुजिा
२६०	मत्र	२५।११	२५।२१
२६८	मोह	२०	२०।६०
२७३	रवयय	२२।२२,२३	२२।३१
२८६	विमोयणया	२६।मू०७१	२६।मू०७२
२६१		विवज्ज त	विवज्जयं
२६२		विग	विनम
२६८		वुकवस	वुकन
२६६		सजज (सजय)	सजअ (सजय)
३०१		-सतसन्नि	-सतमन्नि
३०५	सत्त (सत्व)	१४।१८,४३	१४।१८,४२
३१७	-सिज्झन्ति	२६।सू०१	x
३२७	हरिएस	१ ।२७	१२।३७